ईसुरी
का
फाग साहित्य

डॉ. लोकेन्द्र सिंह नागर

खाली

ईसुरी
का
फाग साहित्य

डॉ. लोकेन्द्र सिंह नागर

सम्पादक
डॉ. कपिल तिवारी

सहायक सम्पादक
अशोक मिश्र

आदिवासी लोककला अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल
का प्रकाशन

प्रकाशक	–	आदिवासी लोक कला अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् मुल्ला रमूजी संस्कृति भवन, आधार तल, बाण गंगा, भोपाल–462003 मध्यप्रदेश, भारत फोन – 0755–2551878, 2760668
प्रकाशन वर्ष	–	वर्ष 2004 प्रथम संस्करण
स्वत्वाधिकार	–	आदिवासी लोक कला अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
शब्दांकन	–	आदिवासी लोक कला अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
आवरण	–	
मुद्रण	–	प्रियंका ऑफसेट, भोपाल
मूल्य	–	300/– रूपये तीन सौ केवल

■ पुस्तक से सम्बन्धित विवादों का न्यायालयीन कार्य क्षेत्र भोपाल होगा।

■ पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री लेखक की हैं, आवश्यक नहीं कि प्रकाशक इससे सहमत हो।

Isuri ka Faag Sahitya
Dr. Lokendra Singh Nagar

बुन्देलखण्ड में ईसुरी की फागों की लोकव्याप्ति ने फाग रचना को वाचिक साहित्य के पारम्परिक रूप की ही भाँति प्रतिष्ठित कर दिया है। सौंदर्य और श्रृंगार, नीति और आध्यात्म के इस विलक्षण रचनाकार में एक पूरे जनपद का सौंदर्यबोध और अभिव्यक्ति का सहज लेकिन चमत्कारिक कौशल दीखता है। बुन्देली की शक्ति और काव्य वैभव अपनी पूरी विविधता और परिष्कार के साथ ईसुरी की फागों में व्यक्त हुआ है।

बुन्देली क्षेत्र भौगोलिक और जनपदीय सांस्कृतिक क्षेत्र के रूप में भी बहुत विशाल है, इसलिए मौखिक साहित्य रूपों में बहुत विविधता भी है। इस अंचल के अनेक उपक्षेत्रों में कई दशकों तक संकलन का कार्य हो तभी इसका कुछ भाग संग्रह किया जा सकता है।

जहाँ तक प्रमाणिकता का प्रश्न है– अकादमी का यह मानना है कि एक लोक रचना की अपनी लोकव्याप्ति और पाठ भिन्नता की भी एक प्रामाणिकता होती है– उसका भी सम्मान होना चाहिये। आज बुन्देलखण्ड में ईसुरी के नाम से इतनी फागों का लोक प्रचलन है कि, इस विविधता और विस्तार पर बहुत आश्चर्य होता है, फिर भी भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से और पाठ सम्पादन की दृष्टि से श्री नागर का यह संग्रह, ईसुरी के पाठकों और प्रशंसकों को बेहतर लगेगा इसका हमें पूरा विश्वास है।

डॉ. कपिल तिवारी

सम्पादकीय

अनुक्रम

मंगलाचरण
विरह खण्ड-एक / नायिका विरह वर्णन / 14
विरह खण्ड-दो / नायक विरह वर्णन / 57
विरह खण्ड-तीन / रजउ वियोग / 66
श्रृँगार खण्ड-एक / नख-शिख वर्णन / 90
श्रृँगार खण्ड-दो / नायक पक्ष की विविध अनुभूतियाँ / 113
श्रृँगार खण्ड-तीन / नायिका पक्ष की विविध अनुभूतियाँ / 163
श्रृँगार खण्ड-चार / रजउ विषयक / 193
श्रृँगार खण्ड-पाँच / नेंन सेंन कीं / 238
सामाजिक / अनुभव की पुटरिया / 257
व्यक्तिगत / कवि की अपनी बातें / 286
भक्ति खण्ड-एक / सुमिरन संदर्भ / 324
भक्ति खण्ड-दो / राम विषयक / 345
भक्ति खण्ड-तीन / राधा-कृष्ण विषयक / 365
भक्ति खण्ड-चार / कुछ बानगी निर्गुनी / 413
परिशिष्ट / कुछ स्फुट रचनाएँ / 422

खाली

लोक का अभिप्राय संसार के समग्र से है। इसमें जड़-चेतन से लेकर संसार का सृजन एवं पलायन समाहित है। लोक में संसार की उत्पत्ति, विकास एवं इतिहास समायोजित है। लोक जगत का मूल है। लोक हमारी शिक्षा-सभ्यता, संस्कृति का एक मात्र आधार है। लोक के सम्बन्ध में हमारे मनीषी विद्वानों ने बड़े ग्रन्थ रचे हैं। लोक में ऐसी परम्परा है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। विश्व के देशों में लोक पर कालजयी शोध पूर्ण कार्य किया गया है। लोक समाज का पथ प्रदर्शक है, दर्पण है।

हम इस सत्य पर पूर्ण रूप से गौरव करते हैं कि हमारे लोक ने विश्व को दिशा दी है। महर्षि वाल्मीकि जी प्रथम मूल कवि हैं जिन्होंने देववाणी में वाल्मीकि रामायण को धरा पर अवतरित किया। उद्योग से डाकू थे। 'उल्टा नाम जपा जग जाना, वाल्मीकि भये ब्रह्म समाना' हजारों वर्षों तक उनके जाति कर्म को संजोकर रखने वाला लोक ही है।

मानव के विकास के सिद्धांत में डार्बिन ने जिस क्रम को अपनाया है निश्चय ही मनोवैज्ञानिक एवं व्यवहारिक भी है। मानव के वनों एवं गुफाओं में रहने और घुटने के बल चलने से लेकर ब्रह्म ज्ञान तक की स्थितियों में हजारों वर्षों की यात्रा है। मानव की आदिकाल की प्रमुख आवश्यकता क्षुधा पूर्ण करना रहा। क्षुधा ने उसे क्षुधापूर्ति हेतु बचाकर रखने की प्रवृत्ति दी। बचाने की इस प्रवृत्ति ने उसे उसकी रक्षा की प्रवृत्ति उत्पन्न की। इन दो आवश्यकताओं को लेकर मानव समाज ने विकास किया।

आदिकाल में क्षुधापूर्ति का साधन मात्र 'जीवहि जीव अधारा' था। मानव सबसे विकसित प्राणी था अस्तु उसने वनचर, जलचर एवं नभचर समुदाय को अपना हेतु बनाया। रक्षा का भाव स्थाई रूप ग्रहण करने लगा। क्वचित महाराजा मनु के काल तक मानव समाज वर्गों में विभक्त नहीं था। लेकिन इतना समुन्नत हो गया था कि वह ब्रह्म जैसे गूढ़ रहस्य को प्राप्त करने हेतु सन्नद्ध हो गया था। ब्रह्म को जानने के पूर्व तक सभी आखेटक थे- क्षत्रिय थे। मानव ने परिपूर्ण विलासिता के जीवन के पश्चात् ब्रह्म को जानने का प्रयास किया। मानव का जो वर्ग ब्रह्म खोज में उत्सुक हुआ-ब्रह्म को जाना, परिभाषित किया, वह मानव समाज पुरोहित से ब्राह्मण पद को

सुशोभित हुआ– 'ब्रह्म जानेति सो ब्राह्मणा'। उसी प्रकार जो लोक को जानता है वही विश्व को जानता है। हम जब महान हिन्दिया देश के लोक की बात करते हैं तो इस देश के सृजन एवं विकास में सर्वप्रथम तीन महाशक्तियान सिद्ध पुरुषों के दर्शन होते हैं– ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश।

क्वचित ब्रह्मा और विष्णु महान हिन्दिया की सीमा कैस्पियन सागर और सीरिया क्षेत्र से प्रशासन करते थे। सीरिया के सीर से ही क्षीर हुआ है। कैस्पियन सागर–मन्द्राचल पर्वत एवं सीरिया देश के क्षेत्र को मिलाकर क्षीर सागर कहते थे। शेषनाग और नाग जाति के मानव सीरिया के ही थे। नाग भगवान विष्णु की शैय्या है रक्षक भी। वही महेश या शिव के गले में भी ससम्मान लिपटे हैं। निश्चय ही विष्णु और महेश को एक ही धरती का होने का रहस्योद्‌घाटन करते हैं। महेश आदिदेव कहे जाते हैं। इसका सीधा सा अभिप्राय है विष्णु काल में साम्राज्य के विकास एवं व्यवस्था हेतु महेश ही उस धरती से हिन्दिया की धरती पर आये और उन्होंने अपना कर्मक्षेत्र हिमालय की गोद में स्थापित किया। यह सब लोक में है। हम अपना इतिहास भ्रमित सोच के साथ रच रहे हैं, पढ़ रहे हैं। आज इतिहास की वास्तविक स्थिति को जानने के लिये बहुत बड़े शोध की आवश्यकता है।

लोक साहित्य में हमारे देवी–देवताओं का महत्त्वपूर्ण स्थान है। हमारे धर्म ग्रन्थों में अवतारों का विवरण विद्यमान है। भगवान विष्णु के काल में ही तीन अवतार मान लिये गये हैं। विष्णु तो हैं ही वहीं नृसिंह और सूकर का स्वरूप भी अवतार की मान्यता प्राप्त कर चुके हैं। जबकि विष्णु भगवान ने ही इन छद्म रूपों को रखकर हिरण्यकश्यप और हिरनाक्ष दोनों भाइयों का वध किया था। ऐसा ही कूर्म अवतार आदि। लोक में इस प्रकार की त्रुटिपूर्ण भ्रान्तियाँ भी आदिकाल से चली आ रही हैं। लोक में सबसे बड़ा दुर्गुण देखने को मिला है कि कथा धार्मिक हो, ऐतिहासिक या सामाजिक इन पर इतने कठोर आवरण चढ़े हैं कि देश का पढ़ा लिखा समुदाय तक सत्य के पास नहीं पहुँच पाता। अशिक्षित समुदाय इनसे उबर नहीं पा रहा है। लोक जीवन, लोक साहित्य, लोकधर्म, लोक इतिहास, लोक संस्कृति का गहन शोधन अति आवश्यक है।

लोक इतिहास पर कन्हैयालाल मानिकलाल मुंशी लोकभाषा में लोककवि ईसुरी जिनकी बुन्देली चौकड़िया विधा ने देश भर में धूम मचाई है। मुंशी जी ने ईसुरी की समग्र रचनायें राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी, नेहरू जी और सरदार पटेल तक को सुनाई हैं।

महाकवि कालिदास, संत शिरोमणि तुलसी, सूर, केशव सभी लोक साहित्य की धरती पर खड़े है। फ्रायड हो या वात्स्यायन सभी ने लोक जीवन से अपनी अभिव्यक्ति दी है। श्रृँगार के क्षेत्र में सभी नायिकाएँ लोकजीवन से हैं।

देश के 1857 के महान स्वतन्त्रता संग्राम में लोकजीवन की नारियों का बलिदान अतुलनीय है। आज भी इस देश का पचासी प्रतिशत मानव समुदाय लोक वातावरण में लोक

जीवन जी रहा है।

मेरे विचार से वो सर्वोत्कृष्ट लोकजीवन ही था, जिसे हम सतयुग कहते हैं। जहाँ सत्य ही शिव था सुन्दर था। आज भी लोक ही सत्य है। इसमें रहकर ब्रिटिश साम्राज्य के अधिकतर विद्वान पदाधिकारियों ने लोक संस्कृति, जीवन व्यवहार, भाषा आदि पर कार्य किया है। जैसे डाउसन इलियट ने बुन्देलखण्ड की प्रथम बुन्देली वीर रस के कवि जगनिक की रचना आल्हा को शोध पूर्ण ढंग से संकलित करवाया, लिखवाया। इसी प्रकार ग्रियर्सन ने देश की लोक भाषा पर शोधपूर्ण कार्य कर उसे पुस्तक का स्वरूप प्रदान किया। ग्रियर्सन ने बड़े स्पष्ट ढंग में स्थानीय भाषाओं का वर्गीकरण कर कश्मीर की उत्तरी सीमा, (मध्यक्षेत्र या मध्यदेश) और दक्षिण की सीमा तक गुर्जरों की लोकभाषा गोजरी का प्रभाव दिखाया है। लोक भाषा में बृजी को भाषा का स्थान प्राप्त हो गया है लेकिन सत्य तो यही है कि बुन्देली का आंशिक परिवर्तित स्वरूप ही बृजभाषा है, मूल तो बुन्देली लोक भाषा ही है। श्री गुरू ग्रन्थ साहब में जो शबद या वाणी सन्तों ने संग्रहीत की है उनमें अधिकतर बुन्देली भाषा ही है या बुन्देली से पूरी तरह प्रभावित है। बुन्देली का बड़ा विषद एवं व्यापक क्षेत्र है। बुन्देली भाषा पर गुजरात एवं राजस्थानी भाषा गोजरी का समूचा प्रभाव परिलक्षित होता है।

मैं संक्षेप में यहाँ यह कहना चाहूँगा कि जिस पुनीत कार्य को विश्वविद्यालयों में किया जाना चाहिये वो कहीं नहीं हुआ, न हो रहा है। मैं पूरे विश्वास और सम्मान के साथ कहता हूँ कि लोक के शोधन का श्रेष्ठतम कार्य मध्यप्रदेश की संस्था 'आदिवासी लोक कला अकादमी' कर रही है। वह डॉ. कपिल तिवारी जी के अकथनीय कठोर श्रम से किया जा रहा है। विद्वानों और मनीषियों ने किसी निर्दिष्ट स्थान, भाषा, विधा के लिये व्यक्तिगत रूप में कार्य किया है। ग्रन्थ लिखे हैं। वहीं डॉ. तिवारी समग्र लोक जीवन को जीवन दे रहे हैं।

11.3.2004 **डॉ. लोकेन्द्र सिंह नागर**
रघुवंश नगर
दतिया (म.प्र.)

तानसेन की तान औ, तुलसी कृत कौ राग।
सोई या कलि काल में, कई 'ईसुरी' फाग॥

मंगलाचरन

मोरी राम–राम है भाई।
ऐसी असल बताई।
पैली राम उन गणपत खों,
जिननै बुद्ध बताई।
दूजी राम उन सकल सभा खों,
लइयो शीस नबाई।
खुसी रये जे डील 'ईसुरी',
आज सभा लगवाई।

असल = यथार्थ, पैली = प्रथम, जिनने = जिन्होंने, बुद्ध = बुद्धि, दूजी = द्वितीय, सकल = समस्त, सभा खों = सभा में उपस्थित जनों के प्रति, लइयो = लेना, नवाई = झुका लेना, डील = सदेह/सशरीर।

हे भाइयों! अकिञ्चन की ओर से राम–राम अर्थात् विनम्र प्रणाम है। यह औपचारिकता नहीं यथार्थ है। प्रथम प्रणाम बुद्धि के देने वाले विघ्न विनाशक गणेश के प्रति, द्वितीय अर्थात् उसके पश्चात् सभा में समुपस्थित समस्त विद्वत्‌जनों स्वजनों के प्रति शीश झुकाकर प्रणाम निवेदित है। कामना केवल इतनी है कि आप सभी सशरीर प्रसन्न रहें, जिसके कारण यह सुयोग प्राप्त हुआ और मैं (ईसुरी) आपकी सभा में उपस्थित हूँ।

विशेष :– मंगलाचरण परम्परा से हटकर है, गणेश वन्दना के पश्चात् कवि अपने श्रोताओं की वन्दना करता है। ऐसा अन्यत्र दुर्लभ है।

तड़फ तड़फ सो गई 'ईसुरी'
तीतुर बिना बटेरी।

विरह खण्ड -एक

नायिका विरह वर्णन

मारग आदी रात लौं हेरी।
छैल बिदरदी तेरी।
बेकल रई पपीहा जैसी,
कहाँ लगाई देरी।
भीतर से बाहर लौं आई,
दै–दै आई फेरी।
उठ–उठ भगी सेज सूनी सैं,
आँख लगी ना मोरी।
तड़फ–तड़फ सो गई 'ईसुरी,'
तीतुर बिना बटेरी।

मारग = पथ, आदी रात लौं = अर्ध रात्रि तक, हेरी = देखी, छैल = रसिक युवा, बिदरदी = बेपीर, बेकल रई = विकल रही, पपीहा = चातक, दै दै आई = देती रही, फेरी = चक्कर काटना, बटेरी =मादा तीतुर पक्षी।

अन्य लोगों ने ईसुरी को अवतारी कवि मानकर उनकी सर्जना को अलौकिकता से जोड़कर उसे चमत्कारिक कहा है जबकि ईसुरी प्रेम की अनुभूति के कवि थे। यह रचना उनके आरम्भिक काल की है जब वे किसी पर पहले–पहल आसक्त हुए परन्तु मिलन न हो सका। नायिका की विरह व्यथा का चित्रण करते हुए उन्होंने लिखा है कि – हे प्रिय! अर्ध रात्रि तक राह देखती रही। रसिक मन तुम बड़े बेपीर निकले। पपीहे के समान मैं विकल थी, न जाने कहाँ तुमने विलम्ब कर दिया? सूनी खाली शैय्या से मैं उठ – उठ कर भाग रही थी। मेरी आँखों से नींद गायब थी। अन्त में हताश होकर तड़पते हुए ऐसे सो गई मानो तीतुर अपनी मादा तीतुर (बटेरी) के लिए तड़प–तड़पकर सो जाती है।

विशेष :- कवि ने स्व-अनुभूति में ही नायिका की अनुभूति को अनुभव किया है। विरह व्यथा का एक मनोवैज्ञानिक चित्र सहज उभारा गया है। तीतुर नई उपमा है।

हमपै बैरिन बरसा छाई,
हमें बचा लो भाई।
चढ़कें अटा घटा ना देखें,
पटा देव अँगनाई।
बारादरी दौरियन में हो,
पवन न जानें पाई।
जे द्रुम कटा छटा फुल बगिया,
हटा देव हरयाई।
पिय जस गाय सुनाव न 'ईसुर'
जो जिय चाव भलाई।

हमपै = मुझ पर, बैरिन बरसा = शत्रु के रूप में वर्षा ऋतु, अटा = अट्टालिका, घटा = मेघ, पटा = पाट दो अर्थात् बन्द कर दो, अँगनाई = प्राङ्गण का खुलापन, बारादरी = खुला बरामदा, दौरियन = गवाक्षिकाएँ, पिय जस = प्रीतम का यशोगान, जिय = जीवन की।

विरह स्वयं में एक अग्नि है, फिर ग्रीष्म तपन से वह और भी द्विगुणित होती है। ऐसी स्थिति में पावस का आना मानो गर्म तवे पर ओस बिन्दु का पड़ना ही होता है, बल्कि वह विरहानल में घी का काम करती है। ईसुरी की विरहणी आषाढ़ के प्रथम दिन कालिदास की नायिका की तरह पावस से भयभीत हो उठती है जो अपना शत्रु मानकर रक्षा की बात कहती है। वह ऊँची अट्टालिका पर चढ़कर भी मेघ देखना नहीं चाहती, आँगन का खुलापन भी उसे सहन नहीं, वह तुरन्त द्वार बन्द कर घर में जाने की बात कहती है। खिड़कियों से, गवाक्षिकाओं से पावस की सुखद बयार को भी अन्दर आने से वह रोक देना चाहती है। पावस के संग आई हरीतिमा से उसे सख्त परहेज है। वृक्ष कटवाकर फिकवाना चाहती है तथा पुष्पवाटिका को छंटवा देना चाहती है। पिय का यशोगान सुन सकने की क्षमता भी अब नायिका में नहीं, इसीलिए जीवन के हित में पिय शब्द भी सुनने से लाचार है।

विशेष :- बुन्देली के कवि ईसुरी का चिन्तन पावस, मेघ, हरीतिमा और विरही की मानसिकता को लेकर संस्कृत के महाकवि कालिदास के कितने निकट है, जबकि ईसुरी विशेष शिक्षित नहीं थे। परन्तु मेघदूतम् के - 'मेघालो के भवति सुखिनोऽप्यन्यथा वृति चेता:' की समूची भावना इस छन्द में समाहित है।

प्रीतम विलम बिदेस रहे री,
नैंनन नीर बहे री।
पाकैं निबल अकेली मो खौं
अंग अनंग दहे री।
बागन बनन बंगलन बेलन,
कोयल सबद करे री।
'ईसुर' ऐसी विकल वाम भई,
सब सुख बिसर गए री।

प्रीतम = प्रियतम, विलम = बस जाना या रम जाना, अनंग=अग्नि, दहे री= प्रज्ज्वलित होती है, बागन = उद्यानों में, बनन = वन-उपवनों में, बंगलन = घरों में, बेलन = लताओं में, सबद = आवाज के अर्थ में, करेरी = करती है।

प्रियतमा विकल है, उसका प्रियतम परदेश में जाकर कहीं रम गया है, नैनों से अश्रुधार बह रही है। मुझे अकेली समझकर इस दुर्बलता का लाभ उठाकर शरीर को विरहानल ने दग्ध कर देने की ठान ली है। उद्यानों, वन-उपवनों, गृह द्वारों और लता कुँजों से कोयल का शब्द वितीर्ण करता है। ईसुरी कहते हैं कि विरहिणी की इस विकलता के कारण सभी सुख भूल चुके हैं।

विशेष :- पावस की ही भाँति वसन्त ऋतु में विरह वेदना का चित्रण लोक कवि ईसुरी कालिदास के समानान्तर करते हैं। यथा कालिदास ऋतुसंहार के छठें सर्ग में कह गए -

किं किंशुकै: शुकमुखच्छविभिर्त्र भिन्नं किं कर्णिकारकयुमैर्न कृतं नु दग्धम्।
यत्कोकिल: पुनरयं मधुरैवे योयि यूवां मन: सुवदनानिहितं निहन्ति।

कालिदास ने इस छन्द के माध्यम से विरही रसिक तन की जो मनोदशा प्रस्तुत की है। ईसुरी की अनुभूति उसके समरूप है।

जब से गये हमारे सइयाँ।
देस बिराने गुइयाँ॥
ना बिस्वास घरै आबे कौ,
करी फेर सुघ नइयाँ॥
जैसौ जौ दिल रात भीतरौ।

जानत रात गुसइयाँ।
ईसुर प्यास पपीहा कैसी,
लगी रात दिल मइयाँ।

सइयाँ = प्रियतम, विराने = पराये, गुइयाँ = हे सखी, ना बिस्वास = कोई भरोसा नहीं है, घरै आबे = घर आने का, फेर = पुन:, सुध = स्मरण करना, नइयाँ = नहीं, भीतरै = अन्दर, जानत रात = जानता रहता है, आस = आशा, लगी रात = लगी रहती है, दिल मइयाँ = हृदय के लिए।

विरहिणी नायिका कहती है – हे सखी! जबसे मेरे प्रियतम परदेश जा बसे हैं, तबसे कोई भरोसा नहीं रहा कि वे कभी घर भी आयेंगे, उन्होंने मेरा पुन: कोई स्मरण तक नहीं किया। मेरे हृदय के भीतर की स्थिति को राम ही जानता है। मेरी प्यास अब पपीहे की प्यास है, जो हृदय में लगी हुई है अर्थात् मेरे मन में प्रियतम रूपी स्वाति बूँद पाने की ललक है।

विशेष :- विरह वेदना में पपीहे की प्यास का प्रयोग अनूठा बन पड़ा है। पपीहा स्वाति बूँद चाहता है जबकि उसके आसपास पानी की कमी नहीं। ईसुरी की नायिका भी राह चलते रसिक मन की चाह न कर स्वाति बिन्दु स्वरूप निज प्रियतम के लिए तड़प रही है।

बागन भये बसन्त अवइयाँ,
ना जा बिदैसै सइयाँ।
पीरी लता छता भई पीरी,
पीरी लगत कलइयाँ
सूनी सेज नींद ना आवै,
विरहन गिनै तरइयाँ।
तलफत रात रैन दिन सजनी,
का है राम करइयाँ।
ईसुर कयें सजा दो इनखाँ,
परों तुमाई पइयाँ।

अवइयाँ = आने को है, बिदेसै = परदेश की ओर, पीरी लता = लता पीली पड़ गई, छता भई पीरी = छाती भी पीली पड़ गई, कलइयाँ = कर की कलाहियाँ, गिनै = गणना करती हो, तरइयाँ = तारे, करइयाँ = करना चाहता है, कयें = कहते हैं, सजा दो = दण्ड दो, इनखाँ = इनको, परों = पड़ती हूँ, पइयाँ = चरण।

शिशिर ऋतु को जैसे-तैसे सह लेने के पश्चात् ईसुरी की नायिका वसन्त ऋतु के आगमन में विह्वल हो कहती है – उद्यानों में अब वसन्त ऋतु आने को है, अतः हे प्रियतम! अब तुम परदेश गमन मत करो। जिस प्रकार यह लता पीली पड़ गई है, वैसे ही इस शरीर का वसन्ती रंग हो गया है। ऐसे में सूनी सेज पर भला नींद किसको आ सकेगी, तब विरहिणी तारे ही गिन-गिनकर रात गुजारेगी, रात दिन तड़पती ही रहेगी। न जाने राम क्या करने वाला है, ईसुरी के शब्दों में इन परिस्थितियों को आप दण्डित कीजिये, मैं आपके चरण छूती हूँ, कृपया न जायें।

विशेष : वसन्त की पियराई को छाती में दर्शाना स्वयं में एक अनूठी कविता है जो अनकहे ही अपनी कथा आप कह देती है।

अब रित आई बसन्त बहारन,
पान फूल फल डारन।
बागन, बनन, बंगलन-बेलन,
बीथन बगर बजारन।
हारन और पहारन-पारन,
धाम धवल जल धारन।
तपसी, कुटिल कन्दरन, खोरन,
गई बैराग बिगारन।
आये बौर मँजीरन ऊपर,
लगे भौंर गुंजारन।
चहत अतीत प्रीत धारी की,
हा हा करत हजारन।
'ईसुर' कन्त अन्त हैं जिनके,
तिनें देत दुख दारुन।

रित = ऋतु, बहारन = बहारों में, डारन = शाखाओं में, बीथन = वीथिकाओं में, बगर = मैदानों में, नजारन = हाट बाजारों में, हारन = खेतों में, पहारन = पर्वतों पर, पारन = फूलों पर, कन्दरन = कन्दराओं में, खोरन = गली कूचों में, बिगारन = बिगाड़ने हेतु, मँजीरन = मंजरियाँ, गुंजारन = गूँजते हुए, अतीत = अत्यधिक, हा हा करत = निहोरे करना, हजारन = सहस्त्रों, कन्त = प्रियतम, अन्त = अन्यत्र, तिनें = उनको, दारुन = बहुत।

प्रिय, बसन्त ऋतु का आगमन हो चुका है। बहारों में पल्लव, पुष्पों से आच्छादित लताओं

में, वीथिकाओं में, मैदानों में, बाजार–हाटों में, खेतों में, पहाड़ों में, कहाँ वसन्त के दर्शन नहीं हो रहे हैं? यह कुटिल गली कूचों से निकलकर सुदूर कन्दराओं में तप कर रहे तपस्वियों के वैराग्य को भी चूर करने को जा पहुँचती है। देखो न वहाँ मंजरियाँ बौर उठीं और भ्रमर गुंजा, ऐसे में प्रियतमा की कुछ अधिक ही प्रीति अपेक्षित है तभी तो सहस्त्रों प्रियतम अपनी–अपनी प्रियतमा के निहोरे करते नजर आ रहे हैं। परन्तु (निश्वास छोड़कर)जिनके प्रियतम ही बाहर गए हैं उन्हें यह ऋतु विशेष दुखदायी है।

विशेष **:** कालिदास ने भी ऐसी स्थिति में यही कहा – 'प्रियजन रहितानां चित्त संताप हेतु' प्रकृति एवं मानसिकता का परस्पर तादात्म्य स्थापित कर वसन्त की अनूठी छवि कवि ने उभारी है।

बिरहन लगी बसन्त मनावन।
ग्रह आये मनभावन।
लागी सजन आभूषन–भूषन,
बसन सुगन्ध बसावन।
अब रितराज भये सुखदाता,
अंग अनंग जगावन।
कोकिल कीर भीर भौरन की,
मोरन सुखद रसावन।
मिल बृजलाल आस भइ 'ईसुर'
सब रंग धूर उड़ावन।

मनावन = मनाने, सजन = श्रृँगार करने के अर्थ में, बसावन = समाहित करना, जगावन = जागृत करने के अर्थ में।

जब बावरी कर देने वाली वसन्त ऋतु आ ही गई है तो विरहिणी अपने ढंग से वसन्त मना रही है। मनभावन वसन्त उसके घर में आया है वह आभूषणों और भूषणों से सोलह श्रृँगार करती है, वस्त्रों में सुगन्ध प्रवाहित करती है। क्योंकि ऋतुपति अब उसके लिए दुखदाई नहीं सुखदाई है। अंग–अंग में अनंग को जागृत करने पर कोकिल तोते और भ्रमरों के समूह मयूरों सहित आकर सुखद रस घोल रहे हैं। क्योंकि ब्रज के लाल अर्थात् कामरूप भगवान् कृष्ण आशा के अनुरूप होली में आ मिलें। उड़ती हुई धूल भी अब रंग के समान लगती है। वसन्त ही जब कन्त हो जाए या कन्त ही वसन्त हो जाए तब ऐसी ही अनुभूति उभर सकती है।

विशेष : रचना में सजन शब्द का श्लेषार्थक प्रयोग हुआ है। सजन का सीधा अर्थ श्रृँगार करने से है परन्तु विरह में वसन्त को सुखद बिन्दु तक पहुँचाने वाले साजन अर्थात् उसके प्रियतम की ध्वनि भी इस सजन शब्द में ध्वनित है। तात्पर्य यह कि लोक के व्याकरण से ऊपर उठकर शिष्ट साहित्य की परिधि तक ईसुरी सहज पहुँच गए हैं।

सपनौं आदी रात को आवैं।
का लौं मन बिसराबैं।
निस दिन चर्चा करै तुमारी,
सोअत में बरराबैं।
जौ तन हो गऔ सूक टटेरौ,
न्यारे हाड़ दिखावै।
'ईसुर' कात तुमारे होकें,
कब की के हो जावैं।

सपने = स्वप्न, आदी = अर्ध, का लौं = कहाँ तक, बिसराबैं = भुलावें, सोअत = सोते हुए नींद में, बरराबैं= स्वप्न में देखें, सूक = सूखकर, टटेरौ=सरकण्डा, न्यारे = पृथक से, हाड़ = अस्थि पंजर, की के = किसके।

अर्धरात्रि में स्वप्न आते हैं, उन्हें मन कहाँ तक भुलाए? नित्य प्रति तुम्हारी ही तो चर्चाएँ होती हैं, अत: सो जाने पर वही सब स्वप्न में दिखाई देता है। मेरी देह सूखकर टटेरा यानी सरकंडा हो गई है। अस्थि पंजर निकल आया है। अब तुम ही बताओ मैं तुम्हारी हूँ, तुम्हें छोड़कर अन्य किसकी हो सकती हूँ?

नैना निरमोही नै मोये।
दरस बिना दिन खोये।
प्रीत के दाग करेजे सालें,
लै - लै साबन धोये।
मैंने अपने जान भरेसें,
करके कैऊ अनोये।
कैसें छूटै संग 'ईसुरी'
एक पलंग पै सोये।

नैना= नयन, निरमोही = निर्मोही (मोह रहित), मोये = मोह लिये। दरस = दर्शन, खोये = खो दिए, करेजे = हृदय में, सालें = दुख देते हैं, जान भरेसें = जानते हुए भरसक, संग = साथ।

उस निर्मोही ने मेरे नयनों को मोह लिया है जिसके दर्शन के बगैर इतने दिन खो चुकी हूँ। उसकी प्रीति का अमिट दाग लग चुका है, जो हृदय में प्रतिपल पीड़ा दे रहा है। उस दाग को साबुन लगाकर धोया परन्तु नहीं छूटा। अपनी समझ में तो मैंने भरसक उसे मिटाने अथवा भूलने के कई प्रकार से विफल प्रयास किये। परन्तु, प्रेम का दाग नहीं छूटा। ईसुरी कहते हैं – यह साथ छूटना कैसे संभव है? जब एक ही शैय्या पर हम अभिसार कर चुके हैं।

विशेष : निर्मोही जिसे मोह नहीं लेकिन मोह लिया नयनों को कितना विरोधाभास है? रचनाकार कबीर के निकट जा पहुँचा – 'मल मल धोया दाग न छूटा ज्ञान का साबुन मोल लिया, मोरी चुनरी में पर गयौ दाग पिया।' वही दाग कवि ईसुरी की नायिका ने लगा लिया है।

अखियाँ मिन्त मिलन खाँ तरसें।
देखें कबें नजर सें।
घर से बाहर जान न पावै,
सास जेठ के डरसें।
पापी छैल पास ना आवै,
भईं चार छै बरसें।
ईसुर बे दिन कबै लियाहो,
बे जेमैं हम परसें।

मिन्त = मीत, मिलन खाँ=मिलने के लिए, कबै = कब, डरसें = भयवश, छैल = रसिक युवा अर्थात् नायक, लियाहो = लाओगे, जेमैं = भोजन करें, परसें = परोसना।

मेरे नयन अपने मीत से मिलने को तरस रहे हैं। उन्हें कब दृष्टि भर के देखूँ, परन्तु मैं घर से बाहर निकल नहीं सकती। सासू माँ, जेठ जी आदि का भय है। प्रियतम ऐसे पापी हैं अर्थात् निष्ठुर हैं कि निकट आने का नाम ही नहीं लेने देते। चार–छ: वर्ष बीत चुके हैं। हे भगवान्! वह दिन कब दिखाओगे जब वे प्रेमपूर्वक भोजन कर रहे होंगे और मैं परोस रही हूँगी।

विशेष : कवि ईसुरी ने रचना में अपनी छाप श्लेषार्थक लगाकर, छककर जिमाने और परोसने की बात कही है।

अखियाँ मीत बिगर ना मानैं।
मनै कपट की ठानैं।
छैकें खोर मिन्त के लानैं,
दो बातें मोय कानैं।
लम्बी खोर दूर लौ तकतीं,
मिलहैं कौन ठिकानैं।
ईसुर कात दरस दो जल्दी
नईं भए जात दिमाने।

बिगर = बगैर, मनै = मन में, छेंके = रोके हुए, के लाने = के लिए, खोर = छोटी सी गली, दूर लों = दूर तक, तकतीं = देखती हैं, ठिकाने = स्थान पर, दिमाने = विक्षिप्त।

ये नयन अपने मीत अर्थात् प्रेमी के बगैर नहीं रह सकेंगे। मन में कपट करने की जो ठान ली है। प्रिय के लिए गली का कोना रोके हुए हैं, अपने मित्र से दो बातें कर लेने की आतुरता है। गली लम्बी और पतली है। उसी गली को टकटकी लगाकर दूर तक उनकी राह देखती हूँ। कब और किस स्थान पर प्रियतम मिलेंगे। ईसुरी कहते हैं हे भगवान्! शीघ्र ही दर्शन करवाओ, अन्यथा वियोग में विक्षिप्त हो जाऊँगी।

विशेष : मीरा की स्थिति – 'ऐरी मैं तो प्रेम दिवानी' इस रचना में स्पष्ट होती है।

जे दिन गये तुमें बिन देखैं।
ते काँ पावी लेखैं।
मिलती नइयाँ प्रान प्यारी,
लिखी करम कीं रेखैं।
भारी मोह जोन बिध मारी,
माँझ साल में मेखैं।
जे दुख सये तुमारे पीछे,
अबका देय सरेखैं।
'ईसुर' नइया पार लगा दो,
अपने हातन खेकैं।

जे दिन = यह दिन, ते काँ = उन्हें कहाँ, पावी = पाऊँ, करम = कर्म, रेखैं = रेखाएँ, भारी = अधिक, जोन = जिस, बिध = विधि से, माँझ = के अन्दर अर्थ में, मेखैं = खूंटियाँ / कीले, सये = सहन किये, देय

= देह, सरेखैं = खिसकाएँ अर्थात् हटाएँ, हातन = हाथों से।

तुम्हें देखे बगैर इतने दिन निकल गए, तुम्हें कहाँ पाऊँ? यही गणित लगाती रहती हूँ। हे प्राण प्रिय! कर्म की रेखाएँ अर्थात् भाग्य का लिखा अमिट है, मिट नहीं सकता। जिस कारण यह मोह और भी भारी हो रहा है। लगता है अपने दिल दिमाग के अन्दर जैसे (खूंटियाँ) यानी कीलें ही ठोंक ली हैं। यह पीड़ा तुम्हारे कारण ही तो सह रही हूँ। अतः अब मार्ग से फिसलना मुश्किल है। अपने को कैसे सदेह हटाऊँ। अब तो तुम्ही मेरी डगमग नौका की पतवार अपने हाथ में सम्हालकर मुझे अपना लो, मेरी नैया पार लगा दो। यही श्रेयस्कर है।

तुम बिन तरस रये दृग दोई।
कबैं मिलौ निरमोई।
ऐसौ कठिन करौ मन तुमनें,
जैसौ करै न कोई।
हम तो मिन्त तुमारे लानैं,
लाज सरम सब खोई।
अपने-अपने सब मतलब कें,
मानस बड़ौ अनोई।
'ईसुर' जियो बाहु के बल से,
करम लिखी सो होई।

रये = रहे हैं, दृग दोई = दोनों नयन, कबै = कब, मिलौ = मिलोगे, सरम = लज्जा, अनोई = अनोखा है।

विरह की पराकाष्ठा में मन की टूटन इस द्वन्द्व में है - तुम्हारे लिए मेरे दोनों नयन तरसते हैं। हे निर्मोही प्रियतम! तुम कब मिलोगे? हे मेरे मन! तुमने इतनी कठिन स्थिति उत्पन्न की है जैसी कोई कभी नहीं कर सकता। जबकि हे मीत। मैंने तुम्हारे लिए ही समस्त लोक लाज संकोच आदि को खो दिया है परन्तु मुझसे तुम्हें क्या? अपना-अपना मतलब ही सब सोचते हैं, आदमी बड़ा अजीब है। अपने ही बलबूते पर जीता है जो भाग्य में लिखा है, उसे कौन मिटा सकता है?

बैरी बन आऔ रंगरेजा।
मदन भूप नै भेजा।

मनमें बिधे बसन्ती झोका,
रंग गव कमल करेजा।
सुख तौ दऔ सोत कुबजा खों,
दुख सब मैंईं अंगेजा।
बन भये कुंज बगीचा पीरे,
पीरे पान बरेजा।
कात 'ईसुरी' विरहिन व्याकुल,
बिन बालम की सेजा।

रंगरेजा = वस्त्र रंगने वाली एक विशिष्ट जाति – रंगरेज, परन्तु रंग और रेजा की सन्धि विच्छेद कर देने से हमारा ही अर्थ स्पष्ट होगा रंग + रेजा अर्थात् कंचुकी, झोका = सुखद वायु के झकोरे, करेजा = शाब्दिक अर्थ कलेजे से है परन्तु यहाँ हृदय के अर्थ में कवि ने प्रयोग किया है। अंगेजा = अंक में भर लिया अर्थात् समूचा समेट लिया, बरेजा = पान का खेत, बालम = प्रियतम, सेजा = शैय्या।

बसन्त में विरह की मनोदशा के संदर्भ में ईसुरी कहते हैं – रंग चढ़ाने वाला शत्रु रंगरेज वसन्त आ गया है, जिसे सम्राट कामदेव ने ही भेजा है। वसन्ती वायु के सुखद झोंके हृदय में चुभते चले जा रहे हैं। कमल के समान कोरा जिस पर पानी की बूँद भी नहीं ठहरती ऐसा हृदय (करेजे को बुन्देली की बोलचाल में हृदय ही कहा जाता है) भी वसन्ती रंग से अछूता न रह सका। नायिका की पीड़ा यही है कि सौत कुब्जा ने इस वसन्त में सुख प्राप्त किया है और उसने सर्वाङ्ग दुःख से ही आलिंगन कर उसे स्वयं में समेट लिया है। वन, उपवन, उद्यान और निकुंज ही नहीं, पान के खेत भी पीले पड़ गए हैं अर्थात् यह वसन्ती रंग सर्वव्यापी हो गया है। वह कैसे बच सकती है? ईसुरी इतना ही कहते हैं कि अब तो प्रियतम के बिना स्वयं शैय्या ही व्याकुल हो रही है। विरहिणी की तो बात क्या कहें?

विशेष : लोक परम्परा से ऊपर उठकर ईसुरी की यह रचना शब्दों में चमत्कार उत्पन्न करती है।

जिनके भर गये भवन परागन।
लगै आग सौ आँगन।
त्रिविध समीर तुवक के तोफा,
लगे चहूँ दिस दागन।
सुद समसेर खिची जा जिनपै
बचै पिया के भागन।

सुख कौ मूर सरासन लीनै,
सुमन साध सर लागन।
बिन घर कन्त बसन्त 'ईसुरी'
परे बादसा बागन॥

त्रिविध = तीन प्रकार से, समीर = वायु, तुवक = बन्दूक के अर्थ में, तोफा = भेंट, दागन = दागना, सुद समसेर = सुधियों की तलवार, सुख कौ मूर = सुख का मूल, सरासन = यथार्थ में, सुमन साध सर, अर्थात् सुमनों ने तीर संधान किया, बादसा = सम्राट के अर्थ में है परन्तु यहाँ सम्राट कौन है जो नहीं है वही।

वसन्त ऋतु में प्रियतम नहीं हैं। फूलों में पराग आ गये हैं, जो विरह अनल से अंग-अंग दग्ध कर रहे हैं। दूसरा अर्थ जिनके भरे-पूरे भवन के प्राँगण अग्नि से तपित हैं, क्योंकि वे पराए आँगन में रमे हुए हैं। यानी किसी और के प्रेम में पड़ गये हैं। ऐसे में वायु के त्रिविध झोंके (सतोगुणी, तमोगुणी और रजोगुणी) मानो बन्दूकें दागकर एक विशेष भेंट दे रहे हैं, जिससे चारों दिशाएँ प्रभावित हैं। एक तो चारों ओर से बन्दूकों की धाँय-धाँय करते हुए बसन्त का आक्रमण है। उधर सुधियों की नंगी तलवारें सिर पर ही लटक रही हैं। ऐसे में कौन विरहिणी होगी, जो इन प्रहारों से सुरक्षित रह सकेगी। प्रियतम के भाग्य से ही बच जाए तो बात और है अथवा प्रियतम के घर से चले जाये तो ही ठीक है। सुख का जो मूल है, वह यथार्थ में इस नए सुरभित सुमनों रूपी मदन बाणों के लगने में ही है। ईसुरी कहते हैं - यह वसन्त रूपी सम्राट यानी बादशाह, बाग-बगीचों में बिखरा पड़ा हुआ है, इधर बिना कन्त के वसन्त घर में घुस आया है।

विशेष : बसन्त का चारों ओर से फौजी आक्रमण दर्शाकर ईसुरी कालिदास के निकट पहुँच गए हैं। निश्चय ही ईसुरी कालिदास की शास्त्रीय अभिव्यक्ति के समानान्तर हैं। लोक साहित्य में इतना पैनापन दुर्लभ होता है।

मद अब देत करेजे जारैं।
आई बसन्त बहारैं।
सीतल पवन लगत है ऐसी,
मनौं अगन की झारैं।
बोल कोकला लगे तीर से
लेवै प्रान निकारैं।
आमन मौर झौर के ऊपर
भौंर करत गुनजारैं।

'ईसुर' पाती लिखौ बालम खों,
घर खौं बेग पधारें।

करेजे = हृदय के अर्थ में, जारें = दग्ध करते हैं, झारें = लपटें, मौर = आम की मंजरी, प्रीतम = प्रियतम, बेग = शीघ्र।

वसन्त के आगमन पर ईसुरी की नायिका कहती है – मद मेरे हृदय को दग्ध कर रहा है क्योंकि वसन्त की बहारें जो आ गई हैं। शीतल वायु तो अग्नि की लपटों के समान है। ऊपर से कोयल के बोल अस्त्र-शस्त्र से कम नहीं लगते, जो मेरे प्राण ही लिए ले रहे हैं। आमों में मंजरियाँ फूल रही हैं, जिन पर भ्रमर गुञ्जार करते हैं। अत: ऐसे में प्रियतम को पत्र लिख भेजो कि वे घर के लिए शीघ्र पधारें।

विशेष : ईसुरी ने यहाँ विरहिणी द्वारा प्रियतम को पत्र लिख भेजने की बात कहकर रचना के माध्यम से सूर के भ्रमर गीत का स्मरण करवा दिया है।

यारी बुरइ होत बीमारी।
करौ कोउ ना यारी।
बिछुरन की पीरन के मारें,
दौहरी पर गइ नारी।
जारन कैसी झोरी हो गइ,
देय साँवरी कारी।
चुरत भटा सौ रात करेजौ
आग विरह की जारी।
तुम तौ दूर बने रऔ 'ईसुर'
जा भइ दसा हमारी।

यारी = मैत्री सीधे अर्थ में, परन्तु यारी यहाँ एक प्रेमी-प्रेमिका की लागी लगन के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। बिछुरन = बिछोह, पीरन = पीड़ाओं, दौहरी = दो-दो प्रकार से, जारन= जलन, झोरी-झुलसी हुई, देय = देह, साँवरी कारी = श्यामल काले रंग की, चुरत = उबलता हुआ अथवा भुनता हुआ, भटा सौ = बैगन की भाँति, जारी = जलाई, जा भइ = यह हुई।

दोस्ती बहुत बुरी बीमारी है। कोई भी कभी ऐसी दोस्ती न करना अर्थात् प्रीत न लगाना। क्योंकि प्रीति लगाने के पश्चात् जब विछोह होता है तो पीड़ाओं के कारण स्त्री को दोहरी यातनाओं का सामना करते हुए क्षीण होना पड़ता है। जलन से झुलसन आती है, देह श्यामल हो

जाती है। हृदय बेंगन की भाँति भीतर ही भीतर भुन रहा होता है, ऐसी विरह अग्नि प्रज्ज्वलित होती है। तब वह नायक से कहती है कि तुम तो दूर ही बने रहो, तुम बिन मेरी यह दशा हो गई है।

विशेष : 'चुरत भटा सौ रात करेजौ' की अभिव्यक्ति अनकहे बहुत कुछ कहने में समर्थ है।

अब ना होबी यार काऊ के।
जनम भरे खौं सीके।
नेकी करी गई चूले में,
जे फल पाय बदी के।
ई सैं भले अकेले साजे,
बिना यार के नीके।
अब मानुस ना करियो 'ईसुर'
पथरा राम नदी के।

होबी = होंगे, यार = मीत, सीके = सीख लिया, बदी = बुराई, साजे = ठीक है, नीके = अच्छे, पथरा = पाषाण।

मैं अब किसी की मीत न बनूँगी अर्थात् प्रीत न करुँगी। यह शिक्षा जन्म भर के लिए मिली है। नेकी के करने से बुराई ही अन्त में प्राप्त हुई। किया कराया सब चूल्हे की भाड़ में चला गया है। इससे तो अकेली ही ठीक थी, बगैर मीत अर्थात् प्रियतम के ही अच्छी थी। हे भगवान्! मुझे मनुष्य योनि मत देना (क्योंकि वह बेपीर होती है) इससे अच्छा तो मुझे नदी का पत्थर ही बना देना।

अँखियाँ जब काहू सों लगतीं।
सब-सब रातन जगतीं।
आदी रात सेज के ऊपर,
पके खता सीं दगतीं।
छिपतीं नईं छिपायें तनकऊ,
उसनींदी सी भगती।

जाँ हो आवत – जात यार बे,
बेई गलियाँ तकती।
ऐसौ हाल होत है 'ईसुर'
पलक न पल भर दबतीं।

रातन = रात्रि के समय, खता = बूण/फोड़ा, दगती = दग्ध होती, छिपायें = छिपाने से, तनकऊ = तनिक भी, उसनींदी = अर्ध निद्रित सी, भगती = भगती है अर्थात् चंचल रहती हैं। वेई = वो ही, गलियाँ = मार्ग, तकती = देखती है, दबती = दबाती हैं।

यह रचना उन दिनों की प्रतीत होती है जब ईसुरी ने पहले पहल कोई चोट अथवा धोखा खाया होगा और उनके भीतर कुछ कहने की बेचैनी हुई होगी। किसी की याद में कई रातें जागकर काटी होंगी। किसी से यदि नेह लग जाएँ तो पूरी की पूरी रातें जागकर ही कटती हैं। अर्धरात्रि में शैय्या पर पड़े रहने पर आँखों में पके हुए ब्रूण (फोड़े) के समान जलन भरी पीड़ा होती है। आँखों की ऐसी स्थिति छिपाने से भी नहीं छिपती, आँखें अर्ध निद्रित स्थिति में चंचल रहती है। जिन मार्गों से प्रियतम का आना जाना प्राय: हुआ करता है, बस उन्हीं मार्गों पर वे आँखें केन्द्रित रहती हैं। ईसुरी कहते हैं ऐसी स्थिति हो जाती है कि पल भर के लिए पलक बन्द नहीं हो पाते।

निस दिन तरस रये दिन पाये।
की खों बात सुनायें।
मौ से कातन लाज लगत है,
नीची होत मंगाये।
कैसे काम चलै ई बिरियाँ,
मौ बोली सरकायें।
विलग होत जौ हिरदौ 'ईसुर'
बिना बात खुदयायें।

निस दिन = नित्य प्रति, तरस रये = तरसते हैं, दिन पाये = दिन प्राप्त कर, की खों = किसको, कातन = कहते हुए, लाज = लज्जा, बिरियाँ = बेला/समय, सरकायें = खिसकायें, हिरदौ = हृदय, खुदयायें = कुरेदते हुए।

ईसुरी अनुभूतियों के कवि हैं। इस रचना में एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि चोट खाई हुई स्थिति को स्वयं अपने मुँह से व्यक्त करते नहीं बनता और व्यक्त किए बगैर एक बोझ की

अनुभूति साथ रहती है। बस इसी परिस्थिति का सहज चित्रण ईसुरी ने किया है – नित्य प्रति जब दिन आता है तो तरस खाकर रह जाना पड़ता है कि आखिर अपनी बात किससे कहूँ? मुख से स्वयं कहते हुए लज्जा भी तो आती है, क्योंकि उससे मेरी ही नीची यानी बुराई होगी। अत: ऐसी बेला में कैसे काम चले, जब मुख से शब्द बोली के रूप में खिसकने को आतुर हैं। बात को कुरेदे बगैर हृदय मुझसे विलग होता सा जान पड़ रहा है।

विशेष : स्थिति स्पष्ट नहीं की गई किन्तु पूरी रचना पढ़ने से स्थिति छिपी नहीं रह सकती। इससे बढ़कर व्यञ्जना शक्ति का उदाहरण कहाँ मिलेगा।

नेहा निरमोही टो डारौ।
तनक न दरद बिचारौ।
दै पठाई पान की बिरियाँ,
और जरे पै जारौ।
कै पठाई सोच ना करियो,
विष दे कायना मारौ।
झूठी पाती लिखी गमन की,
और मरे पै मारौ।
'ईसुर' जेई भलाई कीनी,
भऔ करेजौ कारौ।

नेहा = प्रेम/प्रीति, टो डारौ = तोड़ दिया, दरद = पीड़ा, बिचारौ = विचार किया, दै पठाई = दे भेजी, बिरियाँ = बीड़ा के अर्थ में, जारौ = जलाया, करियो = करना, कायना = क्यों नहीं, गमन की = जाने की।

प्रीति उस निर्मोही ने ही तोड़ दी है, मेरी तनिक भी पीड़ा का ध्यान नहीं दिया। स्वयं तो न आया, दूर से ही पान का बीड़ा भेजकर जले को और जलाया है। अथवा बीड़ा भेजकर कहा है कि चिन्ता मत करना। इससे तो अच्छा था विष देकर ही मार डाला होता। मिथ्या पत्र लिखकर परदेस चले जाने की बात लिखकर मरे हुए को और मार डाला। उन्होंने मेरे साथ यही भलाई की है कि मेरा हृदय दग्ध कर दिया है।

विशेष :– जले पर जलाना, विष दे मारना, मरे पर मारना, कलेजा काला करना मुहावरों का सटीक प्रयोग हुआ है।

अपने देख यार खौं लैबी।
पानी के मिस जैबी।
जो बे कये सोउ सुन लेबी,
अपने जी की कैबी।
आये नई दिना चारक सें,
जुड़त उरानौ देवी।
तजबी लाज सरम सब कुल की,
घूंगट खोल बतैबी।
'ईसुर' ऐसी बजुर जनिन खौं
काँलो कै डर खैबी।

यार खौं = मीत को, लैबी = लूँगी, जैबी = जाऊँगी, जी को = हृदय की, कैबी = कहूँगी, चारक से = चार (दिनों) से, जुड़त = मिलने पर, उरानौ = उलहना, दैबी = दूँगी, तजनी = तज दूँगी, बतैबी = बताऊँगी, बजुर = वज्ज, जनिन कौ = लोगों का, काँलो = कहाँ तक, खैबी = खाऊँगी।

पानी पिलाने के लिए अर्थात् बहाना करके जाऊँगी और अपने मीत को देख लूँगी। वे जो कुछ भी कहेंगे सो सब सुन लूँगी और अपने हृदय की बात जरूर कहूँगी। लगभग चार दिन से वे आए भी तो नहीं हैं, मिलते ही उलाहना दूँगी। लज्जा, शर्म, संकोच एवं कुल मर्यादा ताक में रखकर घूँघट खोलकर ही बताऊँगी। ऐसे वज्र अर्थात् निष्ठुर लोगों से कहाँ तक भय खाती रहूँगी।

बिछुरन भइ यार भऔ मरबौ।
छोड़ौ गलियन फिरबौ।
छोड़ दये असनान तलन के,
छोड़ौ पनियाँ भरबौ।
छोड़ दये सिनगार अभूषन,
छोड़ौ सिजियाँ परबौ।
कात 'ईसुरी' कैसें बनहै,
बनें न घर से कड़बौं।

बिछुरन = विछोह, मरबौ = मरना, गलियन = मार्गों में, फिरबौ = घूमना फिरना, असनान = स्नान, तलन = सरोवरों, पनिया भरबौ = पानी भरना, सिनगार = श्रृँगार, अभूषन = आभूषण, सिजियाँ = शैय्या,

परबौ = सोना, कात = कहते हैं, कड़बो = निकलना।

मेरे मीत! तुमसे विछोह तो मेरे लिए मरना हो गया, मैंने इधर-उधर गली गलियारों में आना-जाना ही छोड़ दिया। अब तो सरोवर पर स्नान करने भी नहीं जाती और न ही पानी भरने पनघट पर जाती हूँ। श्रृँगार एवं आभूषणों से भी विरक्ति हो गई है। अब मैं सेज पर अर्थात् पलंग पर भी नहीं सोती। ईसुरी कहते हैं - बात कैसे बनेगी, अब तो मुझसे घर से निकलते भी नहीं बनता।

तुमने मोह टोर दऔ सइयाँ।
खबर हमारी नइयाँ।
कोंचन में हो निबकन लागीं,
चुरियन छोड़ी बैयाँ।
सूकी देह छिपुरिया हो रई,
हो गए प्रान चलैयाँ।
जे पापिन ना सूखीं अंखियाँ,
भर भर देत तलैंया
उने मिला दो हमें ईसुरी
लाग लाग के पैंया।

टोर = तोड़ना, दऔ = दिया, सइयाँ = प्रियतम, नइयाँ = नहीं है, कोंचन = कलाइयों, निबकन = निकलने, चुरियन = चूड़ियों में, बैंया = बाहें अर्थात् हाथ, सूकी = सूख गई, छिपुरिया=सीपी, चलैया = चलने को है, तलैयाँ = डबाडबा आने के अर्थ में, पैंया = पैर।

हे प्रियतम! तुमने तो मोह ही तोड़ दिया, अब तक मेरी सुधि नहीं ली। विरह में सूखकर मैं सीपी के समान क्षीण हो गई, मेरे हाथ की चूड़ियाँ ढीली होकर कलाइयों से बाहर निकली पड़ रही हैं। चूड़ियाँ जो मेरा हाथ थामे हैं वे ही हाथ छोड़ रही हैं (मैं भयभीत हूँ)। लेकिन इन नयनों ने न जाने कौन सा पाप किया है जो नहीं सूखते। इनमें तलैया भर-भर आती हैं अर्थात् यह डबडबाए ही रहते हैं। हे भगवान! अब तो प्रियतम से मिला दो। मैं बार-बार चरण पकड़ती हूँ, निहोरे करती हूँ।

विशेष : विरह की स्थिति में कालिदास के मेघदूत के नायक के भी स्वर्ण चूड़े ढीले हो जाते हैं। ईसुरी की नायिका का वर्णन भी कुछ ऐसा ही है। यह स्थिति कालिदास के नायक के साथ गुजरती है जबकि ईसुरी की नायिका के साथ न केवल चूड़ियाँ ढीली होकर कलाइयों से

खिसक रही हैं। वरन् चूरियन छोड़ीं बहियाँ चूड़ियाँ सुहाग का प्रतीक हैं। सुहाग जिस प्रीतम से है उसने बाँह पकड़कर बीच में ही छोड़ दिया है। यहाँ ईसुरी कालिदास से दो कदम आगे प्रतीत हो रहे हैं।

करती मैं ताबीज तुमारौ,
हो तौ यार हमारौ।
राती रोज गरे में डारें,
जातौ नई उतारौ।
लुटतौ मजा रोज जोवन कौ,
झरतौ रंग - फुआरौ।
घटतौ नई सनेव नेव जब,
खुलतौ दिल कौ द्वारौ।
तलप तलप कर राती ईसुर,
निभतौ नेव उगारौ।

ताबीज = टोना, राती = रहती, रोज = नित्य प्रति, गरे में = गली में, डारें = डाले हुए, जातौ = जाता, नईं = नहीं, उतारौ = उतारा, मजा = आनन्द, जोवन = जवानी, फुआरौ = फव्वारा, घटतौ = कम होता, सनेव = नेह - स्नेह, खुलतौ = खुल जाता, नेव = प्रीति, उगारौ = नग्न।

यह परकीया नायिका है। वह ऐसे व्यक्ति की ओर इंगित कर रही है जो उसका मित्र नहीं है।

इस रचना के अनेक पाठान्तर मिले हैं। परन्तु ईसुरी नायिका की बेवसी की अनुभूति प्रकट करने में माहिर हैं। कहती है मैं तुम्हारा ताबीज बना लेती अगर तुम मेरे मीत होते। मैं ताबीज को गले में ही पहिने रहती, कभी न उतारती। नित्य प्रति हम परस्पर यौवन का आनन्द लूटते। हमारे जीवन में रंग-रस का फव्वारा फूट पड़ा होता। नेह-स्नेह किंचित न घटता, परस्पर हृदय के द्वार हमेशा के लिए खुल गए होते। तब आज की भाँति तड़प-तड़प कर रह न जाती, क्योंकि हमारा तुम्हारा प्यार निर्वसन निरावरण पलता।

तुम बिन कैसें काटें रैना
बैरन आँख लगैना।
पैले पारें कजरा पारौ,

दै रई भर-भर नैना।
दूजे पारैं पटियाँ पारी,
लगा देख रइ ऐंना।
तीजे पारैं सेज लगाई,
सुआ पड़ा रइ मैना।
ईसुर स्याम भोर के पारे,
उलटा दये बिछौना।

काटें = व्यतीत करें, बैरन = शत्रु के समान अर्थ में, पारैं = प्रहर में, पटियाँ पारीं = कंघी कर वेणी सजाई, ऐंना = दर्पण, सुआ = तोता।

नायिकी कहती है - तुम्हारे बगैर रैन (रात) कैसे काटूँ? यह बैरिन आँख नहीं लगती। आँखों की नींद उड़ गई है। प्रथम प्रहर में मैंने काजल तैयार किया और आँखों में आँज लिया। द्वितीय प्रहर में मैंने तेल कंघी कर वेणी सजाई और अपने आपको दर्पण लगा-लगाकर देखती सँवरती रही। तृतीय प्रहर में मन - कीर अर्थात् तोते को मैना की भाँति पढ़ाती रही। इसी प्रकार सम्पूर्ण रात्रि बीत गई। भोर हो आई तो बिस्तर को ही उलट दिया। पर श्याम यानी स्वामी नहीं आए।

ऐसौ कड़ौ जात जड़कारौ।
घरै नईं घरबारौ।
संगी बिना सहै को सर्दी,
हात न जात निकारौ।
बे छातीं के लगै करेजौ,
थर-थर कँपत हमारौ।
कैसउ करौ हमारी दम खौ,
कितनउ कपड़ा डारौ।
हाय पिंगला करत 'ईसुरी'
कड़ गए मइना चारौ।

कड़ौ = निकलने के अर्थ में, जात = जाता है, जड़कारों = शरद ऋतु, घरबारौ = प्रियतम, संगी = साथी अर्थात् प्रियतम, दम खौ = साहस को, पिंगला = पिंगल (काव्य शास्त्र के नियम) मइना = माह।

प्रियतम के लिये थर-थर काँपती शरद ऋतु में नायिका व्याकुल है। क्योंकि उसके बगैर

शीत प्रकोष्ठ सहन नहीं हो रहा है। हाथ बाहर निकालना कठिन है। उनके वक्षस्थल की उष्मा के बगैर हृदय थर-थर काँप रहा है। शीत से बचने के लिये कुछ भी किया जाए, कितने भी वस्त्र क्यों न पहन लिये जायें, सब व्यर्थ विफल हैं। यह कैसा नियम है? ईसुरी कहते हैं प्रियतम के बगैर चारों माह ऐसे ही निकल गए।

पूछैं लगी की ओखद कीसैं।
वेद हार गये जीसैं।
निस दिन दमक दिमाने हो गए,
छूटौ संग सभी सैं।
लगै ना आँख अन्न ना भावै,
भऔ उनसार जभी सैं।
'ईसुर' कात तुम्हारे पाछै,
जान जात का जी सैं।

लगी की = लगन लगने के अर्थ में, ओखद = औषधि / दवाई, कीसैं = किससे, वैद = वैद्य/चिकित्सक, जीसैं = जिससे, दमक = आभा के अर्थ में, दिमाने = बौराए से, उनसार = अस्त व्यस्त।

प्रियतम से लगन ऐसी लगी कि हाल - बेहाल हैं, एक तरह से बीमारी ही हो गई है। अत: उसकी औषधि किससे पूछी जाए? वैद्य लोग उससे हार मान बैठे हैं। दिन - प्रतिदिन आभा यानी विवेकी बुद्धि पागलपन में बदलती जा रही है न किसी से मिलना न जुलना, सभी का साथ छूट चुका है। न आँखों में नींद आती है, न अन्न भाता है। ऐसी अस्त-व्यस्तता जीवन में समा चुकी है। ईसुरी कहते हैं क्या तुम्हारे पीछे यानी तुम्हारे कारण जीवन से भी हाथ धोना पड़ेगा?

सुअना बालापन के पाले।
मिलकर होत नियारे।
जबकी मिलन अबै की बिछुरन,
परे दुअन के छाले।
लरकईयाँ के पाले पोसे,
उड़त करेजै साले।
हरियल हरे रातते हरदम,

चुन–चुन प्रेम मसाले।
ईसुर बिरह बाढ़ घर बूड़त,
मिल जा यार बचा ले।

सुअना = तोता शाब्दिक अर्थ है परन्तु इन तोतों में व्यञ्जनार्थ उरोजों का है। नियारे = पृथक होने के अर्थ में, जबकी = उस समय की, अबैकी = आज की, दुअन = दोनों, लरकैइयाँ = लड़कपन, साले = पीड़ा दिए, हरियल = हरे–भरे अर्थात् तरोताजा, राततेे = रहते थे, बिरह बाढ़ = विरह की बाढ़, घर बूड़त = घर डूबता है।

नायिका किसी अन्य से प्रेम करती है। उसके यौवन को तोतों के समान उसके प्रेमी ने पाला–पोसा सहलाया है। वह आज उससे दूर जा रहे हैं। उस समय के मिलन की याद और आज इस समय के बिछोह की असह्य स्थिति दोनों में ही छाले पड़ गये हैं। लड़कपन में पाले पोसे प्यार के टूटने से हृदय विदीर्ण हो गया है। वह हृदय जो सदैव तरोताजा रहता था, जिसे प्रेमी ने प्रेम के मेवे मिष्ठान्न खिला–खिलाकर इस योग्य बनाया था। इस प्रकार ईसुरी के शब्दों में विरह की बाढ़ से प्रेम का घर ही डूबा जा रहा है। यदि प्रेमी उसे मिल जाए तो वही उसे बचा सकता है।

विशेष : नायिका विरहानल से दग्ध है जबकि प्रियतम के घर जा रही है। इस प्रकार का नायिका भेद रीतिकालीन परम्परा में ही देखा जा सकता है।

अपने मनके मिलनिये ढूँड़ौ।
होय करैजौ जूड़ौ।
सबदिन यार दिखाने नइयाँ,
होन चात दिन बूड़ौ।
करौ उपाय दरस हो जाबै,
ऐसे काय बिहूड़ौ।
चलौ नैन उई जाँगा चलिये,
ओई यार खौं छूड़ौ।
मेरौ विरह आग दयँ ईसुर
बुजत नई बन भूड़ौ।

मिलनिये = मिलने वाले को अर्थात् प्रेमी को, ढूड़ौ = खोजो, जूड़ौ = शीतल, सब दिन = प्रात: से साँझ तक, होन चात = होने को है, दिन चूड़ौ = दिन अस्त, उपाय = तजवीज, बिहूड़ौ = परेशान हो, उई = उसी, जाँगा = स्थान/ठौर, छूड़ौ = छूलों का अपभ्रंश तक जोड़ने हेतु, दये = दिये हैं, बुजत = बुझता, बनभूड़ौ = मानो वन पूरा झुलस रहा हो।

चलो सखि! अपने मिलने वाले को अथवा प्रियतम को खोजें। तभी हृदय शीतलता का अनुभव करेगा। प्रातः से साँझ हो गई, वह मीत दिखाई भी तो नहीं दिया अब तो दिन अस्त होने को है। कितना ही प्रयत्न क्यों न करो परन्तु उसके दर्शन होना ही चाहिए। इस प्रकार हम उनके लिए परेशान हैं। यह परेशानी क्यों हैं? चलो न, उसी स्थान पर अपनी दृष्टि दौड़ायें, जहाँ मीत है, उसी मीत को जाकर छू लें। क्योंकि विरह वेदना हृदय को प्रज्ज्वलित कर रही है, जो समूचे वन में लगी आग के समान है, उसे बुझाना कठिन है। यानी विरह वेदना चरम पर है।

करिया काटैं कड़त करेजौ।
बिना हकीमै भेजौ।
करलो काट-फाँट ग्रीबा कौ,
दुख सो दरद अंगेजो।
तोरे बिरह झार में मर गई,
लै गई लूकन रेजौ।
बिना मिलै अजहूँ मर जाबै,
इन बातन कौ सेजौ।
ईसुर चले काल भऔ मो कौं,
निरमोही के जेजौ।

करिया = नाग, काटें = डसने के अर्थ में, कड़त = निकल आता है, बिना = बगैर, हकीमै = चिकित्सक के, काट-छाँट = चीराफाड़ी, ग्रीबा कौ = गर्दन को, अंगेजो = अंक में भर लिया, झार = लपटें, लूकन = तड़फन, सेजौ = सहेजता के अर्थ में, जे = वे, जौ = जो है।

काले नाग के डसने के समान भय से कलेजा निकला आता है। मेरी गर्दन ही कटवा दो, मैंने दुःख और दर्द से ही तो आलिंगन किया है, क्योंकि तुम्हारे विरहानल की लपटों से मानो मैं मर ही गई हूँ। अब तो केवल तड़फ ही बची है, मुझे वही जिला रही है। बगैर मिलने से तो आज ही मर जाना ठीक होगा, इन बातों को कहाँ तक सहेज कर रखूँ? तुम्हारा जाना ही मेरे लिए काल हो रहा है क्योंकि मेरी भेंट किसी निर्मोही से हो गई है, यही प्रमुख पीड़ा है।

गोरी कठिन होत हैं कारे।
भरे मदन मतबारे।
कारे रंग के काट खात जब,

जिहर न जात उतारे।
काम बान कामनिन खौ भए,
कारे नन्द दुलारे।
कारे रंग के काग पखौआ,
पटियन जात उनारे।
ककरेजी खौ पैर ईसुरी
खकल करेजे डारे।

कारे = श्याम वर्ण वाले, मतवारे = मतवाले, जिहर = विष, कामनिन = कमनियों, पखौआ = पर/पंख, पटियन = सिर की व्यस्थित रेखा। छटा, अनारे = उदाहरण, ककरेजी = एक विशिष्ट रंग जो बुन्देलखंड में स्त्रियों के वस्त्रों में प्रमुख रूप से पाया जाता है, खकल = जर्जर।

निश्चय ही ईसुरी की यह रचना भ्रमर गीत के समानान्तर है। कहते हैं – गोरी का श्याम वर्ण बड़ा दुर्लभ है, यह मदभरा मतवाला वर्ण है। काले नाग यदि डस लें तो विष का उतारना कठिन है। कमनियों हेतु कामरूप कृष्ण वर्णी नन्दलाल काम के बाण छोड़ते हैं। सिर के बालों की चोटी काले नाग की तरह प्रतीत हो रही है। दूसरी उपमा बालों को कौअे के काले पंखों की तरह शोभायमान होने की है। ईसुरी कहते हैं इस पर ककरेजी रंग (ब्राउन) के वस्त्र पहिनकर मेरे कलेजे को विदीर्ण एवं जार–जार कर दिया है।

ऐसी कानौ कैं तुम छरकौ।
तुम हमसे ना बरकौ।
गरदन गड़ा गरे कौ छूँटा,
खटकत है छै लरकौ।
काट कनाऔ जात खोरन में,
नाकौ डाटैं परकौं।
'ईसुर' कात तुमारे लानै,
ठाट टोरबी घरकौ।

कानौ = कहाँ तक, कैं = कहूँ, छरकौ = छड़कने के अर्थ में, बरकौ = बचने के अर्थ में, छूँटा = काले रेशमी धागे का अलंकरण जो गले में पहनते हैं, गड़ा = गंडा / ताबीज, खटकत = खलता है, छै लरकौ = छै धागों वाला, कनाऔ = किनारा, खोरन = गलियों में, नाकौ = नाकाबन्दी, डाटैं = पकड़े हैं, परकौं = पराया अथवा आगामी वर्ष के अर्थ में, लानै = लिए/हेतु, ठाट = घर का छप्पर, टोरबी = तोडूँगा।

नायक विरह की स्थिति में कहता है कि – तुम मुझसे किनारा करने लगी हो। मैं कहाँ तक कहूँ कि मुझसे बच पाना आसान नहीं, कब तक बचोगी? गले में जो गंडा पहना है उसके काले रेशमी धागों की छैः लड़ियाँ तुम्हारे गोरे गाल पर मुझे खल रही हैं। पराये नाकाबन्दी के दम पर जबकि फिर से तुम गलियों में किनारा काटकर निकल जाती हो। अतः ईसुरी के शब्दों में तुम्हारे लिए घर का छप्पर तोड़ना पड़े तो तोड़ूँगा।

विशेष : किनारा काटना, छप्पर तोड़कर मिलना, मुहावरे उल्लेखनीय हैं।

मिलती कभउँ अकेली नइयाँ।
बतकाये खाँ गुइयाँ।
मिल जातीं मनकी कै लेते,
जैसी हते कवइयाँ।
बाहर से भीतर खाँ कड़ गईं,
कुल्ल लुगाइन मइयाँ।
'ईसुर' फिरत तुम्हारे लानै,
ढूड़त कुँआ तलइयाँ।

कभऊँ = कभी, नइयाँ = नहीं, बतकाये = बात करने हेतु, गुइयाँ = प्रेयसी के अर्थ में, कवइयाँ = कहने योग्य, कुल्ल = बहुत के अर्थ में, लुगाइन = महिलाएँ, मइयाँ = में होकर, फिरत = घूमते हुए जाना, ढूँड़त = खोजना, कुँआ–तलैयाँ = कुएँ और तालाब आदि जलाशय।

प्रिये! तुम कभी अकेले में नहीं मिलतीं, जिससे मैं प्रेम की दो बातें कर सकूँ। यदि मिल पातीं तो मन की बात कहता, जो कहने योग्य थी। तुम बाहर से अन्दर को चली गईं। अनेक महिलाओं के समूह की ओट का फायदा उठा लिया जबकि मैं कबसे तुम्हारे लिए पनघट – पनघट घूमता फिर रहा हूँ।

मोरी आँखन से ना टरतीं।
तुमइ जोत में भरतीं।
हमतौ चरचा करैं तुमारी,
तुम चरचा ना करतीं।
हमतौ लगे तुमे बिसरे से,

तुम ना हमैं बिसरतीं।
'ईसुर' टोरत सरग तरइयाँ,
निंगती नइयाँ धरती।

टरतीं = टलती अर्थात् जातीं, जोत = ज्योति / प्रकाश, भरतीं = भरकर शीत होने के अर्थ में, चरचा = चर्चाएँ, बिसरे से = विस्मृत से, बिसरतीं = विस्मरण, टोरत = तोड़ते हैं, सरग तरैयाँ = स्वर्ग के तारे।

प्रिये! तुम मेरी आँखों में ऐसी समा गई हो, उनसे निकलती ही नहीं हो, तुम्हीं से मेरी आँखों की ज्योति है। मैं प्रतिपल तुम्हारी चर्चा में डूबा रहता हूँ, किन्तु तुम मेरी चर्चा तक नहीं करती। लगता है तुम्हारे लिए मैं विस्मृत सा हो गया हूँ। क्यों तुम धरती छोड़कर हवा में उड़ने लगी हो, जो धरती पर चलना भी भूल गई, जबकि तुम्हारे लिए मैं स्वर्ग के तारे तोड़ने को तैयार हूँ।

विशेष :- स्वर्ग के तारे तोड़ना एवं धरती छोड़कर चलना मुहावरे अवलोकनीय हैं।

जो कोउ प्रीत करै सौ जानैं।
कयँ की लवरी मानैं।
आँगे धरत परत पग पीछे,
छलके हाल भुलानै।
कातन कछू कछू कै आवै,
सुध ना रात ठिकानैं।
'ईसर' कोउ न बिगरौ ऐसौ,
हम बेतराँ नसानैं।

कयँ की = कहने की, लवरी = मिथ्या, छलके = छली, हाल = स्थिति, भुलाने = भुला दिए गए, कातन = कहते हुए, बेतराँ = बेतरतीब, नसानैं = बिगड़ने के अर्थ में।

मेरा कथन मिथ्या समझेंगे जबकि यही सत्य है कि जो कोई प्रीति करता है, वही उसका स्वाद जान सकता है, अन्य नहीं। स्थिति ऐसी हो जाती है कि इसमें कदम आगे बढ़ाते हैं, परन्तु आदमी दस कदम पीछे हो जाता है। छलना सब कुछ भुला देती है। सोचते कुछ हैं और कुछ कह दिया जाता है। सुधि का कोई ठिकाना नहीं रहता। ऐसा संसार में कोई भी नहीं मिटा होगा, जिस बेतरतीब ढंग से मैं तुम्हारे प्यार में मिट चुका हूँ।

हमसे काय छरकतीं रातीं।
औरन खाँ पतयातीं।
औरै आय तनक दै दै कैं,
दौर दौर कै जातीं।
हमतो कयें प्रेम की बातें,
अपुन जहर सौ खातीं।
जो मिल जाँय गली खोरन में,
काट किनारौ जातीं,
अटके प्रान 'ईसुरी' तुममें,
हमें लगालो छातीं।

छरकतीं = छड़कती, रातीं = रही, औरन = अन्य लोगों को, पतयातीं = द्रवित होने के अर्थ में, आय = आने पर, अटके = अटक रहे।

नायिका का उपेक्षित भाव देखकर नायक के प्रति ईसुरी कहते हैं कि – प्रिये! तुम अन्यजनों पर तो द्रवित हो जाती हो और मुझसे दूर भागती हो। अन्य कोई आ जाए तो तनिक में दौड़–दौड़कर भाग जाती हो। मैं तो प्रेम की बातें करता हूँ जबकि तुम विष सा खाकर रह जाती हो। यदि कभी गली कूचों में मिल भी जाती हो तो किनारा काटकर निकल जाती हो। मेरे प्राण तुम्हीं में अटके हुए हैं आओ मुझे अपने हृदय से लगा लो अर्थात् आलिंगनबद्ध हो जाओ।

विशेष :- किनारा काटना, जहर सा पी जाना, प्राण अटकना मुहावरे अवलोकनीय हैं।

बैरिन बदली कौन धरे सैं,
कीके कान भरे सैं।
सुनबौ करीं हमारौ ऐरौ,
उठबू करीं परेसैं।
आदी रात पलंग के उपर,
लगबू करीं गरे सैं।
जो कऊँ मिलत गली खोरन में,
बरकी जात अरे सैं।
आँग लगाय कबऊँ छाती से,
भगबू करीं तरे सें।

'ईसुर' हमखाँ ऐसौ छोड़ौ,
किल्ली ढोर मरे सैं।

बदली = बदल जाने के अर्थ में, धरे से = किसने धर दिया अर्थात् रंग चढ़ा दिया के अर्थ में, कीके = किसके, ऐरौ = आहट, उठबू करीं = उठ, परे सैं = सोते हुए से, लगबू = लगती, गरे से = गले से, बरकी = बचती, अरे से = अनहोनी से, किल्ली = एक जन्तु जो जानवरों के बदन पर चिपककर खून चूसती है।

नायक अपनी नायिका के नए परिवर्तित भावों को देखकर कहता है – यह बैरिन कैसे बदल गई, किसने रंग चढ़ा दिया? किसने कान भर दिए। जबकि यह कान लगाकर मेरे आने की आहट सुना करती थी और सोते से उठ-उठकर जाग पड़ती थी। अर्ध रात्रि में मेरे पलंग पर आकर आलिंगन करती थी, गले लग जाती थी। यदि गली कूँचे में मिल जाती तो किसी संभावित उपद्रव से बचकर निकलने की कोशिश करती थी। कभी आलिंगन करके तत्काल नीचे से छूटकर भागती थी और अब मुझे ऐसा छोड़ दिया जैसे पशु के निर्जीव होने पर किल्ली नाम का जन्तु उसे छोड़ देता है।

तुमसे मेर लगाकैं हारे,
परे ना फन्द हमारे।
दिनकैं तुमनै हामी भर दइ,
रैगइ लगा किबारे।
जगतीं हो – तो खोलौ लंगर,
सुनकै बचन हमारे।
'ईसुर' कात फाग ना गाबै,
लेट जात ई मारे।

मेर = मेल-जोल, फन्द = फन्दे में, हामी = स्वीकृति, रैंगई = रह गईं, लंगर = किवाड़ बन्द करने का मजबूत साधन, फाग = ईसुरी का प्रिय छन्द, ई मारे = इस कारण।

नायक कहता है तुम्हारे प्यार के चक्कर में पड़कर मैंने मात खाई है। दिन में तुम्हारी स्वीकारोक्ति थी किन्तु रात्रि में किवाड़ बन्दकर तुम रह गईं, अर्थात् बदल गईं। यदि अभी भी सोई नहीं हो तो किवाड़ों को खोल दो। मेरी बात सुनकर। अन्यथा मैं भी सो जाता हूँ, इसलिए कि फिर कोई कहेगा तो मैं फाग नहीं गाऊँगा, कह दूँगा कि मैं क्या जानूँ, फाग गाकर? क्वचित् यह प्रसंग फड़ गायिका 'गंगइया-सुन्दरिया' को संबोधित कर लिखी गई है।

ओरौ होय करेजौ उदना,
मिन्त मिलादै बिदना।
ओरे की आगी नै कर दइ,
जरा कै छाती छिदना।
भीतर हिरदै लगत हौम सौ,
रोम-रोम में भिदना।
'ईसुर' गरमी पैठ गई है,
रइ शरीर की सुदना।

ओरौ = ओला (बरसने वाला बर्फीला पत्थर) करेजौ = कलेजा किन्तु हृदय के अर्थ में, उदना = उस दिन, मिन्त = मीत, जिदना = जिस दिन, नै कर दई = नहीं की, जराकै = जलाकर, छिदना = दग्धतावश जाली के समान अर्थ में, भिदना = समरस होना मिट जाना, सुदना = सुधि विसरना।

प्रिय के विरह की ज्वाला में दग्ध हो रहा हूँ। मेरे हृदय की तपन तभी शीतल होगी, जिस दिन मेरी मीत मुझे मिल जाएगी। उस ओले को अंगारा न बना दिया तो छाती की छुवन से तो कहना। मेरे हृदय के अन्दर होम सा लगता रहता है वह मेरे रोम-रोम में समा चुकी है। उसकी प्रबल कामना रूपी गर्मी मुझमें पैठ चुकी है, अतः मुझे अपनी देह की भी सुधि नहीं रही।

सपनै रोजऊँ - रोज दिखानी।
संग परी लपटानी।
एक रोज हम ऐसौ देखौ,
गलियन आन बतानी।
दूजी रात कुँआ के ऊपर,
भरन गईं थी पानी।
चैत सुदी परमा नौ देवी,
ढारन गईं भुमानी।
हम तुम खाँ बर्रानें 'ईसुर'
तुम न हमै बर्रानी।

सपनै = स्वप्न में, रोजऊँ रोज = नित्य प्रति, लपटानी = लिपटी हुई।

प्रिये! तुम मुझे स्वप्न में नित्य प्रति दिखाई देती हो। सपने में मेरे साथ तुम लिपटकर लेटी हुई हो। एक दिन तो ऐसा देखा कि गलियों में आकर मीठी-मीठी बातें कर रही हो। दूसरे दिन

कुएँ पर पानी भरते हुए देखा। चैत माह शुक्ल पक्ष में नवरात्रि के अवसर पर माता को जल चढ़ाने हेतु जाते भी देखा। मैं तो तुम्हें नित्य प्रति स्वप्न में देखता हूँ, क्या तुम हमें स्वप्न में नहीं देखती?

चूमाँ देव नाँय कर मुइयाँ,
बैठी टेढ़ी गुइयाँ
बोलत बोल रसीले ऐसे,
ज्यों पिंजरा की टुइयाँ।
गोरे गोल कपोलन ऊपर,
हसतन परतीं कुइयाँ।
बारी बैस अली अलबेली,
नाजुक लरम कलइयाँ।
मन में लगत 'ईसुरी' ऐसौ,
अबइँ उठा लें कइयाँ॥

चूमा = चुम्बन, नाँय = इस ओर, मुइयाँ = मुख को, गुइयाँ = प्रेयसी, टुइयाँ = तोता की स्त्री, परतीं = पड़ती हैं, कुइयाँ = गड्ढे, बारी = अपरिपक्व, बैस = आयु, लरम = कोमल, अबहूँ = इसी क्षण, कइयाँ = अंक में भरकर उठा लेना।

नायक – नायिका से कहता है – प्रिय! मेरा मन अब तुम्हीं से लग गया है अपना मुख इस ओर करके मुझे एक चुम्बन दो । तुम ऐसे बोलती हो जैसे पिंजड़े में मादा तोता बड़ी रसीली बोली बोलती है। गोरे गोल – गोल कपोलों पर हँसते ही आकर्षक गड्ढे बनते हैं। अभी आयु की भले ही कच्ची हो, परन्तु अलबेली हो। तुम्हारी कलाइयाँ कितनी सुकोमल एवं नाजुक हैं। मेरे मन में तो ऐसा लग रहा है कि अभी इसी क्षण तुम्हें अंक में भरकर उठा ही लूँ।

जी में होय करेजौ ओरौ।
मिलै मिलनियाँ मोरौ।
दरस मिलन की चाय बड़ी है,
कबै बिधाता जोरौ।
धधकन लगे बिरह के अंगरा,
छनक रकत रव मोरौ।

जलके परै भबूका छूटैं,
कितनूँ सपरौ खोरौ।
और-और परचत है 'ईसुर'
पंखन पवन झकोरौ।

जी में = जिसमें (ताकि) ओरौ = ओला, मिलनियाँ = मिलने वाला मीत अर्थात् प्रेम की, चाय = चाह, भबूका = भाप, सपरौ - खोरो = नहाओ धोओ, परचत = सिलगती है।

प्रेमी कहता है - मेरी मीत मुझे मिल जाए तो मेरा कलेजा ठंडा हो जाय अर्थात् शीतल हो जाए। देखने-मिलने की चाह बढ़ती जा रही है, विधाता कब पूरी करता है? मेरे हृदय में विरह के अंगारे धधक रहे हैं। उसकी तपन के कारण मेरे शरीर का रक्त सूख रहा है जैसे गर्म तवे पर पानी की बूँद पड़ने से छन छनाकर बूँद भाप बनकर उड़ जाती है इसी कारण रक्त जल गया है। कितना ही नहाऊँ - धोऊँ (शीतलता प्राप्त नहीं होती) इससे अग्नि और सुलग उठती है, मानो पंखे की वायु का झकोरा लग रहा हो।

मैंने तोरे घर के लाजें,
बाहर नीरे काजें।
जितने की जा भाव-भगत ना,
बजत फूट गइँ झाँजै,
भए नटखटा दरस के लानै,
छिन नीचे छिन छाजैं।
हे परमेसुर मेरे ऊपर,
गिरी गरज की गाजें।
वे ना मिली सरम गइँ 'ईसुर'
धरती फटें समाजें।

लाजें = लिए, नीरे = निकट, काजें = के लिए, झाँजै = घनवाद्य (मंजीरा), नटखटा = भाँति-भाँति के उद्यम के अर्थ में, छिन = क्षण, छाजें = छज्जे पर, गाजें = तड़ित।

ईसुरी का निवास ग्राम धौर्रा में एक हवेली के पास है, समझा जाता है कि उनकी प्रेयसी 'रजऊ' अन्यत्र वहीं पास के मकान में रहती थी। अत: उसी सन्दर्भ में जोड़कर इस रचना का भाव स्पष्ट हो सकेगा। मैं तेरे घर के बाहर रहकर ही तुम्हारे निकट बना रहूँ इसलिए (यहाँ रहना पसन्द किया किन्तु कालान्तर में ईसुरी को धौर्रा से निष्कासित किया गया, अपमानित भी किया गया, कारण बदलकर भले ही बताया जाए परन्तु यह रचना स्पष्ट कर देती है।) जितने के भाव

भक्ति नहीं हुई उतने के मंजीरे बजाकर मानो फूट गए। सभी उद्यम व्यर्थ सिद्ध हुए, तुम क्षण में नीचे आती थी, क्षण में छज्जे पर जाती थीं। हे भगवान! यह एकाएक मेरे ऊपर गरजकर बिजली ही गिर पड़ी। वे (रजऊ) नहीं मिल सकी (लाजवश मौन हो गई खुलकर कुछ न कह सकी) क्योंकि समाज में धरती फटने की स्थिति जो आ गई थी।

विशेष :- स्मरणीय है धौर्रा में ठाकुर जगजीत सिंह जू मुसाहिब जिनके ईसुरी प्रिय कारिन्दे थे, एक दिन ईसुरी को अपमानित कर गाँव से निष्कासित किया था, जिसका अन्य अस्वाभाविक कारण ही उन्होंने प्रचारित किया था। यह रचना स्वयं में बहुत बड़ा राज छिपाए हुए है।

भारी भये मोह के मारे,
पागल प्रान हमारे।
हारन हद्‌द पहारन बारन,
गिने न नदियाँ नारे।
नाँय - माँय से फिर-फिर आउत,
गुम-गुम ओइ दुआरे।
मिहरैं भलीं करीं ना 'ईसुर'
गरजी यार बिगारे।

हारन = खेतों, हद्‌द = सीमा, पहारन = पर्वतों, पारन = कूलों, नाँय-माँय = यहाँ वहाँ, गुम-गुम = घूम-घूमकर, ओइ = उसी, मिहरैं = मेहरबानी का संक्षिप्त रूप कृपा के अर्थ में, गरजी=स्वार्थी, बिगारे = बिगाड़ दिए।

ईसुरी कहते हैं - प्रिये! तुम्हारे प्रति प्रगाढ़ मोह के कारण मेरे प्राण पागल हो रहे हैं। खेतों, पर्वतों, कलित कूलों की सीमा लाँघते फिरता हूँ। न नदी देखता हूँ न नाला, सब जगह भटक रहा हूँ। यहाँ-वहाँ से घूम-घूमकर पुनः उसी द्वार पर खड़ा हो जाता हूँ। क्या करें तुम्हारी कृपा दृष्टि नहीं हुई, खुदगर्ज लोगों ने ही मेरा बना बनाया कार्य बिगाड़ा है।

अब दिन गौने के लगयाये,
हमनै कइ ती काये।

सुसते नईं काम के मारैं,
ऐंगर बैठ न पाये।
परकी साल बियाब भयेते,
आसों साल चलाये।
हौंबन लगीं बिदा की बातें,
नाउ संदेस सुनाये।
सब सेबा बिरथाँ गईं 'ईसुर'
आशा जिऊ जिवाये।

गौना = विवाह पश्चात् पहली विदा, सुसते = निश्चिन्त, ऐंगर = निकट, आसों = इसी वर्ष, बियाब = विवाह, परकी साल = पिछली साल, चलाए = गौना, नाऊ = नाई, बिरथाँ = व्यर्थ, जिऊ = प्राण, जिवाए = जीवित किया।

अब शादी के बाद विदा यानी गौने का समय आ गया है, मैंने कहा था न? मैं तो अपने कार्य से ही निश्चिन्त नहीं हो सका था तुम्हारे निकट भी नहीं बैठ पाया (और तुम जाने को हो) गत वर्ष ही तो प्रिये तुम्हारी शादी हुई थी, इस वर्ष विदा है? चर्चा होने लगी है तुम्हारी विदा की, क्योंकि तुम्हारे प्रियतम के देश से नाई सन्देश लाया है। मेरी सारी सेवाएँ ही व्यर्थ हो गईं, शायद अब एकमात्र आशा ही मेरे प्राणों की रक्षा करेगी।

ऐसौ होत नईं यारी में,
दगा दोस दारी में।
चन्दन काट बमूर लगायें,
केसर की क्यारी में।
बथुआ साग-चनन की भाजी,
सौने की थारी में।
'ईसुर' यार दगा दव तुमने,
अबै उमर बारी में।

दगा = धोका, दोस-दारी = मैत्री में, बमूर = बबूल, बारी = अपरिपक्व।

ईसुरी कहते हैं - प्रिये! दोस्ती में ऐसा कभी नहीं होता, धोखा देना मित्र धर्म नहीं है। सोचो भला चन्दन रूपी प्रीति को तो काट दिया और केसर रूपी काम की क्यारी में तुमने लोक लाज कुल मर्यादा से प्रेरित रीति रूपी बबूल का पेड़ लगाया है अर्थात् जीवन में सदा के लिए

काँटे बो लिए हैं। कहीं बथुआ एवं चने की भाजी सोने की थाली में शोभा पाती है? अर्थात् तुम्हारे योग्य वर तुम्हें नहीं मिला। तुम्हीं ने मुझे धोखा दिया है अभी तुम्हारी उम्र ही क्या थी (इसमें नायिका ने अपने अनुरूप प्रेमी का चयन नहीं किया है अस्तु नायक उलाहना दे रहा है)।

यारी करी तुमारौ घर है,
निभ जाबै बैतर है।
जो कऊँ निबै निदर निदर कें,
नाँव सवइ को धरहै।
जो कउँ गई छूट बीचइ में,
ना रैबै खाँ घर है।
निभत - निभत - निभ जाय 'ईसुरी'
ऊ मानस की दर है।

बैतर = अच्छा, निदर-निदर के = बिखराव के साथ / टूटकर, नाँव = नाम, धरहै = रखेंगे, बीचई में = बीच में ही, रैबै खाँ = रहने को, दर है = साख है।

प्रेयसी से ईसुरी कहते हैं - तुमने मुझसे मित्रता की है तो तुम्हारा स्वागत है। तुम अपना ही घर समझकर आओ और निर्वाह यथावत कर सको तो बेहतर होगा। यदि निर्वाह बिखराव के साथ टूट-टूटकर हुआ तो सभी नाम रक्खेंगे अर्थात् थू-थू करेंगे। यदि यह मित्रता बीच में ही टूट गई तो फिर कहीं की न रहोगी। घर से बेघर हो जाओगी। निर्वाह होता चला जाय यही श्रेष्ठ है और निर्वाह करने वाले की साख सदैव बनी रहेगी।

घरी धन्न बिदा के दिन की,
होत सिया संग जिनकी।
जब ससुरे से डोला आहैं,
भीर लगै लोगन की।
अन्त समय छाती से लगकैं,
रोबै भर-भर हिलकी।
'ईसुर' इक दिन बिदा सबई की,
ठाँड़ी खोरन ठिनकी।

घरी = समय / मुहूर्त, धन्न = धन्य है, सिया = सीता, हिलकी = रोने की प्रक्रिया, ठिनकी = ठिठक गई।

ईसुरी स्वभाव से किसी की भी विदा से सन्तुष्ट नहीं होते। ईर्ष्या से जल भुन जाना उनके हिस्से में आता है। यहाँ वे कहते हैं – विदायी मुहूर्त दिवस धन्य है, जब सिया यानी प्रेयसी किसी की संगिनी होकर जाती है। जब उसकी ससुराल से डोली आएगी तो व्यक्तियों की भीड़ दिखाई देगी। अन्त में उसकी छाती से लगकर भरपूर रोना ही आएगा। एक दिन सभी की विदा सम्भावित है। सामाजिकता का निर्वहन कर ईसुरी ने मृत्यु की सत्यता की ओर इंगित किया है। आत्मा को निस्सार जीवन से मोह तोड़ने की चेतावनी दी है।

हम पै डार गई मोहनियाँ,
गोरे तन की धनियाँ।
बाँह – बरा बाजू बन्द सोहैं,
कर में जड़ी कँकनियाँ।
शिख–नख से सब गानौ पैरें,
पायन में पैजानियाँ।
'ईसुर' कात चिता पै धर दव,
तो खौ आज रजनियाँ।

मोहनियाँ = मोहनी, धनियाँ = त्रिया, बरा–बाजूबन्द = हाथों में पहनने के आभूषण, ककनियाँ = कलाई का कंगन, पायन = पैरों में, पैजनियाँ = पैर का आभूषण, रजनियाँ = ईसुरी की पत्नी श्रीमती राजाबेटी।

ईसुरी रसिक कवि थे, इसका अर्थ यह नहीं कि घर की ब्याहिता पत्नी श्रीमती राजाबेटी की उपेक्षा करते रहे हों। वे पत्नी की मृत्यु पर उसके वियोग में लिखते हैं – गोरे गाल वाली वह गृहिणी मुझ पर अपना मोहिनी मंत्र छोड़कर चली गई। उसका नख–शिख से श्रृँगार – बाँहों में बाजूबन्द, बरा, हाथों के कंगन, पैरों की पैजनियाँ, सभी कुछ आँखों में झूल जाता है। ऐसी फूल सी सुकमार रजनियाँ (राजाबेटी) को आज चिता पर लिटा दिया है।

कारे सबरे होत बिकारे।
जितने ई रंग बारे।
कारे नांग सफाँ देखत के,

काटत प्रान निकारे।
कारे भमर रहत कमलन पै,
लै पराग गुंजारे।
कारे दगाबाज हैं सजनी,
ई रंग से हमें हारे।
'ईसुर' कारे कखल खात है,
जिहरन जात उतारे।

बिकारे = विकार सहित, ई = इस, सफाँ = साफ, कखल = एक विषैला जन्तु या अन्दर तक अन्तस को खोखला कर देना, जिहरन = विष से युक्त।

काले रंग की सभी वस्तुएँ विकारी हैं, जितने भी काले रंग के जीवधारी हैं। यथा काले नाग देखते ही देखते प्राण हरते हैं। हे सखि! सभी काले, बेईमान और दगाबाज हैं। इस रंग से हमने मात खाई है। ईसुरी कहते हैं परन्तु काले (कखल) जन्तु ही मात्र ऐसे होते हैं जिनसे विष भी उतरता है।

कैसे मिटै लगी कै घावौ,
ई की दबा बताऔ।
दिन ना रात चिहारीं परतीं,
ज्वर ना खांयें चाऔ।
गुनियाँ और नाबते हारे,
खेल-खेल कें भाऔ।
कात 'ईसुरी' केसौ करिये,
चलत न एक उपाऔ।

लगी = लगन लगने के अर्थ में, घाव = ब्रूण, ईकी = इसकी, चिहारी = एक कसक भरी पीड़ा, गुनियाँ = गुणीजन, नाबते = जादू टोना करने वाले जो झाड़फूँक करते हैं।

प्रिय के प्रति जो लगन लग गई है उससे जो घाव पनप रहा है, उसके उपचार की कोई औषधि बता दे। दिन और रात एक कसक भरी पीड़ा होती है, न तो ज्वर ही है फिर भी मुझे कोई खाए जा रहा है। झाड़-फूँक, टोटका करने वाले गुनिया देवताओं के भाव खेलकर हारकर बैठ गए हैं। ईसुरी कहते हैं - सभी यत्न व्यर्थ हैं, अब क्या किया जाए?

करकें प्रीत मरे भौतेरे,
असल न पाछूं हेरे।
सुदकत रये बरे ना बनकें
विरहा झार झरे रे।
जौई उनके मों से निकसत,
एकई बात – अरे रे।
ऐसे नर थोरे जा जग में,
डारन नईं फरे रे।
नीच तकन ईसुर की ताकन,
जेई फूट तरे – रे।

भौतेरे = बहुत सारे, पाछूँ = पीछे, हेरे = देखे, सुदकत = सिसकते, बरे = जले, अरे रे = फैलती है, मों से = मुख से, निकसत = निकलता है, एकई = एक ही, फरे = फलते हैं, नीच तकन = कुदृष्टि।

प्रेम रोग ही ऐसा है। प्रीति कर–करके बहुत सारे लोग मर चुके हैं। क्योंकि वे असल पिता की सन्तान थे। अतः पीछे देखना भी अनुचित माना, जो कदम बढ़ गया सो बढ़ गया। भले ही सिसकते रहे, जले नहीं, विरहानल की लपटों को सहन करते रहे। मरते दम तक उनके मुख से यही एक बात उच्चरित हुई अरे–रे। ऐसे मनुष्य इस संसार में बहुत थोड़े हैं, जो पेड़ की डालियों में फूल की तरह कुछ ही फलते हैं। कुदृष्टि और ईसुरी की प्रेम भरी चितवन में यही तो अन्तर हैं।

बसती बसत लोग भौतेरे,
कौन काम के मेरे।
बैठे रात हजारन कोदीं,
कभउँ न जे दृग हेरे।
गैल चलत गैलारे चरचे,
सब दिन साँझ सबेरे।
हाय दई उन दो आँखन बिन,
सब जग लगत अँधेरे।
ईसुर फिर तक लेते आँखैं,
बे दिन बिध ना फेरे।

बसती = नगर में, दृग हेरे = आँखों से देखा, गैल = राह, चलत = चलते हुए, गैलारे = राहगीर, चरचे = चर्चाएँ करते हैं, हाय दई = हा देव।

ऐसे तो नगर में बहुत सारे लोग रहते हैं, लेकिन वे मेरे किस काम के? सहस्त्रों लोग इधर-उधर बैठे ही तो रहते हैं, ये दो नयन कभी उनकी ओर देखते भी नहीं। राह चलते राहगीर प्रात: से सांय तक सारे दिन चर्चाएँ करते हैं कि हा देव, उन दो नयनों के बगैर सारा संसार अंधकारमय सा ही जान पड़ता है। ईसुरी कहते हैं - एक बार पुन: देख पाती उन नयनों को, ऐसी घड़ी विधाता ने पुन: नहीं बनाई।

अब नई लगत मायकैं नौने,
ई चाँदी ई सौने।
मोरे संग की दो-दो बेरें,
हो आईं हैं गौने।
मोरी उनकी एक उमर है,
उनकै लरका हौने।
'ईसुर' गोद भरहै उनकी,
हमउँ खिलाबी कौनै।

नई = नहीं, मायके = पीहर में, नौने = अच्छा, बेरें = बार/दफा, खिलाबी = खिलायेंगे, कोने = किसको।

प्रियतम के बिना ये सोने-चाँदी के बहुत से जेवर और धन-दौलत अब पीहर में मुझे अच्छा नहीं लगती। जबकि मेरे साथ की सहेलियाँ दो-दो बार पिया के घर हो आई हैं। मेरी उनकी वय में समानता है, परन्तु वे गर्भवती हो गई हैं, उनकी गोद भरी जाना है, उनको पुत्र खिलाने को मिलेगा। हम किसे खिलायेंगे। हमारा भी गौना जल्दी ही होना चाहिए। माँ के ममत्व और मर्म का सुन्दर चित्रण है। सृजन की ललक है।

विशेष :- पति से मिलन की उत्कण्ठा की अनूठी रचना है।

काजर कामपै दइये कारे।
बारे बलम हमारे।

सौज भये बियारी की बेराँ,
करें बिछौना न्यारे।
जब छुब जात अनी जोवन की,
थर-थर कँपत बिचारे।
का काउ खाँ खोर 'ईसुरी'
फूटे करम हमारे।

कामपै = किस बूते पर, बारे = नाबालिग/अबोध, बियारी = रात्रि का भोजन, बेराँ = समय, बिछौना = बिस्तर, न्यारे = पृथक, छुब जात = स्पर्श हो जाती, अनी जोवन की = स्तन का शीर्ष बिन्दु, खोट = दोष, करम = कर्म।

इस पद में खण्डिता नायिका की मनोदशा है – वह कहती है मैं काला काजल नयनों में किसलिए आँजू? मेरे प्रियतम अभी अबोध नाबालिग बच्चे ही तो हैं। संध्या होते ही भोजन के समय ही अलग बिस्तर लगाकर सो जाते हैं। यदि मेरे स्तन की उठी हुई नोकें भी उनसे स्पर्श हो जाती हैं तो वे थर-थर काँपने लगते हैं। ईसुरी कहते हैं – इसके लिए मैं किसको दोष दूँ। मेरे ही कर्म फूट गए जो यह बेमेल विवाह हुआ।

कइयो बारे बलम सें जाकैं,
हमखाँ जाँय लुआकैं।
आमन में अमचुईयाँ लागीं,
सुआ हरामी चाखैं,
चौलै हौन लगी गलियन में,
हमखाँ सुना-सुना कें।
दूध पियत जर-मरे 'ईसुरी'
पीलो मठा सिराके।

बारे = भोले, जाकै = जाकर के, जाय लुआके = लेकर जाएँ, अमचुइयाँ = छोटी खट्टी सी केरी, हरामी = गाली के अर्थ में, चाखें = चखते हैं। चौलै = तानाकशी, गलियन = गली कूचों में, सिराके = ठण्डा करके।

मेरे भोले प्रियतम के पास जाकर कोई कह दे कि वे आयें और मुझे लिवा ले जायें। आमों में नई खट्टी सी अमियाँ गदरा आई हैं अर्थात् बसन्त आ गया, यौवन उभार पर है। सुआ रूपी मनचले युवक रसास्वादन लेने के लिए इधर-उधर आसपास घूमते हैं। मुझे देखकर गली-कूचों

में तानाकशी चल रही है। एक बार दूध पीने से जीभ जल गई है अत: अब तो मैं छाछ भी फूँक कर ही पियूँगी।

विशेष :- दूध का जला छाँछ फूँककर पीता है उक्ति का सटीक प्रयोग।

ये दिन गौने के कब आबैं,
जब हम ससुरे जाबैं।
बारे बलम लिबौआ होके।
डोला संग सजाबै।
गा-गा गुइयाँ गाँठ जोर के,
दोरे लौ पौचाबै।
हाते लगा सास ननदी के,
चरनन शीश नबाबैं।
'ईसुर' कबै फलाने जूकी,
दुलइया टेर कहाबै।

लिबौआ = विदा कराने वाले, गाँठ जोर के = गठबन्धन कर, दोरे लौ = द्वार तक, पौचाबै = पहुँचाएगी, हाते = हल्दी द्वारा हाथों के चिह्न अंकित करना, फलाने जू = अमुक श्री नामोच्चारण के बगैर पति के लिए सर्वनाम वाचक सांकेतिक शब्द विशेष, टेर = बुलाना।

पीहर में नायिका प्रियतम के घर जाने हेतु विह्वल है वह कहती है - गौने का वह दिन कब आयेगा? जब मैं ससुराल जाऊँगी? मेरे भोलेभाले प्रियतम डोली सजाकर मुझे लिवाने आयेंगे। गीत गाती हुईं मेरी सखी सहेली गाँठ जोड़कर बाहर के द्वार तक जाकर मुझे विदायी देगी। मैं वहाँ जाकर हल्दी के हाथें लगाऊँगी, सास-ननद के चरणों में शीघ्र झुककर प्रणाम करूँगी। मुझे तो उस दिन की प्रतीक्षा है, जब लोग मुझे अमुक श्री जी की दुलहिन का सम्बोधन देकर पुकारेंगे।

देखौ नइयाँ आँखें भरकें,
जब से गये निकरकें।
आपन ज्वान फारकत हो गए,

मोय फकीरन करकें।
अपने संगै लै गये प्यारे,
प्रान पराये हरके।
ऐसे मानस मिलनै नइयाँ,
मानस कौ तन धरकें।
खपरा भऔ सूख तन 'ईसुर'
खाक करेजौ जरकें।

निकर कें = निकलकर, आपन = स्वयं तो, फारकत = निपट चुके, फकीरन = वैरागिन, हरके = हरण करके, खपरा = ठीकरा।

मुझे फिर नयन भर देखा तक नहीं, जब से वे यहाँ से निकलकर गए हैं। स्वयं तो महाशय निवृत हो लिए परन्तु मुझे फकीरन बना गए, कहीं का भी नहीं रखा। वे मेरे प्राण भी पराए समझकर हर ले गए हैं। मनुष्य तन धारण करके भी संसार में ऐसे मनुष्य मिलना दुर्लभ हैं। विरह में सूखकर मेरी देह ठीकरी हो गई है और हृदय जलकर राख हो चुका है।

पंछी भये ना पंखन बारे,
इतनी जाँगा हारे॥
कड़ कड़ जाते सांसन में हो,
अड़ते नई किबारे।
सब-सब रातन मजा लूटते,
परते नई नियारे।
ईसुर उड़ प्रीतम सो मिलते,
जाँ हौं यार हमारे।

पंखनवारे = पर युक्त, जाँगा = जगह, कड़कड़ = निकल-निकल, सांसन = खाली जगह में से, अड़ते = व्यवधान, किबारे = किवाड़, मजा = आनन्द।

बेबसी व्यक्त करती हुई एक नायिका कहती है – मैं पंख युक्त पक्षी नहीं बन पाई, बस इसी जगह हार गई। अन्यथा छोटी से छोटी साँसों में से निकल जाती, कोई भी दरवाजे मेरे लिए व्यवधान न होते। सारी-सारी रात प्रियतम के साथ रसानन्द लूटती। उनसे एकक्षण भी विलग कदापि न होती। ईसुरी कहते हैं-उड़कर अपने प्रियतम से मिलती, जहाँ भी मेरे मीत होते।

छलनी भये हाड़ सब घुनकैं,
कपट की बात सुनकैं।
टोरत प्रीत पैल से जोरी,
काय उकेलत बुनकें।
कैसौ लगत फिरत बे बारौ (उआरै)
करत काय ना गुनकै।
ना रए माँस रकत के बूँदा,
हाड़ अकेले खुनकें।
पर सारी अपनी ना 'ईसुर'
बैठ रये सिर धुनकें।

छलनी = जालीनुमा, हाड़ = अस्थि पिंजर, धुनकें = खोखली होकर, टोरत = तोड़कर, पैल से = पहले से, जोरी = जोड़ी हुई, काये = क्यों, उकेलत = उधेड़ते हो, बुनके = बिन करके, बारौ = छोटा / ओछा, गुनके = समझाकर, रकत = रक्त, खुनके = खड़खड़ाने के अर्थ में, सिर धुनकें = सर धुन-धुन कर।

विरह वेदना से जलती हुई नायिका से ईसुरी कहलाते हैं – उनकी ऊपर वाली बातें सुन-सुनकर के मेरे अस्थि पिंजर सब घुनकर छलनी (जाली के समान) हो गए हैं, पहले से जोड़ी हुई प्रीति को तोड़ते हैं। प्यार का बुना हुआ ताना-बाना क्यों उधेड़ रहे हैं? उन्हें यह ओछा कार्य करके घूमते हुए कैसा लगता है तनिक मन में गुनते भी नहीं है? न शरीर में अब माँसपेशियाँ शेष हैं, न नसों में रक्त की बूँद है। अस्थि पंजर ही मात्र खड़खड़ा रहा है। परन्तु सभी चीजों पर अपना अधिकार तो नहीं है। इसमें नायिका पर पुरूष की रिश्ते में साली है अस्तु नायक का अधिकार नहीं है। कुछ कहे वहीं अध्यात्म को भी इंगित करता है। सर धुनकर बैठने की विवशता है।

ईसुर प्यास पपीहा कैसी,
लगी रात दिल खइयाँ।

विरह खण्ड - दो

नायक विरह वर्णन

का भव ऐंगर रए कौ बारौ,
है द्वारे में द्वारौ।
हम तौ आउत तुमें मिलन खों,
तुम दै जातीं टारौ।
मिल बू करीं खोर गलियन में,
दैबू करीं इसारौ।
कात 'ईसुरी' सुन लो प्यारी,
दै आसा ना मारौ।

भवौ = हुआ, ऐंगर = निकट, आउत = आता हूँ, टारौ = टाल जाना, मिल बू करी = मिलती थी, खोर = गली कूचा, दैबू = देती थी, इसारौ = संकेत।

यहाँ नायक की ओर से नायिका के लिए उलाहना है कि तुम्हारे निकट (अर्थात् पड़ोस) में रहने से मुझे सुविधा क्या हुई, जबकि आमने-सामने द्वार से द्वार लगा है। मैं तो मिलने को आता हूँ और तुम टाल जाती हो। भूल गई संकेत से बुला-बुलाकर गली कूचों में मिला करती थीं, सुनो प्रिये! इस प्रकार आशा देकर मत मारो।

विशेष :- द्वार में द्वार होना, टाल जाना, आशा देकर मारना आदि मुहावरे अवलोकनीय हैं।

हमखों कर डारौ बैरागी,
तनक सरम ना लागी।
अपनौ जान कबउँ न दै गईं,
धूनी मैं खौं आगी।

इन हातन ना दई दच्छना,
भीख घरा घर माँगी।
गई ललक-पलक नईं देखे,
अलख रात दिन जागी।
दैन लगे बन गस्ती 'ईसुर'
येइ से बस्ती त्यागी।

हमखों = मुझे, कर डारौ = कर दिया, बैरागी = फकीर/साधु, तनक = तनिक, सरम = लाज, हातन = हाथों से, दच्छना = दक्षिणा, घरों पर = घर - घर जाकर, ललक = लालसा, गस्ती = पहरेदारी।

नायिका के वियोग में नायक फकीर हो चुका है। वह कहता है कि प्रिये! तुमको तनिक भी लाज नहीं आई, मुझे फकीर ही बना दिया है और अपना समझकर मेरी धूनी के लिए अग्नि भी कभी नहीं दे गई। इन हाथों से मुझे दक्षिणा भी नहीं दी, मैं घर-घर जाकर भीख माँग रहा हूँ। मुझे कितनी लालसा हुई परन्तु तुम्हारे पलक भी न देख सका और तुम्हारे लिए रात-दिन अलख जगाता रहा। अब तो पहरेदार बनकर लोग पहरा देने लगे हैं, इसलिए मैं बस्ती भी छोड़ चुका हूँ।

विशेष :- इस रचना में अत्योक्ति चमत्कार है। नायक स्वयं को साधु वैरागी कहता है परन्तु वैराग की भावना नहीं है वह धूनी के लिए आग चाहता है। काम वासना की जो धूनी उसके हृदय में धधक रही है उसके लिए कामिनी रूपी आग चाही गई है उसके समर्पण की दक्षिणा भी उसे नहीं मिली उसने अनेक द्वार उसके लिए खटखटाए परन्तु सब कुछ विफल। अत: वह हताश होकर उसका शहर छोड़ने को विवश हुआ।

अब नइ लगत गाँव में नीकौं,
मिन्त बिछर गऔ जीकौ।
दिन ना चैन रात नइ निंदिया,
खैबौ पीबौ की कौ।
जब बसती रमनीक लगत ती,
पुरा भऔ अब घीकों।
'ईसुर' कैसै खाँय तेल कौ,
जिन खाऔ है घीकौ।

लगत = लगता है, नीकौ = अच्छा, बिछर = बिछुड़, जीकौ = जिसका, खैबौ पीवौ = खाना-पीना, की कौ = किसका, रमनीक = सुहावनी रमण करने योग्य, लगत तो = लगती ती, पुरा = मुहल्ला, भऔ =

घूम गया, घीकौ = शुद्ध घृत से बना।

नायिका पिया के देश चली गई। प्रेमी उसके लिए बिलख रहा है – अब तो गाँव में अच्छा नहीं लगता। मीत का बिछोह इसका कारण है। दिन में चैन नहीं, रात्रि में निद्रा नहीं, खाना–पीना अब किसको सुहाता है? तब पूरी बस्ती ही सुहावनी रमण करने योग्य दिखती थी। अब तो पूरा मुहल्ला ही ऊजाड़ हो गया है – उस प्रेयसी का। जिसने शुद्ध देशी घी से बने भोज्य पदार्थ खाये हों, वह भला अब तेल से बना कैसे खाये?

विशेष :– प्रेयसी को शुद्ध घी के भोज्य पदार्थ की उपमा देकर निज पत्नी को तेल से बना घटिया कहा है। जैनेन्द्र जी ने इस प्रश्न को कभी उठाया था कि 'पत्नी घर में प्रेयसी मन में' इस पर ईसुरी का चिन्तन कितने पूर्व हो चुका है उल्लेखनीय है। प्रेयसी का रंग गोरा है एवं पत्नी साँवले रंग की है। यह इंगित होता है।

तुमने प्रीत लगाकें प्यारी,
बिरहा गोसी मारी।
बने रात ते सुख देयन में,
सो दुबधा में डारी।
दैकें हमैं दगा की तुमने,
मनकी मनी उतारी।
एकइ बेर हात बाड़ा के,
नाहक नियत बिगारी।
'ईसुर' कात बोलती नइयाँ,
ऐसी सुरत बिसारी।

लगाकें = लगाकर, गाँसी = फन्दा, रात ते = रहते थे, देयन में = देह में, दुबधा = दुविधा, दगा = धोका, मनकी मनी = मन में सोची हुई, एकइ = एक ही, बेर = बार, हात बौंड़ा के = हाथ फैलाकर, नाहक = व्यर्थ ही, सुरत = याद, बिसारी = भुला दी।

प्रिये! तुमने नेह तो किया परन्तु विरह का फन्दा भी डाल दिया है। इस शरीर में तुम्हारे कारण सुख बना रहता था। अब दुविधा के सिवा कुछ भी नहीं है। मिलकर तुमने धोखा किया है, मन में जो उमंग थी उसे नष्ट कर दिया है। हमारी ओर मात्र एक बार हाथ बढ़ाकर व्यर्थ में ही अपनी मन्सा को नष्ट कर लिया है जबकि निभाना नहीं था। अब मुख से भी नहीं बोलती हो, तुमने ऐसी याद भुलाई है। सुरत द्वयअर्थी है।

हमखाँ छोड़ो अकेलो पर कै,
माँझ धार में धर कै।
नैनन नीर बहै नदिया सौ,
दोउ किनारे भर कै।
बहे जात कोउ ना साती,
हेरत नई नजर कैं।
जात - पांत कौ हतौ न कोउ,
कातौ बात समर कैं।
'ईसुर' बुला लेब बस्ती कौ,
ऐचें बाँय पकरकै।

परकै = पढ़कर अर्थात् समझकर, माँझ = मध्य में, साती = साथी, हेरत = देखता, कातो = कह देता, समर में = सम्हलकर के, ऐचें = खींच ले, बाँय = बाँह।

मुझे अकेला छोड़ दिया है। मुझे बीच धार में उठाकर रख दिया है। नयन से अश्रु नदी के समान बह रहे हैं, दोनों किनारे भरे जा रहे हैं। मैं इस विरह में बहा जा रहा हूँ, कोई भी साथी ऐसा नहीं है जो और दृष्टि डालकर देखे भी। मेरी जाति-पाति का कोई नहीं था अन्यथा बात को सम्हाल लेता। कोई बस्ती का व्यक्ति ऐसा बुला लिया जाए जो मेरी बाँह थामकर मुझे इस स्थिति से उबार ले।

विशेष :- प्रेम की पराकाष्ठा में जाति-पाति आड़े आ जाने पर यही स्थिति होती है। नायक की मनोदशा का एक स्वाभाविक चित्रण हुआ।

यारी जब काहू से होबै,
कबै नींद भर सोबै।
उल्लू बने उठायें मोखाँ,
उल्फत में दिन खोबै।
रये नगीच खुशी जी जौलो,
बीच परे से रोबै।
तनकी नई मरम्मत राखै,
धनकी करै न लोबै।

ई फन्दा के बीच 'ईसुरी'
ईसुर नई बिदोबै।

होबै = हो जाए, कबै = कब, सोबै = सो सकता है, उल्लू = बेवकूफ, मोखाँ = मुँह को, उल्फत = परेशानी, खोबै = खोना, नगीच = निकट, जौलों = जब तक, तनकी = शरीर की, लोबै = लालच के अर्थ में, बिदोबै = फँसाए।

प्रीत से घायल नायक कहता है – यदि किसी से मित्रता हो जाए तो आँखों से नींद उड़ जाती है। बेवकूफ सा मुँह उठाए वह परेशानियाँ मोल लेता हुआ दिन खोता है। जब तक वह निकट रही तभी तक चित्त प्रसन्न रहा। जहाँ बीच में अन्तर आया तो रोने के सिवा क्या है? न शरीर की ही चिन्ता रही और न सम्पत्ति का लोभ। इस प्रकार के फन्दे में भगवान किसी को भी न फँसाए।

सब कोउ होत प्रीत से न्यारे,
उचे गरे पुकारे।
येई पिरीत की ऐसी बिगरन,
साऊकार बिगारे।
राज बादसा छोड़ पिरीतन,
बेइ जोग पग–धारे।
ऐइ प्रीत सें लैला पाँछू,
मजनूं सौ तन गारे।
येइ प्रीत से 'ईसुर' हो गए,
ऐसे हाल हमारे।

न्यारे = पृथक, ऊचे गरे = उच्च स्वर से, पिरीत = प्रीति, बिगरन = बिगड़ने की दशा, बिगारे = बिगाड़ दिए, पिरीतन = प्रीति के कारण, बेई = वही, जोग = योग सुयोग, पगधारे = पधारे / आए, एई = इसी, पाँछू = पीछे, गारे = गलाया।

प्रीत से घायल नायक की यहाँ मनोदशा व्यक्त की गई है। प्रीति के ही कारण सब कोई पृथक हो जाते हैं, ऐसा उच्च स्वर में डंके की चोट पर कहता हूँ। इसी प्रीति ने साहूकार एवं तथाकथित भले लोगों को नष्ट कर दिया है। इसी प्रीति के कारण बादशाह राजकाज तक छोड़ देते हैं, जोगी बन जाते हैं। इसी प्रीति के वशीभूत विश्व प्रसिद्ध प्रेमी मजनू ने लैला के पीछे अपने शरीर को गला दिया था। बस इसी प्रीति के कारण मेरी यह दशा हुई है।

नेहा निरमोही टो डारे,
तनक न दरद बिचारे।
प्रीत लगा प्रान तरफाये,
बिष दे काय न मारे।
जा कै पठई सोच न करियो,
और जरै पै जारे।
हम तौ हेत लगाओ जी तन,
बे पूरब में हारे।
कयँ 'ईसुरी' काय खौं सजनी,
रैन बिछोहा पारे।

नेहा = प्रेम, टो डारे = तोड़ दिए, दरद = दर्द, बिचारे = बेचारे के अर्थ में, पठई = भेजी, यह कहला भेजा (खबर भेजने के अर्थ में) सोच = चिन्ता, हम तौ = मैंने तो, जीतन = जिससे, पूरब में = पहले से ही, सजनी = प्रेमी, बिछोहा = बिछुड़न, पारे = दिया।

प्रेमी कहता है उस निर्मोही ने प्रेम ही तोड़ दिया, तनिक भी दया नहीं दिखाई। प्रथम तो प्रीति लगाकर मेरे प्राणों में तड़पन उत्पन्न की इससे तो अच्छा होता विष देकर ही क्यों न मार दिया होता। चली गई और वहाँ से सन्देश भेज दिया कि तुम चिन्ता मत करना अर्थात् मुझे जले हुए को और जलाया है। मैंने तो जिससे प्रेम किया है उसके लिये मैं पहले से ही अपने आपको हार बैठा हूँ। इसी से कहता हूँ कि प्रिये! रात्रि में यह विछोह तुमने क्यों दिया?

विशेष :- जले पर जलाना, पहले से हार जाना, विष दे मारना आदि मुहावरों का प्रयोग है। इस रचना के अनेक पाठान्तर भी उपलब्ध है।

अँखियाँ जब काऊ से लगतीं,
सब-सब रातन जगतीं।
झपती नईं झीम ना आवै,
उठ उसनीदें भगतीं।
बिन देखें से दरद दिमानौ,
पके खता सी दगतीं।
ऐसौ हाल होत है 'ईसुर'
पलकन पलतर दबतीं।

काऊ से = किसी से, जगतीं = जागती हैं, झपती = बन्द होने के अर्थ में, झीम = झोंका नींद का, उसनीदें = अर्धनिद्रा में, भगती = भागती हैं/चंचल होने के अर्थ में, दिमानों = पगलाने के अर्थ में, पके खता = पका हुआ फोड़ा / ब्रूण, दगती = जलन भरी विशेष पीड़ा, पलकन = नयनों से पलक अन्यथा पलकों पर, पलतर = पल भर के लिए, दबतीं = दब जाने के अर्थ में।

इस अनुभूति को ईसुरी ने नायिका के सन्दर्भ में लिखा है। यह नायक के सन्दर्भ में है। यह रचना नायक के सन्दर्भ में ईसुरी के कवि जीवन की आरम्भिक स्थिति व्यक्त कर पंत जी के शब्दों में 'वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान' को चरितार्थ करती है। देखें – यह नयन जब किसी से लग जाते हैं तो पूरी रात जाग कर ही कटती है। न तो आँख झपकती है, न नींद का झोंका आता है। अर्धनिद्रा की स्थिति में भी यह चलायमान रहती हैं। देह प्रेयसी की है – देखे बगैर पगलाये से मन में दर्द पके हुए ब्रूण के यानी फोड़े समान अन्दर ही अन्दर पीड़ा से दहकती है। कुल मिलाकर ऐसी स्थिति हो जाती है कि पलभर के लिए भी पलकों को झपकाने का प्रयत्न किया जाता है, फिर भी वह नहीं झपकती है।

जे दिन कटैं यार बज्जुर के,
अबै दुफर ना मुरके।
पूरब तैं सूरज नारायन,
पच्छिम खों ना सरके।
काँटे उठैं बैठाँय न बैठैं,
बिना लगनियाँ उरके।
अपने घरै रात सब कोऊँ।
लोग–लुगाई जुरके।
मोरी छाती जबइ जुड़े है,
आँय यार 'ईसुर' के।

कटें = व्यतीत होने के अर्थ में, यार = मित्र/प्रिये, बज्जुर से = वज्र से कठोर, दुफर = मध्याह्न, मुरके = लौटने या समाप्त होने के अर्थ में, लगनियाँ = दिल फेंक स्थिति, उरके = हृदय की, जुरकें = एकत्र होकर, जबइँ = जब ही, जुड़ै = शीतल होगी / शान्त होने के अर्थ में।

विरह की स्थिति में नायक कहता है कि यह दिन मेरे लिए वज्र से कठोर हैं। पल–पल भारी होता है। अभी तो मध्याह्न ही समाप्त नहीं हुआ, पूरा दिन पड़ा है। सूर्य पूर्व से पश्चिम की ओर नहीं पहुँचा। हृदय में शूल से चुभ रहे हैं। यह तड़फने वाला हृदय शान्त करने पर भी शान्त

नहीं होता। जबकि सब कोई अपने-अपने घरों में प्रिया-प्रियतम मिलकर बैठे हैं। मेरी आत्मा को तो तभी शान्ति मिल सकती है जब मेरी मीत मेरे पास आ जाएँ।

विशेष :- दुफर न मुरकना, वज्र सा होना, काँटे उठना, छाती जुड़ाना आदि लोक मुहावरे उल्लेखनीय हैं।

ईसुर रजउ चलीं गई ससुरें,
डार प्रेम की फाँसी।

विरह खण्ड - तीन

रजउ वियोग

अबकी बेर बिछुरतन मरनै,
काज न तोखाँ करनै।
तुम सुख चाब हमैं दुख दैकैं,
तोरौ जनम बिगरने।
मोरी कौन खबर रानै जब,
रस रंगन में परनै।
लखैं दूर सै रजउ आउतीं
पाप पुरा तन हरनै।
जे हैं बिसर 'ईसुरी' तुमखौं,
तुमना हमै बिसरनै।

बेर = वार/दफा, बिछुरतन = बिछुड़ते हुए, तोखाँ = तुमको, रानें = रहेगी, रंगन में = रंगरेलियों में, परने = सो जाता है, लखै = देखें, रजऊ = ईसुरी की प्रेयसी का निजी सम्बोधन जो आज चर्चा का विषय है।

ईसुरी की प्रेयसी अन्त में ईसुरी को नहीं मिल पाती है। वह अपने पति गृह जाती है। उस क्षण ईसुरी के उद्‌गार फूट पड़ते हैं। इस बार तुम्हारी बिछुड़न मात्र से मेरी मौत होगी, तुम तो कोई कार्य या पहल नहीं करोगी। तुम मुझे दुख देकर सुख की चाहना पूर्ण नहीं कर सकोगी। समझो, तुम्हारा जन्म ही बिगड़ गया। क्योंकि उस समय तुम्हें मेरी याद भी न आयेगी, जब पिया के संग रंगरेलियों में मस्त होगी। मैं दूर से देखूँगा, बाट निहारूँगा, मेरी रजउ आयेगी तो मेरे पुराने पाप कट जायेंगे। कहते हैं – तुम मुझे भूल जाओगी परन्तु मैं तुम्हें कभी विस्मृत नहीं कर पाऊँगा।

दुरलभ हो जाने जे खोरें,
यार बैठ लो दोरें।

दादुर गाँय किलोले कर रए,
नाच करत है मोरैं।
बिछुरन परत फटत है छाती,
कहै नैंन की कोरैं,
ईसुर कात प्रान जीबै हैं
रजउ तुमाये दोरै।

खोरै = गलियाँ, दोरै = द्वार पर, दादुर = मेंढक, किलोले = क्रीड़ाएँ, बिछुरन = विछोह, कोरे = पलक रेखा।

ईसुरी कहते हैं – यह गलियाँ दुर्लभ हो जायेंगी। प्रिये! तनिक द्वार पर बैठ तो लो। दादुर गा–गाकर क्रीड़ाएँ कर रहे हैं। मयूर भी नृत्य कर रहे हैं। ऐसे सुहावने मौसम में विछोह पड़ने पर मेरी तो छाती फटी जा रही है, तुम्हारे नयनों की पलक रेखाएँ सब कुछ स्पष्ट कह रही हैं। ईसुरी कहते हैं – रजउ हम तुम्हारे द्वार पर ही अब जियेंगे – मरेंगे।

मोरी रजउ सासरैं जातीं,
हमै लगालो छातीं।
कैनईं सकत गरौ भर देती,
अखियन अँसुआ बातीं।
जैसे चित्र लिखीं सी रैगई,
मौं से कछू ना कातीं।
हमका करै हमइँ जानत है,
अब पाछूँ पछताती।
'ईसुर' कौन कसाइन डारी,
बिकल बिदा की पाती।

सासरैं = ससुराल, कैनईं= कह नहीं, सकत = सकते, गरौ भर देती = गला भर आता है, बाती = कहती है, पाछूँ = पीछे से, कसाइन = कसाई ने।

ईसुरी कहते हैं – मेरी प्रेयसी रजउ ससुराल जा रही है। वह कहती है – मुझे छाती से लगा लो। मुँह से बोल तब नहीं निकल रहे हैं। क्योंकि गला भर आया है। आँखों से अश्रु बह रहे हैं मानो चित्र लिखी सी स्थिर हो गई है। मुँह से कुछ भी तो नहीं कह पा रही है। मैं क्या करूँ, मैं

ही जानता हूँ, (जो मुझ पर बीत रही है) अब पीछे से पश्चाताप करने से क्या होता है? हे भगवान्! किस कसाई ने ऐसा कार्य किया है जो विदा के लिए पत्र देकर यह विकलता उत्पन्न की है।

मोरे मन खाँ आज उदासी,
बिदा होत में आँसी।
बखरी भीतर राइ न आबै,
खुद गइ गड़ी जमाँ सी।
अन्तस् – मेर काउ से नइयाँ,
कीसें करबी हाँसी,
'ईसुर' रजउ चलीं गइ ससुरै,
डार प्रेंम की फाँसी।

मनखाँ = मन के लिए, आँसी = आघात के अर्थ में आसना, बखरी = निवास / गृह, राई न आवै = चैन नहीं पड़ने के अर्थ में, गाड़ी जमा सी = गड़े हुए दफीने के समान, अन्तस-मेर = हार्दिक प्रेम, करनी= करेंगे, हाँसी = दिल्लगी।

मेरे मन के लिए एक उदासी का वातावरण बन गया क्योंकि रजउ की विदा मुझे आघात दे गई। अब तो मुझे घर के अन्दर चैन भी नहीं पड़ता, मानो गड़ा हुआ धन ही कोई खोदकर ले गया है। अब मेरी दिली मुहब्बत किसी से भी नहीं है। मैं किससे दिल्लगी करूँ? मेरी रजउ ससुराल चली गई, मेरे गले में फाँसी का फन्दा डाल गई है।

मोरी रजउ पठै दईं गौने,
हमै बतादो कौनै।
उनखाँ देख-देख जियत रये,
रइयत है ना नौनै?
असल प्रीत के प्रान न खोबै,
उपर होबै रौने।
हा-हा करतन हातन में से,
लीनौ छुड़ा खिलौने,

हौनी ती सो हो गई 'ईसुर'
इतने से का होनै।

पठै दइ = भेज दी गई, कौनै = किसने, उनखाँ = उनको, जियत रये = जीवित रहे, रइयत = रहते थे, हा-हा करतन = निहोरे करना।

मेरी रजउ गौने की विदा में भेज दी गई है, किसने भेजी उसका नाम मुझे बता दो। उसको देख-देखकर जी रहा था, (उसके बगैर कभी अच्छा नहीं रहा हूँ) मेरी असली प्रीति के प्राण न निकल जाये, ऊपरी रोने से कुछ नहीं होना है। इतनी अनुनय-विनय की परन्तु मेरे हाथों से मानो किसी ने मेरा खिलौना ही छीन लिया। ईसुरी कहते हैं - जो होना था सो हो चुका। इससे ज्यादा क्या होना है?

होतन हमैं लगौ ना नोनौ,
रजउ तुमारौ गौनौ।
काँटे उठत देय में कातन,
सुनत लगै अनहोनौ।
एक कौर तौ खाऔ न जैहें,
का खारौ का रौनौ।
'ईसुर' टिया धरौ फिर कबलौ,
मिल है रूप सलौनौ।

नोनौ = अच्छा, देय = देह, कातन = कहते हुए, अनहोनौ = न करने योग्य, टिया = वादा, धरौ = निश्चित करना, कौर = ग्रास, खारौ = अधिक नमक का, रौनौ = फीका, सलौनौ = सुन्दर।

गौने की विदा जब रजउ की हुई तो ईसुरी कहते हैं - मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगा। विदा कहते हुए देह में शूल से चुभते हैं और सुनने में अनहोना सा है। तब एक ग्रास भी खाते नहीं बनता जब नमक ज्यादा हो या एकदम फीका हो। ईसुरी कहते हैं समय निश्चित करो - रजउ फिर से मिलने का अवसर कब मिलेगा, जब तुम्हारा वही लावण्य देख सकूँगा।

जब से रजउ ने तल्ला छाँड़ी,
कौन ईरखा काड़ी।

मरद कै होबै मूँछ नबाबौ,
औरत कें है डाड़ी।
ऐसी किसा भई केबे खौं,
हाती चड़ कें बाड़ी।
'ईसुर' भई बिदा जिदनातें,
ना भइ भेंट असाड़ी।

तह्ला = यहाँ की जगह के अर्थ में, ईरखा = ईर्ष्या, नबाबौ = नीचे करना, डाड़ी = चिबुक स्थल के अर्थ में, किस्सा = कहानी, बाड़ी = बढ़ गई, असाड़ी = आषाढ़ के महीने के दर्शन।

जबसे रजउ ने यह जगह छोड़ी है, न जाने कौन सी ईर्ष्या मुझ पर निकाली गई है। मर्द की तो मूँछ नीची की जाती है, स्त्री की चिबुक स्थल अर्थात् दाढ़ी ही नीचे होगी। ऐसी कहावत कहने को हो गई है। वह तो हाथी पर चढ़कर चली गई। यह कहावत सभी स्थानों पर चल पड़ी है। जिस दिन से रजउ की विदा हुई है, असाढ़ी भेंट भी नहीं हुई।

विशेष :- बुन्देलखण्ड में आषाढ़ मास में देवी-देवताओं के दर्शन होते हैं, पश्चात् कार्तिक तक के लिए वे सो जाते हैं। देवउठनी एकादशी के दिन पुनः उठते हैं तभी से माँगलिक कार्य प्रारम्भ होते हैं। ईसुरी भी असाढ़ी देवी-देवताओं के दर्शन हेतु तड़फ रहे हैं।

राजा कबउँ न बोली हँसके,
येक गाँव में बसकें।
जाती दूर आउती नइयाँ,
कड़ती नइयाँ गसकें।
जो कोउ चर्चा करै तुमारी,
कहा तुम्हारे जसके।
आसा - आसा मेइँ 'ईसुरी'
प्रान रये हैं फँसके।

राजा = रजउ के अर्थ में, कबउँ = कभी भी, कसकें = रहकर, कड़ती = निकलती, गसकें = सटकर के / निकट होकर, जसके = यश की।

ईसुरी की रजउ निश्चय ही धौर्रा ग्राम के जगजीत सिंह मुसाहिब जू के ही घर की कोई सदस्य रही होगी। क्योंकि बुन्देलखण्ड के ठाकुरों के यहाँ लड़कियों को राजा का सम्बोधन दिया

जाता है। तभी तो ईसुरी इस रचना में कहते हैं कि – राजा, तुम एक ही गाँव में रहती हो, लेकिन मुझसे कभी हँसकर बात भी नहीं करती? दूर – दूर जाती हो मेरे पास नहीं आती, मेरे निकट से सटकर भी नहीं निकलती? जो कोई तुम्हारी चर्चा करे तो तुम्हारे किस यश का उल्लेख करे? ईसुरी कहते हैं – हे भगवान्! आशा में ही मेरे प्राण फँसकर रह गए।

सूजैं इन आँखन अलबेली,
जग में रजउ अकेली।
भरके मूंठ गुलाल धन्न बे,
जिनके ऊपर मेली।
भागवान् जिननै पिचकारी,
रजुआ ऊपर ठेली।
ई मईना की आउन हमपै,
झिली मसाकें झेली।
अबकी बेराँ उननै 'ईसुर'
फाग सासरें खेली।

सूजैं= दिखाई दे, मेली = छोड़ी गई है।

फागुन के माह में रजउ का वियोग ईसुरी को उद्वेलित करता है। यह आँखें संसार में मात्र रजउ की अलबेली छवि ही देख पाती हैं। वे लोग धन्य है जिनके ऊपर मुट्ठी भर रजउ ने गुलाल उड़ाई। वे भी भाग्यवान है, जिन्होंने पिचकारी भरकर रजउ के ऊपर छोड़ी है। अत: इस माह का आना मैंने जैसे–तैसे कठिनाई से सहन किया है क्योंकि इस बार उन्होंने होली अपने–पिया के घर में ही खेली है।

नीकौ नईं रजउ मन लगबौ,
येइ सें करत हटकबौ।
मन लागै, लग जात जनमखाँ
रोमइँ रोम कसकबौ।
सुनतीं – तुमें सऔ नाजै है,
सब सब रातन जगबौ,
कछू दिनन में होत कछू मन,

लगन लगत लै भगबौ।
'ईसुर' जे आसान नईं है,
प्रान पराये हरबौ।

नीकौ = अच्छा, मन लगबों = मन का लग जाना, हटकबौ = वर्जित करने के अर्थ में, जनमखाँ = जन्म भर के लिए, रोमइँ - रोम = रोम-रोम में, नाजै है = नहीं जाएगा, जगबौ = जागना, लगन लगत = लगता है।

प्रिय रजउ! तुम्हारे द्वारा इस प्रकार मन लगा लेना मुझे अच्छा नहीं लगता है, ऐसे में मैं वर्जित हो रहा हूँ, क्योंकि मन यदि लगता है तो जन्मभर के लिए लग जाता है, जो रोम-रोम में कसकता है। सुनती हो? फिर तुमसे यह सहन न होगा कि पूरी-पूरी रात जागरण किया जावे। कुछ ही दिन में मन कुछ का कुछ हो जाता है, ऐसा लगता है कि तुम्हें कहीं ले भागे। ईसुरी कहते हैं - दूसरे के प्राण हरण कर लेना कोई सरल कार्य नहीं है।

जौ लौ गुरा-गुरा हो टूटें,
रजउ संग ना छूटें।
जैसी रहत म्यान के भीतर,
जस समसीर सरूटें।
भै ना लगत हमाये जी खौं,
सीस सामनें फूटें।
कोउ ऐसौ कछू न करहै,
डेरा-डंडौ लूटें।
जो आधान 'ईसुरी' मोरौ,
बोलत नइयाँ झूटें।

जौ लौ = जब तक, गुरा-गुरा = नग नग, समसीर = तलवार, सरूटें = खींचने के अर्थ में, भै = भय, जीखौ = मन को, डेरा-डांडौ = डेरा-डंगर के अर्थ में, आधान = अवधान के अर्थ में।

जब तक मेरे अंग-अंग (पीट-पीटकर) क्यों न टूट जाएँ। परन्तु रजउ का साथ नहीं छूट सकेगा। मुझे इसका ज्ञान है कि कभी भी तलवार खिंच सकती है अथवा उसे भी यह ज्ञात है कि तलवारें सी खिंची है। यानी काफी तनातनी है। परन्तु मुझे तनिक भी भय नहीं है। जबकि सम्मुख ही सिर फूट रहे हैं। पर कोई भी मेरे साथ ऐसा कुछ नहीं ही करेगा। मेरा डेरा-डंगर यानी घर का सामान ही लूटकर मुझे भगा देगा। ईसुरी कहते हैं - मेरा अब यही सहारा है कि मैं झूठ नहीं बोल सकता।

जौ जी रजउ - रजउ के लानैं,
का काऊ से कानैं।
जौ लो जीनै जियत जिन्दगी,
रजुआ हेत कमानै।
पैले भोजन करै रजउआ,
पाछे मो खों खानै।
रजउ - रजउ को नाँव 'ईसुरी'
लेत-लेत मर जानै।

जौ जी = यह प्राण, काने = कहना है, जियत जिन्दगी = जीवन भर, हेत = प्रेम हेतु, कमाने= अर्जित करना / पैदा करना।

मेरे यह प्राण मात्र रजउ के ही लिए हैं। यह किसी से क्या कहना है? जब तक जीवन है, तब तक रजउ की भलाई अर्थात् प्रेम की ही कमाई मुझे अर्जित करना है। पहले रजउ भोजन करेगी, पीछे मैं खाऊँगा। इतना ही नहीं ईसुरी रजउ के नाम को ही रटते-रटते मर जाएगा।

विशेष :- इस रचना से प्रतीत होता है कि रजउ ईसुरी को उपलब्ध नहीं हो सकी, वह अन्तिम क्षण तक रजउ को विस्मृत नहीं कर सके।

हम खाँ रजुआ बिछरन व्यापी,
कड़त नईं जी पापी।
भर-भरात जे पिरान फिरत है,
थर-थर देहा काँपी।
कौ जानै लयँ जात प्रान खों,
सिर पै मौत अलापी।
उनके ऐंगर रये 'ईसुरी'
बे मानस परतापी।

बिछरन = विछोह, व्यापी = व्याप्त हुई, कड़त = निकलता, भरभरात = भटकते हुए, फिरत = घूमते, अलापी = बोल रही है के अर्थ में, ऐंगर = निकट, परतापी = प्रतापवान।

मुझे रजउ का विछोह लग गया है, बस मेरे पापी प्राण नहीं निकल रहे हैं। यह प्राण उसके लिए भटकते फिरते हैं, मेरी देह तो थर-थर काँप रही है। न जाने कौन मेरे प्राण हरण कर रहा है,

मेरे सिर पर मौत आवाज दे रही है। उनके अत्यन्त निकट तो वही रह पाएगा जो प्रतापवान यानी भाग्यवान होगा।

मोरे दोरें कोद दुआरौ,
भऔ न रजउ तुमारौ।
मेरे दोरें भऔ तुमारी,
बखरी कौ पिछबारौ।
नाँय खों आबागमन हती न,
माँये हैं गलियारौ।
आर को पार बना लओ चइए,
इक छोटौ सौ आरौ।
जी में 'ईसुर' तुमखाँ तकते,
तुम जब चाँय निहारौ।

कोद = की ओर, दुआरौ = दरवाजा, भऔ = हुआ, बखरी = घर, पिछबारौ = पिछवाड़े का भाग, नायखों = इस तरफ को, माँये = उस ओर, गलयारौ = आम रास्ता, आर को पार = पारदर्शी, आरौ = एक छोटा सा गवाक्षनुमा आला, तकते = देखते, जब चाँय = चाहे जब।

मेरे घर के द्वार की ओर रजउ का द्वार नहीं है। मेरे द्वार की ओर तुम्हारे घर का पिछवाड़ा ही पड़ता है। इस ओर कोई आवागमन भी नहीं है, क्योंकि आम रास्ता तो उसी ओर है। क्यों न एक छोटा सा पारदर्शी गवाक्षनुमा आला दीवाल में बना लिया जावे, ताकि ईसुरी उसमें से तुम्हें देखा करें और तुम भी चाहे जब आसानी से देख लिया करो।

विशेष :- इन पंक्तियों के संकलनकर्त्ता ने ग्राम धौर्रा में स्वयं जाकर देखा है कि वहाँ के ठा. जगजीत सिंह मुसाहिब जू के घर के पिछवाड़े एक पुराना घर है जिसमें एक नाई आज रहता है और वहाँ के लोगों के अनुसार वही ईसुरी का निवास कभी रहा है। परन्तु ठाकुर साहब के पिछवाड़े वाली दीवाल में कोई भी गवाक्ष नहीं है। न ही उस ओर आज भी कोई आम रास्ता है। इस कारण उक्त रचना यह प्रमाण देती है कि ईसुरी की रजउ यथार्थ है और इसी ठाकुर बखरी की है अन्य कोई नहीं।

मन तक गये तुमाये घर लौं,
ढूड़ फिरे जग भरलौं।

इतै पतौ ना चलौ तुमारौ,
हेरी बाट दुपुर लौं।
हेरत रये कुआ के ऊपर,
परीं न कऊँ नजर लौ।
ईसुर रजुआ कहाँ छिपी रइँ,
बैरी कौन सुगर लौ।

मन तक = वहाँ तक, घर लौं = घर तक, भर लौं = पूरे तक, हेरी = देखी, दुपुर लौं = मध्याह्न तक, कऊँ = कहीं भी, नजर लौ = दृष्टि में भी, सुगर लौ= सुघड़ के पास।

वहाँ तुम्हारे घर तक गया, पूरे संसार भर में खोजता फिरा, दोपहर हो गयी परन्तु तुम्हारा कहीं कोई पता नहीं चला, मैं बाट देखते थक गया। पनघट कुएँ पर भी देखा, कहीं भी तो तुम नहीं दिखाई दी। हाय मेरी रजउ तू कहाँ किस सुघड़ के पास जा छिपी है।

मिलकै बिछुर रजउ जिन जाओ,
पापी प्रान जियाओ।
जब से चरचा भइ जाबे की,
टूटन लगौ हियाओ।
अँसुआ चुअत जात नैनन सैं,
रजउ पोंछ लो आऔ।
'ईसुर' कात तुमाये संगै,
मेरौ भऔ बिआओ।

मिलके = मिलने के पश्चात्, बिछुर = बिछुड़, जिन = नहीं, हियाऔ = हृदय की स्थिति, बिआऔ = विवाह।

रजउ तुम मिली, मिलने के पश्चात् अब बिछुड़ तो मत जाओ। मेरे पापी प्राणों को जी लेने दो। जबसे तुम्हारे जाने की चर्चाएँ सुनी हैं, मेरे हृदय की स्थिति खराब है। हृदय टूटने लगा है। मेरी आँखों के आँसुओं को तुम्हीं आकर पोंछ दो। सच पूछा जाय तो मेरा असली विवाह तो तुम्हारे ही साथ हुआ है। तुम हमारी हो और मैं तुम्हारा हूँ।

कैसी भई हीन-मन प्यारी,
होकै रजउ हमारी।

लगियो ना भरमायँ काउ के,
ना करियो मन भारी।
हमनै अबै आज नो तुमखाँ,
दुबिदा नई बिचारी।
'ईसुर' कात तुमाई दमपै,
जनम जिन्दगी हारी।

हीन-मन = मन मुरझाने के अर्थ में, होके = होकर के, लगियो = लगना, भरमाये = (किसी के) बहकावे में, आरी = बोझिल सा, दुबिदा = दुविधा।

प्रिय तुम मन से हीन क्यों हो रही हो, जबकि तुम मेरी हो चुकी हो। बस किसी के बहकावे में मत आ जाना और न अपने मन को भारी करना। मैंने अभी तक तुमको दुविधा के रूप में नहीं सोचा है। बल्कि तुम्हारे ही बलबूते पर मैंने अपना जन्म-जीवन तुम्हारे लिए ही हार दिया है। मैं पूरी तरह तुम्हारे लिए समर्पित हूँ।

राती बातन में बौरायें,
दबती नइयाँ छायें।
आउन कइती आई नइयाँ,
कातीं तो हम आयें।
किरियाँ करीं सामने परकें,
कौल हजारन खायें।
इतनी नन्नी रजउ 'ईसुरी'
बूड़न खाँ भरमायें।

रातीं = रहती हो, बातन = बातों में, बौरायें = भुलाए (पागल बनाए), आउन = आने के लिये, काती = कहा था, किरिया = क्रिया, कौल = शपथ, नन्नी = छोटी सी, बूड़न = वृद्धजनों को, भरमाये = भ्रम में डाले हुए हैं।

प्रिये तुम तो कोरी बातों में ही मुझे पागल कर देती हो और मेरी छाया भी नहीं दाबती हो अर्थात् निकट नहीं आती हो। आने का वादा किया था लेकिन नहीं आईं। भूल गई कि कहा था आऊँगी। मेरे सम्मुख ही तुमने यह सब किया था और हजारों बार शपथ खाई थी। आश्चर्य है कि रजउ तुम जरा सी तो हो और इतनी भोली हो, वृद्धों तक को भ्रमित किए जा रही हो।

फट गव रजउ करेजौ बातन,
कुटिल कपट की कातन।
मैंने लौट जुआब न दीनौं,
भौत दिना भए सातन।
मो सौ और दूसरौ नइयाँ,
हार गये गम खातन।
सब मिट गये स्वाँग दै सिर में,
तेगा अपने हातन।
दगाबाज की प्रीत 'ईसुरी'
कउँना सुनी निभातन।

कातन = कहने मात्र से, जुआब = उत्तर, सातन = सहते हुए, गमखातन = धीरज धरते हुए, स्वाँग = लोकनाट्य का नाम/नाटक चेटक के अर्थ में, तेगा = तलवारनुमा अस्त्र, दगाबाज = बेईमान, कऊँना = कहीं नहीं, निभातन = निर्वाह करते हुए के अर्थ में।

प्रिय रजउ! कुटिल और कपटी लोगों की कही-सुनी बातों से मेरा तो कलेजा ही फट गया। समझो, मैंने पलटकर उन्हें उत्तर देना भी आवश्यक नहीं समझा, बहुत दिनों से चुपचाप सहता चला आ रहा हूँ। मुझ जैसा अन्य कोई हो नहीं सकता जो धीरज धरते-धरते भी हताश हो गया और अन्त में सारे नाटक का पटाक्षेप हो गया, अपने सिर पर अपने ही हाथों मानों मैंने तलवार से प्रहार कर लिया हो। बेईमानों की प्रीति का निर्वाह होना सम्भव नहीं होता।

मनकी कौन पराई जानै,
कय सै लबरी मानै।
आंगें रजउ बीच में दय ते,
तुमनै कृपा निधानै।
गंगा जली शीश के उपर,
सालिग राम दिखानै।
घटी करै तो सबके घटकी,
पारब्रह्म पहचानै।
मोरौ - तोरौ लगौ मामलौ,
'ईसुर' ईखों छानै।

मनकी = अन्त: की बात, लबरी = मिथ्या, दय ते = दिये थे, सालिगराम = शालिगराम की मूर्ति के अर्थ में, घटी = कभी करने के अर्थ में, सबके घट की = सभी के हृदय की, मामलों = प्रकरण, ईखों = इसको, छानै = विवेचन करने के अर्थ में।

कौन-किसके मन की जानता है। कहने से तो झूठी लगती है। आगे-पहले हमने भगवान् को मध्यस्थ माना था। गंगाजलि सर पर रखी थी उसके मध्य शालिगराम रखे थे। अगर हम आपस में एक दूसरे के साथ धोखा करते हैं तो इसे पारब्रह्म परमेश्वर ही पहचानेंगे। हे प्रिय! अब मेरा और तुम्हारा मुकदमा भगवान् के न्यायालय में है वे ही इसका निराकरण करेंगे।

हमखाँ कर डारौ बैरागी,
रजउ की आसा लागी।
अपने जानै कबउँ नइ भइ,
धूनी मरै न आगी।
इन हातन ना दई दक्षना,
हमने भिच्छया माँगी।
फेरी देत रजउ के लानै,
'ईसुर' बस्ती त्यागी।

कर डारौ = कर दिया, बैरागी = फकीर, फेरी = चक्कर लगाते।

यह रचना का पाठान्तर है इसी टेक से नायिका की ओर से भी भाव व्यक्त करने वाली रचना उपलब्ध है। परन्तु यहाँ नायक की ओर से बात कही गई है कि - मुझे तुमने फकीर बना डाला। प्रिय रजउ! तुम्हारी लगन ऐसी लगी कि मैं फकीर हो गया। यह वैराग्य भी ऐसा वैसा नहीं जो अपनी समझ में अभी तक नहीं आया, बिना धूनी के जहाँ आग जल रही हो। मैंने भीख सी माँगी फिर भी तुमने अपने हाथों से (दिल की) दक्षिणा तक मुझे नहीं दी। तुम्हारे द्वार की फेरी देते-देते ही प्रिय रजउ! मैं बेघरबार हो गया हूँ।

विशेष :- ठाकुर जगजीत सिंह मुसाहिब जू के ईसुरी विश्वासपात्र कारिन्दे थे। कालान्तर में किसी अज्ञात कारण से अपमानित करते हुए ग्राम धौर्रा से इन्हें निष्कासित किया गया था। उस समय की मानसिकता में कवि और क्या कह सकता था जबकि वह घर से बेघर हो भटक रहा होगा यही न कि - 'रजउ के लाने बस्ती त्यागी।'

अबकी बेर बिछुरतन मरनैं,
हौनै जो तोय कन्नैं।
राखौ खबर रजउ आवत लौ,
पाप पुन्न खों डरनैं।
मोरी खबर तोय ना रानै,
जब रंग रस में परनैं।
ईसुर हमै बिसरती नइयाँ,
तुमखों कभउँ बिसरनैं।

बिछुरतन = बिछुड़ते हुए, जो तोय = जो तुमको, आवत लौ = आने तक, डरने = भय खाता है, बिसरनैं = विस्मृत होने के अर्थ में।

समझा जाता है कि ईसुरी की प्रेरणास्वरूप प्रेयसी रजउ की शादी अन्यत्र हो जाने के पश्चात् जब विदा हुई होगी तब ईर्ष्या में ईसुरी जल–भुनकर खाक हुए होंगे। इस बार बिछुड़ते समय मैं मर जाऊँगा, लेकिन होगा वही जो तुम करोगी, यानी मेरी दया नहीं विचारोगी। जब तक रजउ पुन: लौटकर नहीं आती, तब तक खबर रखूँगा और चुप रह लूँगा क्योंकि पाप–पुण्य से भी तो डरना है। जानता हूँ कि तुम्हें मेरी खबर नहीं रहेगी जिस समय तुम वहाँ के रंग–रस में पड़ जाओगी। लेकिन तुम मुझे विस्मृत नहीं कर सकती, तुम्हें न मैं कभी भी भुला सकता हूँ।

जातीं नइयाँ आँखन में सैं,
रजउ सोइये कैसैं।
जा प्रानन की बीद – बीद गईं,
खो दइ नींद इतैसैं।
बूँदा तनक दिखाई दै गव,
प्रान फाँस लए ऐसैं।
जा सैंदुर की सुरकी सिरपे,
सूजै चलती जैसैं।
'ईसुर' उनके मौं खौं देखैं,
बिद गए अपनी लैसे।

सोइये = सोऊँ, बीद = फन्दे के अर्थ में, बीद गई = फँसकर रह जाने के अर्थ में, बूँदा = माथे की टिकुली, सुरकी = अरुणाई, सूजे = सुइयाँ, बिद = विधाता, लैसे = लय युक्त।

ईसुरी को रात्रि में नींद नहीं आती है। तब कहते हैं कि प्रिय रजउ! मेरी आँखों में से तुम नहीं निकल पा रही हो अर्थात् आँखों में जब रजउ पहले से ही है तो उसके रहते अन्य वस्तु (नींद) वहाँ कैसे पहुँचे। उसके लिए स्थान खाली नहीं है। अत: कैसे सोऊँ प्रिये! यही मेरे प्राणों में फंदा लग गया है तुम्हारे माथे की टिकुली की झलक मात्र ने मेरे प्राण फँसा लिए हैं। यह माँग के सिन्दूर की अरुणाई मानो हृदय में सुइयाँ चुभो रही हैं। इनके मुख को देखते हुए प्रतीत होता है कि ब्रह्मा जी अपनी यथागति से विलग हो गए हैं, अन्यथा ऐसा क्यों होता?

कोउ रजउ के जुबना गैहै,
फूट गदेरी जैहै।
छूतन हुये हात में छिदना,
गदियन रकत बहै है।
कोऊ लगै रजउ की छाती,
छूट पनारौ बैहै
संगै उठै सूल बरछी के,
अनी अंग में सैहै।
ईसै इनकी गली 'ईसुरी,'
कड़बौ हमै मनै है।

जुबना = उरोज, गैहै = कर में लेने के अर्थ में अर्थात् पकड़ेगा, गदेरी = हाथ की हथेली, छूतन = स्पर्श करते ही, छिदना = छिद्र से, गदियन = हथेली में, रकत = रूधिर, बहै है = चुएगा, पनारे = परनाले, अनी = नोंक का बिन्दु, सैहै = सहन करेगा, मनै है = वर्जित है।

जो कोई मेरी प्रेयसी रजउ के उरोज अपने कर में लेने की भूल करेगा, उसके हाथ की हथेली फूट जाएगी, स्पर्श करते ही हाथ में छिद्र हो जाएँगे, हथेली से रूधिर बह निकलेगा अर्थात् उरोज पानीदार पैने हैं। जो कोई मेरी रजउ को छाती से लगाकर आलिंगन करेगा तो रक्त के परनाले बह जाएँगे क्योंकि हाथ में बरछी जैसे शूल जो उठे हैं, उसकी अग्नि देह सह न सकेगी। इसीलिए उस ओर का रास्ता मेरे लिए वर्जित है।

विशेष :- स्तन उभार का पानीदार पैनापन व्यक्त करने हेतु यहाँ अतिश्योक्ति का सहारा लिया गया है।

हमसे दूर तुमारी बखरी,
हमै रजउआ अखरी।
हो पाबै बतकाब न पूरौ,
घरी भरे खों छकरी।
नइयों परत दुआरौ सायै,
खोर सोउ है सकरी।
बेरा बखत नजर बरकाकें,
कैसे लेबै तकरीं।
छिन आबै छिन जाँय 'ईसुरी'
भये जात हैं चकरी।

बखरी = निवासगृह, अखरी = खलती है, बतकान = बातचीत, छकरी = तृप्त होकर, सकरी = संकीर्ण, खोर = गली, बेरा =बखत बरकाकें = बचा लेने के अर्थ में, तकरी = देख लेने के अर्थ में, चकरी = घूमने वाला लकड़ी का विशेष अपना चक्र।

ईसुरी कहते हैं – प्रिय रजउ! तुम्हारा गृह मुझसे बहुत दूर है, यही मुझे खलता है। क्षण भर के लिये प्रेम की बातचीत भी नहीं कर पाते हैं। क्योंकि तुम्हारा द्वार मेरे घर के सामने नहीं है, जो गली है वह भी संकीर्ण है। समय देखकर दृष्टि बचाकर कैसे देख लूँ यही लौ लगी रहती है, क्षण में आती हो, क्षण में चली जाती हो मैं चकरी हुआ जाता हूँ।

हमखों मिलौ रजउआ कबलौं,
बाट हेरबी जब लौं।
जो आनन्द करा दये तुमने,
सो मिलने ना सब लौं।
तुमरी दम खो कपट न करबी,
छूना कड़नै हम लौं।
जौ तन-मन जो हतौ हमाऔ,
सो सब तुमरी दम लौं।
कयें 'ईसुरी' बाट हेरबी,
बा आबन की मग लौं।

मिलौ = मिलोगी, रजउआ = प्रिय रजऊ, कब लौं = कब तक, बाट = प्रतीक्षा, हेरबी = देखूँगी,

जब लौं = जब तक, सब लौं = सबके पास, करबी = करूँगी, छूना = छूकर भी, मग लौं = राह तक।

ईसुरी कहते हैं – मैं कब तक बैठा तुम्हारी बाट निहारूँ? प्रिय रजउ! तुम मुझे कब तक मिलोगी? तुमने जो आनन्द मुझे करा दिया है, वह अन्य सभी के लिए सर्वथा दुर्लभ है। तुम्हारे जीते जी कपट कदापि न करूँगा वह तो मुझे छू तक नहीं गया है। मेरा तन-मन भी अब तुम्हारा हो गया, मेरा कुछ भी नहीं रहा। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा जब तुम अपनी ससुराल से वापिस लौटोगी तब तुम्हारी राह में सतत देखता ही रहूँगा।

हड़रा घुन हो गये हमारे,
सोसन रजउ तुमारे।
दौरी देय दूबरी हो गई,
करके देख उगारे।
गोरे अंग हते सब जानत,
लगन लगे अब कारे।
ना रये मास रकत के बूँदा,
निकरत नई निकारे।
इतनउ पै हम रजउ खौं 'ईसुर'
बने रात कुपियारे।

हड़रा = अस्थि पंजर, घुन = खोखले होने के अर्थ में, सोसन = सोचने से, दौरी = दोहरी, दूबरी = दुर्बल, इतनउ = इतने पर भी, कुपियारे = अप्रिय।

प्रिय रजउ! तुम्हारे बारे में सोचते-सोचते मेरा शरीर अस्थि पंजर बनकर खोखला हो गया है। दोहरी देह थी यह दुर्बल हो गई। चाहो तो मेरे वस्त्र उतारकर देख सकती हो। सभी जानते थे मेरे गौर वर्ण को वह भी अब श्यामल लगने लगा है। न माँस रहा, न बूँदभर रक्त शेष है, जो निकालने पर निकल सके। इतने पर भी मैं रजउ के लिए अप्रिय हूँ।

तुमनै अन्त लगा लईं आँखैं,
हम से दिल ना राखैं।
जो तुम यार दूसरौ करहो,
हम सौ मिलै मसाकै।

बा हेरन अब काँ गइ रजुआ,
काय खाँ घूँगट ढाँकें।
सुध आये पे उठै 'ईसुरी'
घायल कैसी काँखैं।

अन्त = अन्यत्र, मसाके = बमुश्किल, हेरन = चितवन, काँखैं = कराहने के अर्थ में।

निराश होकर ईसुरी कहते हैं कि – तुमने अन्यत्र आँखें लगा ली हैं। मुझसे दिल नहीं मिला रही हो, यदि तुम दूसरे से मित्रता करोगी तो मुझ जैसा तुम्हें मुश्किल से ही मिल सकेगा या मिलेगा? प्रिय रजउ! तनिक बताओ तो तुम्हारी वह चितवन कहाँ खो गई? किसलिए घूँघट की ओट कर बैठी हो? जब भी तुम्हारी याद आएगी तो आहत की भाँति कराहँ उठेगी।

जे दिन कड़े पुरा में रातन,
रजउ बनत ना कातन।
जब–कब मिलती गैल – गलन में,
समजा जातीं बातन।
बरस रोज के बारा मइना,
बातन में टिरकातन।
'ईसुर' होत पराये जुबना,
छुअन न पाये हातन।

कड़े = निकले/बीते, पुरा = मुहल्ले में, रातन = रहते हुए, कातन = कहते हुए, गैल–गलन= गली–गलियारों में, बातन = बातों में ही, बरस रोज के = वर्ष दिनों के, बारहों माह, टिरकातन = टालते हुए, जुबना = उरोज, छुअन = स्पर्श करने।

इतने दिन बीत गए मुहल्ले में ही रहते हुए। प्रिय रजउ! पूछो मत कहते नहीं बनता है। जब कभी भी तुम मुझे गली–गलियारों में मिलती थी तो बातों से ही समझाकर चली जाती थी। वर्ष के बारहों माह इसी प्रकार से कोरी बातों में ही तुमने टालकर निकाल दिए। समझ गया कि यह यौवन पराया था, मेरा नहीं, तभी तो हाथ से स्पर्श भी न कर पाया।

जा भई दसा लगन के मारैं,
रजउ तुमारे दुआरैं।

जिन तन फूल छड़ी ना लागीं,
तिन-तन छइ तरबारैं।
हम तौ टँगे नीम की डारन,
रजुआ करें बहारैं।
ठाँड़ी हतीं टिकी - चौखट से,
अब भइँ ओट किबारै।
का कयँ यार अकेले 'ईसुर'
सबरौ गाँव उतारैं।

दसा = हालत, लगन के मारैं = लगन के कारण, दुआरे = द्वार पर, जिन तन = जिस तन पर, तिन तन = उस शरीर पर, छइ= छा रही है, ओट = पीछे, उतारें = उतारु हो जाना।

ईसुरी कहते हैं - प्रिय रजउ! तुम्हारे प्रति लगन का ही परिणाम हुआ कि मेरी यह हालत हुई। वह भी तुम्हारे ही द्वार पर। जिस शरीर पर कभी फूल की छड़ी भी नहीं लगी, उस पर आज वहाँ तलवारें खिंची हुई हैं। मुझे तो नीम की डाल से बाँधकर लटका दिया गया है। रजउ बहार कर रही है अर्थात् मौज में है। अभी-अभी चौखट से टिकी हुई खड़ी थी, अब किवाड़ों की ओट में हो गई है। परन्तु मैं क्या कहूँ? अकेला जो पड़ गया। इस समय मेरे पीछे पूरा ही गाँव पड़ गया है।

विशेष :- ईसुरी की जीवनी के संदर्भ में यह रचना स्वयं में महत्वपूर्ण है। ग्राम धौर्रा के ठाकुर जगजीत सिंह जू मुसाहिब (जिनके वे विश्वासपात्र प्रिय कारिन्दे थे) ने कभी उन्हें अपने द्वार पर लगे नीम के वृक्ष से लटकवाकर पिटवाया था और कारण अन्य अस्वाभाविक प्रचारित करवाया गया था परन्तु इस रचना में यह राज छिपा हुआ है। कारण यदि अन्य था तो वह कौन था जो किवाड़ों की ओट में हो गया था? एक प्रश्न है। इसमें एक पंक्ति फूल की छड़ी न लगने की है। फूल की छड़ी का अर्थ फूल-बाण अर्थात् कामदेव का बाण है वह स्पष्ट कह रहा है कि यह एक बड़ी बात है कि मेरे और उनके बीच ऐसी बात नहीं हुई अर्थात् मैंने उसका काम रसास्वादन नहीं किया फिर भी मुझ पर तलवारें खिंची हैं? मेरा तो पवित्र प्रेम है। प्रेयसी को कलंक से बचाने की युक्ति हो सकती है।

जा भई दसा लगन के मारैं,
रजउ तुमारे दुआरैं।
काटत नई सीस, सोउत में,
जो है जी के पारैं।

जिनपे फूल छड़ी ना छूटी,
तिनै घलीं तरबारैं।
का कर सकत अकेलो मैं हो,
सबरउ गाँव उतारैं।
'ईसुर' मिन्त ढाल – दुख आगें,
सुख में रात पछारैं।

सोउत = सोते में, जी के पारैं = जिसके द्वारा लिटाया गया है, फूल छड़ी = फूलों की छड़ी अर्थात् कामदेव का बाण, घली = पड़ी, का कर सकत = क्या किया जा सकता है, अकेलो मैं हो = अकेला पड़कर, मिन्त ढाल = मीत द्वारा रक्षा, दु:ख आगें= दुख के सम्मुख, रात पछारे = पीछे रहती है।

ईसुरी कहते हैं – रजउ तुम्हारे द्वार पर तुमसे लगन के कारण मेरी यह हालत हो गई। कोई यदि किसी के द्वार पर स्वयं ही सो जाये, तो क्या उसका सिर ही काट लेना चाहिए – क्या यह न्यायोचित है। जबकि मुझ पर फूल की छड़ी अर्थात् कामदेव के बाणों का असर तक नहीं हुआ तो भी तलवारों की नौबत आ गई, लेकिन बहुत के आगे एक अकेला भला सच्चाई के लिए कहाँ तक संघर्ष करे? पूरा ही गाँव एकजुट होकर मुझे दण्डित करने पर उतारू हो गया है। (प्रिय रजउ! तुम्हीं मेरी सच्ची मीत हो अत: दु:ख पड़ने पर सच्चा मित्र ही उसकी ढाल बनता है, भले ही वह सुख में पीछे हट जाए दुख में तो मित्र से सहयोग की पूरी उम्मीद रहती है।)

ऐसी हती रजउ की सानी,
दूजी नईं दिखानी।
बादशाह कै बेगम नइयाँ,
ना राजा घर रानी।
तीनउ लोक भुअन चौदा में,
ऐसी नईं दिखानी।
'ईसुर' पिरकट भइँ है जग में,
श्री वृषभान भुबानी।

हती = थी, सानी = शान के अर्थ में, पिरकट = प्रकट।

ईसुरी को रजउ उपलब्ध न हुई तो वे रजउ के ही वियोग में ग्राम बगौरा में जा बसे, धीरे-धीरे समस्त संसार ही उन्हें रजउ सा दिखाई देने लगा। वे वृन्दावन गए तो वहाँ वृषभानु किशोरी में भी रजउ का ही दर्शन किया। वे कहते हैं कि – मेरी प्रिय रजउ ऐसी शानदार थी कि उसके

बराबर कोई दूसरी नहीं दिखाई दी। बादशाह की बेगम भी वैसी नहीं हो सकती, न ही राजा की रानी हो सकती। तीनों लोक और चौदह भुवनों में भी ऐसी अन्य कोई हो नहीं सकती। जैसी यह रजउ श्री वृषभानु किशोरी यानी राधा के रूप में प्रकट हो गई है।

विशेष :- उपमा कालिदास की ही कही गयी है। ईसुरी ने कालिदास को पढ़े बगैर उनकी उपमाओं को आगे बढ़कर छीना है। कालिदास भी मेघदूत में यक्ष के द्वारा अपनी यक्षिणी के लिए कहलवाता है कि – 'या तत्र स्याद् युवति विषये सृष्टिराद्येवधातु:।' अर्थात् वहाँ की समस्त युवतियों में वह ब्रह्मा की प्रथम कृति होगी। तो ईसुरी की रजउ भी यहाँ – 'तीनउ लोक भुअन चौदा में ऐसी नईं दिखानी।' यही उनकी अपनी विशेषता है।

दोहा – *एक बेर मिलके रजउ, हमै लगालो अंग।*
बड़े भाग से भऔ है, हमाऔ-तुमाऔ संग।
हो गऔ संग हमारौ तेरौ,
प्यारी मुख ना फेरौ।
सेनै चला नाइँ कर दीनी,
एक बेर फिर हेरौ।
एइ आसा के लानै दइयत,
दोइ जोर हम फेरौ।
मिल जाती जो एक बेर कैं,
मन भर जातौ मेरौ।
'ईसुर' जौ मन पूरौ हो गव,
रजउ तुमाऔ चेरौ।

एक बेर = एक बार, हमाऔ-तुमाऔ = मेरा-तेरा, सेनै = नयनों के संकेत, हेरौ = देखों, दइयत = देती हूँ, दोई जोर = सुबह शाम, फेरौ = चक्कर, चेरौ = दास हूँ।

प्रिय रजउ! एक बार मिलकर मुझे अंक में तो भर लो, क्योंकि पूर्व संस्कारों से ही मेरा और तुम्हारा संग हुआ है। अत: प्रिय रजउ! मुख न फेरो, नयन के मूक इशारे से तुमने इन्कार किया है। अरे एक बार मेरी ओर देखो तो! इसी आशा के हेतु मैं सुबह-शाम तुम्हारे द्वार के फेरे दे रहा हूँ। यदि एक ही बार तुम मिल जाती तो मुझे तृप्ति मिल जाती। प्रिय रजउ! यही सत्य है कि मेरा यह मन अब मात्र तुम्हारा दास है।

कउनै देखी रजउ हमारी,
काँ गइ प्रान प्यारी।
घरियक भऔ इतै खेलत तीं,
ओड़ै फरिया कारी।
घर-घर ढूँड़त फिरत बिरज में,
व्याकुल बाप-मतारी।
'ईसुर' कउँ लै गए ना होवें,
राधा खों गिरधारी।

कउनै= किसी ने, काँ गइ = कहाँ गई, घरियक = एकाध घड़ी, फरिया = कुँवारी लड़कियों के ओढ़ने का दुपट्टा विशेष, बिरज में = ब्रज में।

रजउ के असह्य वियोग को सहते-सहते ढलती वय में ईसुरी रजउ के लिए विक्षिप्त हो गए। वे तीर्थ यात्रा हेतु जब वृन्दावन गए तो वहाँ मन्दिर-मन्दिर प्रभु दर्शन में रजउ को ही खोजते फिरे। उसी मनोदशा की यह रचना है। किसी ने मेरी रजउ को देखा है। वह प्राण प्यारी किस ओर गई है? घड़ी भर पहले ही तो (बाल्यकाल की स्मृति कर) यहीं-कहीं तो मिली थी। काले रंग की ओढ़नी ओढ़े हुए। मैं तो घर-घर और पूरे ब्रजमंडल में भी खोजकर हार गया। उसके माँ-बाप भी तो व्याकुल होंगे। कहीं ऐसा तो नहीं है कि राधा के रूप में गिरधारी ही उसे पकड़ ले गए हों।

बिधना करी देय ना मेरी,
रजुआ घर के दैरी।
आबत जाबत चरन न धूरा,
लगत जाय हर बेरी।
लागी आन कान के ऐंगर,
बजन लगी बजनेरी।
उठन चात अब हाट 'ईसुरी'
बाट भौत दिन हेरी।

बिधना = ब्रह्मा जी, करी = की, देय = देह, दैरी = देहली, हर बेरी = हर बार, ऐंगर = निकट, बजनेरी = अन्तिम ध्वनि / अनहद नाद के अर्थ में, हाट = बाजार लेकिन जीवन के अर्थ में, बाट = प्रतीक्षा, भौत दिन = बहुत दिनों, हेरी = देखी।

खेद है कि विधाता ने मेरे शरीर को मनुष्य बना दिया। यदि प्रिय रजउ के घर की देहली बना देता तो मिलना अच्छा होता। आते–जाते उसकी चरण रज का स्पर्श बार–बार प्राप्त करता। अब क्या अन्त समय आ गया जिससे कान के निकट एक अनहद नाद सुनाई दे रहा है? अब तो बाजार उठने को है, अर्थात् जीवन लीला समाप्त होने को है। बहुत दिन तक प्रतीक्षा में बाट देखता रहा।

ईसुर कात सजी अलबेली,
छैल देखतन झाँके।

श्रृँगार खंड -एक

नख-शिख वर्णन

बैठी बीच बजार तमोलन,
पान धरै भर डोलन।
कउँ काँ गूद परी टिपकारी,
जीरा हरन कपोलन।
चतुराई से गाक चलाबै,
बोलै मीठै बोलन।
जब कउँ निघा बदल तिरछोंही,
लगी घूँघटा खोलन।
'ईसुर' हँसतन होस रयेना,
कैउ जनन के चोलन।

तमोलन = पान बेचने वाली, डोलन = डलियों में, गूद = चेचक के चिह्न, टिपकारी = बिन्दियों वाली, जीरा = जियरा, गाक = ग्राहक, निघा = दृष्टि, तिरछोंही = कटाक्ष, चोलन = शरीरों में।

डलियों में पान भरे हुए हैं। बीच बाजार में यह रंगीन तबियत की पान बेचने वाली बैठी है। कहीं तो इसके मुखमंडल पर चेचक के चिह्न आकर्षक बिन्दुओं से झलक रहे हैं। मेरा मन उसके कपोलों पर ठहर जाता है। बड़ी होशियारी से अपने ग्राहकों को पान दे रही है। बोली उसकी मीठी है। कभी-कभी दृष्टि घुमाकर कटाक्ष कर देती है। घूँघट खोले हुए और हँसते हुए देख लो तो - होश हवास उड़ जाते हैं, कई लोगों के शरीरों में सिहरन हो जाती है।

तोरौ साउकार बर ठैरौ,
मनै लगै सो पैरौ।

दई की दैन डबा भर भरके,
गानौ धरौ सुनैरौ।
पग में परे पैजना ऐसे,
मिलत दूर से ऐरौ।
'ईसुर' परत छमाके आबै,
चौक उठत है बैरौ।

साउकार = साहूकार, मनै लगै = जो मन भाए, पैरौ = पहिनो, दई = देने के अर्थ में, डबा = आभूषण रखने का डिब्बा, गानो = आभूषण, सुनैरौ = स्वर्णिम, पैजना = पैरों का गहना, ऐरौ = आहट आवाज, बैरौ = बहरा भी।

तेरे जो मन भाए सो पहनाकर क्योंकि तेरा पति साहूकार जो ठहरा। भगवान् की सब कुछ देन है। डिब्बे भरकर सोने के गहने पहनो, तो भी कम न पड़ें। पैरों में पड़े हुए पैंजना ऐसे हैं कि दूर से ही आहट मिल जाती है कि तुम आ रही हो, तुम्हारे पायजेब की छम-छम की आवाज बहरा भी सुनकर चौंक पड़ता है, कि कोई सुन्दरी आ रही है।

बैंदा लागौ लैन हिलोरैं,
दाब दाबनी कोरैं।
ऐसौ दिपत भाल के ऊपर,
दोई भौंयन के कोरैं।
गोगई सींक लगी सुरमा की,
झारत चारउ ओरैं।
'ईसुर' नजर हमाई परतन,
जात करेजौ फोरैं।

दाबनी = दबाने योग्य, कोरैं = किनारे, गोगई = गहीं ले ली अथवा दुहरी, सींक = शलाका, झारत = बुहारने के अर्थ में, परतन = पड़ते ही, करेजौ = कलेजा, फोरैं = फोड़ने।

हे प्रिय! तुमने जो सिर में बेंदा पहना है उसकी आभा चारों ओर फैल रही है। बेंदा दोनों भृकुटियों के बीच मस्तक पर ऐसा दीप्तिमान होता है उसका जवाब नहीं है। उस पर, आँख में आँजे गये काजल की रेखाएँ तो जैसे चारों दिशाओं को बुहार देती हैं। मेरी दृष्टि पड़ते ही मुझे लगता है, मेरा कलेजा फट जाएगा, तुम्हारी निगाहें मेरा कलेजा भेद देंगी।

दुल्हन जो नई बेंदी दैहै,
मोहन मन लग जैहै।
अमल-अनन्द अनौखे मौं की,
नौकी नौक बनैहै।
खौंसी खुलै घले घूँगट में,
कानौ ढाँकें रैहै।
'ईसुर' कड़न रोज की रस्ता,
मो धोकौ हो जैहै।

नौकी = नाखून की, नौक = नोंक, बनैहै = बनाएगी, खौंसी = खोंसी हुई सी, कानौ = कहाँ तक, कड़न = निकलने के अर्थ में।

दुल्हन जब नई बेंदी धारण करेगी तो मन मोहने लगेगी। निर्मल आनन्ददायिनी अनुपम मुख की छवि तब और भी दीप्तिमान होगी जब घूँघट खोलने हेतु नुकीले नाखूनों की उँगलियों के मध्य से झरोखा खुलेगा। तब वह मुख कहाँ तक ढँका रह सकेगा। ईसुरी कहते हैं- उसके निकलने का मार्ग प्रतिदिन का यही है तो भी मुझे भी धोखा हो जाता है कि क्या वह कोई अन्य तो नहीं है?

बिंदिया दैकें माथे मइयाँ,
अब का भई करइयाँ।
ऊसइँ मरत फिरत ते बीसन,
रोज-रोज तुम पइयाँ।
ईसै भलौ कतल कर दैबौ,
लै तरबार मुनइयाँ।
अब जौ छान कौन पै छानैं,
कीके प्रान लिबइयाँ।
'ईसुर' कये बन्देज लटीकौ,
भलौ बाँदबौ नइयाँ।

मइयाँ = मध्य में, करइयाँ = करने वाली हो, ऊसइँ = वैसे ही तो, तुम पइयाँ = तुम पर, मुनइयाँ = प्यार भरा सम्बोधन, बन्देज = बाँधकर, तांत्रिक प्रबन्ध के अर्थ में।

माथे के मध्य बिंदिया लगाकर अब क्या कर डालने का इरादा है। वैसे ही तो रोज तुम्हारे

ऊपर बीसों लोग मरते फिर रहे थे। हे प्रिय! अच्छा होता कि तुम हमें तलवार से कत्ल ही कर देती। अब यह तुमने किसको कत्ल करने की ठान ली है। किसके प्राण लेने वाली हो? ईसुरी कहते हैं – यह सब तो ठीक है परन्तु मुख पर लट निकालने से तो कहर ही बरप जाता है। यह अच्छा नहीं है। जरा लट ठीक से बाँध लिया करो।

बैंदी बूँदा संग लगाई,
प्रान खान भौजाई।
बिध से मिली आनके बुंदकीं,
बूँदा की हरयाई।
मिलत नई अर-से-अर देखौं,
दुलहन दई दिखाई।
मदन मोहनी, मंगल पत्री,
मिलन चन्द्र खों चाई।
'ईसुर' लगी उतैई देखें,
किये जात गम खाई।

बैंदी = माथे का स्वर्णिम आभूषण, बूँदा = काँच का गोटियका जो सुहाग का संकेत है, बिध से = विधिवत, आनके = आकर के, हरयाई = हरितिमा, अर से अर = बूँदा को अंकित चक्र के अरे से अरे, मदनमोहनी = काम हेतु सम्मोहन करने वाली, मंगल पत्री = सुहाग चिह्न के रूप में, वह काँच का धरातल जिस पर बूँदा का शिल्प होता है, चाई = चाही, गमखाई = धीरज रखने के अर्थ में, रूक जाना।

भाभी ने बैंदी और बूँदा दोनों साथ-साथ धारण कर लिये हैं, जो प्राण लेवा हैं। विधिवत उस बूँदे में बिन्दिया का आँकड़ा अटकाया गया है जो हरे धरातल पर, उसमें अंकित चक्र के एक अरे दूसरे अरे में मिलकर भी एक नहीं होते हैं वे अलग – अलग साफ दिखाई देते हैं। उनके पहनने से आप नव वधू प्रतीत होती हैं। जो काम भाव सम्मोहनी है। मंगल पत्री और काँच की चूड़ियाँ सुहाग का प्रतीक हैं। ऐसी बैंदी और बूँदा चन्द्र से मिलना चाहती है अर्थात् तुम्हारे चन्द्रानन पर शोभित हुई हैं। जहाँ यह बिन्दी लगी है, उस पर किसकी निगाह नहीं पड़ेगी, लोगों में इतना धीरज ही नहीं होगा कि वह तेरी बैंदी और बूँदा युक्त चन्द्र मुख न देखे।

बूँदा तरैं दऔ भौजाई,
ऊपर आड़ लगाई।

दौनों के दुबचरैं प्यारी,
बैंदी एक जमाई।
तीसै चलकै तनक फेरसे,
सैंदुर सींक सुहाई।
दोनों आड़ काड़ बड़कैजा,
भाल बिंदुलिया भाई।
तेई पै 'ईसुर' घूँगट घालें,
प्रान खान भौजाई।

तरे = नीचे की ओर, आड़ = घूँघट की ओट के अर्थ में एक आभूषण, दुबचरैं = दुबीच में, तीसे = जिससे, फेरसे = घुमाकर बदलकर, सैंदुर = सिन्दूर, सींक = श्लाका, काड़ = निकाली, बड़कैजा = बढ़करके यह, बिंदुलिया = बैंदी का छोटा आकार, भाई = भा गई।

भाभी! बूँदा तो नीचे कर दिया ऊपर से आड़ के रूप में एक चाँदी का आभूषण पहन लिया है। दोनों के मध्य में सुन्दर एक बैंदी भी लगा ली है। उससे चलकर थोड़े प्रभाव पश्चात् सिन्दूर की जो श्लाका लगाई है उसकी शोभा का क्या कहना? फिर यह आड़ अर्थात् ओट यानि कि घूँघट काढ़ लिया उससे भी बढ़कर यह स्थिति बनी कि उसमें से प्यारी सी बिछुलिया भा रही है। घूँघट तिस पर प्राण लेवा ही सिद्ध हो रहा है।

लै गइँ प्रान पराये हरकें,
माँगन सैंदुर भरकें।
तीके तरैं तिलक केसर कौ,
टिकली तरैं उतरकें।
तीके तरैं टिपकिया कारी,
दीनी – सुगर सुगरकें।
तीके तरैं सींक सुरमा की,
रै गइ भोंय पकरकें।
बड़ी बेर लौ इक-टक 'ईसुर',
रै गए उनै नजर कै।

पराये = दूसरे के, हरकें = हरण करके, तीके तरैं = उसके नीचे, टिकली = गोल बेंदी, टिपकिया = टीकी, सुगर = चतुर सुघड़, सींक = श्लाका, भोंय = भृकुटि, बड़ी देर लौ = बहुत देर तक, नजर में = देखते ही रह जाने के अर्थ में।

वह तो दूसरों के प्राण हरकर अपनी माँग में सिन्दूर भरकर चली गई। अर्थात् नेह लगा कर बिछोह देकर पिय गृह चली गई। बेसर का टीका जो टिकुली से तनिक नीचे है, उसके भी नीचे काजल की एक काली टिपकी बड़ी सुघड़ता से लगाई है। उसके नीचे सुरमें की श्लाका तो भृकुटियों को पकड़कर रह गई है। ससुराल जाती प्रेयसियों की इस शोभा को मैं एकटक बहुत देर तक देखता रह गया। मेरी आँखें मानों फटी की फटी ही रह गईं।

बूँदा लगौ भौंह के करकें,
बैंदी ऊपर चढ़कें।
गोरे गोल कपोलन ऊपर,
दौंरी साँकर रुरकें।
गर्रदार पुंगरिया देखौ,
गेराँ मोती झलकें।
'ईसुर' बजत पैजना सुनलो,
जिनसे जे दिल फड़कें।

करकें = निकट, नजदीक ही, साँकर = जंजीर, सरकें = ढुलकने झूलने के अर्थ में, गर्रदार = गिर्री वाली, पुंगरिया = नाक का आभूषण, गेराँ = गहरा।

बैंदी के समीप सुन्दर आभावाला बूँदा भृकुटि के बिलकुल ही पास लगा है। गोरे गोल गालों के ऊपर बेंदी की दुहरी साँकल झूलती हुई फिसलती सी दीख रही है। नाक की पुंगरिया जो गिर्रीनुमा बनी है उसमें कुछ गहरे रंग के चारों ओर सुन्दर मोती झलक रहे हैं। ईसुरी कहते हैं सुन लो उसके पैंजना भी बजते जा रहे हैं, जिसकी आवाज सुनकर यह दिल फड़क उठा है।

बूँदा मनकौ हरन तुमारौ,
जी लयँ लेत हमारौ।
बनौ रात घूँगट के भीतर,
करैं रात उजयारौ।
अच्छे रंग धरे कारीगर,
लाल, हरीरौ, कारौ।
'ईसुर' ऐसे डसैं लेत है,
जैसें नाग लफारौ।

जी = प्राण के अर्थ में, रात = रहता है, हरीरौ = हरा, लफारौ = लपलपाता हुआ।

प्रिय तुम्हारा बूँदा मेरे मन को हरता है और मेरे प्राण लिये ले रहा है। रात्रि में घूँघट के अन्दर ही बना रहता है और वहीं से वह प्रकाश फैलाता है। शिल्पी ने इसमें बहुत अच्छे रंग संजोए हैं – लाल, हरा और श्यामल भी। यह तो जैसे डस लेने को आतुर है, मानो काला नाग लपलपा रहा है।

टिकुली दमक रई दिलबर की,
माथै बैंदा लरकी।
आभा देत चन्द्रमा कैसी,
मानौ बड़े कदर की।
कारी कोर मोर हरयाई,
लइ ती काउ सुघर की।
'ईसुर' बाल भाल के ऊपर,
दयँ छोटी उम्मर की।

टिकुली = सोने की गोल बिन्दी नुमा माथे का आभूषण। लरकी = लड़ियों के अर्थ में, कदर की = कद्र आदर किया, कोर = किनारी, हरयाली = हरितिमा, उम्मर = आयु।

नायिका की टिकुली, माथे की बैंदी और उसकी लड़ियाँ मानो चन्द्रमा की आभा बिखेर रही हैं। इसका चारों ओर सम्मान हो रहा है। किसी सुघड़ ने चतुराई से किनारों में लालिमा और हरियाली में मोर की सुंदर आकृतियाँ साड़ी में लगा दी है। छोटे से मस्तक पर केशराशि जो बिखर गई है वह छोटी सी वय में भी कितनी आकर्षक लग रही है।

बूँदा दऔ बैंदी के नीचैं,
प्रान लेत है खींचैं।
गुड़ी तीन माथैं मैं परतीं।
दाबै दोइ दुबीचै।
ताके तरैं तिलक केसर कौ,
दाबैं रात रंगीचैं।

कात 'ईसुरी' जबसैं देखों,
पलक ना पल भर मीचैं।

दऔ = दिया, गुड़ी रेखाएँ = सिलवट, परती = पड़ रही हैं, दुबीचै = दोनों के मध्य, ताकै तरैं = उसके नीचे, रंगीचैं = शब्दिक अर्थ रेखाएँ परन्तु यहाँ ल का र उच्चारण प्रतीत होता है उसके अनुसार बिल्कुल निकट होता है, मीचैं = बन्द करने के अर्थ में।

बैंदी के ही नीचे बूँदा लगाया है जो मेरे प्राण खींचे जा रहा है। मस्तक पर तीन आकर्षक सिलवटें पड़ती हैं। उन दोनों के ही बीच बूँदा दबा हुआ है। उसके तनिक नीचे की ओर केसर का टीका है। जिसे बिलकुल ही पास लगाया गया है। जब से ऐसा देखा है पल भर के लिए भी मेरी पलक नहीं झपकी है अर्थात् आँखें फटी की फटी ही रह गईं। देखने की ही लालसा बनी रहती है।

करिया बुँदका बूँदा तरकौ,
तक बैदाँ ऊपर कौ।
शनि समेत गुरे होरऔ है,
भानचन्द्र के घरकौ।
देखौ देत इतै सुख लखतन,
मिलबौ अर से अर कौ।
देत झपाक झोंक मुख झंझका,
लग ना जाय नजर कौ।
'ईसुर' दयँ वृषभान नन्दनी,
मन मोलऔ गिरधर को।

करिया = काले रंग का, बूँदा तरकौ = बूँदा पर अंकित अथवा तरकौ तड़कने के अर्थ में तो बूँदा दमक गया अर्थ होगा, तक = देखा, समेत = सहित, भानचन्द्र = रवि-शशि, अर = चक्र के अरे, झोंक = चकाचौंध के अर्थ में, झंझका = चौंका देने के अर्थ में, नजर = डीठ, मोलऔ = मोहनिया।

बैंदी के ऊपर वाला बूँदा जिसमें काले रंग के तिल के समान रखा बिन्दु तड़क-भड़क उत्पन्न कर रहा है। यहाँ शनि और गुरु की युति हो गयी है। वहाँ काले रंग एवं बूँदा के ककरेजी रंग के माध्यम से यह ज्योतिष ज्ञान की उपमा दी गई। रवि और चंद्र की स्थिति बन गयी। देखो इसमें अंकित चक्र के आरे एक दूसरे को छूते हुए देखना कितना सुख उत्पन्न करते हैं। मुख की यह चकाचौंध करने वाली आग चौंका देती है। कहीं नजर ही न लग जाए। वृषभान नन्दिनी ने यह श्रृँगार करके गिरधर का मन मोहित कर लिया है।

बूँदा अजब लाड़ली तरकौ,
मजा देत दिलबर कौ।
दिपत दिगंत सरूप ऊबदै,
रूप भाल के भरकौ।
प्रभा हरन के काज भयेगुर,
चोर चन्द्र के घर कौ।
बैंदा साज समाज आब है,
भान राज औसर कौ।
खाये रात अफीम 'ईसुरी'
नसा ना जात नजर कौ।

लाड़ली = दुलारी के अर्थात् प्रेयसी के अर्थ में, तरकौ = दमकने के अर्थ में, औसर = अवसर, दिगंत= दसों दिसाओं में।

प्रिय अनूठा बूँदा दिलवालों पर कहर ढा रहा है, आनंद दे रहा है। वह मयंक अर्थात् चन्द्र सा पूरे मस्तक पर आभा देकर दीप्तिमान हो रहा है। बूँदे में आभा भरने हेतु गुरु ने चन्द्रमा के घर सुन्दरता की चोरी की है। यह बैंदा समाज की सुंदरता बन गया है। बूँदे की सुन्दरता का यही राज है। बूँदे को देखकर लोग अफीम सी खाकर रह जाते हैं क्योंकि दृष्टि में एक बार बूँदे का जो नशा समा गया, वह उतरता ही नहीं।

विशेष :- कहा गया है उपमा मात्र कालिदास की है, परन्तु ईसुरी ने कभी भी कालिदास को नहीं पढ़ा फिर भी वे चन्द्र से नायिका द्वारा आभा चुरा लेने की उपमा देते हैं। यह चुरा लेने की उपमा ईसुरी के हजारों वर्ष पूर्व कालिदास ने मेघ को दी है – 'त्वय्यादातं जलमवनते शाङ्गिकोवर्ण चौरे'' ईसुरी लोककवि हैं।

चैती या बिलवारी

छुटका लए केश खड़ी द्वारैं,
दोइ भुजन पै लट डारैं।
लगत कनक आनन के ऊपर,
दो नागन कुड़री मारै।
मानौ ई सुम्मेर शिखर पै,
जमना की बड़ रइँ धारै।

'ईसुर' ई केशन के ऊपर,
मोहन प्रान फिरत बारै।

छुटका लय = खुले छोड़ देने के अर्थ में, कुड़री = कुण्डली, सुम्मेर शिखर = गोवर्धन पर्वत के अर्थ में, बारै = न्यौछावर करने के अर्थ में।

केशावलि को खुली छहरा करके द्वार पर खड़ी हैं। उनकी दोनों ही भुजाओं पर लटें फहरा रही हैं। या फिर स्वर्णिम मुख मंडल पर दो नागिनें कुण्डली मारकर बैठी हैं। अथवा ऐसा लगता है जैसे सुमेर पर्वत के शिखर से जमुना के जल की श्याम वर्णी धाराएँ प्रवाहित हो रही हैं। ईसुरी कहते हैं कि इस केशवलि पर मोहन भी अपने प्राण न्यौछावर करते हैं।

विशेष :- समस्त मध्ययुगीन काव्य में मोहन अर्थात् भगवान् श्रीकृष्ण जिन्हें कामरूप कहा गया है। उनकी केशावलि का सौन्दर्य शीर्षस्थ माना गया है। परन्तु ईसुरी की नायिका की केशावलि उससे भी आगे दर्शाई गई।

रेखा श्याम मन्जनी काड़ी,
भौंह दुबीचैं आड़ी।
बृज के लोगन के गहबे खाँ,
मानौं जमना बाड़ी।
मानौ भाल चन्द्र के ऊपर,
भबकर नै लट घाड़ी।
हर लीनौ बरबस मन हरकौ,
नील मनी सी गाड़ी।
'ईसुर' दै बैठी माथे पै,
डेरे कर सौ ठाँड़ी।

श्याम = साँवला, मन्जनी = मंजुल के अर्थ में, काड़ी = निकाली, भौंह = भृकुटि, दुबीचैं = दोनों के मध्य, गहबे खाँ = लेने के अर्थ में, भबकर = ब्रह्मा के हाथों, बरबस = विवश होकर, गाड़ी = गहरे के अर्थ में, डेरे = बाँए, ठाँड़ी = खड़ी।

यह मंजुल श्याम वर्ण की रेखा दोनों भृकुटियों के मध्य में निकाली गई है। ब्रजवासियों को अपने आगोश में लेने के लिए मानो यह यमुना बढ़ी चली आ रही है अथवा चन्द्र रूपी भाल पर साक्षात् ब्रह्माजी ने अपने हाथ से यह लट छोड़ी है। विवश होकर शिव का मन हरण कर लिया गया अथवा मन हरण की विवशता थी। शिव की लट गहरी नील मणि सी प्रतीत जो हो रही है। ईसुरी कहते हैं - इतना सुन्दर माथे पर श्रृँगार कर लेना उनके बाँए हाथ का काम है।

नव दुर औंदा कौ बनबाऔ,
साब खसम करपाऔ।
लगबाईं हीरन की परतैं,
नौ रतनन सजबाऔ।
काम समार गिरन की लैकैं,
मिलन चन्द्र खौं चाऔ।
'ईसुर' नौनौं लगत पैरतन,
इनकौ आब चलाऔ।

दुर = एक आभूषण, ओंदा कौ = उल्टे डिजाइन का, साब = साहूकार, खसम = आदमी, मर्द, करपाऔ = कर लिया हो, परतैं = पर्त के अर्थ में, काम = कामदेव, समार = सम्हालने के अर्थ में, गिरन = ग्रहण के अर्थ में, चाऔ = चाहा, नौनौं = सुन्दर, पैरतन = पहिनने में, चलाऔ = गौना।

तुमने साहूकार को अपना मर्द बना लिया है। पैसे की ताकत से तुमने यह नया कीमती गहना बनवा लिया है, जिसकी बनावट बनाने वाले ने औंधी (विधि) कर दी है। इसकी पर्त में हरे रंग के हीरे लगवाए हैं। उसके ऊपर नव रत्नों से उसे सजाया गया है। कामदेव 'दुर' इस गहने को लेकर मानो चन्द्रमा पर ग्रह लगाना चाहता है। ईसुरी कहते हैं – पहिनने में वाकई गहना बहुत अच्छा लगता है। अब ऐसे नए आभूषणों का चलन जो हो गया है।

तेरे बजत पैजना बाँके,
धरतन परत छमाँके।
अच्छे काट करे झिंझरी के,
लड़ैं कड़न के टाँके।
टँगे रात मुरुअन के ऊपर,
बिछिया बाँदै नाँके।
'ईसुर' कात सजी अलबेली,
छैल देखतन झाँके।

बजत = बजते हैं, पैजना = पैर का गहना, बाँके = अच्छे, धरतन = पद प्रेक्षण के अर्थ में, परत = पड़ते हैं, छमाके = छम-छम की, काट = कुरेदकर, झिंझरी के = जालीनुमा शिल्प के अर्थ में, लड़े = लड़ियाँ, कड़न = निकालने हेतु, टाँके = टाँक दिए, लगा दिए, मुरुअन = थोड़ा विशेष, टँगे = लटके, बिछिया = पैर की छिंगलियों का गहना जो सुहाग का प्रतीक है, बाँदै = बाँधे हैं, नाँके = नाकाबन्दी के अर्थ में, छैल = रसिक, झाँके = झाँकने के अर्थ में।

तुम्हारे पैंजना बहुत अच्छे बजते हैं। पैर रखते ही छम-छम की आवाज देते हैं। इनमें यह जालीनुमा शिल्प काट कुरेदकर बहुत अच्छा बनाया गया है। लड़ियों हेतु इनमें टाँके भी लगाए हैं। जो लटकते हुए शोभायमान हो रहे हैं। पैंरों की उँगलियों में सुहाग के प्रतीक बिछिया नाकाबन्दी किए हुए हैं। स्मरणीय है जिस प्रकार महाराष्ट्र में मंगलसूत्र देखकर लोग स्त्री को विवाहित समझकर रह जाते हैं। ठीक वैसे ही बुन्देलखण्ड में पैर के बिछियों की स्थिति है। इसीलिए बिछियों ने नाकेबन्दे की। अलबेला श्रृँगार देखकर रसिक युवा ताक-झाँक अवश्य करते हैं।

देखत श्याम माँग पै मोये,
गोला मुख पै गोये।
फन्दन फन्द फूल बेला कौ,
बीचन बीच बिदोये।
बैनी जलद पाट कचकेरत,
तिरबैनी से धाये।
उठत पराग अतर पटियन की,
गए सरबोर निचोये।
'ईसुर' इतै प्राण की परबी,
मन लै चली चितोये।

श्याम = नायक के अर्थ में, माँग पै = केश सज्जा के आधार पर, मोये = मुझे, गोये = केश विन्यास किया, फन्दन-फन्द = वेणी के प्रत्येक पर के अर्थ में, बीचन-बीच = बीच-बीच में, बिदोये = फँसाकर लगाए गए हैं, बैनी = बैणी, जलपाट = मेघ के पट के समान, कचकेरत = हलचल करने के अर्थ में, तिरबैनी = त्रिवेणी, पटियन = अल्कावलि, सरबोर = रस-प्लावित, निचोये = निचोड़े, परबी = परवाह, चितोये = देखने पर।

श्याम! मुझे सूनी माँग देखना चाहते हैं, मैंने केशों को गोल मुख कर विधिपूर्वक विन्यास किया है। वेणी के प्रतीक फन्दों के बीच-बीच में बेला का फूल फँसाकर लगाया गया है। यह वेणी मानो चित्रपट की सी हलचल उत्पन्न करती है। यह त्रिवेणी में धोए गए केश हैं अर्थात् तीन लटों से गूँथी गई यह वेणी है। इसकी व्यथित केशावलि में इत्र एवं सुगन्धित पराग महकता है। ये निचोड़ी गई सुगन्ध में प्लावित किये गये हैं। उसकी चितवन मात्र प्रयाग की गंगा में डुबकी लेने का आह्वान करती है।

बिथरे केस डरे बिन गोये,
आज लाड़ली धोये।
बूँदा चुअत नितम्बन ऊपर,
कमसे गये निचोये।
पसरे है सुम्मेर शिखर पै,
काग पक्ष से सोये।
मानौ जल जौ शुक्र तरैंयन,
श्याम पाट में पोये।
'ईसुर' छब देखी छाजे पै,
चढ़ सुकुमार सुकोये।

बिथरे = फैले हुए, डरे = पड़े, बिन गोये = बगैर कंघी किए, लाड़ली = प्रिय का सम्बोधन, धोये = सिर धोना जो मासिक धर्म के पश्चात् होता है, बूँदा = बूँद-बूँद, चुअत = चू रहे हैं, कमसे = कम अधिक जोर से नहीं, निचोये = निचोड़े, पसरे = फैले, सुम्मेर शिखर = सोने का सुमेरू पर्वत जो लंका में था, काग = कौआ, पक्ष से = पर डैने युत, सोये = आराम कर रहे हैं, शुक्र = शुक्र ग्रह भी एवं शुक्र कीटाणु भी, तरैंयन = काम के तारागण, छब = छवि, छाजे पै = छज्जे पर, सुकोये = सुखाये, श्यामपाट= काले बालों में पिरोये गये हैं।

बगैर कंघी किए हुए बिखरे केश फहरा रहे हैं क्योंकि प्रिय ने आज उन्हें धोये हैं अर्थात् मासिक धर्म पश्चात् स्नान किया है। लगता है उन्हें अच्छी तरह निचोड़ा नहीं गया है। कम निचोड़ा है तभी तो उन केशों से नितम्बों पर बूँदें टपक रही है। ऐसा लगता है कि स्वर्ण के सुमेरू पर्वत पर कोई काग अपने पंखों को फैलाकर सो रहा है और यह टपकती हुई जल की बूँदें मानो शुक्र आदि तारों को काले श्याम रंग धागे में पिरो रही हैं। गोरी की यह छवि छज्जे पर देखने को मिल गई क्योंकि वहाँ चढ़कर यह सुकुमार बाला अपने केश नहाने के बाद सुखा रही है।

साँकर करन फूल की लटकैं,
दोइ गालन पै छुटकैं।
कबहू हाल भुजन कौ लेतीं,
छूतीं गाल झपटकैं।
कभउँ कभउँ तौ रुरकी रातीं,
कभउँ होत दो फटकैं।
कभउँ होंय कानन कौ कुन्डल,

कभउँ जाँय पलटकैं।
'ईसुर' ढुरैं गरै लैबे खों,
साँप साँकरैं अटकैं।

साँकर = जंजीर, करनफूल = कर्णफूल नामक कान का आभूषण, लटकैं = लटकते हैं, झूलते हैं, दोई = दोनों, छुटकै = छुटक रही के अर्थ में, हाल = समाचार, झपटकें = जल्दी से, कभउँ = कभी, सरकी = फिसली, राती = रहती, गरै = गले, साँप = नाग यह केशावलि की लट के लिए कहा गया, ढुरैं = ढुलकने के अर्थ में भी और मन अनुकूल होने के अर्थ में भी।

प्रिय के दोनों कपोलों पर कर्णफूल की साँकल लटक रही है। कभी वह भुजाओं पर लटक जाती है जैसे बहुभुजा के समाचार ले रही है अर्थात् झूलकर भुजाओं को स्पर्श करती है। तो कभी तत्काल ही झपटकर गालों को भी स्पर्श करती है अर्थात् चूमती है। वे बड़ी भाग्यशाली हैं। कभी-कभी तो फिसलती-फिसलती सी लगती हैं जैसे गालों को सहलाती हैं। कभी उसकी लड़ियाँ लटककर एक की दो हो जाती हैं। कभी कान का कुण्डल बन जाती हैं। ईसुरी कहते हैं कभी वह गले से लगने के लिए ढुलक जाती हैं। कभी ये साँकलें सर्प की भाँति अटक जाती हैं।

विशेष :- ईसुरी ने आभूषण को अपना मन मानकर अपनी मनोदशा का जो मानवीकरण किया है इस रचना में वह अवश्य है।

लोलक लली कान रतनारे,
लगैं लटकतन प्यारे।
नग जड़ देत, होत बीचन में,
हीरन के उजयारे।
कस-कस काम करे कारीगर,
सुगर सुनार सुधारे।
'ईसुर' झाँक परी झूना हो,
देखत श्याम सिहारे।

लोलक = एक विशेष प्रकार की डुलन, लली = प्रेयसी हेतु सम्बोधन, कान रतनारे = कुछ सुर्ख वर्ण के कान, लटकतन = लटकते हुए, बीचन = बीच - बीच में, हीरन = हीरों, कस-कस = कसने के अर्थ में, कारीगर = शिल्पी, सुनार = आभूषण बनाने वाली जाति, झाँक परी = झाईं सी पड़ी, झूना हो = पारदर्शी घूँघट के अर्थ में, सिहारे = शीतल मन से।

प्रिय के सुर्ख रंग के कानों में लोलक लटक रहे हैं जिससे उसके कान और चेहरा सुन्दर लग रहा है। लोलक के मध्य में रत्न जड़े हैं। तभी तो बीच-बीच में हीरों का प्रकाश होता है। इनके आभूषण बनाने वाले ने बड़ी मेहनत से कलात्मक आभूषण बनाए हैं। इन गहनों की झाँई सी पड़ी थी जो मैंने उसके कुछ पारदर्शी घूँघट की ओट में से देखी। ईसुरी कहते हैं - उस छवि को देखकर श्याम यानी श्रीकृष्ण का मन शीतल हो गया है।

बइयाँ लगैं बरन सैं नौनीं,
खग्गन संग सलौनीं।
जिनके कर में कंगना दौरी,
बाजू बन्द मिलौनी।
चूरा - पटेला दसआंगरौ,
करै बज्जुला बौनी।
'ईसुर' इन हातन हो आ गइ,
कैउ जनन की हौनी।

खग्गन = आभूषण, कंगना = कंगन, दौरी = हाथ का आभूषण, मिलौनी = मिला-जुला के अर्थ में, चूरा, पटेला = आभूषणों के नाम, दस आँगरौ = दस अंगुल माप का, बज्जुला = आभूषण का नाम, बौनी = श्री गणेश के अर्थ में, जनन = लोगों, हौनी = अनहोनी के अर्थ में, कोई घटना घटे।

काँच की चूड़ी जो गहरे रंग की है उनसे बाँह सलौनी प्रतीत होती है क्योंकि चूड़ियों का रंग लावण्ययुक्त है, हाथों में कंगन, दौरी, बाजूबन्द, चूरा, पटेला, दस अंगुल वाले बिजुल्ला आदि कई आभूषण शोभित हैं। जो यौवन के आनन्द को द्विगुणित करने में सक्षम हैं यह इसकी बौनी अर्थात् श्रीगणेश कराने में समर्थ हैं। इन हाथों से मानो कई लोगों के लिए कुछ हो जाने की घड़ी आ गई है।

कड़तन लागौ मूड़ दिरोंदा,
कड़ीं न सिर खों ओंदा।
कारीगर नें बुरऔ बनाऔ,
धरौ न ऊँचौ गोंदा।
लच गइँ, लफ गइँ, दूनर हो गइँ,
नैंनू कैसौ लोंदा।

'ईसुर' उनें उठा नइँ पाए,
हतौ उतै सकरोंदा।

कड़तन = निकलते समय, दिरोंदा = द्वार की चौखट का ऊपरी भाग, ओंदा = झुकाकर, कारीगर = मिस्त्री-मैसन, बुरऔ = बुरा, गोंदा = मिट्टी का बड़ा सा लोंदा जिससे कच्चे मकानों की दीवार बनती है, लच गई = लचकने के अर्थ में, लफ गई = मुड़ जाने के अर्थ में, दूनर = दुहरी, नैंनू = मक्खन नवनीत, लोंदा = एक भाग, सकरोंदा = संकीर्णता के अर्थ में।

निकलते ही द्वार की चौखट का ऊपरी भाग सिर में जोर से लगा क्योंकि वह सिर झुकाकर नहीं निकली थी। मिस्त्री ने यह दरवाजा अच्छा नहीं बनाया। कुछ ऊँचा गोंदा रखकर दरवाजा बनाना चाहिए था। लगते ही सुकमार देह में लचक आई उससे वह मुड़ी और एकदम दुहरी हो गयी। गोरी मानो नवनीत के एक लौंदे के समान गिर पड़ी। ईसुरी कहते हैं- उन्हें कोई उठा भी नहीं सका क्योंकि यहाँ संकीर्णता थी अर्थात् स्थानाभाव था।

विशेष :- संकीर्णता श्लेषार्थक है एक तो स्थान की संकीर्णता दूसरे सामाजिक संकीर्णता थी कि ठाकुरों की बेटी गिरकर मर भले ही जाए परन्तु पुरुष देह का स्पर्श नहीं होगा।

प्यारी पैजनियाँ झनकारैं,
जीरा लेत निकारैं।
भीतर निगत - फिरत आँगन में,
पर रइ झनक दुआरैं।
सुगर सुनार गड़े रुच-रुच कै,
रुच रुच धरी रबारैं।
गाँठें छुअत जात लुरकत में,
सुन्दर ककरा डारैं।
'ईसुर' श्याम सुरत के मारे,
खाबै प्रान दरारैं।

पैजनियाँ = पैर का गहना, झनकारैं = आवाज करती हैं, निगत = चलने के अर्थ में, आँगन = प्रांगण, झनक = आवाज पहुँचाती है, दुआरें = बाहर के अर्थ में, रबारैं = गहने में बिन्दुनुमा बारीक आकृतियों के अर्थ में, गाठैं = एड़ी का जोड़, छुअत = स्पर्श, लुरकत = डुलन के अर्थ में, ककरा = आवाज हेतु डलवाये दाने, दरारैं = विदीर्ण होने के अर्थ में।

प्रिय की पैजनियों झंकार मेरा तो जियरा ही निकाल लेती है। वे पैजनियाँ पहनकर जब

अपने आँगन में ही चलती-फिरती हैं तब उसकी झनझन की झंकार यहाँ बाहर तक सुनाई पड़ती है। कुशल सुनार ने इन पैजनियों को रुचि लेकर बनाया है। सुनार ने बिन्दुओं के अलंकरण से विशेष आकृतियाँ बड़ी रुचि से गढ़ी हैं। इनकी जो रबारें उसने रखी हैं उसको पैजनियाँ अपने हिलने-डुलने के बीच स्पर्श करती है। उसकी घुँघरियों में आवाज हेतु कंकर भी अच्छे डाल दिए गए हैं। श्याम की याद के कारण राधा रूपी नायिका को देखकर मेरे प्राणों में दरारें पड़ रही हैं।

बाँकें बजैं पैजनाँ धुनके,
परे पगन में उनके।
सुन तन रौम-रौम बड़ आबत,
धीरज रहत न तनके।
खेलत फिरत गैल खोरन में,
सुर मुख्त्यार मदन के।
करबै जोग लोग कुछ नाते,
लुट गए बालापन के।
'ईसुर' कौन कसायन डारे,
जे ककरा कसकन के।

बाँकें = अच्छे, पैजना = आभूषण का नाम, रौम-रौम = रोम-रोम, कड़-आवत = उठ आने के अर्थ में, गैल - खोरन = गली कूचों, मुख्त्यार = मुनीम अर्थात् सचिव, मदन = कामदेव, करबै जोग = करने योग्य, नाते = नहीं थे, बालापन = आरम्भ में ही के अर्थ में, वैसे बचपने का अर्थ है, कसायन = अधिक कसाई के अर्थ में, ककरा = बजने वाले दाने, कसकन = पीड़ा देने वाले।

पैजनों के बजने से बहुत अच्छी झुन-झुन की धुन निकल रही है क्योंकि वे उनके पैरों में जो पड़े हुए हैं। उनकी आवाज सुनते ही मन में रोमांच हो जाता है। शरीर में धैर्य नहीं रहता। मानो कामदेव के मुनीम साहब अथवा निज सचिव इस आवाज के रूप में गली कूचों में क्रीड़ा करते घूम रहे हैं। परन्तु लोग कुछ भी करने की स्थिति में नहीं है। हम तो बचपने में ही लुट गए। किस कसाई ने यह बजने वाले दाने इन पैजनों में डाले हैं।

तोरे मधुर पैजना बाजैं,
गोरे पगन बिराजैं।
नित उठ प्रात जात है जल्दीं,

आइ तला सें माजैं।
लुरक रये मुरुअन के नैचैं,
छोड़त कड़ी अवाजैं।
जे सुर भरे हिया के भीतर,
मनके बीचइ राजैं।
'ईसुर' परन चात काउ पै,
भादा कैसी गाजैं।

तोरे = तुम्हारे, मधुर = मीठे के अर्थ में अच्छे, गोरे = गौर वर्ण, पगन = पैरों में, बिराजै = बैठे हैं, तला = सरोवर, माजैं = न्यारे के अर्थ में अर्थात् पृथक से, लुरक = डोलने के अर्थ में, नैचैं = नीचे, कड़ी = जोरदार, बीचइ = मध्यम ही, राजैं = रहते हैं, परन चात = पड़ना चाहती है, गाजैं = बिजलियाँ।

तेरे पैजनों की आवाज बड़ी मधुर है। पैजन भी गौर वर्ण के पैरों में शोभित हैं। नित्य प्रातः उठकर तुम सरोवर पर जाया करती हो। तब तुम्हारी पैजन की आवाज सुनने को मिलती है। वह पैंजने तुम्हारी पिंडली के एक आकर्षक उभार के मध्य डोलते हुए बड़ी जोरदार आवाजें उत्पन्न करते हैं। यह स्वर मेरे हृदय के भीतर भर जाता है जो मन के मध्य में ही बना रहता है। लगता है किसी पर भादौ माह के समान टूटकर बिजली गिरने वाली है।

विशेष :- भादौं कैसी गाजैं-लोक मुहावरा।

गुदना रो-रो कैं गुदवाये,
तउ ना सब गुदपाये।
चन्दन चार चपेटा चोली,
चौज-चौक फरकाये।
मोर-चकोर चकौटी चलनी,
धरन सांतिया पाये।
'ईसुर' गरय हात गुदनूँ के,
हौलै ना हुमसाये।

गुदना = गोदना, तउ = तो भी, चन्दन = सुगन्ध के अर्थ में, चार चपेटा = बिलने के चौकोर गुट्टे, चोली = कंचुकी में, चौज = अजीब के अर्थ में, चौक = रंगोली के अर्थ में, फरकाये = फड़कने के अर्थ में, मोर-चकोर, चकौटी, चलनी = गोदनों की आकृतियाँ विशेष, सांतिया = स्वस्तिक चिह्न, गरय = भारी, गुदनूँ के = गोदने वाली के, हौलै = धीरे से, हुमसाये = उठाने के अर्थ में।

गोदना रो–रोकर बड़ी मुश्किल से गोदवाए फिर भी पूरे नहीं गुदवाये गये हैं। छाती पर चार चन्दन वाले चपेटे खेलने के चौकोर गुट्टों की आकृतियाँ, अद्‌भुत, राँगोली के बीच गुदवाई गई हैं। मोर, चकोर, चकोटी, और चलनी तो गुदवायी ही गयी है, स्वस्तिक का चिह्न भी गुदवाया है। अत: बारीक काम सम्भव नहीं है। वह धीरे से नहीं उभार पाती अर्थात् बारीक नाजुक आकृति नहीं बना पाती है। क्योंकि उसके हाथ वजनदार हैं।

गुदनूँ गोरे गाल पैं टाँकौ,
लगा दऔ गुदनाँ कौ।
पन्ना हरौ जड़ौ कंचन पै,
मानौ बड़ी जमाँकौ।
बुध को गोद लयें यम राजित,
परौ चन्द्र में झाँकौ।
विष कौ कुन्ड पियें गिर बैठौं,
मानौ कन्थ उमाँ कौ।
'ईसुर' ढीठ लगै काउ की,
घूँघट के पट ढाँकौ।

टाँकौ = टाँक दिया, अंकित किया, पन्ना = एक रत्न विशेष, जड़ौ = जड़ दिया, बड़ी जमाँ = बड़ी रकम, बुध = एक नक्षत्र, यम राजित = यम का श्याम रंग, परौ = पड़ा, झाँकौ = झाँई, कन्थ = पति, उमा कौ = पार्वती का, ढीठ = नजर, काउकी = किसी की, ढाँकौ = ढँकलो।

गोदनारी ने गोरे गाल पर गोदने का एक बिन्दु लगा दिया है। ऐसा प्रतीत होता है मानो सोने पर हरे रंग का बहुमूल्य पन्ना जड़ दिया गया है, यम के रंग वाले बुध नक्षत्र को मानो गोद में बिठा दिया है। स्मरणीय है बुध नक्षत्र का रंग नीला है जिसकी चन्द्र पर छाया पड़ रही है अथवा विष का कुण्ड पीकर इस धवल हिमालय पर मानो उमापति नीलकंठ विराज गए हैं। ऐसे में यदि किसी की नजर लग गई तो? इसलिए अच्छा यह है कि इसको घूँघट पट की ओट में छिपाकर ही ही रखा जाये।

गुदना हरैं लेत मन मोरौ,
प्यारी गालन तौरौ।
निस–दिन देत सदा हरियायी,

बदन तुमाऔ गोरौ।
घरीं दोक देखन दो हमखों,
सनमुख ठाड़ी होऔ।
'ईसुर' कात प्रान से प्यारीं,
छाती लग संगसौरौ।

गुदना = गोदना, हरै लेत = हर लेना चाहता है, तोरौ = तुम्हारा, निसदिन = नित्यप्रति, घरीं दोक = घड़ी-दो घड़ी, समय के अर्थ में, हमखाँ = मुझको, सनमुख = सामने, ठाँड़ी = खड़ी, होऔ = हो जाओ, कात = कहते हैं, संगसौरौ = संग में सहलाने के अर्थ में।

प्रिय तुम्हारे गाल का यह गोदना मेरा मन चुरा लेता है। नित्य प्रति इसकी हरीतिमा तुम्हारे गोरी गाल पर आभा बिखेरती है। इसे घड़ी दो घड़ी मुझे देखने दो तुम मेरे सामने ही खड़ी रहो। ईसुरी कहते हैं- प्राण प्रिय! जरा छाती लगा कर संग-संग एक दूसरे को थोड़ी सिहरन महसूस होने दो।

गुदना गुदवाये रो-रो कै,
दूनर तीनर हो कै।
बड़ी मुलाम दरद के मारैं,
सौ-सौ खाईं झोकैं।
होतीं नईं रिन्ज में सामिल,
गुदनूँ अपनी होकैं।
कर में लिखी छैल की मूरत,
रइ हिरदे मैं ठोकैं।
'ईसुर' कभउँ पीर न जानी,
रइ अबलौं मैं धोकैं।

दूनर-तीनर = दुहरी-तिहरी, मुलाम = कोमल, दरद = पीड़ा, झोकैं = झोखा, झुकने के अर्थ में, रिन्ज = रंज अर्थात् कष्ट, सामिल = सम्मिलित, लिखी = अंकित की, छैल = प्रियतम के अर्थ में, रइ = रही, ठोकैं = स्थापित करने के अर्थ में, अबलौं = अब तक, धोकैं = मुगालते में।

दोहरी-तिहरी हो-होकर रोते हुए बड़े कष्ट में गुदना गोदवाए हैं। मैं बड़ी कोमल सुकमार हूँ, अत: दर्द के मारे सौ-सौ बार झोंके खाए हैं। यह गोदना गोदने वाली बिलकुल अपनी होकर भी मेरी इस तकलीफ में जरा भी सहानुभूति नहीं रखती। मेरे हाथ में प्रियतम की एक सुन्दर आकृति लिख दी है जिसे मैंने अपने हृदय में स्थापित कर लिया है। ईसुरी कहते हैं कि इसके

पूर्व गोदने की पीड़ा क्या होती है? पर उसके शब्दकोष में भी यथा, वह अब तक मुगालते में ही बनी रही।

देखी ऊपर की सुफलाई,
भीतर कछू न भाई।
गुदना गुदे गाल के ऊपर,
दूर न देत दिखाई।
जोवन हो गये भुँजे भटा से,
मौ पै फिरी सियाई।
'ईसुर' कात पुराने मठ पै,
कलइ करैं भौजाई।

सुफलाई = ऊपरी चिकनपट्टी के अर्थ में, भुँजे भटा से = उबले हुए बेंगन की तरह, सियाई = कालिमा के अर्थ में, कलई = पालिश।

अब ऊपर-ऊपर की चिकनाई बची है, जो मात्र दिखावा है। जबकि वास्तविक यौवन समाप्त हो चुका है। मात्र गाल के ऊपर गोदा हुआ गोदना ही दूर से दिखाई पड़ता है और क्या है जो देखा जाए? - उरोज भुने भटे से हो गये हैं। मुख पर अब कालिख छा गई है। ईसुरी कहते हैं कि पुराने मन्दिर पर भाभी ने कलई पोती है अर्थात् ऊपरी दिखावटी बनाव श्रृँगार किया है।

गोदे गुदनारी नै गुदना,
जिजी हमाये जिदना।
जबरई बाँय पकरकें मोरी,
कर दइ छिदनी-छिदना।
अँसुआ गिरे आग के ऊपर,
भींज गये दोइ जुबना।
देखे की दिखनौस बरै बा,
घरी आइ ती उदना।
गिरी तमारौ खाय 'ईसुरी',
रइ तन-मन की सुदना।

गोदे = गोद दिए, जिजी = सखी के अर्थ में, बड़ी बहिन, जिदना = जिस दिन, जबरइँ = जबर्दस्ती, बाँय = बाँह, पकरकें = पकड़कर, छिदनी-छिदना = छेद-छेदकर चलती बना देने के अर्थ में, दिखनौस = देखने की होंस अभिलाषा, आकाँक्षा, बरै बा = वह जल जाए, उदना = उस दिन, तमारौ = मस्त, सुदना = सुधि न रहने के अर्थ में।

दीदी, जिस दिन गोदनारी ने मेरे तन पर गोदना गोदे थे, उस दिन की पूछो मत - उसने जबर्दस्ती, मेरी बाँह पकड़ ली फिर उसे छेदकर जख्मी कर डाला। खून और आँसू मेरे पूरे शरीर पर गिरे तब मेरे दोनों उरोज भींगकर तर हो गये थे। केवल गुदनों को दिखाने की ही अभिलाषा के कारण गोदने का इतना कष्ट झेलना पड़ता है। आग लगे ऐसी अभिलाषा को। जिस दिन ऐसी घड़ी आई उस दिन मैं तो गश्त खाकर ऐसी गिरी कि फिर मुझे अपने तन-मन की सुधि भी नहीं रही कि क्या कैसा हुआ? कितने ही कष्ट सहन करके गुदना गुदवाना स्त्री को अच्छा लगता है।

गोदत हमै होय न पीरा,
उठा बाँय खों धीरा।
बना देव सुन्दर रच-रचकैं,
नग-नग मोर पपीरा।
जिनै देखकै खुश हो जावें,
बे ननदी के बीरा।
देखै सखीं पुरा पाले कीं,
जुरै भौत सी भीरा।
'ईसुर' देय गुदाई मनकी,
भर-भर झोरन हीरा।

गोदत = गोदने में, हमै = मुझे, होय ना = न हो, पीरा = पीड़ा, खों = को, धीरा = धीरे से के अर्थ में, नग-नग = अंग-अंग के अर्थ में, जिनै = जिनको, ननदी = ननद, बीरा = भाई, पुरा पाले = मुहल्ला, भीरा = भीड़, जुरै = इकट्ठी हो, गुदाई = गोदने की कीमत मजदूरी, मनकी = मनचाही, झोरन = थैलियाँ।

गोदने वाली से कहती है कि मेरी बाँह धीरे से उठा और कुछ ऐसा कर कि गोदने के कारण मुझे पीड़ा न होने पाए। मेरे अंग-अंग पर सुन्दर मोर पपीहे की आकर्षक आकृतियाँ बना दे। जिन्हें देखकर मेरी ननदबाई के भाई साहब पुलक उठें। मेरे मुहल्ले की सहेलियाँ देखने को आयें और गोदना देखने वालों की बहुत सी भीड़ इकट्ठी हो जाए। यदि इतने सुन्दर गोदने तुम गोद दोगी तो मैं तुम्हें मनचाही मजदूरी दूँगी। थैलियाँ भर-भरकर हीरे दूँगी।

कहत ईसुरी अबै रहन दो,
सुर काँसे कौ काँसे।

श्रृँगार खंड - दो

नायक पक्ष की विविध अनुभूतियाँ

जाँ से फाग ईसुरी केरी,
ताँ से तिरिया हेरी।
झिरिया झिरत, काम कर आबैं,
बिरियाँ तकत अबेरी।
चाँउन लगीं मरद से मिलबौ,
आउन लगीं घनेरी।
पति बिरता परमान छोड़ दए,
मद मारग नै घेरी।
चाँय जहाँ लै जाब 'ईसुरी',
कान धरी है छेरी।

जाँ से = जहाँ से, ताँसे = वहीं से, तिरिया = स्त्री, हेरी = देखने लगी, झिरिया = स्रोते, झिरत = रिसन के अर्थ में, बिरियाँ = बेला/समय, तकत = देखती, अबेरी = देर तक के अर्थ में, चाँउन = चाहने, मरद = मर्द, आउन = आने, घनेरी = बहुत, पति बिरता = पतिव्रता, परमान = प्रमाण, मद मारग = मद की राह, कान धरी = कभी भी कान पकड़ लेने के अर्थ में मुहावरा, छेरी = बकरी।

जब से सुन्दर स्त्री को देखा है, तब से ईसुरी की फाग अर्थात् रचना शुरू हुई है। इन रचनाओं के बहाने स्त्रियाँ कहीं भी हो वहीं से ईसुरी को ललचाई दृष्टि से देखने आ जाती हैं अथवा (अन्य पाठ के अनुसार) पलट-पलटकर देखने लगती है। घर में कामकाज करने की जल्दी होते हुए भी कोई अनजाना स्रोता हृदय में जैसे झरने लगता है और बहुत देर तक ईसुरी के ख्यालों में खोई देखती खड़ी रह जाती है। समय का ध्यान ही नहीं रहता अर्थात् सब कुछ भूलकर प्रतीक्षारत देखती ही रह जाती है। मन में प्रियतम से मिलने की चाह जग जाती है। यह चाह और गहरी होती जाती है। ऐसी स्थिति में कि बड़ी-बड़ी पतिव्रता स्त्री के भी अपने प्रमाण (सत्य) छूट जाते हैं, अर्थात् वह भी बहक जाती है। वह काम मद से चारों ओर से घिर जाती है। और ऐसी स्थिति हो जाती है कि चाहे जिसके संभोग प्रस्ताव में साथ हो सकती है, जिस प्रकार

बकरी का कान पकड़कर कभी भी कहीं भी दूध लगा लिया जाता है ठीक उसी प्रकार बिना प्रयास के वह सहज उपलब्ध हो सकती है।

बसती बसत लोग बहुतेरे,
कौन काम के मेरे।
बैठे रहत हजारन कोदी,
कबऊँ न जे दृग हेरे।
गैल चलत गैलारे चरचे,
सब दिन साँझ सबेरे।
हाय दई उन दो आँखन बिन,
सब जग लगत अंधेरे।
'ईसुर' फिर तक लेते उनखाँ,
बे दिन बिध ना फेरे।

बसती = बस्ती में, बसत = रहने के अर्थ में, बहुतेरे = बहुत लोग, कोदी = की ओर, कबऊँ = कभी, दृग हेरे = आँख से देखे, गैल = राह, गैलारे = राहगीर, चरचे = चर्चाएँ करने के अर्थ में, दई = देवी अर्थात् विधि – विधाता के अर्थ में, तक = देख, उनखाँ = उनको, बिध = विधाता।

यूँ तो बस्ती में बहुत लोग रहते हैं लेकिन वे मेरे किस काम के? हजारों और बैठे ही तो रहते हैं कभी आँख उठाकर मेरी ओर कोई नहीं देखता। राह चलते राहगीर सुबह से शाम तक पूरे दिन चर्चाएँ किया करते हैं। हाय विधाता उन दो आँखों के बगैर मुझे पूरा संसार अंधकारमय दिखता है जिन्हें मैंने पहले कभी भरपूर निगाह से देखा था। एक बार पुनः उन्हें देख पाता, वह दिन विधाता ने पुनः पलटकर नहीं दिया।

कैसे मिटै लगी कौ घाऔ,
ई की दबा बताऔ।
दिन ना रात चिहारीं परतीं,
ज्वर ना खाये चाऔ।
गुनियाँ और नाबते हारे,
खेल खेल कैं भाऔ।
कात 'ईसुरी' कैसी करिये,

चलत न ऐक उपाऔ।

घाऔ = आघात या ब्रूण के अर्थ में, दबा = औषधि, चिहारीं = चीस भरी पीड़ा, चाऔ = चाहा, गुनियाँ = झाड़फूँक करने वाले, नाबते = ओझा लोग, भाऔ = देवता आना, भाव, उपाऔ = उपाय / यत्न।

जब मन में कोई लगन किसी के प्रति लग जाती है, तब उस लगन का आघात कहें या ब्रूण कहें वह कैसे ठीक हो सकता है, इसकी कोई औषधि बताये। दिन और रात चीस यानी कसक भरी पीड़ा होती है लेकिन ऐसा भी नहीं है कि प्राण का ताप खाए जा रहा हो, ऐसा बुखार भी नहीं है। झाड़-फूँक करने वाले ओझा लोग भाव खेल-खेलकर हताश हो गए हैं। ईसुरी कहते हैं - कैसा क्या किया जाए? कोई भी यत्न कारगर नहीं होता है।

यारी होत मजा के लानैं,
जो कउ करकैं जानैं।
बड़े भाग सें यार मिलत है,
सौंरी की पैचानैं।
नाव लेत रैदास चले गये,
कुब्जा भई दिमानैं।
'ईसुर' कात बिना यारी के।
जिउ ना लगत ठिकानैं।

होत = होती है, मजा = रसानन्द, लाने = लिए, सौंरी = शबरी नाम की भीलनी, उपमा के अर्थ में, पैचानै = पहचानने के अर्थ में, नाव = नाम, दिमानैं = दीवाने होने के अर्थ में, जिउ = प्राण / जिया, ठिकाने = लक्ष्य तक पहुँचने की स्थिति।

दोस्ती तो आनंद के लिए ही हुआ करती है लेकिन उसका करना भी कोई मजाक नहीं है। आनंद उसी को मिलता है, जिसे दोस्ती करना अच्छी तरह से आता है। सच्चा दोस्त बड़े भाग्य से ही मिलता है। इसे शबरी ही पहचान न पाई थी, जो सुध-बुध भूलकर राम को जूठे ही बेर खिलाने लगी थी। सच्चा प्यार ऐसे ही प्रेम लगन में सम्भव है। जब स्वयं को भी भुला दिया जाए। नाम स्मरण मात्र से सन्त रविदास भी मोक्ष प्राप्त करके चले गए। कुब्जा भी उसी प्रेम की दीवानी थी। ईसुरी कहते हैं कि बगैर दोस्ती के जीवन में सच्चे प्रेम का लक्ष्य तक संभव नहीं है।

का भई उम्मर बालापन की,
हती सबइ के मनकी।

चारउ चरन लच्छिमी जिनके,
अभमानन ना धनकी।
बड़कै भौत बुद्धमानी की,
करैं बात पुरखन की।
दस उर चार बीच में दैकैं,
बा सिर मौर सखिन की।
उनकौ नइ उनई कौ 'ईसुर',
रोइ चिरइयाँ बनकी।

का भई = क्या हुआ, उम्मर = आयु, बालापन = बचपन, हती = थी, अभमानन = घमण्ड के कारण, पुरखन की = पूर्वजों की, नइ = झुकी।

उम्र में बड़े हो जाने के बाद भी बचपन की किसको याद नहीं रहती, बचपन सबको प्रिय है। जिनके घर में लक्ष्मीजी की कृपा से चारों प्रकार की समृद्धियाँ हैं, फिर भी उन्हें धन का घमण्ड जरा भी नहीं है। उससे भी बढ़कर बुद्धिमत्ता की बात यह है कि वह पूर्वजों की बताई हुई बातों पर चलती है। अर्थात् कुल की लाज रखती है। दस - चार सखियों के बीच में वह सब सहेलियों की सिरमौर होती है। (पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ पाँच कर्मेन्द्रियाँ तथा चार- काम, क्रोध, मद, लोभ) ईसुरी इसीलिए आकर्षित हो गये शायद वह भी उन्हीं की हो गई है। लेकिन जब वह ससुराल जाने लगी थी, तब वन की चिड़ियाँ तक वियोग में रो पड़ी थी।

तिलकी परन तिलन से हल्की,
बाँय गाल पै झलकी।
मानौ चुई चन्द के ऊपर,
बुँदकी जमना जल की।
मानौ फूल गुलाब न ऊपर,
उड़ बैठन भइ अलकी।
कै गोविन्द गुराई दैकैं,
पैठ गये कर छलकी।
जीमे लगी ईसुरी जी के,
दिलके दाब अतल की।

तिलकी = तिल के, परन = पड़ने की स्थिति, तिलन = तिलहन, हल्की = छोटी, चुई = चू जाने के अर्थ में, अलकी = अलि अर्थात् भौंरे की, गुराई = गोरापन, छलकी = छल करने के अर्थ में, जीमें = मन में,

जी के = जिससे, अतल = अतुल जिसकी तोल न हो।

प्रिय के बाँये गाल पर तिल्ली के एक दाने से भी छोटी तिल की आकृति उभर आई है। मानो चन्द्रमा पर यमुना जल की एक बूँद ही पड़ गई हो। या फिर ऐसा लगता है कि गुलाब के ऊपर उड़कर भौंरा बैठ गया है। या फिर साँवले वर्ण वाले विष्णु भगवान् छलकर गोरेपन में पैठ गए हैं। यह तो जिसके जियरा (मन) में बात लगी है, वही इस अतुलनीय दाब (पीड़ा) को समझ सकता है।

मोतन में झोंकै लाली के,
सुगर नार दुर बारी के।
खेलन फाग गई हर के संग,
चोरी, पिया अनारी के।
खेलत फाग भऔ भुन्सारौ,
टूँक - टूँक भए सारी के।
चोली बंद छूट गए चारउ,
थके अंग सुकमारी के।
दोइ कर लीन गुलाल 'ईसुरी',
मलत कपोलन प्यारी के।

मोतन = मोती का बहुवचन, झोकै = झोंक मारने के अर्थ में, लाली के = लाल रंग के अथवा लाड़ली के अर्थ में भी श्लेषार्थी, सुगर = सुघड़, दुर बारी = जो दुर नामक आभूषण पहिने हो, फाग = होली, चोरी = चोरी से, अनारी = अनाड़ी, भऔ = हुआ, भुन्सारौ = सबेरा, टूँक-टूँक = टुकड़े-टुकड़े, गए = हुए, सारी = साड़ी।

दुर नामक सुन्दर आभूषण पहनने वाली सुघड़ प्रेयसी हार के मोतियों में झलक रही है। उसका पति ठहरा अनाड़ी अत: उससे छिपकर वह शिव के साथ होली खेलने चली गई। होली खेलते-खेलते सबेरा हो गया। उसकी साड़ी के टुकड़े-टुकड़े हो गए। चोली के चारों बन्धन खुल गए। उसके अति सुकमार अंग-अंग थकित हो गए। ईसुरी ने दोनों हाथों से उसके गालों पर गुलाल मलकर उसे होली के रंग में सराबोर कर दिया है।

मुख ढिंग बार लाड़ली छोरें,
दबीं कपोलन कोरें।

करबे खाँ असनान तला में,
सीस मृत्तिका घोरें।
मनों फनी पै मड़ी काँचरी,
लामीं लटें करोरें।
कालीपत कारे कड़ आये,
जुल्फें जलन हिलोरें।
पूरे उदय कलानिध पै भए,
मानस चित्त चकोरें।
कामिन भई काम से पूरन,
आनन अमीं – चरोरें।
लगी गेर कें चन्दै 'ईसुर'
सर्पन कैसी डोरें।

मुख ढिंग = मुख के पास, बार = केशावलि, छोरें = खोलती है, कोरें = किनारियाँ, तला = सरोवर, सीस = सिर, मृत्तिका = मिट्टी, छोरें = खोले हुए है, फनी पै = नाग पर (फन पर), मड़ी = मढ़ी हुई, काँचुरी = केंचुली, लामीं = लम्बी-लम्बी, करोरें = करोड़ों, काली पत = जिसकी पत अर्थात् शेष नाग आपही, काले रहने में हो, उदय = उसी, चकोरें = चकोर की दृष्टियाँ, पूरन = परिपूर्ण, अमीं = अमिय, चरोरें = अठखेलियों के अर्थ में, गेर कें = घेर कर।

मुख के समीप ही जब प्रेयसी केशावलि खोल देती है तो कपोलों की लाली कुछ दबकर ओझल हो गई है। सरोवर में स्नान करने आई प्रेयसी ने जब अपने सिर में मिट्टी घोलकर डाली, तब लटें ऐसी प्रतीत हुई होती हैं मानो केंचुली युक्त नाग हैं, लम्बी-लम्बी ऐसी करोड़ों लटें थीं। लेकिन उन बालों की छटा जैसे शेषनाग निकल आये हो और उनकी परछाई जल की हिलोरों में पड़ रही है। इन्हें देखकर मेरे मन में जलन की हिलोरें उठ खड़ी हो गईं। पूरी तरह से उसी कलानिधि अर्थात् चन्द्रमा पर मनुष्य के चित्त चकोर से हो गए हैं। कामिनी काम भाव से परिपूर्ण हो गई है। उसके मुख मण्डल पर रति भाव अठखेलियाँ करने लगता है चन्द्रमा को सर्पों की रस्सियों द्वारा घेरा गया है।

गोरौ बदन मदन सै छाऔ,
की कौ राम बनाऔ।
धन पितु मात तात के घर खाँ,
धन्न जहाँ घर पाऔ।

धन्न प्रान प्रीतम खों जिननें,
तुमखों कन्ठ लगाऔ।
धन्न-धन्न बो घरी महूरत,
जिदना दरस दिखाऔ।
'ईसुर' कात लिपड़ लो हमसें,
सुघरी कौ दिन आऔं।

छाऔ = आच्छादित, कीकौ = किसके द्वारा, धन = धन्य है, घरी = समय, जिदना = जिस दिन, लिपड़ लो = लिपट जाओ, सुघरी = शुभ घड़ी।

प्रिय के गौर वर्ण शरीर पर कामदेव की छवि अंकित होने लगी है। पूर्ण यौवन को प्राप्त प्रेयसी के अंग-अंग से काम भाव प्रस्फुटित हो रहा है। पिता का घर धन्य है, जहाँ तुम्हारा जन्म हुआ तुम्हें ऐसा घर मिला। धन्य है तुम्हारे प्राण प्रियतम जिन्होंने तुम्हें गले लगाया। धन्य-धन्य वह घड़ी और मुहूर्त कि जिस दिन तुमने दरस दिखाया। ईसुरी चाहते हैं कि मुझसे लिपट जाओ अर्थात् आलिंगन बद्ध हो जाओ ऐसी शुभ घड़ी का दिन आया है।

इनके कौन-कौन गुन बरनैं,
दये भौत से हरनैं।
दानइ खाँ दिल इनकौ ऐसौ,
उठा दऔ है करनैं।
लच्छन लच्छ लच्छमी जिनकैं,
मेली चारउ चरनैं।
'ईसुर' रूप मालती हो गऔ,
माँगी बास भुमर नैं।

गुन = गुण, बरनैं = वर्णन किए जाएँ, हरनैं = भगवान् ने, करनैं = दानवीर कर्ण का हाथ, लच्छन-लच्छ = अल्ले-पल्ले के अर्थ में, मेली = ठहरी हुई, चारउ = चारों, चरनैं = चरण से, भुमर = भौंरा।

प्रिय के किन-किन गुणों का बखान किया जाए? भगवान् ने उन्हें बहुत से गुण प्रदान किए हैं। इनका दिल तो दान करने के लिए ही बनाया है। इसीलिए इनके हाथ ने दानवीर कर्ण को लजा दिया है। इनके इस स्वभाव के कारण लक्ष्मी जिनके घर में अपने चारों चरण से ठहरी हुई है अर्थात् धन-धान्य वैभव से सम्पन्न है। ईसुरी कहते हैं इनके गुणों के कारण इनका रूप मालती के पुष्प की तरह निखर आया है। उसकी सुगन्ध मुझ जैसा भँवरा लेना चाहता है।

अपने मन माफिक के लानैं,
सुगर जौहरी चानैं।
नरतन रतन जतन से खोले,
चढ़ौ प्रेम हरसानैं।
बैंचो ओई दुकानैं जैहे,
जो गुन खाँ पैचानैं।
कात 'ईसुरी' सुन लो प्यारी,
कोई धरै ना गानैं।

माफिक = अनुकूल, के लाने = के लिए, नरतन = मनुष्य योनि, रतन = रत्न, जतन = यत्न, हरसाने = खुशियों के लिए, ओई = उसी, दुकानें = दुकान पर, जैहै = जाएगा, पैचानैं = परख के अर्थ में, धरै = रखेगा, गानैं = गिरवी, रहन।

प्रियतम की सुन्दरता को परखने के लिए कोई मनमाफिक सुयोग्य जौहरी की आवश्यकता है। यह मनुष्य योनि रत्न के समान है, इसे यत्नपूर्वक रखना चाहिए, आवश्यकता की जगह ही खर्च करना चाहिए। यह प्रेम में पड़ जाने पर अत्यधिक चमकता है। उसी दुकान पर बेचा जाना चाहिए, जहाँ इसके गुण परखे जाते हों। ईसुरी कहते हैं – प्रिय सुनो! अन्यथा इसे कोई गिरवी भी न रखेगा यानी किसी पारखी के हाथ में ही इसकी कदर हो सकती है।

चूनर चार चपेटन बारी,
पैरै मिन्त हमारी।
कउँ पिसतई प्याजी जंगाली,
अगरइ कउँ अनारी।
पीरी कउँ हरीरी नुकरइ,
कुसमानी कउँ कारी।
सूही सब्ज सरबती, सुन्दर,
सुरखी कहूँ सुनारी।
कानौ लेबै नाँव 'ईसुरी',
सबरे रंग समारी।

चार चपेटन बारी = चौकोर चपेटे जिसमें अंकित हैं, पैरै = पहिने हुए, पिसतई = पिस्ते के रंग की, प्याजी/ जंगाली / अगरई / अनारी / पीरी / हरीरी / नुकरइ / कुसमानी / कारी / सूही सब्ज / सरबती = यह सब रंगों के नाम हैं, सुरखी = ललामी, सुनारी = सुनहली, कानौ = कहाँ तक।

प्रिया ने चौखाने छपाई की सुन्दर विभिन्न रंग वाली चूनर ओढ़ी है। उसका रंग कहीं पिस्तई है, कहीं प्याजी है, कहीं जंगाली है, कहीं अगरइ भी है, कहीं अनार कैसा है, कहीं पीली है तो कहीं हरी कच्च भी है, कहीं नुकरई भी है, कुसुम्बी भी हैं, काली भी है। तोते जैसा सब्ज रंग भी है, सरबती भी है, उसमें सुन्दर लालिमा भी है तो कहीं सुनहली भी है। कहाँ तक रंगों के नाम गिनाऊँ सभी रंगों से चूनर सँवारी गई है।

तनसे ऐंचत काय कंदेला,
हर-हर दोरै बेला।
कछू उड़ै कछु आप उड़ाबै,
दै डाड़ी कौ ठेला।
चलिये मुलाकात जा करिए,
काँ है ठौर अकेला।
बे पैचान अजानै हो गइ,
गैल घाट कौ मेला।
'ईसुर' कौन गाँव से आई,
करन शारदा मेला।

तनसे = शरीर से, ऐंचत = खींचने के अर्थ में अर्थात् हटाती हो, कंदेला = ओढ़ने का एक प्रकार विशेष, जो कुमारी लड़कियों के लिए ही आरक्षित था, हर-हर = प्रत्येक, डाड़ी = ठोड़ी चिपुक स्थल, ठेला = ठेलने के अर्थ में, ठौर = स्थान, अजाने = अनजाने में, गैल - घाट = राह चलते के अर्थ में मुहावरा, करन = करने।

प्रिय बेला! तू द्वार-द्वार पर जाकर अपनी ओढ़नी का आँचल बार-बार क्यों हटाती हो? कुछ तो वह स्वयं उड़ता है और ठोड़ी को ठेल मारकर तू भी उड़ा देती है। चलो एकान्त जगह में मिलन ही कर लिया जाए। बगैर परिचय पहचान के ही अनजाने में तुम इतनी निकट आ गई हो, इसी को राह चलते का मेल मिलाप कहते हैं। तुम किस गाँव से यहाँ शारदा मेला में घूमने आई हो।

चैती या बिलवारी

मन बस गई घलन कछोटा की,
लटकन काँच लपोटा की।

जाँघन के ऊपर मिल बैठी,
जरद किनारी गोटा की।
ऐसी बनी नबल नव नागर,
जैसे बनन अंगोटा की।
गोरौ बदन लंक कड़ याबै,
लागै चोट पंचोटा की।
कहत 'ईसुरी' कई मानजा,
गैल न जा नंद ढोटा की।

बस गई = बस जाने के अर्थ में, कछोटा = अंचल पट कटि में खोंसने के अर्थ में, लटकन = लटकती हुई स्थिति, काँच = लोंग अर्थात् दोनों पैरों के मध्य से एक छोर ले जाकर कटि में खोंसना, लपोटा = लपेटकर, जाँघन = जंघाऔ, जरद = जड़ाउ, बनन = बन जाने का ढंग, अंगोटा = अंक में भर लेने के अर्थ में, पंक = एकदम, कड़यावै = निकल पड़ रहा है, पंचोटा = पंचाट करके चोट लगने के अर्थ में, नंद ढोटा = नन्द का लाल।

नायिका बुन्देली ढंग से कछोटा मारे हुए राह में जा रही है। नायक देखकर कह रहा है – इस कछोटे का ढंग मेरे मन में बस गया है। कितने सुन्दर ढंग से एक भाग लटकाया गया है। उसकी काँच लपेटकर लगाई गई है। इसके कारण जंघाओं पर चमकदार जड़ाऊ गोटे की किनारी आ गई है। ऐसी नवल एवं नवीन छवि शायद इस नगर में मात्र एक ही बन पड़ी है, बस यही हो सकता है कि इसे अंक में भर लिया जाए। इस वेश में गोरा तन एकदम उभर आया है, जिसकी हृदय में उचटकर तपाक से चोट पड़ती है। ईसुरी कहते हैं – कहना मान उस मार्ग पर मत जाओ, जहाँ छैल छबीला नन्द का लाल मिलेगा तुम उससे नहीं बच पाओगी।

विशेष :– यह झूला की फाग है।

पग में लगत महाउर भारी,
अत कोमल है प्यारी।
आद रती कौ लाँगा पैरै,
तिलकी ओड़ै सारी।
खस–खस की इक अंगिया तन में,
आदी कोर किनारी।
रती–रती के बीच 'ईसुरी',
एक नायिका ढारी।

महाउर = महावर, अत कोमल = अति कोमल / सुकुमार हैं, आद रती = आधी रत्ती वजन का, लाँगा = लँहगा, पैंरे = पहिने, तिलकी = तिल भर वजन की, खस–खस की = पोस्ता के एक दाने के बराबर वजन की, अंगिया = चोली, ढारी = ढाली गई।

रीतिकालीन कवियों ने नायिकाओं के सुकुमारपन का जो वर्णन किया है, उससे दो कदम आगे बढ़कर ईसुरी ने लिखा है। वे कहते हैं– प्रिया अति कोमल एवं सुकुमार है। महावर का वजन पैरों में लगने से पैर नहीं उठते। लँहगे का वजन आधी रत्ती है। जो साड़ी ओढ़ी है उसका वजन एक तिल के बराबर है और खस–खस के दाने अर्थात् पोस्ते के दाने के बराबर वजन की चोली पहिने है। किनारी भी पूरी नहीं, आधी है अर्थात् बेहद बारीक पतली है। रत्ती–रत्ती से ही ईसुरी ने नायिका का यह रूप ढाला है। अतिश्योक्ति अलंकार का प्रयोग है।

तुमरैं कबै – कबै हम आये,
तुमरे बिना बुलाये।
हातन हात सन्देसे तुमने,
कइयक दार पठाये।
आउत देखे हमैं दूर से,
नैचै नैंन नबाये।
चाना के हम दास 'ईसुरी',
चले जाय अनचाये।

तुमरे = तुम्हारे घर, कबै–कबै = कब–कब, हातन – हात = हाथों हाथ, सन्देसे = सन्देश, कइयकदार = अनेकों बार, पठाए = भेजे, आउत = आते हुए, नैचैं = नीचे को, नबाये = झुका लिए, चाना के = चाह के, अनचाये = बगैर चाह के।

नायिका के घर जब नायक पहुँचता है तो नायिका ने आँखें झुकाकर उपेक्षा कर दी। ईसुरी कहते हैं – बगैर बुलाये तुम्हारे घर मैं कब–कब आता हूँ। अनेकों बार तुमने हाथों–हाथ संदेशे भेजे हैं और आज तुमने मुझे आते हुए देखकर नयन नीचे क्यों झुका लिये? ईसुरी कहते हैं– मैं चाह का दास हूँ। जहाँ चाह नहीं, वहाँ एक क्षण भी न रूकूँगा, यहाँ से चला जाऊँगा।

जीरा लऔ दाबनी दैकैं,
हँस लाला कै–कै–कैं।
हो रइँ श्याम घनन के ऊपर,

बिजली कैसी फैंकै।
भाल लाल में दो गड़ आईं,
भोंय भावनी गैकैं।
गरदन धर–धर गहत लाल पै,
छैल छबीलौ छैकैं।
आसिक भये 'ईसुरी' आबत,
भौजी के घर जैकैं।

जीरा = मन, लओ = लिया, दाबनी दैकैं = आँख को दबाने के अर्थ में, कै-कै-कैं = कह-कहकर, फैंकै = फेंकने के अर्थ में, भोंय = भृकुटी, भावनी = भावन, छैल = रसिक युवा, छैकें = रोकने के अर्थ में, जैकैं = जाकर।

हे प्रिय! आँख के इशारे करके और हँस-हँसकर लाला कह-कहकर तुमने मेरा मन मोह लिया है। मानो काले कजरारे घनों पर चमकीली बिजली चंचल वार कर रही है। भाल पर लगी लाल दो बिन्दियाँ भृकुटी के मध्य बैठ गई हैं। बिन्दियों का लाल रंग समूचे अंग पर पड़ रहा है। गर्दन को जैसे फाँस लिया है। लाल बिन्दी के रंग ने कई छैल छबीलों को रोक लिया। ईसुरी भी आशिक हो गये हैं, जब से वे भाभी के घर से लौटकर आये हैं।

हमनै तनक देख लइ मुइयाँ,
हाय कौन की गुइयाँ।
दाबैं जात ऊंठनन घूँगट,
दिलबर हेरी नइयाँ।
नग-नग गुरा लफत है ईके,
जैसे लफै धनुइयाँ।
'ईसुर' चड़ी जात डोला में,
जैसे राय मुनइयाँ।

तनक = थोड़ी के अर्थ में, मुइयाँ = मुख, दाबे = दबाने के अर्थ में, ऊंठ = अँगूठे के अर्थ में, हेरी = देखी, नग-नग-गुरा = शरीर का हिस्सा - हिस्सा, लफत = लचक रहे हैं, ई के = इसके, धनुइयाँ = धनुष की कमान।

मैंने थोड़ी मुँह की झलक देख ली है, हाय! यह किसकी मित्र है? उसने शर्माकर अपने हाथ के अँगूठे से घूँघट को और भी खींच लिया है। प्रिया ने हमें देखा तक नहीं है। पर, इसकी

देह का हिस्सा-हिस्सा ऐसे लचक रहा है जैसे धनुष की कमान हो। उसका चलना ऐसा है जैसे वह डोले में चढ़कर जा रही है, जैसे राय मुनइयाँ जाती है।

हँसके कर देतीं मन राजी,
जा ढब तुममें साजी।
कड़त अबाज कोकला कैसी,
कौन दबा खों माँजी।
आठ पहर हँसती सी रातीं,
मन ना तनक मिजाजी।
ऐसौ डील ठुमक ना ऊँचौ,
पंछीली ना ताजी।
इनैं देख सबइ कोउ रीझे,
बुद्धमान उर पाजी।
'ईसुर' कभउँ काउ पै न भइ,
ई मौंसे इतराजी।

राजी = सन्तुष्ट, ढब = एक वाद्य/ढंग, साजी = अच्छी है, कड़त = निकलती, कोकला = कोयल, दबा खों = औषधि के लिए, माँजी = परमार्जित की, राती = रहती हो, मिजाजी = घमण्डी के अर्थ में, डील = देह, ठुमक = मझाला, पंछीली = पानीदार, इतराजी = आपत्ति।

हँसकर ही मन सन्तुष्ट कर देती है, यह तरीका तुममें बहुत अच्छा है। आवाज तो कोयल के समान ही निकलती है, पता नहीं किस दवा से तुमने इसका मार्जन किया है। आठों प्रहर हँसती सी ही तो रहती हो मन में तनिक भी गर्व-गरूर नहीं रखती। न ऊँचा, न छोटा शरीर मझोले कद का ताजगीयुक्त पानीदार है। इनको देखकर सभी मोहित होते हैं। बुद्धिमान जन भी और बेवकूफ भी। ईसुरी कहते हैं- कभी किसी ने इस सुन्दर मुख पर आपत्ति व्यक्त नहीं की है। यानी एकदम नायिका का निर्दोष सौन्दर्य है।

रोजईं मुस्का कें कड़ जातीं,
हमसे कछू न कातीं।
जा ना जान परत है दिल की,
काये खौं सरमाती।

जब-कब मिलैं गैल खोरन में,
कछू कान सौ चातीं।
ना जानै काहे कौ हिरदो,
कपटन सोउ दिखातीं।
ईसुर कबै कौन दिन हू है,
जबै लगाबी छाती।

मुस्का कें = मुस्कराकर, कड़ जातीं = निकल जाती हो, कातीं = कहती हो, जा ना = यह नहीं, परत = पड़ता है, कायें खाँ = किसलिए, सरमाती = शर्माती, जब कब = जब कभी, गैल खोरन = गली कूचों, कान सौ = कहना सा, चातीं = चाहती हो, हिरदौ = ह्रदय, कपटन = कपटी, सोउ = भी, दिखातीं = प्रतीत होती हो, जबै = जब, लगाबी = लगाऊँगा, छाती = ह्रदय से।

नित्य प्रति मुस्कराकर निकल जाती हो मुझसे कुछ कहती कभी नहीं हो। यह नहीं जान पड़ता कि तुम्हारे ह्रदय में क्या है? किसलिए शर्म खाती हो? स्पष्ट कहो न जो कहना है? जब कभी गली-कूचों में मिलती हो तो ऐसा लगता है मानो कुछ कहना चाहती हो, फिर भी कुछ नहीं कहती हो? न जाने तुम्हारा ह्रदय किस वस्तु से ऐसा कठोर बना है, लगता है तुम कपटी भी हो। ईसुरी कहते हैं- वह दिन कब आयेगा जब तुम्हें अपने ह्रदय से लगा लूँगा।

जे नइ आइँ पाहुँनी काँ से,
कड़ीं तुमारे नाँ सें।
देखत गईं उँगरियन में से,
कर घूँगट में साँसें।
समझो जात नाईं ना करहै,
घर इन खाँ जा गाँसे।
कात 'ईसुरी' अबै रान दो,
सुर काँसे कौ काँसे।

नइ = नवीन के अर्थ में, पाहुँनी = मेहमान-अतिथि, काँसे = कहाँ से, कड़ी = निकली, तुमारे नाँ से = तुम्हारे यहाँ से, उँगरियन में हो = उँगलियों में से, साँसे = झरोखा बना करके के अर्थ में, नाईं = इन्कार, इन खाँ = इनको, गाँसें = फाँस लिया जाए, कात = कहते हैं, रहन दो = रहने दो, सुर काँसे कौ काँसे = एक मुहावरा जिसका भाव बात जहाँ की तहाँ रहने दो।

यह नयी मेहमान कहाँ से आई हैं? जो तुम्हारे यहाँ से अभी हाल निकली हैं। उसने अपने

घूँघट में से उँगलियों की सहायता से एक गवाक्ष अर्थात् छोटी सी साँस बनाकर मेरी ओर देखा है। इससे मैं समझता हूँ कि यदि इनको मैं पाने की कोशिश करूँ तो वे इन्कार नहीं करेंगी। लेकिन मैं कहता हूँ कि अभी बात जहाँ की तहाँ रहे तो ठीक होगा।

धनियाँ जा पतरी सी की की,
ऐसे नाजुक जी की।
ज्यों की त्यों पान की गुटकन,
पीक दिखाबै ई की।
अमर बेल सी लिपड़त हू है,
झिकत न हू है झीकी।
चउअर होत चलत करयाई,
चाल चलत है नीकी।
'ईसुर' श्याम सलौनी दुल्हन,
सब बातन हो सीकी।

धनियाँ = घरवाली या पत्नी के अर्थ में, पतरी सी = छरहरी सी, कीकी = किसकी है, जी की = हृदय की, गुटकन = निकालने के अर्थ में, पीक = पान का भदरस, लिपड़त = लिपटती, हू है = होगी, झिकत = टूटने के अर्थ में, झीकी = हटाए, चउअर = चार मोड़ों वाली, चलत = चलने में, करयाई = कटि, नीकी = अच्छी, सीकी = सीखी हुई है।

यह छरहरी सी नाजुक हृदय की धनियाँ यानी प्रेयसी है, उसकी गोरी चमड़ी इतनी पारदर्शी है कि जब वह पान की पीक निगलती है तो गले से नीचे उतरती हुई लाल-लाल इसकी धारा स्पष्ट दीख पड़ती है। अमर बेल की भाँति यह जब लिपट जाती होगी तो हटती न होगी। बड़ी मुश्किल से हटती होगी। वह इतनी नाजुक है कि चलने में उसकी कमर में चार-चार बल पड़ते हैं। उसकी चाल भी बड़ी लुभावनी है। ईसुरी कहते हैं - यह साँवरी सलौनी दुल्हन सब बातों को सीखी हुई होशियार है।

ऐसौ मजादार तन पाकें,
राती बना-बनाके।
बड़े भाग से होत मुनइयाँ,
मानस जनम मसाकें।

तनक वस्त्र कौ लोभ न करियो,
साउकार घर आकें।
दैबे लायक अबै हौ प्यारी,
हिये लगाओ धाकें।
मानस भये-भये ना 'ईसुर'
बिरथाँ भरम गमाकें।

मजादार = रसानन्द से परिपूर्ण, पाकें = पाकर के, राती = रहती हो, बना-बनाके = बनी-ठनी के अर्थ में भी एवं बना अर्थात् वर के अर्थ में श्लेष भी, मसाकें = मुसके ली, लोभ = लालच, साउकार = साहूकार के, लायक = योग्य, अबै हौ = अभी हो, हियै = हृदय से, धाकें = दौड़कर, बिरथाँ = व्यर्थ, गमाके = खोकर के।

इतना सुन्दर सुडौल शरीर पाकर भी प्रियतम तुम उसे और भी श्रृँगारित कर सुन्दर बनाने में लगी रहती हो। यह सब तुम प्रियतम को रिझाने के लिये करती हो। हे सुन्दरी! बड़े भाग्य से ही तुम्हारे जैसी मनुष्य योनि को प्राप्त करती हैं। हाँ, कपड़े लत्तों का लालच मत करना। साहूकार के घर में आकर चिन्ता मत करो, खूब पहनो, खूब खाओ। अभी तुम प्रीत देने लायक हो प्रिये। अत: आओ दौड़कर मेरे हृदय से लग जाओ और मैं जो चाहता हूँ वह दे दो। ईसुरी कहते हैं - मनुष्य योनी दुर्लभ है, फिर मिले या न मिले। अत: यह व्यर्थ का भ्रम हम क्यों पालें?

करतीं काय लाबरौ कैबौ,
ठीक जुआब न दैबौ।
साँची पुन्ने पाप बिरोबर,
झूटी बात बनैबौ।
ई मैं बुरौ मनउअल नाहीं,
ना कछु है खुनसैबौ।
आशा दैकें करौ निरासा,
आसा में मरजैबौ।
'ईसुर' कऔ काय ना करतीं,
छाँड़ देब पछतैबौ।

लाबरौ = मिथ्या, कैबौ = कथनी, जुआब = उत्तर, दैबौ = देना, साँची = सच्ची, पुन्ने = पुण्य है, पाप बिरोबर = पाप तुल्य, बनैबौ = बनाना, ई में = इसमें, बुरौ = बुरा, मनउअल = मानने योग्य, खुनसैबो = क्रोध करना, मरजैबौ = मर जाना, कऔ = कहना, छाँड़ देब = छोड़ दो, पछतैबौ = पश्चाताप करना।

तुम सब कुछ झूठी बातें क्यों करती हो? सही-सही उत्तर दे देना ही उचित है। सच के बराबर पुण्य और झूठ के बराबर पाप नहीं है, अतः झूठी बातें न बनाया करो। इसमें बुरा मानने योग्य बात मैंने नहीं कही, न ही कोई नाराजी की बात है। आशा देकर निराश करती हो। उम्मीद में ही मेरा मरना हो जाता है। ईसुरी का कहा क्यों नहीं करती हो, सब छोड़ दो जिससे बाद में पश्चाताप न करना पड़े।

संगे एक जने खों पारैं,
दूजौ खड़ौ दुआरैं।
तीजौ तीन बेर के फिर गओ,
चौथौ चड़ौ उसारैं।
पाँचौ पकर परदिया ठाड़ौ,
छल की छठा बिचारैं।
सात-आठ की को कये 'ईसुर',
कइयक यार तुम्हारें।

बेर = समय /आवृत्ति के अर्थ में, उसारैं = घर के आगे एक दालान नुमा सायवान, परदिया = चहारदिवारी की दीवाल।

ईसुरी नायिका की कामुक प्रवृत्ति का इस रचना में अतिश्योक्ति पूर्ण वर्णन करते हुए कहते हैं कि - प्रिय तुम्हारे अनेक प्रेमी हैं। किसी भी समय जाकर देखने पर तुम्हारे साथ एक सुखरत होगा तो दूसरा प्रतीक्षारत द्वार पर खड़ा होगा, तीसरा तीन बार चक्कर लगाकर चला गया, चौथा द्वार के सायवान पर चढ़कर मिलन के प्रयास में लगा होगा तो पाँचवाँ बाहरी दीवाल पकड़े उठ-उठकर झाँक रहा होगा। कितनों को एक साथ आमंत्रण दे डाला? सात-आठ व्यक्तियों का क्या कहें और भी न जाने कितने तुम्हारे प्रेमी होंगे?

साँकर कन्नफूल की होते,
इन मोतिन की कोते।
बैठत उठत निगत नैउरतन,
परे गाल पै सोते।
राते लगे माँग के नैचैं,

अंग-अंग सब मोते।
'ईसुर' इनखों देख-देख कैं,
सबरे जेवर जोते।

साँकर = जंजीर, कन्नफूल = कर्ण फूल (कानों का गहना), कोते = बदले में, निगत = चलते, नैउरतन = झुकते में, मोते = मोहित करते, जोते = ज्योतित होते अर्थात् आभा प्राप्त करते।

नायक अपनी बेबसी व्यक्त करते हुए नायिका की निकटता प्राप्त करने हेतु कल्पना करता है कि यदि मैं कर्णफूल में लटकने वाले इन मोतियों की लड़ी के बदले जंजीर होता तो क्या कहना था? बैठते-उठते, चलते-फिरते, झुकते आदि मुद्राओं में प्रियतमा के कोमल कपोलों पर चैन से सोया करता। माँग के नीचे ही तो लगे रहता, जिससे अंग-प्रत्यंग मोहित हो जाता। जिसे देखकर ही शेष सभी गहने भी अपनी आभा को प्राप्त करते।

ऐसी का काउकी गोरी,
जैसी कारी मोरी।
नाक सुआसी दसनन दाड़िम,
सब उपमा हैं थोरी।
छू ना कड़ी तनक चालाकी,
चाल-चलन की भोरी।
'ईसुर' चाह उनइँ की ऐसी,
जैसी चन्द चकोरी।

गोरी = गौर वर्ण एवं स्त्री के अर्थ में भी, दसनन = दन्तवाले, दाड़िम = दामिनी, कड़ी = निकली, चाल-चलन = चरित्र।

अपनी साँवली नायिका (पत्नी) की अन्य गौरवर्ण नायिका की तुलना में प्रशंसा करते हुए कवि ने कहा है कि - ऐसी किसी की प्रेयसी गौर वर्ण नहीं होगी, जैसी कि मेरी यह श्यामवर्ण है। शुभ नायिका या दन्तावलि में बिजली की दमक अथवा अनार दाने सी चमक जैसी सभी उपमाएँ कम पड़ेंगी। चालाकी की भावना तो उसके निकट से छूकर भी नहीं निकली, वह चरित्र में भी अति भोली है। उनको मैं ठीक वैसे ही चाहता हूँ जैसे चाँद को चकोरी चाहती है।

कारी सें कारी का कानैं,
जिये गाँव भर जानैं।
कारी के तुम सोच दूबरे,
होत कायके लानैं।
कारी कुलभी बहू बनी है,
ऐसी अबको पानैं।
कारी बँदी गरैं 'ईसुर' के,
ओरम छोर निबानै।

कानैं = कहना, सोच = चिन्ता में, दूबरे = दुबले, पानैं = पायेंगे, बँदी = बँध चुकी, गैंर = गले से, औरम छोर = आदि से अन्त तक, निबानै = निर्वाह करना है।

नायक अपनी पत्नी (ब्याहिता) के साँवले वर्ण होने पर कहता है कि – काली से काली क्या कहना? जिसे कि पूरा गाँव जानता है। काली होने की चिन्ता से दुबला होना भी व्यर्थ है। जब यह काली ही कुल की कुलवधू बन चुकी तो ऐसी अन्यत्र कहाँ पाओगे? जब यही श्यामा गले से बँध चुकी है तो अन्य को छोड़कर इसके साथ ही निर्वाह करना श्रेयस्कर है।

बैरन बदल जात कै कै कै,
ममता मोह फँसै कैं।
हमसे छोड़ और से कीनी,
मजा न जानौ लैकैं।
तिरिया कौल करै भौतेरे,
बीच में गंगा दैकैं।
'ईसुर' ना परतीत मानियो,
बैठे रयँ घर सै कैं।

बैरन = शत्रु के अर्थ में लेकिन अपनों के लिए प्यार भरा सम्बोधन, कै–कै कै= कह–कहकर, लैकैं = लेकर, परतीत = प्रीति, सै कैं = सहन करके।

यह मेरी जान की दुश्मन है, जो मोह–माया में फाँस लेती है, लेकिन तुम्हारा स्वभाव विचित्र है तुम कहकर बदल जाती हो। मुझे छोड़कर अन्य से प्रीति लगाई लेकिन उसका भी आनन्द नहीं ले सकीं। यही त्रिया चरित्र है, कितनी ही कसमें खाएँ, गंगा को बीच में ले, परन्तु इनकी प्रीति में सच्चाई समझना बेमानी होगा। हमसे तो कहा जाता है कि घर में बैठे रहो और फिर घर में बैठना भी सहन नहीं होता।

इक दिन तेरौ मन पछतैहै,
बेइ भले ते कैहै।
इतै बने है जे दिन जौ लौ,
दाना पानी रैहै।
छूट जाय सतसंग एक दिन,
जाने को-काँ जै है।
ऐसौ काम करत है जग में,
मनकी मन में रैहै।
देख लेब देखे खौं 'ईसुर',
दिन उर रात ललैहै।

पछतैहै = प्रायश्चित करने के अर्थ में, दाना-पानी = अन्न जल, ललैहै = लालायित रहने के अर्थ में।

अन्त में नायिका की उपेक्षा से निराश होकर नायक यही कहता है कि – आज नहीं तो कल – एक दिन तेरे मन में प्रायश्चित होगा, कभी मुझे भला कहेगी (जिसकी आज इतनी उपेक्षा है) जब तक हम जीवित हैं, तब तक तो हमारा अन्न जल है। एक दिन यह सत्संग भी न रहेगा कौन जाने कौन कहाँ होगा? ऐसा कार्य इस संसार में आकर किया? मन ही मन सोचोगी। देख लेना मुझे देखने को तब रात-दिन तुम ललचाती रह जाओगी।

चैती या बिलवारी

नेहा ना लागै निरमोई सैं
अरज बिधाता तोई सैं।
जो मिल जात सुगर खौं स्यानौ,
निभत एकसी दोई सैं।
जो कउ चाना अपनी राखै,
मिलै बाँय भर ओई सैं।
'ईसुर' कै रये नेह कठिन है
पार लगत कुइ कोइ सैं।

नेहा = प्रीति, निरमोई = निर्मोही, अरज = विनय, तोई सैं = तुझ से ही, सुगर = होशियार के अर्थ में, स्यानौ = चतुर के अर्थ में, बाँय भर = आलिंगन के अर्थ में।

नायक अथवा नायिका जब कभी चोट खा जाते हैं और प्रेमी दगा दे जाता है, तब ऐसी

स्थिति आ जाती है। अत: प्रीति कभी किसी निर्मोही से न लग जाए। हे विधाता! यही विनय तुम से है। यदि सुघड़ को चतुर प्रेमी मिल जाता है तब दोनों ओर से समान प्रीति पलती है या निभती है। जिसके मन में अपनी साख हो, उसी से आलिंगन के साथ भेंटना चाहिए। कवि कहता है कि नेह बहुत कठिन सौदा है, किसी-किसी ही इससे पार लगना सम्भव होता है, सबको नहीं।

विशेष :- यह झूला की फाग है।

तुमनै नेह का जादू कीना,
जिया पराया लीना।
पर गऔ मन्त मोहनी मोपै,
बातन में पड़ दीना।
गिरदौ खात रात दिन दौरत,
अब कल परत कहीना।
'ईसुर' आप भईं हैं मुंदरी,
मो खों करौ नगीना।

मन्त = मंत्र-तंत्र, बातन = बातों में, गिरदौ = फेरा चक्कर के अर्थ में, दौरत = दौड़ने के अर्थ में, कल = चैन के अर्थ में, मुँदरी = अँगूठी, मो खों = मुझको।

तुमने प्रेम का जादुई प्रभाव डाला और पराया हृदय जीत लिया है। मुझ पर मोहिनी मंत्र बातों ही बातों में फेंक दिया है। अब स्थिति यह है कि मैं रात दिन चक्कर लगाता हुआ दौड़ता हूँ। सच कहता हूँ एक क्षण के लिए भी चैन नहीं है। स्वयं तो मानो अँगूठी बन गई प्रिये! और उसमें मुझे तुमने नग की भाँति जड़ लिया है।

कातीं मजा लूटलौ नौनें,
फिर जइयत है गौनें।
आसौं साल माव फागुन में,
हौने काँतक लौनें।
अड़कै बैठे बिदा के लाने,
आ गये श्याम सलौनें।
आहे बरस रोज में छैला,

बीच मिलन नई हौनैं।
'ईसुर' कात पराये डोला,
छेड़ लये है कौनें।

कातीं = कहती हैं, नौंनें = अच्छी तरह के अर्थ में, जइयत = जाती हूँ, गौनें = शादी के बाद पहली विदा में, आसौं = इस वर्ष, काँतक = कहाँ तक, लौनें = लावण्य मय / अच्छे, बरस रोज = लगभग एक वर्ष की अवधि।

शादी के पश्चात् प्रथम विदा में जाने के पूर्व परकीया नायिका अपने प्रेमी के प्रति समर्पित भाव से कहती है कि अब तुम आज अच्छी तरह से मिल लो। मुझे ससुराल वाले लेने आ गये, मैं अब गौने में जाती हूँ। इस वर्ष फागुन मास कहाँ तक अच्छा लगेगा? मेरी विदा कराने वाले तो अड़कर बैठ गये हैं। साथ मेरे वे श्याम सलोने भी आए हैं। इसके बाद तो एकाध वर्ष में ही लौट पाऊँगी। प्यारे बीच में मिलन अब सम्भव नहीं होगा। पराई डोली को भला कोई रोक पाया है।

विशेष :- फागुन अच्छा न लगने की बात प्राचीन बसन्तोत्सव की याद दिलाता है। 'पराये डोला छेड़ लये है कौने' एक लोक मुहावरा है।

मोरौ मन बिगर गऔ काँसैं,
हाल तुमारे नाँसैं।
रइयो गरइँ हरइँ ना हुइयो,
जुरै न लोग तमासे।
जानै नई लखत कोख में,
डरै नई गर फाँसै।
का सबूत झूठी ऊपर खाँ,
चलती नइयाँ साँसें।
'ईसुर' एसौइ रान देय अब,
काँसे कौ सुर काँसैं।

बिगर = बिगड़ जाने, मलाल आने के अर्थ में, हाल = अभी-अभी, नाँसैं = इधर से, गरइँ = भारी, हरइँ= हल्की, तमासें = खेल का हुजूम के अर्थ में, लखत = देखने के अर्थ में, फाँसै = फन्दे, का सबूत = क्या प्रमाण, रान देय = स्वीकार करने के अर्थ में, काँसे = काँस्य नाम की धातु।

मैं नहीं समझता कि मेरे मन में यह मलाल कहाँ से आया है? शायद मैं अभी-अभी

तुम्हारे यहाँ से आया हूँ। लोग क्या कहेंगे। अत: यही कहूँगा कि तुम अपनी उदारता मत छोड़ना, हल्केपन पर मत उतर आना। यदि तुमने जरा सा भी हल्कापन दिखाया तो तमाशा बन जायेगा। इसमें डरने की कोई बात नहीं है कोई नहीं देखता कि कोई जान पल रही है। कोई फाँसी के फन्दे पर नहीं चढ़ा देगा। किसी के पास कोई प्रमाण नहीं है, यह ऊपर-ऊपर की सब झूठ है, यदि ऐसा है तो साँस भी न चलेगी समझो? सब कुछ ऐसा ही रहने दिया जाए तो बात जहाँ की तहाँ रहे। कदाचित् किसी गर्भवती महिला को सीख दी गई है।

हमैं कभउँ तो हँसकें काती,
लला लगा लो छाती।
ऐकन खों हामी भर देती,
हमखों काय डरातीं।
ऐसो कठिन करेजौ करलव,
पथरा दै लव छाती।
'ईसुर' कात बचन ना पैहौ,
एक पुरा में राती।

कभउँ = कभी तो, काती = कहती, लाला = देवर का सम्बोधन, एकन खों = अन्य किसी के अर्थ में, हामी = स्वीकारोक्ति, काय = क्यों, पुरा = मुहल्ला।

कभी तो मुझसे भी हँसकर कह देती कि प्रिय लाला। आओ मेरी छाती से लग जाओ। अर्थात् आलिंगनबद्ध हो जाओ। अन्यों को तो हाँ कह देती हो मुझसे फिर भय कैसा? ऐसा कठिन कलेजा कर लिया है मानो छाती पर पत्थर सा रख लिया हो। लेकिन मैं कहता हूँ कि तुम क्या मुझसे बच पाओगी? जबकि हम दोनों एक ही मुहल्ले के हैं।

कैसें मिलै पेट की थायें,
मौं से बिना बतायें।
धीरे-धीरे मेर होत है,
ऐंगर आयें - जायें।
मजा-मजा से मन मिल जावैं,
आँख से आँख मिलायें।
माँजें बसत होत है पतरी,

हल्की होत मँगायें।
कट जात पाखान जोरिया,
सरकायें- सरकायें।
पिगल जात जौ हिरदौ 'ईसुर',
खुदयायें-खुदयायें।

पेट की थायें = मन की भीतरी स्थिति के अर्थ में, मेर = मेल-जोल, ऐंगर = निकट, बसत = वस्तु, मँगाये = माँगने से, पाखान = पत्थर, जोरिया = रस्सी से, सरकायें = खिसकने से, हिरदौ = हृदय, खुदयायें = कुरेदने से।

जब तक मुख से नहीं कहती तब तक तुम्हारे मन के भीतर की स्थिति कैसे जानी जा सकती है। मेल-जोल तो धीरे-धीरे निकट आने-जाने से ही सम्भव है। इसी प्रकार मजे से आँख से आँख मिलाते रहने पर मन भी मिल जाता है। माँजने से वस्तु पतली होती है और हल्की भी हो जाती है। लेकिन रस्सी के सरकने के घर्षण से पाषाण तक कट जाता है और इस प्रकार कुरेदते रहने से एक दिन हृदय पिघल जाता है। द्रवित हो जाता है।

जिदना होजै भेंट छली सैं,
लैजै टार गली सैं।
अंग-अंग कौ रस लै - लैहै,
जैसे भौंर कली सैं।
साजी बात होत राजी सैं,
चूकौ नई भली सैं।
'ईसुर' कात अबै हम सूदे,
कइयत जात लली सैं।

जिदना = जिस दिन, छली = धोखेबाज के अर्थ में, टार = टालकर अर्थात् एकान्त में अलग करके, भौंर = भ्रमर, साजी = सही के अर्थ में, राजी = सहमति, कात = कहते हैं, सूदे = सीधे सरल, कइयत = कहते हैं।

प्रिये! जिस दिन तेरी भेंट किसी छलिया से हो जाएगी, वह तुम्हें पथ भ्रष्ट कर देगा। तुम्हारे अंग-प्रत्यंग का रस ठीक इस प्रकार चूस लेगा जैसे भ्रमर कली का रस चूस लेता है। सही बात तो रजामंदी में है। इस भलाई से वंचित न होओ अर्थात् मेरी हो जाओ। ईसुरी कहते हैं- अभी तो मैं सीधा सरल हूँ लली जी से कहकर ही निवेदन करता हूँ।

दिल खौं दिबा रइँ ललकइयाँ,
दया देखतीं नइयाँ।
दैरी दोर आँख से देखत,
भौत भई हम खइयाँ।
जा रिस लगै कहा कर डारौं,
पकर परौसन कइयाँ।
'ईसुर' कात बचन ना पाबै,
भरी जुमानी नइयाँ।

ललकइयाँ = ललकने अर्थात् ललचाने के अर्थ में, दैरी = देहली, दोर = दरवाजा, भौत = बहुत, रिस = क्रोध, परौसन = पड़ोसन, खइयाँ = को के अर्थ में (छतरपुर प्रभाव) जुमानी = यौवन, मइयाँ = में।

मेरे हृदय को ललचा रही हो मेरी दया नहीं देखती। द्वार की देहरी से तुम्हें अपनी आँखों से देखता रहता हूँ, यही मेरे लिए बहुत है। क्रोध तो ऐसा आता है कि पड़ोसिन को पकड़कर क्या कर डालूँ? लेकिन इतना कह देता हूँ कि इस भरी जवानी में बचकर नहीं निकल सकोगी।

देखी पनहारन की भीरें,
कुआ गाँव के तीरें।
ऐसी बनी आउँती जातीं,
गैल मिलैना सीरें।
दो-दो जनीं एक ज्योरा से,
घड़ा ऐंचती धीरें।
'ईसुर' ऐसी देखीं हमने,
दइ की खाइँ अहीरें।

पनहारिन = पानी भरने वाली, भीरें = भीड़, तीरें = निकट, गैल = राह, ज्योरा = रस्सी, ऐंचती = खींचकर निकालती, धीरें = ठण्डे से अर्थात् सरलता से, दइ = दही, अहीरे = अहीर जाति की स्त्रियों के अर्थ में।

ग्राम के कुएँ के निकट मैंने पनिहारिनों की भीड़ देखी है। वे इस प्रकार बनी-ठनी आती जाती हैं कि आराम से रास्ता नहीं मिल पाता। दो-दो स्त्रियाँ एक ही रस्से से बँधा घड़ा कुएँ से धीरे-धीरे खींचकर बाहर निकालती हुई भली लगती हैं। लगता है ये दूध-दही खाई हुई पुष्ट देह की अहीर बालाएँ हैं।

विशेष :- रसखान भी इन अहीर बालाओं से परेशान होकर कह गए- ताहि अहीर की छोहरियाँ, छछिया भर छाछ पै नाच नचाबै।

भर गव भौजी पानी तोरा,
दिल बेदिल भव मोरा।
लगो रहत तौ नाँय माँय से,
बतकाये कौ डोरा।
काने ती सो कान न पाई,
मन में भरी हिलोरा।
घरी दोक लों और भरौना,
खेपे चन्द्रा सोरा।
अबकी बेर कुआँ से 'ईसुर',
संगै ल्याईं जोरा।

बेदिल = दिल मचलने के अर्थ में, नाँय-माँय से = यहाँ-वहाँ से, बतकाये = बातचीत, डोरा = तारतम्य के अर्थ में, काने = कहना, कान = कह, हिलोरा = उमंगें, घरी दोक = घड़ी दो घड़ी, खेपें = घट पर घट रखकर ले जाने की स्थिति, जोरा = रस्सी।

नायक अपनी ओर से नायिका से चर्चा हेतु बहाना खोजता है तब कोई भी सन्दर्भ लेकर बात शुरू करता है। यहाँ नायिका पनघट से पानी भरकर जब लौटती है तो इसी प्रवृत्ति का परिचय देकर नायक बोल पड़ता है - अरे! भाभी जी आपका पानी भरने का कार्य समाप्त हो गया इससे मेरा दिल भारी हो गया है। यहाँ से वहाँ आते-जाते वार्तालाप का जो क्रम चलता था, जो कुछ मैं कहना चाहता था सो कह नहीं सका, मन में उमंगें हिलोरे ले रही हैं। घड़ी दो घड़ी पानी और भरिये ना कम से कम पन्द्रह-सोलह खेंपे और सही। लेकिन आह! इस बार तो कुएँ से अपनी रस्सी भी साथ लेकर लौटी हैं।

चूमाँ कबै मिलै ई मौं कौ,
हमें हमारी गौं कौ।
सिमटत लार गिरे ना डरसें,
जी पनयात न रोकौ।
पान महुबिया स्यानन जानौ,

खात-खात में ओकौ।
'ईसुर' कँय बिसबास न आबै,
हमैं तुमारीं सौं कौ।

चूमाँ = चुम्बन, कबै = कब, ई मौं कौ = इस मुख का, गौं कौ = टोह का, सिमटत = संकुचित होने के अर्थ में, जी = मन, पनयात = पानी आ जाता, महुबिया = महोबा नगर के, स्यान = चतुराई, ओकौ = उगल कर उल्टी करने के अर्थ में, सौं = शपथ, कसम।

मैं जिस टोह में बैठा हूँ, उस टोह का प्रतिफल यानी इस मुख का चुम्बन मुझे कब मिलेगा? मेरे मुँह में जो लार इसके लिए टपकने को है, वह सकुंचित हो गई। डर के मारे गिरती नहीं है। मेरी ही भाँति न जाने कितने लोगों के मन में भी पानी आ रहा है। लेकिन यह महोबा का पान खाना होशियारी मत समझना, खाते-खाते में उगलने की नौबत आ सकती है। प्रिये! मुझे तुम्हारी कसम का भी अब भरोसा नहीं रहा।

विशेष :- बुन्देलखण्ड में पान की खेती यत्र-तत्र-सर्वत्र होती है परन्तु महोबा के पानों की प्रसिद्धि है। यहाँ के लोकगीतों में भी महोबा के पानों का उल्लेख है। संस्कृत के कवियों का मानना तो और भी आगे है- काङ्क्षत्यन्यो वदन मदिरां दोहदच्छद्मनाड स्या:। मेघदूत पान चबाकर मौलवी पर उगलने का अर्थ कितना गूढ़ है परन्तु यहाँ लोककवि महोबा के पान को नायिका के मुख से क्या यों ही व्यर्थ में उगलवा रहा है? पाठक मेघदूत की पृष्ठभूमि पर विचार करें।

आँखैं बरकाकैं कड़ जातीं,
और उतै मतरातीं।
जैसीं हाल दिनन में हो गइँ,
ऐसी आँगै नातीं।
हमरी ओर कसकती नइयाँ,
पथरा दिल भव छाती।
कौ जानै काये कौ हिरदौ,
कपटिन सोउ दिखाती।
'ईसुर' श्याम तनक जीतव पै,
काहे कौं भरमाती।

बरकाकैं = ओट करके या किनारा काटकर या बचकर, कड़ जाती = निकल जाती, उतै = वहाँ, मतराती = इठलाने के अर्थ में, आगे = पहले कभी, नातीं = न थीं, कसकती = पसीजना के अर्थ में,

पथरा = पाषाण, हिरदौ = हृदय, कपटिन = कपट रखने वाली के अर्थ में, जीतव= जरा सी जान, भरमाती=भ्रम पाले हो।

हे प्रिय! वहाँ (अन्यत्र) जाकर इठलाती हो और मेरे सम्मुख तुम आँख बचाकर साफ निकल जाती हो। जैसी तुम अभी हो गई हो, ऐसी पहले कभी न थी? मेरे और तुम्हारे हृदय में तनिक भी कसक नहीं जो पत्थर दिल करके छाती को कड़ा किए हो? कौन जाने तुम्हारा हृदय किस धातु का बना है, कुछ कपटी भी तो जान पड़ती हो, श्यामा (साँवरी के अर्थ में) क्षणिक जीवन के लिए क्यों भ्रम पाल रही हो?

हँसकै नजर छैल पै डारैं,
रइयो यार सँमारैं।
छुरियन माँग बगुरदन सिंदुरा,
भौंय बनी तरबारैं।
हेरन ऐन तिपाला कैसी,
जात करेजौ फारैं।
तक तौ लेब तरीछे करके,
कइयक घाल पुकारैं।
कात 'ईसुरी' बरके रइयो,
जा है नार उतारैं।

छैल = रसिक युवा, यार = प्रेमी, मीत, बगुरदन = एक अस्त्र का नाम, भौंय = भृकुटि, तरबारैं = तलवारें, हेरन = दृष्टि, ऐन =खूब, तिपाला = एक अस्त्र का नाम, तक तौ = देख तो, तरीछे = कटाक्ष से, कइयक = अनेकों, घाल = घायल का अपभ्रंश पाठ, उतारैं = कटिबद्ध के अर्थ में।

रसिक युवक पर हँसकर दृष्टि से कटाक्ष करती है, मित्र! सम्हलकर रहना। उसकी माँग छुरियों सी और माँग का सिन्दूर बगुरदा जैसा और भृकुटि तलवारों सी खिंची हुई है। दृष्टि तिपाला (खंजर) के समान कलेजा फाड़े डालती है। तनिक तुम्हारा तिरछे से देखना अनेकों को घायल कर जाता है बस इनसे बचे रहना, यह घायल करने के लिये तैयार हैं।

मनहरण छन्द (कवित्त)

ना छेड़ कामनी कड़ जान दै बिचारे खों,
गैल के चलइयन खों बीच ना उतार लै।

जा बारी सी उम्मर में लंक में कलंक लगौ,
थोरे से जीवन में पूरब तौ सुधार लै।
जीबन दै जुआनन खों जोबन ना दिखारी,
नैकें चल बेला तन कँदेला समार लै।
कात द्विज 'ईसुर' सुख सासरे खों राखिये,
सबरौ मजा मान मायके में ना मार लै॥

कढ़ = निकल, बिचारे = बेचारे, चलइयन = चलने वाला, बारी = छोटी कच्ची, लंक = एक सम्पन्न, सोने सी सदेह रूपी घर के अर्थ में, थोरे = तनिक, पूरब = पिछले के अर्थ में, जुआन = युवा (जुआनन = बहुवचन है) जोबन = उरोज, नैंकें = झुककर, बेला = प्यारी हेतु, सम्बोधन विशेष, तन-कँदेला = शरीर पर ओढ़नी ओढ़ने का एक प्रकार विशेष जो बुन्देलखण्ड की कँवारी लड़कियों के लिए ही आरक्षित है, सासरे = ससुराल, मजा = आनन्द, मायके = पीहर।

हे कामिनी! राहगीर को जाने दे, बीच में ही न रोक ले इस छोटी सी आयु में तेरी देह रूपी सोने की लंका में कलंक लगा है। अतः क्षणभंगुर जीवन में पिछली करनी को सुधार ले। युवकों को जीवन दान दे अर्थात् अपने जोबन को दिखाकर मार मत डाल। नम्र होकर चल प्यारी शरीर पर कँदेला (दुपट्टे) को सम्हाल ले। ईसुरी कहते हैं - तुम ससुराल हेतु बचाकर रखो तथा पर रस-आनन्द तू अनब्याहे ही पीहर में प्राप्त न करो।

विशेष :- ईसुरी को राई में लोकगीत के रूप में गायी जाने वाली चौकड़िया फाग रचयिता के रूप में स्थापित है। यह ईसुरी के साथ न्याय नहीं क्योंकि वे बुन्देली के मानक कवि हैं। उन्होंने अनेक मांत्रिक एवं वर्णिक छन्दों में भी पैनी अभिव्यक्ति दी है। उसका उदाहरण है यह मनहरण नाम का वर्णिक छन्द।

तिरियाँ तीनउँ संग निकरतीं,
हँसी दिल्लगी करतीं।
तीनउँ जाबै बाहर भीतर,
तीनउँ पानी भरतीं।
तीनउँ तीन तलन के ऊपर,
तीनउँ संग सपरतीं।
बैलाबे के लानै तीनउँ,
बागन बनन बिचरतीं।
इन तीनौं की कानौ कइये,

नालौ संग पकरतीं।
इतनौ मेर मिलाप 'ईसुरी',
एक सै तीन बिगरतीं।

तिरियाँ = स्त्रियाँ, निकरतीं = निकलती हैं, हँसी - दिल्लगी = विनोद, तलन = सरोवरों, सपरतीं = स्नान करती, बैलाबे = बहलाने, बिचरती = घूमती, बिगरती = भ्रष्ट होने के अर्थ में।

यह तीनों स्त्रियाँ एक साथ ही निकलती हैं और मनोविनोद करती हैं। तीनों बाहर और अन्दर एक साथ जाती हैं। तीनों पानी भरने जाती हैं। एक तालाब पर नहीं, तीन-तीन तालाबों पर तीनों साथ में स्नान करती हैं। मन बहलाव हेतु तीनों उद्यान वन - उपवन में एक साथ विचरण करती हैं, जहाँ तक साथ पकड़ती हैं। इन तीनों के सम्बन्ध में कहाँ तक कहा जाए, ये साथ-साथ ही चलती हैं। इन तीनों की इतनी प्रगाढ़ मैत्री है एक के कारण तीनों भ्रष्ट हो जाती हैं।

विशेष :- तीन के अंक के प्रति कवि विशेष अनुगृहीत हैं। एक रहस्य है जो तीन अवस्थाओं या तीन कालों अथवा तीन गुणों के रूप में हैं वही शायद तीन सहेलियों के रूपक में कह सका है। शरीर में वात-पित्त और कफ तीनों का आधिपत्य दर्शाया गया है।

लागै तीन में कौन प्यारी,
करौ निबेर न्यारी।
एक इकैरी दूजी पन्छीली,
तीजी देय दुहारी।
गौउँआ वरन एक श्यामलिया,
एक है गोरी नारी।
जब चाहौ तब चाहौ 'ईसुर,'
तरकी बसत उगारी।

निबेर = छाँटकर, इकैरी = छरहरी देह की तनुअंगी, पन्छीली = पानीदार, देय = देह, दुहारी = दोहरी अर्थात् गजगामिनी सी मस्त देह वाली, गोऊँआ = गेहूँ जैसे वर्ण की, स्यामलिया = साँवली, गौरी = गौर वर्ण, बसत = बस्तु, उगारी = निर्वसन।

तीन त्रियाओं को देखकर कवि कहता है कि - इन तीनों में कौन अधिक प्रिय लगती है छाँटकर उसे पृथक करें। एक तनुअंगी है तो दूसरी पन्छीली तो तीसरी दोहरी देह की मस्त है। एक गेहुआ वर्ण तो दूसरी साँवली तो तीसरी गौर वर्ण नारी है। इन तीनों की विशेषता यह है कि

जब इच्छा हो तब वे मिल सकती हैं, उनकी अंग रूपी वस्तु खुली हुई निर्वसन है, अर्थात् सहज उपलब्ध है, मनुहार की अपेक्षा नहीं है। यहाँ भी वात–पित्त और कफ की विवेचना की गई है।

इनखाँ नईं पढ़ाना चइये,
परदा वाली कइये।
इक नागन दो पंख लगाये,
ऊ से बचके रइये।
भरी तुपक उर घोड़ा ऊपर,
असबारै ना दइये।
सुगर नार उर पोथी बाँचै,
खबर दूर से लइये।
कैसै बचत तीन से 'ईसुर',
खुदा सें खैर मनइये।

इनखाँ = इनको, तुपक = बन्दूक के अर्थ में, असबारै = सवार को।

कवि, लोक मर्यादाओं का आग्रह करता है और मानता है कि शिक्षित होने से लोक मर्यादाएँ भंग होती हैं, अतः कहता है कि – इनको शिक्षित न किया जाए पर्दानशीन इन्हें कहना चाहिए। (दो चोटियों की ओर इंगित कर) यह एक नागिन है जिसके दो पर लगे हैं, (एक स्वयं का रूप दूसरी शिक्षा) इससे बचकर रहना चाहिए। वक्षस्थल मानो भरी हुई बन्दूक है जो घोड़े पर सवार शिकार का पीछा करती है ऐसे घुड़सवार को भी अवसर न दिया जाए। चतुर नार हृदय की गूढ़ पुस्तक पढ़ती है, दूर से ही खबर ले लेती है। इन तीनों अवस्थाओं से कैसे बचा जाए।

चूमाँ दये और खाँ तैनें,
देत देख लए मैंनें।
जूठे हो गये गाल और के,
अब हम खाँ ना लैनें।
अपने आँगू आँख दिखा कैं,
दगाबाज का कैनें।
अन्याये के लानै 'ईसुर',
एकइ सी दोई बैनै।

चूमाँ = चुम्बन, और खाँ = अन्य को, एकईसी = समान।

तुमने अन्य (व्यक्ति) को चुम्बन दिया है मैंने चुम्बन देते हुए स्वयं देख लिया। अन्य व्यक्ति ने तेरे कपोल जूठे कर दिए अब वह मेरे किस काम के? अर्थात् मैं अब तेरा चुम्बन न लूँगा। तू तो धोखेबाज है, तेरे क्या कहने? अपने आगे ही आँख दिखाकर रह गई। तू ही अकेली नहीं तुम दोनों बहिने ही ऐसा अन्याय करने के लिए हो (क्वचित गंगइया और सुन्दरिया में से कोई एक)।

नेहा तुमसे लगन न पाये,
हमनै भौत लगाये।
दिन उर रात दईं हैं फेरीं,
बातन में टिरकाये।
जंत्र-मंत्र उर टुटका टौना,
बहुतक करे उपाये।
'ईसुर' मैनत लगी ना स्वारथ,
बिरथाँ भरम गमाये।

नेहा = प्रीति के अर्थ में, मौत = बहुत, फेरी = चक्कर, बातन = बातों, टिरकाए = टाला गया, भरम = भ्रम, गमाये = गवाँ दिए / खो दिए।

मैंने तुमसे प्रीति बहुत लगाई परन्तु लग ही न पाई। दिन-रात कितने चक्कर काटे लेकिन तुमने कोरी बातों में ही सदैव मुझे टाल दिया। जंत्र-मंत्र, ताबीज, टोना-टोटके बहुत से उपाय किए, सभी व्यर्थ हुए। मेरा श्रम सार्थक न हुआ और व्यर्थ का भ्रम होता रहा।

बालम लगै और कौ प्यारौ,
भाबै ना घरबारौ।
रोजउँ लरै पिया सें अपने,
खैचें रात किनारौ।
कइयक बेरी काउ बहानै,
जातीं झाँक दुआरौ।
'ईसुर' कात मान लो हरकी,
लगनै दाग करारौ।

और कौ = अन्य का, भाबै = पसन्द आने के अर्थ में, घरबारौ = पति, लरै = झगड़ा करे, खेंचे रात = दूर रहने के अर्थ में, कइयक = अनेक, बेरी = समय, झाँक = देखने के अर्थ में, दुआरौ = द्वार, कात = कहते हैं, हरकी = ईसुरी का पूरा नाम श्री हरलाल था, करारौ = बहुत जोरदार के अर्थ में।

अपना ब्याहता पति तनिक भी पसन्द नहीं, अन्य का प्रियतम ही उसे अधिक प्रिय है। अपने पति से नित्य प्रति झगड़ती है और किनारा करती रहती है। अनेक बार तो किसी बहाने से आ-आकर द्वार पर झाँककर चली जाती है। कवि कहता है मेरी बात मान लो। अन्यथा भयंकर कलंक लग जाएगा।

देखी जा अनयान बहुरिया,
नग-नग फरकत गुरिया।
पटियाँ पारै माँग समारैं,
पाछैं लटकै डुरिया।
जाके जुबन बने हैं ऐसे,
जैसे बिष की पुरिया।
कात 'ईसुरी' बनी रात है,
जैसे नई पुतरिया।

बहुरिया = नायिका के अर्थ में, फरकत = फड़कते हैं, गुरिया = पोर-पोर के अर्थ में, पटियाँ = कंघी किये हुए बालों की स्थिति, पाछैं = पीछे की ओर, डुरिया = फुँदने वाली डोरी, पुरिया = पुड़िया, पुतरिया = गुड़िया।

जिसका अंग-अंग फड़कता है, यह एक अन्यायी अपने पर भी न्याय न करने वाली कठोर स्त्री है। इसने माँग सँवारी हुई है तथा तेल कंघीकर बालों को भी अच्छी तरह से सम्हाला है। पीछे डोरी का फुंदना लटका है। इसके उरोज ऐसे बने हैं मानो विष की पुड़िया हो, सदैव एक सुन्दर सी गुड़िया जैसी बनी-ठनी रहती है। यानी स्वयं में एक अतिरिक्त सौन्दर्य की सावधानी है। ईसुरी ने नायिका की आधुनिकता को नर्तकी के रूप में देखा है जो उस काल के सामाजिक चलन के अनुरूप नहीं है।

सूकत रकत सासरैं जातन,
सौत सास की बातन।
है कुड़मुतू कुजातन कुतिया,

चीथैं खात है जातन।
बियाय गइ मारे बिपदा,
परै रसोई खातन।
तारौ लगा पैंड़ कोठा में,
मारै गदकन लातन।
खोदइ बहू खकोबै चूलौ,
'ईसुर' सुनो बुझातन।

सूकत = सूखता है, रकत = खूब, सासरैं = ससुराल, पिया गृह, जातन = जाते समय, चीथैं = नौच खाने के अर्थ में, जातन = यह शरीर, बियाय = ब्याह के, खातन = जीमते हुए, पैंड़ = बन्द करना, गदकन = मुक्कों से, लातन = लातों से, खोदइ = खो बैठी, खकोबै = कुरेदने के अर्थ में, चूलौ = चूल्हा, बुझातन = बुझाते हुए।

ससुराल जाते समय किसी का भी सास और सौत की बातों से रक्त सूख जाता है। जब शादी में गई थी उसकी विपत्ति याद है भोजन भी दुश्वार हो गया था। कमरे में बंदकर ताला डाल दिया था और मुक्कों लातों से पिटाई भी की थी। उसके इस व्यवहार ने बहू को भी खो दिया अर्थात् मैं हृदय से उनकी नहीं हूँ। ईसुरी कहते हैं – अब वह अपना चूल्हा कुरेदा करे जिसे बुझाकर रख दिया है। सास का बहू को प्रताड़ित करने का उदाहरण है। सास भूल जाती है कि वह भी कभी बहू थी।

अपने जरद जुबनबा ढाँकौं,
देस–काल है बाँकौं।
छलिया छैल बसत बस्ती में,
पार न लेबे डाँकौं।
नन्द–भौजाइ चलीं पनियाँ खों,
छैला बाँदै नाँकौं।
अपनी बात बनाबौ चाहत,
छैला है मद छाँकौं।
'ईसुर' कात बनायें रइयो,
कुलै न आबै टाँकौं।

जरद = कठोर के अर्थ में, ढाँकौं = ढँककर रखो, बाँकौं = बढ़िया, छलिया = छलने वाले, छैल = रसिक

युवा, बसत = रहते हैं, पार = पार पाने के अर्थ में, डाँकौं = डकैती भी, पनियाँ खों = पानी भरने हेतु, बाँदें = बाँधकर रोककर बैठे के अर्थ में, नाँकौं = नाकाबन्दी, बताबौ = बताना, मद छाँकौं = मद से छका हुआ, कुलै = कुलको, टाँकौं = खोट के अर्थ में।

बुन्देलखण्ड में आज भी प्राय: बगैर ब्लाउज पहिने उघाड़े रहने की प्रवृत्ति पाई जाती है। तब कवि कहता है– अपने ये कठोर अवगुंठन ढँककर चलो। समय सुहावना है। इस बस्ती के रसिक युवक बड़े छली हैं, वे डकैती तक कर लेते हैं यहाँ पार पाना कठिन है, कौन जाने कब क्या कर डालें। ननद–भाभी पानी भरने पनघट की ओर चलती हैं तो वे मार्ग में नाकाबन्दी करके बैठ जाते हैं। वे अपने मन की बात कह देने को आतुर हैं– क्योंकि वे मद में डूबे रहते हैं। ईसुरी कहते हैं– इतना ध्यान रखना कि कुल कलंकित न हो जाए।

नैना प्यारी मारत जाबैं,
पानी भरवे आबैं।
चलती चाल उताबल जल्दी,
दोई जोर दिखाबैं।
घूँगट के पट भीतर ढाँकै,
चंचल दृग दरसाबैं।
घायल करत नजर के मिलतन,
मुख से कछू न काबैं।
'ईसुर' इनके बालम बारे,
तासे अदा बताबैं।

उताबल = उतावलेपन के अर्थ में, दोई जोर = दोनों समय, काबै = कहती हैं, बारे = नाबालिग / छोटे से, तासे = इसलिए।

प्रियतमा जल भरने जब पनघट पर आती है तो वह आँख मारती जाती है। कुछ उतावली होने के कारण शीघ्र चलती है, सुबह शाम दोनों समय दिखती ही है। दृष्टि से दृष्टि मिलने से घायल करती है लेकिन मुख से कुछ भी तो नहीं कहती। यह मूक संकेत इस कारण है कि इनके पतिदेव अभी नाबालिग हैं, इसीलिए इनकी भाव भंगिमाएँ सहज ऐसी प्रदर्शित हो रही हैं।

जो कउँ पर पंछी के पाते,
उड़ प्यारी लौ जाते।

आते-जाते बेर-बेर कैं,
प्रेम न पान चबाते।
लेते मजा मड़ारै ऊपर,
बखरी में मँडराते।
'ईसुर' प्यारी हमैं देखती,
हम सोइ उनै दिखाते।

पर = पंख (डेने), जो कउँ = यदि कहीं अर्थात् काश कि, बेर-बेर कैं=बार बार ही, मड़ारै ऊपर=मढ़ा के ऊपर वाली छत / गवाक्षनुमा, बखरी=आँगन, पूरे घर के अर्थ में, मँडराते=घूमा करते।

काश कि मुझे एक पक्षी के पर मिल गए होते तो मैं उड़कर प्रियतमा के पास पहुँचता। बार-बार आता जाता और प्रेम से पान के बीड़े चबाता। यानी छज्जे पर रसानन्द लूटता। पूरे घर-आँगन में मँडराया करता। प्रिय मुझे देखा करती और मैं उन्हें देख लिया करता।

बाहर रेजा पैर कड़ैं गए,
नैचौ मूड़ करैं गए।
जी से नाँव धरैं ना कोऊ,
ऐसी चाल चलैं गए।
हवा चलै उड़ जाबै आँचर,
घूँगट हात धरैं गए।
'ईसुर' उन गलियन में बिन्नू,
धीरे पाँव धरै गए।

रेजा = कंचुकी / चोली / अंगिया, कड़ैं गए = निकला करो, नैचौ मूड़ = सिर झुकाकर, जी से = जिससे, कँदेला = ओढ़नी या साड़ी का पल्लू, उरोज ढँकते हुए कंधे पर डालकर ओढ़ने का ढंग विशेष जो अविवाहित लड़कियों के लिए आरक्षित है, आँचर = ओढ़ने का पल्लू, गलियन = राहों में, बिन्नू = बेटी के लिए सम्बोधन।

अनेक विद्वानों का मत है कि यह रचना ईसुरी ने अपनी बेटी की ससुराल में बेटी को सम्बोधित कर कही थी जो भी हो? भाव इस प्रकार है – घर से बाहर उघाड़े बदन न निकला करो। अंगिया पहिनकर निकलना चाहिए। विनम्रता जरूरी है अत: सिर नीचा करके चलो? ताकि कोई नाम न धरे। ऐसी चाल चलना श्रेयस्कर है। हवा चलने से अंचल उड़ जाता है। अत: घूँघट को हाथ से दाबकर चलो। इन मार्गों में बेटी धीरे पैर रखा करो।

विशेष :- इसी रचना का एक पाठ तृतीय चरण में इस प्रकार भी मिलता है कि – 'हवा चलै उड़ जाय कँदेला, घूँघट हात धरे गए' यह भ्रम उत्पन्न करता है कि घूँघट और कंदेला एक साथ कैसे? सम्भवत: इस पंक्ति का उत्तरार्द्ध भ्रष्ट हो गया हो। घूँघट के स्थान पर कोई अन्य शब्द रहा हो? कौन जाने? यदि ऐसा है तो वय संधि की स्थिति की बाकी तस्वीर अपने आप बन जाती है जिसमें वह गुमान हुआ करता है कि कहना पड़े कि नभ कर चलो धीरे चलो आदि। जो भी हो हम पाठकों के विवेक पर छोड़ते हैं।

अब पन्नाम परत नइ पारैं,
लगबारन के मारैं।
भाँजी देत बिदा की बेराँ,
आड़े होत दुआरैं।
यारन के धोके में तुमखाँ,
घल ना जाँय तरबारैं।
छोड़ौ नई संग मैं तुमरौ,
सबरौ गाँव उतारैं।
'ईसुर' कात लिबउआ आ गए,
दुआरें डेरा डारैं।

पन्नाम = परिणाम का अपभ्रंश, परत = पड़ता, लगबारन = भिड़ाने वालों के अर्थ में, भाँजी = काम बिगाड़ने के अर्थ में, बेराँ = समय, आड़े होत = व्यवधान करते, दुआरैं = द्वार पर ही, यारन = प्रेमी मित्रों के अर्थ में, तुमखाँ = तुम्हें ही, छोड़ा = छोड़ूँगा, सबरौ गाँव = पूरा ग्राम, उतारैं = कटिबद्ध है, लिबउआ = विदा कराने वाले, डेरा डारैं = ठहरे हुए हैं।

अब प्रेम का परिणाम ठीक नहीं होता, विशेषकर इन भिड़ाने वाले चुगलखोरों के कारण स्थिति बिगड़ जाती है, ये विदा के ही समय द्वार पर आकर व्यवधान बने और बना बनाया कार्य बिगाड़ने पर तुले हैं। इन प्रेमियों के धोखे में कहीं तुम पर ही तलवारें न चल जाएँ। मैं तुम्हारा संग छोड़ने को तैयार नहीं जबकि पूरा गाँव ऐसा कराने के लिए कटिबद्ध है। स्थिति सोचनीय है जबकि विदा कराने वाले द्वार पर ही डेरा डालकर बैठे हैं।

लौंदर घालैं जात कँदेला,
नैक परै ना हेला।

पान खाँय होटन पै लाली,
ओढ़ कुसुम रंग सेला।
पाछै भीर परी छैलन की,
परौ गली में रेला।
'ईसुर' कात गाँव की बिटिया,
तनक न चमकै बेला।

लौंदर = मक्खन के लोंदे के समान देह वाली, घालैं = ओढ़े हुए, कँदेला = ओढ़नी (फरिया) के ओढ़ने का ढंग विशेष जो अविवाहित लड़कियों के लिए आरक्षित है, नैक = तनिक, हेला = व्यवधान, सेला = रेशमी वस्त्र विशेष, पाछै = पीछे से, भीर = भीड़, छैलन की = रसिक युवकों की, रेला = समूह उमड़ पड़ने के अर्थ में, चमकै = संकोच करने का, लज्जाशील होने के अर्थ में, बेला = चंचला हेतु सम्बोधन विशेष।

नवनीत के समान स्निग्धा कँदेला ओढ़े गुमान के साथ जा रही है तनिक भी व्यवधान महसूस नहीं करती। पान चबाती हुई अधरों की लाली फिर कुसुम वर्णीय रेशमी फरिया और पीछे से रसिक युवकों की उमड़ती हुई भीड़। गाँव की चंचला लड़की को इतने पर भी तनिक भी लाज संकोच नहीं है।

अनुआँ बिगर करे कौ लागौ,
कभउँ ना चूमाँ माँगौ।
छुऔ ना हात हँसे न बोले,
नाँव हमारौ दागौ।
ऊसे पूछ लेब करया लौ,
कबै डड़न पै टाँगौ।
फिरत चहौना फिकर करी मैं,
बिपतन नाई त्यागौ।
एइ से ऐंगर गऔ न 'ईसुर',
देख दूर से भागौ।

अनुआँ = कलंक के अर्थ में, बिगर = बगैर करे = किए, दागौ = उजागर कर देने के अर्थ में, ऊसे = उसी से, करयालौ = कटि तक, कबै = कब, डड़न पै = हाथों के अर्थ में, टाँगों = अधबीच उठाकर झूले की स्थिति में लटकाना, फिरत = घूमते, चहौना = चाहता नहीं, फिकर = चिन्ता, नाई = प्रकार, एइ से = इसी से, गऔ = गया।

अफवाहों में बदनाम व्यक्ति की ओर से कवि कहता है कि- बगैर किए धरे ही मुझे यह कलंक लग गया। मैंने तो उससे कभी चुम्बन भी नहीं माँगा। न उसको हाथ से स्पर्श किया, न हँसकर बातचीत की, लेकिन मेरा ही नाम उजागर हो गया आश्चर्य? उसी से पूछ लो कटि से पकड़कर उसे हाथों पर उठाकर मैंने झुलाया है? मैं नहीं चाहता घूमना-फिरना, मुझे चिन्ता है विपत्ति समझकर मैंने इसका त्याग किया। इसी से उसके निकट कभी भी नहीं गया। ईसुरी कहते हैं - दूर से ही देखकर पलायन करता रहा।

अनुआँ का भऔ जात लगायें,
जौ लौं राम बचायें।
राँडें पकरी जाँय पेट से,
ऐबातन की नाँयें।
ऐंगर खड़ौ देख लै कोऊ,
आँखे चार मिलायें।
'ईसुर' चन्द होत ना मैले,
काउ न धूर उड़ायें।

भऔ = हुआ, जौ लौ = जब तक, राँड़े = विधवाएँ, पेट से = गर्भवती होकर, ऐबातन = सधवाओं, नाँयें = तरह, ऐंगर = निकट।

क्या हुआ जो कलंक लगाया जाता है? जब तक राम (ईश्वर) बचाने वाला है, तब कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। विधवाएँ गर्भवती होकर पकड़ी जाती हैं मानो सधवाएँ हों। उनके निकट खड़ा हुआ कोई देख ले तो आँखें आश्चर्य से फटी रह जाती हैं कि यह क्या है? लेकिन चन्द्र कभी भी धूल उड़ाने से मलिन नहीं हुआ करता।

विशेष :- धूल उड़ाने से चन्द्र मलीन न होने का मुहावरा सुन्दर है।

ऐंगर बैठ लेब कछु कानैं,
काम जनम भर रानैं।
बिना काम कौ कोऊ नइयाँ,
कामैं सबखों जानैं।
जौन कामखों करने नइयाँ,

कइयक होत बहानैं।
जौ जंजाल जगत कौ 'ईसुर',
करत -करत मर जानैं।

प्रिय, तनिक निकट आकर बैठ तो लो कुछ कहने का मन है। काम तो जिन्दगी भर रहने वाला है। बगैर काम का निठल्ला तो कोई भी नहीं है। काम के लिए सभी को जाना है। जिस काम को नहीं करना हो उसके लिए ही अनेक बहाने हुआ करते हैं। यह संसार जंजाल है, काम करते करते जिन्दगी तमाम हो जाती है। अत: सब बातें छोड़कर तनिक पास आकर बैठ तो लो।

मेला खजराये कौ भारी,
चलौ देखिये प्यारी।
महादेव के दरसन करियौ,
पूजैं आस तुमारी।
भाँत-भाँत के लोग जुरे हैं,
कर-कर अपनी त्यारी।
कात 'ईसुरी' चल कें देखौ,
दिल खुश हो जै भारी।

खजराये = खजुराहो, पूजैं = पूर्ण करने के अर्थ में, त्यारी = तैयारी, कात = कहते हैं।

प्रिय! खजुराहो का प्रसिद्ध मेला बड़ा भारी भरता है चलो देखने चलें। महादेव जी के दर्शन करना है। वे तुम्हारी आशा पूर्ण करेंगे। भाँति-भाँति के लोग वहाँ एकत्र होंगे, जो जोरदार तैयारी करके पहुँचते हैं। मैं तो कहता हूँ- स्वयं चलकर ही मेले को देखो, दिल प्रसन्न हो जाएगा।

मोरै तुम सिवाय ना दूजौ,
तुम न और न हूजौ।
तुम सिवाय ई संसारी में,
इन आँखिन ना सूजौ।
जो प्रन होबै पति बिरता कौ,
पिरान त्याग तन भूजौ।
मन मरदन पै कौन चलाबै,

नई बालकन बूजौ।
'ईसुर' अपने जनम भरेंमें,
एक देवता पूजौ।

मोरे = मेरे लिए, दूजौ = अन्य दूसरा, और की = अन्य किसी, हूजौ = होना, सूजौ = दिखा, पिरान = प्राण, भूजौ = भूनना, मरदन = पुरुषों, बालकन = बालक का बहुवचन, बूजौ = पूछो।

प्रिये! मेरे लिए तुम्हारे सिवाय दूसरा नहीं है अत: तुम अन्य किसी की न हो जाना। इस संसार में तुम्हारे सिवाय इन आँखों को कभी कुछ नहीं दिखाई देता। पतिव्रत धर्म का जो भी प्रण हो, वह प्राण त्यागकर भी इस शरीर को होम कर लेना। पुरुषों पर मन कौन चलाता है? बच्चों से पूछने योग्य नहीं है अर्थात् स्वयं समझो। अपने जन्म भर में मात्र एक ही देवता इष्ट रूप में पूजनीय है।

ऊनत कौ बतकाब हमारौ,
काँ है चित्त तुमारौ।
ऊ बिरियाँ जी में जी आबै,
समजो हमखों प्यारौ।
तुम जानी हम जानी नइयाँ,
जान परत मन कारो।
कय खाँ भौजी करै फिरत हो,
दिया तरै अंदयारौ।
'ईसुर' ऐसी देखन देखो,
आँखन घूँगट टारौ।

ऊनत = भावावेश में आने के अर्थ में, बतकाव = बातचीत का टोन, ऊ बिरियाँ = उस समय, जी में जी आबै = चैन पड़े, अंदयारो = अंधेरा, टारौ = हटाओ के अर्थ में।

तुम्हारा चित्त कहाँ है? मेरी बातचीत का स्वर जहाँ भावावेश वाला था। उस समय मैं जी जाऊँगा अर्थात् मुझे मिलेगा जब तुम मुझे प्रिय समझोगी। तुमने जाना मैं न जान सका लगता है तुम्हारा मन काला है। भाभी जी आप दीपक तले अंधेरा वाली कहावत क्यों दुहरा रही हो। जरा, मेरी ओर आँखों से घूँघट पट हटाकर प्रेम भरी दृष्टि से एक बार देख लो।

विशेष :- जी में जी आना, मन काला होना, दीपक तले अंधेरा जैसे मुहावरों का सटीक प्रयोग उल्लेखनीय है।

बातैं मनकी ना कै पाई,
कबउँ न तक - छक पाई।
निरदई संग राम ना देबै,
इतनी रंजै खाई।
सुख-दुख कऔ सुनौ ना मेरौ,
अपनी बई सुनाई।
जौन गली देखी ना कबहूँ,
तौन गली सजयाई।
हमैं खबर ना भूलै 'ईसुर',
अबलौं भौत निभाई।

मनकी = हृदय की, कै = कह, कबउँ = कभी भी, छक पाई = तृप्त हो सकी, रंजै = तकलीफें, कऔ = कहो, बई = बहीखाता, सजयाई = सज-धजकर आ गई, अबलौं=अब तक, भौत = बहुत।

तुमसे हृदय की बात भी न कह सका और तुमसे बात करके कभी भी तृप्ति नहीं हो पाई। ऐसे निर्दयी का साथ राम कभी न दे, जिनके कारण बहुत सी तकलीफें भोगी हैं। मैंने अपने सारे सुख-दुख कहे, लेकिन मेरी एक नहीं सुनी, अपना ही बहीखाता सुनाती रही। जो राह कभी भी नहीं देखी उसी राह से तुम सजी सँवरी निकली। मुझे यह कभी भी भूलेगा नहीं, अब तक बहुत निभाया है।

नेहा लगा लेब सुख पैहौ,
सदाँ न ऐसीं रैहौ।
ढरतन उमर उतर जै जोबन,
फिर पाछूँ पछतैहौ।
उतर जाय मोती सौ पानी,
ओसन प्यास बुझ हौ।
'ईसुर' चार दिनाकौ जीतब,
बिधना सें का कैहौ?

पैहौ = पाओगी, रैहौ = रहोगी, ढरतन = ढलते ही, पाछूँ = पीछे, पछतैहौ = पछताओगी, बुझैहौ = बुझाओगी, जीतब = जिन्दगी, बिधना = विधाता, कैहौ = कहोगी।

प्रिय! तुम मुझसे प्रीति लगा लो बहुत सुख मिलेगा, सदैव ऐसी ही न बनी रहोगी, आयु के

ढलते ही तुम्हारे अवगुण्ठन आकर्षण भी उतर चुकेंगे, फिर पीछे पछताओगी। मोती के पानी उतर जाने के समान आभाहीन होने पर फिर कैसे प्यास बुझा सकोगी। यह चार दिन की जिन्दगी है, अन्त में विधाता को क्या जवाब दोगी।

इनकै तनक लोभ ना जानौ,
हिरदौ मंजौ दिखानौ।
अपनी चीज सबइ खों देती,
करौ न कोउ बहानौ।
कोउ न देत मँगाये–मँगाये,
इननै दैकै जानौ।
'ईसुर' कात बड़ीं जे दाता,
खीब पियो रे जुआनौ।

इनकै = इनको, तनक = थोड़ा भी, हिरदौ = हृदय, मंजौ = परिमार्जित, साफ, सबई खों = सभी को, मँगाये = माँगने पर, इननै = इन्होंने, खीब = खूब, बहुत, जुआनौ = यौवन को।

इनके मन में तनिक भी लोभ लालच नहीं है, इनका परिमार्जित हृदय साफ दीखता है। अपनी वस्तु यानी दिल सभी को दे देती हैं, कभी कोई बहाना नहीं करती। कोई तो माँगते–माँगते रह जाते हैं उनका नम्बर ही नहीं लगता फिर भी इन्होंने देना ही जाना है। वह बड़ी दाता हैं जिसने यौवन का खूब रस पिया है।

तुमनै राखे मान हमारे,
होबै भले तुमारे।
डेरा दऔ खास दालालन,
अपने हातन झारे।
लगा दइ पानन की बिरियाँ,
लौंग लायची डारे।
'ईसुर' देत असीसैं तुमखाँ,
ओली खेलैं बारे।

राखे = रखा, मान = सम्मान, खास = विशेष, दालालन = दालानों में, हातन = हातों से, झारे = बुहारे,

पानन = पानों की, बिरियाँ = बीड़े, ओली = गोदी में, बारे = बच्चे के अर्थ में।

तुमने मेरा मान रखा है, इज्जत बढ़ाई है। तुम्हारा सदैव भला हो। विशेष महल में ठहराया, अपने हाथ से झाड़-बुहारकर सफाई की। लोंग इलायची युक्त पान के बीड़े खिलाये, बार-बार आशीष देता हूँ कि तुम्हारी गोदी में जल्दी बालक खेले।

विशेष :- कहते हैं यह रचना छतरपुर नरेश के लिए लिखी गई थी। तत्पश्चात् उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति भी हुई बताते हैं।

जो हम बिदा होत सुन लैबूँ,
मा डारैं मर जैबूँ।
हम देखत को जात लुआयें,
छुड़ा बीच में लैबूँ।
अपने ऊके प्रान इकट्ठे,
एकई करकैं रैबूँ।
'ईसुर' कात लील कौ टीका,
अपने माँथे सैबूँ।

लैबूँ = लूँगा, मा डारै = मार डालेंगे, मर जैबू = मर जाएँगे, हम देखत = मैं देखता हूँ, को जात = कौन जाता है, लुआयें = लेने के लिए, छुड़ा = छीन, ऊके = उसके, एकई करकैं = एक करके, रैबूँ = रहेंगे, लील कौ = कलंक, सैबू = सहूँगा।

यदि मैं विदा होने की बात सुन लूँगा तो अपने उराय को मारकर मर जाऊँगा। मैं देखता हूँ कौन लिवा ले जाता है? बीच में ही छीन लूँगा उससे। अपने व उसके प्राण इकट्ठे एक करके रहूँगा। यानी मैं बचूँगा या वह बचेगा। कलंक का टीका अपने माथे पर ले लूँगा।

तोसे हित करके पछतानै,
मनइ हमारौ जानै।
नेकी बदी करी जो हमनै,
का काहू से कानै।
बिना परोजन फिरौ मुलक में,
चुरुअन भूत उड़ानै।

जनम भरे खों सीके 'ईसुर',
लग गइ अकल ठिकानै।

तोसे = तुमसे, पछतानै = पछताए, मनइ = मन ही, कानै = कहना, परोजन = प्रयोजन, परौ = पड़ा, मुलक में = सर्वत्र में के अर्थ में, चुरुअन = चुल्लुओं से, सीके = सीखा।

तुमसे हित करके पछताना ही है, यह मेरा मन जानता है। नेकी–बदी जो कुछ भी मैंने की है, वह किसी से क्या कहूँ? यह सब बगैर प्रयोजन के सर्वत्र चुल्लुओं से भूत भगाए जाने के बराबर है। अब तो जन्म भर के लिए सीख मिल गई, सारी अक्ल ठिकाने लग गई। ईसुरी कहते हैं – प्रीत करने से पछताना ही हाथ लगता है।

तोरी बिगर गई तन धारा,
मतकर सोच बिचारा।
जीनै तोरौ बनौ – बिगारौ,
ओई लगाबै पारा।
बै माता नै दस्कत डारे,
लिख दये माँझ लिलारा।
'ईसुर' कात मौंगजा मौंड़ी,
ऐसौई सिनसारा।

जीने = जिस किसी ने, ओई = वही, बैमाता = विधात्री, माँझ लिलारा = माथे में, मौंगजा = चुप हो जा, मौड़ी = लड़की, एसौई = ऐसा ही, सिनसारा = संसार है।

तेरी तन धारा बिगड़ गई है यानी तू प्रेम के चक्कर में पड़ गई है। लेकिन तू सोच विचार मत कर। जिस किसी ने तेरा बना बनाया खेल बिगाड़ा है, वही पार भी लगाएगा। विधात्री बेमाता ने जो भाल पर अंक लिख दिये हैं, वही होगा। ईसुरी कहते हैं लड़की तू चुप हो जा, संसार ऐसा ही है। बेटी गुरन के पति का स्वर्गवास होने पर उसे सान्त्वना देते हुये।

जोवन पर स्वारथ में गारौ,
मानौ कहौ हमारौ।
दया भाव हिरदै में राखौ,
जस कौ हाँत पसारौ।

आबै जौन माँगनौ जैसौ,
तैसी चुटकी डारौ।
दैकै लेब जगत में प्यारी,
जो चाहो फल चारौ।
'ईसुर' बैठ-बैठ मजलिस में,
गाऔ सुजस तुमारौ।

गारौ = गलाओ, कहौ = कहना, पसारौ = फैलाओ, जौन = जो भी, चुटकी = चुटकी भर, दैकै लैब = देकर लो।

अपना यौवन परहित में लगा दो, मेरा इतना कहना मान लो। दया भाव हृदय में रखो, यश के हाथ बढ़ाओ। जो भी भिखारी आता है, जैसा देखो वैसी चुटकी भरकर दो। हे प्रिये! चारों फल चाहती हो तो पहले देना सीखो। तभी तुम्हारी चारों ओर चर्चा होगी। मैंने समाज में बैठकर तुम्हारा सुयश गाया है।

मायके बनी रयँ दोउ बैनै,
बिदा हौन नइ दैनै।
देबतन कैसी झाँकी इनकी,
निस दिन दरसन लैनै।
जो सिर रोज नमन हम करिये,
चरण कमल कर नैनै।
पाप-नियत ना धरम-करम से,
सदा सामनै रैनै।
'ईसुर' जानै काँकी कैदई,
फाग बना कै मैंनै।

मायके = पीहर में, दोउ बैनैं = दोनों बहिनें, नैनै = झुकने के अर्थ में, रैनै = रहना, काँकी = कहाँ की।

लगता है दोनों बहिने पीहर में बनी रहेंगी, विदायी का अवसर नहीं देंगी। इनकी देवताओं जैसी झाँकी है, नित प्रति इनके दर्शन लेना है। हम शीश नित्य नमन करेंगे, चरण कमल के प्रति भी झुक-झुककर प्रणाम करेंगे। न नियत में खोट है न धरम-करम में, जो है हमें सदा इनके सामने रहना है। जाने कहाँ-कहाँ कैसी-कैसी फाग इन पर बनाकर ईसुरी ने कह दी है। संदर्भ उन्हें स्मरण नहीं है।

कातन साँस-झूट ना डरतीं,
हेरत बीगें धरतीं।
इनखों रामदई ना मौंतै,
सौतै हमैं अखरतीं।
बिना पिरोजन ऐसी पूरीं,
आन बीच में परतीं।
कैबौ ऊसौ परौ हमारौ,
बोलत जीब पकरतीं।
ई बृज की बृजनारी 'ईसुर',
पाँख परेबा करतीं।

कातन = कहते हुए, साँस-झूट = सच-झूठ, हेरत = देखने पर, बींगें = त्रुटियाँ, धरती = रखती हैं, रामदई = राम कसम, अखरती = खलती हैं, परतीं = सो जाती हैं, कैबौ = कहना, ऊसौ = वैसा ही, परौ = पड़ा, जीब = जीभ, पाँख = पाँवों से, परेबा = कपोत।

झूठ-सच कहने में भी वे भयभीत नहीं देखते ही त्रुटियाँ निकालती हैं। रामकसम इन्हें मौत भी नहीं आती। यह सौतें मुझे खलती हैं। बगैर किसी प्रयोजन के यह ऊँची पूरी बीच में आ पड़ती हैं। मेरा कहना वैसा ही खराब लगता है। जो कुछ बोलता हूँ, झट जबान पकड़ लेती हैं। ये ब्रजनारी पंख लगाकर कपोत बनकर इधर-उधर गुटर-गूँ करती रहती हैं।

बाँधत गली छैल के छल्ले,
नजर नाँय खों कल्ले।
लये बृज चन्द फंद फाँसी के,
प्रान हरन के पल्ले।
जुल्फें जुल्म हलाल करबे खों,
आन कंदन पै हल्ले।
बृज बनितन खौं कयें मुनइयाँ,
मरैं भौंत से गल्ले।
'ईसुर' बार पार करबे खों,
चक्रबाण से चल्ले।

छैल के छल्ले = रसिक युव के छल्ले, नाँय खों = इस ओर को, कल्ले = कर ले, जुल्फें = अलकावलि,

आन = आकर, कंदन पै = कंधों पर, हल्ले = शोर गुल अथवा हिलने के अर्थ में, खों = को, मुनइयाँ = प्यार भरा सम्बोधन, मरैं = मर जाएँगे, गल्ले = गोल, झुण्ड के अर्थ में, वार = प्रहार, बार = आर पार करने के अर्थ में, चल्ले = चल ले। (तुकान्त हेतु हल्ले छल्ले आदि शब्द जोड़े गए हैं)

गलियारों में रसिक युवक झुण्ड बनाकर खड़े हैं पर नायिका उनकी तरफ जरा भी नहीं देखती। वे चाहते हैं कि वह एक बार उनकी ओर देख ले। नायिका का चन्द्र के समान सुन्दर मुख प्राण लेने के लिए और उसके बाल कंधों पर पड़कर हवा में लहराते हुए हलाल करने पर तुले हैं। इन ब्रजवासी स्त्रियों की सुन्दरता को देखने अनेक युवकों के झुण्ड के झुण्ड उमड़ पड़े हैं। ईसुरी कहते हैं– ये झुण्ड सुन्दर स्त्रियों को घेरकर ऐसे मचल रहे हैं, जैसे गोल घेरे में चक्रवात उठ रहे हैं।

गुदना गुदौ तुमारे मौपै,
जी लैबै की गौपै।
है कीके भाग में ऐसौ,
प्रान तुमइ खों सौंपै।
फिरका परे गिरे ते भौमै,
ऊ काहे खाँ झौंपै।
जोबन जमत ज्वानी अकुरा,
खौंट लेत है कौंपै।
कात 'ईसुरी' हम नई जानत,
हाथ धरे कानौ पै।

गुदो = गोदा हुआ है, लैबै = लेने, गौपै = घात में, सौंपै = समर्पित के अर्थ में, फिरका परे = फर्क पड़ने पर, गिरे ते भौमै = भूमि पर गिरे हुए से, झौंपै = झेंपने के अर्थ में, जमत = उत्पन्न होने के अर्थ में, ज्वानी = यौवन, अकुरा = अंकुर, खौंट = कुतर लेने के अर्थ में, कौपै = कोपलें।

गोदना जो तुम्हारे मुख पर गोदा गया है, वह प्राण लेने की घात में है। ऐसा किसके भाग्य है। अत: मैं तो प्राण ही तुम्हें समर्पित करता हूँ। ऐसे में यदि मैं भूमि पर गिर पड़ूँगा तो क्या फर्क पड़ेगा, इससे भी वे अपने प्रति आकर्षित नहीं हैं। उसके उरोज अभी थोड़े विकसित हुए हैं, लेकिन लोगों की प्रवृत्ति ठीक नहीं है। नव कोपलों को ही लोग चूहे जैसे कुतर लेते हैं। परिपक्व भी नहीं होने देते हैं। ईसुरी कहते हैं– मैं कुछ नहीं जानता, कान पकड़ता हूँ, मुझे कुछ भी ज्ञात नहीं। यह बहुत अधकचरे मनचले लोगों का काम है।

तुमसे दिल नइ भरत हमारौ,
देखै चलन तुमारौ।
ठाँड़ी रात टिकी चौखट से,
टारै एक किबारौ।
छिपौ रात घूँगट के भीतर,
माँथे बेंदा कारौ।
'ईसुर' ऐसे कानौ सटहै,
अपने मनैं विचारौ।

भरत = तृप्त होने के अर्थ में, चलन = चाल, ठाँड़ी = खड़ी, टारै = अलग करने के अर्थ में, किबारौ = किवाड़, छिपौ = अदृश्य, रात = रहता है, बेंदा = बड़ी बिन्दी नुमा आभूषण, कारौ = श्यामवर्ण, कानौ = कहाँ तक, सटहै = चलेगा, मनैं = मन में।

तुमसे मेरा हृदय कभी तृप्त नहीं हो पाता, तुम्हारी चाल देखने की इच्छा बनी ही रहती है। जब एक किवाड़ अलग कर तुम चौखट से टिकी हुई खड़ी रहती हो, वह दृश्य देखने लायक होता है और जब घूँघट की ओट में श्याम वर्ण बेंदा झिलमिल दिखाई देता है, तब तुम्हारा सौन्दर्य और बढ़ जाता है। ईसुरी कहते हैं– अपने मन में विचार करके बताओ कि ऐसा अलगाव रहेगा तो कैसे और कहाँ तक काम चलेगा? अतः अलगाव समाप्त कर मिलने का प्रयास करो।

ईसुर जानै काँ की कै दई,
फाग बनाकै मैंने।

श्रृँगार खण्ड- तीन

नायिका पक्ष की विविध अनुभूतियाँ

जे जी जान बाग में डोलैं,
सबद कोकला कोलैं।
सुनके सन्त भये उनमाते,
भसम अंग में ओलैं।
जोगी जटा अटा पै पटके,
बिर्षी बिरहनी मोलैं।
सीतल मन्द सुगन्ध त्रिबिध बिध,
पबन झकोरन झोलैं।
फैल परे रित राज 'ईसुरी',
कुसुम खजाने खोलैं।

कोकला = कोयल, कोलैं = कुरेदने के अर्थ में, उनमाते = उन्मादित, ओलैं = उड़ेंल लेने अर्थात् लगाने के अर्थ में, अटा = अट्टालिका, मोलै = मोहित करेगी, झोलैं = सुखद अनुभूति के अर्थ में।

बसन्तागमन पर वातावरण से प्रभावित कवि कहता है कि – ऐसे मौसम में मन बाग – बगीचों में घूमने का करता है। कोकिला की मधुर कुहुक ह्रदय विदीर्ण कर रही है और उसे सुनकर सन्त भी पुलकित और उन्मादित हो जाते हैं, जिन्होंने कि तन पर भस्म रमाकर विरक्ति का बाला पहन लिया है। योगियों ने अपनी जटा–जूटों को भी ऊँचा–ऊँचा करके फटकारना शुरू कर दिया है। जहाँ विषयी विरहिणी मोहित करती है। शीतल मन्द सुगन्ध तीन प्रकार की बयार के झकोरे मन में गुदगुदी पैदा करते हैं। ईसुरी कहते हैं – ऋतुराज बसन्त का साम्राज्य सर्वत्र फैल गया है, फूलों ने सौन्दर्य और सुगंध के मानो कोषागार खोल दिए हैं।

विशेष :– कालिदास के ऋतु संहार के बसन्त वर्णन का पूरा प्रभाव है।

हमपै नाहक रंग ना डारौ,
घरै ना पीतम प्यारौ।
फीकी फाग लगत बालम बिन,
अपने मनै बिचारौ।
उसइँ ज्वाला उठत बदन में,
नईं जारे पै जारौ।
केसर अतर गुलाब ना छिरकौ,
पिचकारन ना मारौ।
'ईसुर' हमपै हाल दिनन में,
खैचै श्याम किनारौ।

नाहक = व्यर्थ, फाग = होली के अर्थ में रूढ़ और ईसुरी के रससिद्ध छन्द का नाम भी, मनै = मन में, उसइँ = वैसे ही, जारौ = जलाओ, छिरकौ = छिड़कने के अर्थ में, पिचकारन = पिचकारी का बहुवचन, हाल दिनन = वर्तमान के अर्थ में, खैचै = खींचे हुए, किनारौ = किनारा।

मुझ पर व्यर्थ ही रंग न डालो, मेरा प्रियतम घर पर नहीं है। यही कारण है कि फागोत्सव अर्थात् बसन्तोत्सव पिया बिना फीका लगता है। इस पर तनिक तो अपने मन में विचार कीजिए। मेरी देह तो वैसे ही विरहाग्नि में जल रही है, अतः जले को और न जलाओ। केशर, इत्र, गुलाब आदि मुझ पर मत छिड़को और न पिचकारियों से मुझ पर रंग डालो। इस समय मुझसे मेरे श्याम सलौने दूर चले गये हैं, उन्होंने मुझसे ऐसे समय में किनारा कर लिया है।

जौ तन बलम कौ आय बगैचा,
फल-फूलन सै नैंचा।
केतर बरन केतकन कपरन,
भरौ सुरंग कौ खैंचा।
सैंदुर सी माँगन में धुरकी।
सो सुरखी सिर पैंचा।
मधुकर चाहत अपने मन से,
ई में सै रस ऐंचा।
'ईसुर' जान माल सब उनकौ,
मोय जात ना बैंचा।

जौ = यह, बलम = पिया, आय = है, बगैचा = बाग, नैंचा = झुका लेकिन लदकर नभ जाने के अर्थ में, केतर = कितने, बरन = वर्ण अर्थात् प्रकार, केतकन = केतकी जैसे, कपरन = वस्त्रों में, भरौ = भरापूरा, खैंचा = खिंचाव पड़ना, माँगन = माँगों, भुरकी = छिड़क दिया, सो = वह, सुरखी = लालिमा, पैंचा = घूमने या छा जाने के अर्थ में शब्द की तोड़-मरोड़, ई में, सै = इसमें से, ऐंचा = निकालने के अर्थ में, मोय = मुझसे, बैंचा = बेचा।

यह देह तो मेरे प्रियतम का हरा-भरा बगीचा है जो फल-फूलों से लदा हुआ झुका जा रहा है। कितने प्रकार के केतकी से सुवासित वस्त्र जिस पर लोगों से आकर्षक बेल बनवाये गये हैं। जैसे सिन्दूर माँग में भर दिया गया है और उसकी लालिमा सिर पर चढ़कर बोल रही है अर्थात् पूरी देह सिन्दूरी हो गई है। मन से भ्रमर चाहते हैं जिसका हम रस चूस लें। लेकिन मेरा सर्वस्व तो उनके लिए अर्थात् प्रियतम हेतु है, यह मुझसे बेचा नहीं जाएगा।

छैला दैजा आज कौ टारौ,
घर है पीतम प्यारौ।
आबत - जात दिखात दूर सैं,
चंदा कौ उजयारौ।
नई मालूम काय सैं आगऔ,
सौकारुँ घरबारौ।
गाड़ौ लंगर लगत पौर कौ,
ऐरौ करत किबारौ।
'ईसुर' भेंट कबै जा हू-है,
ललकत प्रान हमारौ।

टारौ = टाल दे, सौकारुँ = समय से पूर्व जल्दी ही, गाड़ौ = मजबूत अर्थ में, लंगर = किवाड़ बंद करने का उपकरण, पौर = बाहरी बड़ा कमरा जिसमें घर का मुख्य द्वार होता है, ऐरौ = आहट, कबै =कब, ललकत = ललचाने के अर्थ में।

रसिक प्रिय आज के लिए लक्ष्य को टालकर चले जाओ मेरा पति घर में ही है। आते-जाते में दूर से ही सब कुछ दीख पड़ता है, चन्द्रमा का प्रकाश जो है। मुझे नहीं पता कि आज वह अपने नियत समय के पूर्व इतनी जल्दी कैसे आ गया? पौर के मुख्य द्वार पर मजबूत सा लंगर लगता है। खोलने पर किवाड़ की आहट भी होती है। सोचती हूँ तुमसे अब मिलन कब हो सकेगा, मेरा हृदय लालायित हो रहा है।

बालम बे अनुआँ ना मारौ,
उसईं चाँय निकारौ।
सकरी खोर गैल सों कड़ गऔ,
काटत गऔ किनारौ।
ना मानौ तौ कौल करा लो,
होय यकीन हमारौ।
'ईसुर' बैठी गम्भ खाय कैं,
है बदनाम तुमारौ।

बे अनुआँ = बगैर दोष के, चाँय = चाहे, निकारौ = निकाल दो, खोर = छोटी गली, गैल सों = अपने रास्ते से, कड़ गओ = निकल गया, काटत गऔ = एक ओर कटकर, कौल = कसम, गम्भ खाय के = धीरज रखकर।

प्रियतम! मैं बेकसूर हूँ मुझे मत मारो, वैसे ही निष्कासित करना हो तो भले ही कर दो। एक तो गली सँकरी है उसी सँकरी गली में से कोई एक आदमी बचते-बचाते अपने रस्ते निकल गया। पर! तुमने इसका अर्थ कुछ गलत लिया। नहीं मानते तो मैं कसम खा सकती हूँ ताकि तुम्हें विश्वास हो जाए। मैं तो धीरज रखकर बैठी हूँ इससे तुम्हारा ही नाम व्यर्थ में बदनाम हो जाएगा।

प्रीतन कलक कलक दिन भरिये,
काँलौ सुरतन जरिये।
देखैं रात बाट घर बारे,
आब रूप सों डरिये।
संग नन्द खों पैल निगाबैं,
जों कउँ गैल डगरिये।
बिना मिन्त अपने हम दिल की,
कीसे बातैं करिये।
चोरी बिना चलै नइ 'ईसुर',
चलौ छैल भग चलिये।

प्रीतन = प्रेम की वेदना, कलक - कलक = तड़फन के अर्थ में, भरिये = पूरा करना, काँलौ = कहाँ तक, सुरतन = स्मृतियों एवं अभिसारत स्थितियाँ भी, बार = बाहर, घरबारे = पतिदेव, आब-रूप = रूप का पानी, पैल = पहले, निगाबैं = भेजें, गैल-डगरिये = राह गली में, बिना = बगैर, मिन्त = मीत, कीसे =

किससे, भग चलिए = भाग चलें।

परकीया नायिका कहती है - प्रियतम, तुम्हारे बिना तड़पते हुए दिन कटते हैं, कहाँ तक कामाग्नि में जलती रहूँ। बाहर निकलना इसलिए नहीं हो पाता क्योंकि मेरा पति बाहर ताके ही तो रहता है, अतः मेरे रूप का पानी न उतर जाए डरती हूँ। राह-गली में कहीं निकलती हूँ तो ननद बाई को पहले साथ कर दिया जाता है। सोचो बगैर मीत के अपने हृदय को आप बीती किसे सुनाऊँ? लगता है चोरी बगैर काम नहीं चलेगा, अतः मेरे मित्र चलो कहीं भाग चले।

का सुख भयो सासरें मइयाँ,
हमें गए कौ गुइयाँ।
परबौ करे दूद पीबे खाँ,
सास के संगे सैंयाँ।
दिन भय बनौ रात संकीरन,
चड़े ससुर की कइयाँ।
भर भर दैबो करें दूर से,
देखत हमें तरैयाँ।
कटी बज्र की रात 'ईसुरी',
लटी होत लरकइयाँ।

परबौ = सोया, दूद = दूध, संकीरन = संकुचित करने के अर्थ में, दैबौ = देते थे, तरैयाँ = आँखें भर आने के अर्थ में, कटी = बीती, लटी होत = खोटी होने के अर्थ में, लरकइयाँ = बाल्यावस्था।

सखि! मुझे ससुराल जाने से कौन सा सुख मिला? पिया जी का यह हाल है- वे सासू माँ के साथ दूध पीने के लिए जाकर सोते हैं। दिन और रात भय के कारण ससुर जी की गोदी में ही चढ़े रहते हैं। मुझे तो दूर से ही देख-देखकर उनकी आँखें भर-भर आती हैं। ईसुरी कहते हैं - बज्र के समान रातें बीतती रहीं, यह बाल्यावस्था में विवाह हो जाना हाय! कितनी खोटी बात है। बाल विवाह पर प्रहार किया है।

कइयो गौनै जोगन नइयाँ,
अबै न आबैं सइयाँ।
डरपत प्रान कपत तन ऐसें,

कदली कसी करइयाँ।
भरकें भुजा भार ना ओड़ैं,
दृग भर देत तरइयाँ।
सबरी देय देस भर उनकौ,
कछू न काम चलइयाँ।
'ईसुर' गाल भरे ना रसके,
जी की होय बलइयाँ।

गौनै जोग = विदा में ससुराल जाने योग्य, अबै = अभी, डरपत = भयभीत, कदली = केले का पेड़, कसी करइयाँ = केले के पेड़ से रोल किया हुआ तना निकलने वाला कोमल पत्ता के अर्थ में, भरकें = भरापूरा, ओड़ैं = सहन करने के अर्थ में, तरइयाँ = आँख डब-डबा आना, सबरी = सम्पूर्ण, देय = शरीर, देस भर = सब कुछ का सांकेतिक अर्थ, चलइयाँ = चलने वाला, बलइयाँ = बलिहारी जाना के अर्थ में।

अपरिपक्व आयु की नायिका का कथन है - मैं अपना गौना कराने योग्य नहीं हुई, अतः प्रियतम मुझे लिवाने अभी न आवें। प्राणों में डर समाया है, शरीर का पता है जैसे केले की नई कोपलें हों। भरी पूरी भुजा का भार भी सहन नहीं कर सकूँगी। आँखों में पानी भर-भर आता है। इतना विश्वास रखें कि यह सम्पूर्ण देह उन्हीं की है, मेरे मन का पूरा साम्राज्य यानी कि सब कुछ मात्र उन्हीं का है, उनके बगैर कोई कार्य चलने वाला नहीं। फिर अभी तो मेरे कपोल भी रस प्लावित होकर भरे नहीं हैं, जिसकी आपको ललक बढ़ रही हो।

बेला आदीरात पै फूला,
नईं घरें दिल दूला।
जौ गजरा पैराउँ कौनैं,
उठत करेजैं सूला।
घर की कली मनै ना भाबै,
भौंरा बाग में भूला।
'ईसुर' श्याम साँझ के कड़तीं,
बजा नगर रमतूला।

बेला = मोगरे का फूल, आदी रात = अर्ध रात्रि, घरें = घर में, दूला = पति महाशय, गजरा = पुष्प माल, सूला = शूल (दर्द), मनै = मन को, भौंरा = भ्रमर, साँझ के = शाम को, कड़तीं = निकलती, रमतूला = एक वाद्य विशेष।

अर्ध रात्रि में सुरभित मादक गन्ध उड़ाने वाला मोगरा फूल रहा है परन्तु खेद है कि प्रियतम आज घर में नहीं हैं। यह मादक फूलों का पुष्पहार किसको पहनाऊँ यही सोचकर हृदय में शूल उठ रहा है। अफसोस कि घर की कलिका रूपी गृहिणी उसके मन को नहीं भाती। वह भ्रमर बना हुआ किसी अन्य बाग में भूला हुआ विचर रहा होगा। मुझे क्या मैं तो हर शाम नगर ढिंढोरा पीटने को तैयार हूँ रमतूला फूँकती हुई निकलती हूँ।

ई मिस नईं सासरें जैबी,
बे जरिया हो रैबी।
भूत-प्रेत लगे सब कैहै,
काऊ न कछू बतैबी।
देबी ठान लाँगनै होबें,
खेबै को ना खैबी।
हमना देखे दरद आपकौ,
अपने सिरपै लेबी।
'ईसुर' लौट लिबउआ जैहैं,
आँगू पाँव न देबी।

ई = इस, मिस = बहाने, जैबी = जाऊँगी, बे जरिया = निराश्रिता के अर्थ में, रैबी = रहूँगी, कैहै = कहेंगे, बतैबी = बताऊँगी, देबी ठान = देवी प्रकोप का भाव दिखाने के अर्थ में, लाँगनै = लंघन, खैबे = भोजन, खैबी = खाऊँगी, दरद = पीड़ा, लैबी = लूँगी, लिबउआ = लिवाने वाले, जैहैं = जाएँगे, आँगू = आगे, देबी = दूँगी।

इसी बहाने मैं ससुराल न जाऊँगी, निराश्रिता होकर रहूँगी। सभी कहेंगी कि प्रेतबाधा है, मैं किसी से कुछ किसी से कुछ बताऊँगी। देवी जी के प्रकोप का भाव लेकर भूखी रहूँगी, खाना भी न खाऊँगी। आपकी पीड़ा मैं कभी न देखूँगी पीड़ा अपने सिर ले लूँगी। इस प्रकार विदा कराने वाले लौट जायेंगे मैं आगे कदम कदापि न रखूँगी।

मो खाँ ऐसी उम्मर मइयाँ,
दाग लगा दबौ सइयाँ।
एक बेर के कला चूक गई,
इनने दाबी नइयाँ।

चाँय विधाता सींग लगादैं,
मानस के सिर मइयाँ।
जौ भई करम गत 'ईसुर',
अब ना करै गुसइया।

मो खाँ = मुझे, उम्मर = आयु, दाग = कलंक, दऔ = दिया, बेर = बार, कला = हुनर के अर्थ में, दाबी = पकड़ी, नइयाँ = नहीं, चाँय = चाहे, करमगत = कर्मों की गति।

मुझे ऐसी आयु में प्रियतम ने दाग लगा दिया है। अनजाने में एक बार गलती हो गई मुझे यह हुनर पकड़ने में ही न आया। किसी प्रकार चूक हो गई। मुझे अपनी गलती का अहसास हो गया अब चाहे विधाता मनुष्य के सिर पर सींग ही क्यों न लगा दे? यानी चाहे जो हो जाय ऐसी गलती नहीं करूँगी। ईसुरी कहते हैं – अब जो हुआ, उससे सबक लो और कर्मों की गति से जो हो गया है, अब आगे ऐसा न हो, इसके लिए सचेत रहकर भगवान् से प्रार्थना करो।

इक दिन सौने सौ दिन होबै,
बिदा होत में रोबै।
मूड़ अनाय उपटनौ करकैं,
माँग भरैं सिर गोबै।
एड़ी पकर महाबर दीनौ,
तरवन पतरीं चौबै।
डोला सजा चली पुर बाहर,
नाइनियाँ मौं धोबै।
'ईसुर' पति बिरत के लानैं,
संगै पति के सोबै।

मूड़ अनाय = सिर धोकर नहाना, उपटना = उबटन, गोबै = गूँथे, तरवन = पैर के तलुवों में, पतरी = पतली, चौबै = सींकिया महावर की रेखाओं के अर्थ में, नाइनियाँ = नाइन, मौं धोबै = मुँह फुलाए, लाने = लिए, संगै = साथ में।

एक दिन सोने सा दिन होता है जब विदा होते में रोया जाता है। सिर धोकर स्नान, उबटन करके, माँग भरना, चोटी गूँथना, तलवों पर पतली चोब सी सींकिया महावर सुशोभित होता है। सजे हुए डोले में गाँव के बाहर ले जाकर नाइन मुँह धुलवाती है। ऐसी पतिव्रता के लिए ही पति का सहवास जरूरी है।

रातैं परदेसी संग सोई,
छोड़ गऔ निरमोई।
अँसुआ ढड़क परे गालन पै,
जुबन भींज गए दोई।
मोरे तन की चोली भींजी,
दो-दो बेर निचोई।
'ईसुर' परे सेज के ऊपर,
हिलक-हिलक कैं रोई।

रातैं = रात को, सोई = लेटने के अर्थ में, निरमोई = निर्मोही, अँसुआ = आँसू, ढड़क = लुढ़कने के अर्थ में, दो-दो बेर = दो-दो बार, निचोई = निचोड़ी, हिलक = हिचकियों के अर्थ में।

स्वप्नदृष्टा नायिका कहती है- रात को मैं परदेशी के साथ ही लेटी थी लेकिन वह निर्मोही भी मुझे छोड़ गया। मेरे कपोलों पर मोती से आँसू फिसल आये हैं, मेरे दोनों उरोज भींग गए। हे सखि! तन की चोली ऐसी भीगी कि उसे दो-दो बार निचोड़ना पड़ा। ईसुरी कहते हैं-हे सखि! मैं अकेली सेज पर पड़ी-पड़ी हिलक-हिलककर रोती रही हूँ।

वियोग की स्थिति में संस्कृत के कवियों ने भी स्वप्न में संयोग का चित्रण किया है। मेघदूत में कालिदास ने जो कहा है निश्चय ही वह कवि को लोक से ऊपर शिष्ट साहित्य के स्तर तक सहज पहुँचा देता है।

अपने बलम के संगै सोबैं,
भागबान जो होबैं।
लेत रात गालन कौ चूमाँ,
जुबना जरद टटोबै।
लगी रात छातीं सों छाती,
पाँवन में पाँव बिदोबै।
पकरै हात उंगरिया ठाँड़ी,
परे मजा में धोबै।
परे खुलासा घर में 'ईसुर',
दयें नगारिन चोबै।

सोबैं = सोती हैं, भागबान = भाग्यशाली, होबै = होती हैं, रात = रहते हैं, चूमाँ = चुम्बन, जरद = कठोर

संगीन, टटोबै = टटोलने, सहलाने के अर्थ में, बिदोबै = फँसाकर रखे, पकरै = पकड़ती हैं, उँगरिया = अँगुली, ठाँड़ी = खड़ी, धोबै = धुलने अर्थात् प्लावित होने के अर्थ में, दयें = दिए हुए, नगारिन = एक वाद्य यंत्र नगाड़ा, चोबै = बजाने की लकड़ियाँ।

भाग्यवान् तो वह है जो अपने पिय के साथ ही सोती है। वे उसके गालों का चुम्बन लेते हैं। कठोर उरोज सहलाते हैं। छाती से छाती सटी रहती हो, पैरों में पैर फँसे रहते हो। हाथ पकड़े हुए हो और खड़ी अँगुलियाँ उसके हाथ में हो। तो समझो वह पूरे रसानन्द से धुली हुई अर्थात् पूरी तरह से प्लावित हैं। बगैर किसी आवरण के लेटे हुए हैं मानो नगाड़े पर चौबे पड़ी हों।

फागैं सुनयाये सुख होई।
देइ देबता दोई।
इन फागन पै फागन आबै,
कइयक करौ अनोई।
भौंर भखन कौ उगलन रै गव,
कली-कली में गोई।
बस भर 'ईसुर' एक बचौना,
सब रस लऔ निचोई।

सुनयाये = सुन आने पर, देइ-देबता = देवी-देवता, कइयक = अनेकों, अनोई = न करने योग्य कार्य की कोशिश, भौंर = भ्रमर, भखन = खाए हुए, उगलन = उल्टी करने के अर्थ में, गोई = पिरोई, बस भर = पूरी कोशिश करने पर, निचोई = निचोड़ लिया।

फागों को सुनना सुख देता है उनमें देवी और देवता दोनों के ही दर्शन होते हैं अर्थात् नायिका एवं नायक का रस भरा चित्रण होता है। इन फागों की अन्य फागों से तुलना नहीं हो सकती। कोई कितना ही प्रयत्न करे ऐसी फागें कोई रच ही नहीं सकता। इन फागों का असर ऐसा है कि भ्रमर जो रस पान कर चुके होते हैं, उन्होंने एक-एक कली के रूप में पिरोकर मानो सारा रस उगल दिया हो। ईसुरी कहते हैं- पूरी कोशिश करके भी कोई उनसे बच नहीं सकता। पूरा ही रस इन कलियों में निचोड़ लिया गया है।

कवजू किये लगत ना प्यारे,
सखि अपने घरबारे।

गोरे - बरन हों चयँ गौऊँआ,
चाँय होंय बे कारे।
शूर होंय चयँ बीर होंय बे,
चाँय होंय रन हारे।
'ईसुर' कात प्रान से प्यारे,
हमखौं बलम हमारे।

कवजू = कहिए जी, किये = किसको, घरबारे = पति, बरन = वर्ण, चँय = चाहे, गोऊँआ = गेहूँ जैसा रंग।

कहो सखि! अपने पति किसे प्यारे नहीं लगते? गौर वर्ण हो या गेहुआ अथवा श्याम वर्ण, शूर-वीर हों अथवा रण क्षेत्र से पराजय प्राप्त करने वाले जैसे भी हों अपने साजन तो प्राणों से प्यारे लगते ही हैं।

भौंरा जात पराये बागै,
तोय लाज ना लागै।
घरकी कली कौन कम फूली,
जा काहे से त्यागै।
भरमत फिरै भरम कौ मारौ,
सब सब रातन जागै।
कैसे जात लगाऔ हू - है,
और आँग से आँगे।
कात 'ईसुरी' जूठी पातर,
भाबै कूकर कागै।

बागै = बाग में, तोय = तुझे, भरमत = भ्रमित होने के अर्थ में, भरम = भ्रम, हूहै = होगा, और आँग = अन्य देह, आँगे = देह को, पातर = पत्तल (पत्तों से बनी जिस पर भोजन करते हैं) भाबै = रूचै, कुकर = कुत्ता, कागै = कौओं को।

भ्रमर, पराए बाग में जाते हुए तुझे तनिक भी लज्जा नहीं आती? घर की कली कोई कम फली है यानी घर की स्त्री जवान और सुंदर है। उसे क्यों त्यागता है? अर्थात् स्वयं की सुन्दर पत्नी को छोड़कर पर नारी की ओर उन्मुख और भ्रमित होकर मारा-मारा घूमता है। पूरी-पूरी रातें जागता है। मुझे आश्चर्य है कि पराई देह को अपनी देह से कैसे लगाते होंगे, उन्हें जरा भी संकोच रहा होगा? ईसुरी कहते हैं - जूठी पत्तल तो कुत्तों कौओं को ही रूचती है।

अब न करैं काउ सों यारी,
गरजन दुनिया दारी।
भाई बन्द सब गरज परै के,
गरज के बाप मतारी।
गरज परै के यार भौत हैं,
गरज परै की नारी।
पनमेसुर लौं गरज परै के,
गरजन सब हितकारी।
बेगरजी ना कोउ 'ईसुरी',
देखी सब संसारी।

करबी = करूँगी, काउ सों = किसी से, यारी = दोस्ती, गरज = स्वार्थ, भौत = बहुत, पनमेसुर = परमेश्वर, लौं = तक, बेगरजी = नि:स्वार्थ भाव की।

अब तो मैं किसी से भी दोस्ती न करूँगी यह संसार तो स्वार्थ का ही मीत है। भाई-बन्धु माँ-बाप सभी स्वार्थ के साथी हैं। स्वार्थ के दोस्त भी बहुत मिलेंगे व स्वार्थी नारी भी मिल जायेगी। यहाँ तक कि स्वयं परमेश्वर तक स्वार्थ से अछूता नहीं है, सभी हितैषी भी स्वार्थी ही हैं। ईसुरी कहते हैं- कोई निस्वार्थी व्यक्ति मुझे कहीं देखने को नहीं मिला मैंने पूरा संसार छान लिया है।

मोरी कई यान गैलारे,
दिन डूबें जिन जारे।
आँगू गाँव दूर लौ नइयाँ,
नइयाँ चौकी पारे।
देउर हमारे कछू न जानै,
जेठ जनम से न्यारे।
पानी पियौ पलंग लटका दौ,
धर दौ दियल उजारे।
डर ना मानौ कछू बात कौ,
पति परदेस हमारे।
'ईसुर' कात रैन भर रइयो,
उठ जइयो भुन्सारे।

कई = कहना, गैलारे = राहगीर, जिन = मत, आँगू = आगे, दूर लौ = दूर तक, नइयाँ = नहीं है, चौकी पारे = चौकी और पहरेदार वगैरह, लटका दौ = बिछा दूँ, धर दौ = रख दूँ, दियल = दीपक, उजारे = प्रकाशित करके, भुन्सारे = बड़े सबेरे ही।

पथिक, मेरी बात मान ले, सूर्यास्त हो चुका है अब मत जा, आगे बहुत दूर तक कोई गाँव नहीं है, न बीच में कोई चौकी या पहरेदार मिलता है। देवर तो मेरा अबोध है, कुछ भी नहीं जानता, जेठ जी जन्म से ही न्यारे रहते हैं। पानी पियो, मैं पलंग बिछाए देती हूँ और दीपक प्रकाशित कर देती हूँ। किसी प्रकार की शंका-भय मत करो, मेरे पतिदेव परदेश में है। ईसुरी कहते हैं – आज की रात मेरे साथ काटकर बड़े सबेरे उठकर चले जाना।

चैती बिलबारी

दिन बूड़ौ बिदेसी ना जा रे,
रूको थके हो तुम हारे।
ससुर हमारे गये बिदेसे,
और बिदेस पिया प्यारे।
कर लीजौ आराम भवन में,
लाल पलंग दैं लकटारे।
हमनै सुनी एइ गलियन में,
गये, बटोही दो मारे।
काटौ सुख से रैन 'ईसुरी',
जइयो उठ बड़ भुन्सारे।

बूड़ौ = डूब गया, बिदेसे = परदेश में, लकटारे = बिछा देने के अर्थ में, एइ = इन्हीं, बटोही = राहगीर, भुन्सारे = भोर के समय।

दिन अस्त हो रहा है परदेशी राहगीर तुम मत जाओ, मेरी बात मानो – ठहर जाओ, हारे थके भी हो तुम। चिन्ता मत करो मेरे ससुर जी व पतिदेव दोनों ही परदेश में हैं। घर में तो मैं ही अकेली हूँ। मेरे भवन में आज की एक रात विश्राम करो, मैं लाल पलंग बिछाए देती हूँ। मैंने सुना है इन राहों में दो राहगीर मारे गए हैं। इसलिए शंका छोड़ो तुम तो आज की रात सुख भोगो, बड़े सबेरे उठकर चले जाना।

विशेष :- यह झूला की फाग है।

अब ना जाव मुसाफिर आँगैं,
जात बिदा दिन माँगैं।
मिलनै नई गाँव कोसन लौ,
परतीं इकदम डाँगैं।
है अंदयारी रात गैल में,
चोर चबाई लागैं।
परों सुनत दो जने लूट गये,
मार-मार के साँगैं।
'ईसुर' कात रऔ उठ जइयो,
अरुन-सिखा जब जागैं।

कोसन लौ = कई कोस तक, परतीं = पड़ती है, डाँगैं = घने जंगल की टुकड़ियाँ, अंदयारी = अंधेरी, गैल में = राह में, चोर - चबाई = चोर उचक्कों के अर्थ में, परों = परसों (दो दिन पूर्व), दो जनें = दो लोग, साँगे = भाला - बल्लमनुमा नुकीले अस्त्र।

राहगीर, अब सूर्य विदा माँग रहा है, दिन अस्त होने को है, इसलिए आगे मत जाओ। कई कोसों तक कोई गाँव भी न मिलेगा, एकदम जंगल ही जंगल है। रात भी अंधेरी है, राह में चोर उचक्कों का अड्डा है। अभी दो दिन पहले सुनने में आया कि दो लोगों को साँगों से मार-मार कर लूट लिया। मैं कहती हूँ- यहीं रह जाओ जब मुर्गा बाँग दे तब उठकर चले जाना।

तुम खों देखौ भौत दिनन सें,
बुरौ लगत रब मन सें।
लुआ न ल्याये पुरा पाले के,
कैबू करी सबन सें।
एकन से विनती कर हारी,
पालागन एकन सें।
मनमें करै उदासी रइ हों,
भई दूबरी तन सें।
'ईसुर' बलम तुमइये जानौं,
मैंने बालापन से।

तुम खों = तुम्हें, भौत = बहुत, दिनन में = दिनों में, रऔ = रहा, लुआ = लिवा, ल्याये = लाये, पुरा पाले

के = पड़ोसी लोग, कैबू करी = कहा करती थी, सबन से = सभी से, एकन = एकाध, पालागन = पैर लगाने के अर्थ में, रइ = रही, दूबरी = दुबली, तुमइये = तुम्हें ही, बालापन से = बचपन से ही।

तुम्हें आज बहुत दिनों में देखा, बिन देखे, मन में बहुत बुरा लगा करता था। पड़ोसी लोग भी मुझे लेने नहीं आये। मैं तो सभी से कहा करती थी। एकाध से विनती, एकाध के पैर तक पड़ती थी और मैं कहकर हार गई। मन ही मन उदास रहने के कारण शरीर भी क्षीण हो गया। यह सच है कि मैंने अपने बचपन से ही तुम्हें अपना प्रियतम जाना है।

हम खाँ नईं सासरें जानें,
कोय दुबदा मानें।
जौ लौ जिये होंयगे तुमरे,
ऐंगर – ऐंगर रानें।
जैहै लौट लिबउआ उनके,
का भव जात बतानें।
हूहै खूब खातरी मानौ,
नहीं बलम खाँ चानें।
'ईसुर' इश्क जिन्दगी जौ लौ,
तुमरे संग निबानें।

हम खाँ = मुझे, सासरें = ससुराल, दुबदा = दुविधा, रानें = रहना है, जैहै = जाएँगे, लिबउआ = विदा कराने वाले, का भऔ = क्या हुआ, जात = जाते हुओं को, बतानें = बताना पड़ेगा, हूहै = होगी, चाने = चाहिए, जौलौ = जब तक, निबानें = निभाना है।

यह दुविधा किसलिए मान रहे हैं? मुझे ससुराल नहीं जाना है। जब तक जियूँगी तब तक के लिए तुम्हारी होकर रहूँगी। तुम्हारे निकट ही रहूँगी। ससुराल से लिवाने आने वालों को वापस भेज दूँगी। तब क्या हुआ? यही सर्वत्र चर्चा होगी। मुझे मालूम है ससुराल में खूब आदर सत्कार होगा मानती हूँ, लेकिन मुझे पति नहीं चाहिए। जब तक यह जीवन है, तब तक तुमसे प्रेम किया है, उसे ही निभाऊँगी।

सुख ना कछू सासरै गए कौ,
सइयाँ नइयाँ कए कौ।

रस ना लऔ रसीले रसिया,
तन सुन्दर जी नए कौ।
स्वाद कछू है नइयाँ गुइयाँ,
नर ऐही तन लए कौ।
अधर राय से कात 'ईसुरी',
का करिये जर गए कौ।

कछू = कुछ भी, गए कौ = जाने का, नइयाँ = नहीं है, कए कौ = कहना न मानने वाला है, लऔ = लिया, जी = प्राण, लये कौ = लेने का, अधर = निरोष्ठि के अर्थ में, कात = कहते हैं, करिये = किया जाए, जर गए कौ = जल जाने का।

हे सखि! स्वामी मेरा कहना ही नहीं मानते हैं, अतः मुझे ससुराल जाने का कुछ भी सुख नहीं है। इधर रसिक प्रेमी अपनी नव प्रेमिका का रस लेना ही नहीं जानता। ऐसे मनुष्य शरीर का क्या फायदा? जिसने कभी काम का स्वाद भी न चखा हो। अब मैं क्या कहूँ। ईसुरी कहते हैं – अपने इस तरह से सारे अरमान जलकर रह गये।

विशेष :- यह निरोष्ठि रचना है पूरी रचना पढ़ने पर ओंठ से ओंठ न लगना ही इसकी कला है।

मानुस बिरथाँ राम बनाऔ,
दाबा खूब भँजाऔ।
मैं भइ ज्वान तबक रइ भरदर,
बिरहा जोर जनाऔ।
बाँधे बलम लिलोर गरे से,
जान बूझ लजबाऔ।
कामदेब कामिन पै आऔ,
मदन पसर के धाऔ।
दइ रूठौ का हुइये 'ईसुर',
मिलौ न जैसौ चाऔ।

मानुस = मनुष्य योनि, बिरथाँ = व्यर्थ ही, दाबा = बदला, भँजाऔ = ले लिया के अर्थ में, ज्वान = जवान, तबक रई = तप रही, भरदर = पूरे जोर के अर्थ में, जोर = शक्ति, जनाऔ = अनुभव करा देने के अर्थ में, लिलोर = पर स्त्री हेतु सम्बोधन, गरे से = गले से, पसर के = फलकर, धाऔ = दौड़ा है, दइ = देव, हुइये = होगा, जैसौ चाऔ = जैसा चाहा।

यह बदला खूब लिया गया, व्यर्थ ही मनुष्य योनि राम ने दे डाली। मैं जवान हो गई जवानी पूरे जोर पर तप रही है, विरहाग्नि ने अपनी भरपूर शक्ति दिखा दी है। लेकिन प्रियतम अपने गले में अन्य स्त्री को बाँधे बैठे हैं, मुझे जान-बूझकर लज्जित करते हैं। कामिनी पर कामदेव का साम्राज्य है, मदन फैल कर छा गया है। कामभाव पूरे शरीर में व्याप्त हो गया है। परन्तु दैव जब रूठा है, तब क्या हो सकता है? ईसुरी कहते हैं- आदमी जैसा चाहता है वैसा कभी मिल नहीं पाता।

ससुरें अब नइ जान बिचारें,
बाइ नन्द के दुआरें।
दैरी बाहर पाँव न धरहौं,
चाँय चलैं तरबारें।
जाकै कैदो बारे बालम सें,
इतै न डेरा डारें।
'ईसुर' बिदा होन नइ पावै,
लगबारन के मारें।

जान बिचारें = जाने की सोचती हूँ, बाई नन्द = ननद जी, दैरी = देहली, चाँय = चाहे, तरबारें = तलवारें, जाकै = जा करके, कैदो = कहो, बारे बलम से = भोले प्रियतम से, इतै = यहाँ, लगबारन = भिड़ाने वाले चुगलखोर।

ससुराल जाने का विचार छोड़ दिया है, ननदों के द्वार पर जाना नहीं है। चाहे तलवारें क्यों न चल जावें, लेकिन मैं देहली के बाहर पैर न रखूँगी। जाकर उन भोले प्रियतम से कोई कह दो कि यहाँ अपना डेरा न डालें। क्योंकि भिड़ाने वालों यानी चुगलखोरों की कमी नहीं है और उनके कारण विदा सम्भव नहीं है।

बनवा लेब पुंगरिया तड़कैं,
आज पिया सें अड़कैं ।
ऐसी सखियाँ कोउ न पैरें,
गाँव भरे से कड़कैं।
हीरा मोती खूब लगे हैं,
भाइ मोल में बड़कैं।

कात 'ईसुरी' प्यारी लाने,
धरी भुन्सराँ जड़कैं।

पुंगरिया = नाक का गहना, तड़कैं = सबेरे ही, अड़कैं = अड़करके, कोउ = कोई भी, न पैरे = नहीं पहिने, कड़कैं = आगे निकलकर, मोल में = मूल्य में, बड़कैं = बढ़कर, कात = कहते हैं, धरी = रखी है, जड़कैं = जड़कर के।

आज प्रियतम से अड़ जाऊँगी और सबेरे ही नाक की पुंगरिया बनवा लूँगी। ऐसी कि जैसी मेरी कोई भी सखी सहेली ने पाई न होगी, गाँव भर से अलग होगी। जिसमें हीरे-मोती खूब जड़े होंगे उस बहुमूल्य पुंगरिया को पहनकर घूमूँगी। ईसुरी कहते हैं - प्रिया के लिए ऐसी पहले से ही मैंने जड़ाउ पुंगरिया बनवाकर रखी है।

गुदना गोदौ री गुदनारी,
सबरी देय हमारी।
गालन में गोविन्द गोद दो,
गरैं धरौ गिरधारी।
माथे पै मकसूदन गोदो,
कर में कुंज बिहारी।
'ईसुर' करहा धरौ कन्हइया,
मुरुअन में मनहारी।

गोदौ = गोद दो, सबरी = पूरी, देय = देह, गरैं = गले में, करहा = कटि, मुरुअन = अंग-अंग के अर्थ में।

ओ गोदना गोदने वाली! मेरी पूरी देह पर गोदना गोद दे। गालों पर गोविन्द गोद दे, गले पर गिरधारी, माथे पर मधुसूदन गोद दे, कर में कुंज बिहारी। कटि में कान्हा गोद दे और अंग-अंग में मनोहारी गोदने गोद दे। पौंचों में मन को हरण करने वाले गुदना गोद दे। (चूड़ी पहनाने वाला रूप)

जौ है परदेसन कौ दोरौ,
मजे में कम्मर छोरौ।
आँगे और अड़ीसा नइयाँ,

गाँव दूर दिन थोरौ।
परदेसन की चाह बड़ी है,
परदेसै पति मोरौ।
डेरा डाँड़ी धरौ पौर मैं,
अबै डरौ घर कोरौ।
'ईसुर' नौनौ लगौ आए सैं,
भऔ करेजो ओरौ।

जौ है = यह है, परदेसन = परदेस गए की घर वाली के अर्थ में, दोरौ = द्वार, मजे से = इत्मीनान से, कम्मर = कमर फेंटा, छोरौ = खोल लो, आँगे = आगे, और = अन्य, अड़ीसा = रूकने का स्थान, दिन थौरो = दिन कम, डेरा - डाँड़ी = अथवा सब सामान, धरौ = राखो, पौर मैं = बाहर वाले कमरे में, अबै = अभी, डरौ = पड़ा हुआ है, कोरौ = स्वच्छ, नौनौ = अच्छा, लगौ = लगा, आए से = आने से, भऔ = हुआ, करेजौ = हृदय, ओरौ = बर्फ।

राहगीर! यह परदेसिन का घर है। इत्मीनान से कमर का फेंटा खोल दो। आगे अन्य कोई रूकने लायक स्थान भी तो नहीं है। अगला गाँव बहुत दूर है दिन थोड़ा सा शेष है अर्थात् संध्या हो रही है। किसी परदेशी को शरण देना मुझे अच्छा लगता है। इधर मेरा पति परदेश में गया हुआ है। अपना साज सामान बाहर पौर वाले कमरे में रखो मेरा घर अभी कोरा (अनुपयोगी) पड़ा हुआ है। तुम्हारा आना मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। तुम्हारे आने से मेरा हृदय (जो विरहानल में तप रहा था) बर्फ सा शीतल हो गया है।

ननदी गुदना फिरैं गुदायें,
हमैं न देखे जायें।
पूरौ फिरैं पारती सब दिन,
फिरती नाँय-माँय।
ऐसी बनी निरौना करती,
औरन खों निरखायें।
कइयन खों जै भौतइँ प्यारी,
रूप देख मुस्कायें।
गजब करै जे उदना 'ईसुर',
होनैं जोग चलायें।

फिरैं = घूमती है, गुदायें = गोदबा कर, हमें ना = मुझसे नहीं, फिरैं पारती = घूमे लेती हैं, निरौना = निर्णय,

औरन खों = अन्य को, निरखायें = परखाती है, जिदना = जिस दिन, चलाये = गोने की विदा।

ननद गोदना गोदवाकर घूमती-फिरती हैं यह मुझसे देखा नहीं जाता। पूरे दिन इधर-उधर घूमती रहती हैं। ऐसी बनती है और निर्णय स्वयं करती हैं। दूसरों को परखाती हैं। अनेकों को यह बहुत प्यारी हैं, इसका रूप देखकर सभी मुस्कराते हैं। यह उस दिन राज सा करेगी जब गौने की विदा के योग्य होगी या गौने की विदा का जोग होगा।

ननदी गुदनारी के लानें,
दई गुदाई जानें।
पूँछौ कछू बताबै तौ बा,
लाँगा-लुगरौ चानें।
इन गुदनन कौ देख गोदनौ,
तनकउ नई पिरानौ।
जा तौ बड़ी चतुर चालाकन,
फिर-फिर कै का कानें।
तिलक छाप करदौनी 'ईसुर',
बकसौ ईये इनामें।

ननद गोदना गोदने वाली के लिए मजदूरी में प्राण दिए फिरती है अथवा इसने मजदूरी दे दी है। पूछो कुछ भी लेकिन वह लहँगा चुनरी माँगती है। इन गोदनों का पीड़ादायक गुदना मैंने देखा है लेकिन इसको तनिक भी पीड़ा नहीं हुई। यह तो बड़ी चतुर चालाक है बार-बार क्या कहना? तिलक छाप करधनी आदि इसको पुरस्कार में दे दिया जाए।

सैंया बिसा सौत के लानें,
अंगिया ल्याये उमानें।
ऐसे और बनक के रेजा,
अबकीं हाट बिकाने।
उनने करी दूसरी दुल्हन,
जौ जी कैंसे मानें।
उवै पैर दौरै हो कड़नें,

प्रान हमारे खानें।
मयके सें ना निंगते 'ईसुर',
जो हम ऐसी जानें।

प्रियतम! मेरी सौत के लिए सही माप की चोली खरीदकर लाए हैं। ऐसी अन्य डिजाइन की चोलियाँ अभी ही बाजार में बिकी हैं। उन्होंने दूसरी दुल्हन रख ली है। तब यह प्राण कैसे सन्तुष्ट रह सकते हैं? उसको पहिनकर मेरे ही दरवाजे से निकलना है मेरे प्राण खाने के लिए। यदि मैं ऐसा जानती तो पीहर से ही न चलती।

गुदना गोदत भौत पिरानौ,
जिजी न लबरौ जानौ।
है बेदरद – दरद ना ऊखौ,
बड़ी कसायन मानौ।
गिगयानी अर रोई – डीफी,
चलौ ना एक बहानौ।
साँसउँ कान लगत पथरासौ,
लागत मूड़ बिरानौ।
'ईसुर' कात गुदावौ इनकौ,
हमैं न तनक पुसानौ।

पिरानौ = दुखा, जिजी = जेठानी के लिए सम्बोधन, लबरौ = झूठ, बेदरद = बेपीर, ऊखौ = उसको, कसायन = कसाई प्रवृत्ति वाली निठुर, गिगयानी = गिड़गिड़ाई, डीफी = चीखने-दहाड़ने के अर्थ में, साँसउँ = सचमुच ही, कान = कहने, बिरानौं = दूसरे का, तनक = थोड़ा भी, पुसानौ = अनुकूल बैठने के अर्थ में।

जीजी (जेठानी जी) झूठ जरा भी मत समझना, गोदना गोदवाते समय बहुत पीड़ा हुई। वह गोदनेवाली तो बेपीर है जो किसी की पीर ही नहीं जानती मानो बड़ी कसायन है। मैं कितनी गिड़गिड़ाई और दहाड़ मार-मारकर रोई। चीखी लेकिन एक भी बहाना नहीं चलने दिया। सचमुच ही लोग कहा करते हैं कि दूसरे का सिर निर्जीव पत्थर की तरह है। ईसुरी कहते हैं – गोदना गुदवाना मुझे बिलकुल ही नहीं सुहाता। 'पथरा सौ लागत मूड़ बिरानौ' बुन्देली मुहावरा है।

दरजी रेजा सींदै मनकौ,
हमै हरी साँटन कौ।

ढीलौ गाड़ौ होन न पाबै,
करलै नाप बदनकौ।
ऐसौ सियो रये सर जामें,
सिकम जोर जोबन कौ।
रहैं झूमका परे रेशमी,
खासौ रूप तनन कौ।
'ईसुर' देय सिमाई मनकी,
कमती नइ दामनकौ।

रेजा = चोली, अंगिया, कंचुकी, सींदै = सिल दे, मनकौ = मनपसन्द, साटन = वस्त्र विशेष, रये = रहे, सर = असर के अर्थ में, जामें = जिसमें, सिकम = प्रभावशाली के अर्थ में, जोर = शक्ति, तनन = तनियो, सिमाई = सिलाई के पैसे, मनकी = मन माफिक, दामनकौ = पैसों का।

ऐ दरजी रे! जरा हरे रंग की साटन की एक चोली तो सिल दे। न ढीली रहे न तंग होने पाए, इसलिए मेरे उस अंग का नाप तू अपने हाथ से ही ले ले। हाँ चोली ऐसी सिलना कि जिसमें तुम्हारा पूरा असर दिखाई दे उरोज का प्रभावशाली तैजस उभरे। रेशम की सक्तियों में विशेष किस्म के झुमके लगा देना। मैं तुझे मनचाही सिलाई दूँगी, कम नहीं दूँगी समझे।

रेजा रंगरेजा कैं डारे,
रंगदै यार हमारे।
पैलों रंग रंगौ कुसमानी,
दूजौ रंग दै कारे।
दाम तुमारे तब हम दैबी,
जब हम पैरै प्यारे।
रेजे पैर ठाँड़ी भइँ 'ईसुर',
कइयक छैला मारे।

पैलों = पहला, कुसमानी = कुसुम जैसा कुसम्बी रंग, दाम = पैसे, दैबी = देंगे, पैरै = पहिनेंगे, रेजे = अरे यह अथवा रेजा अर्थात् चोली, पैर = पहिनकर, ठाँड़ी = खड़ी, कइयक = अनेकों, छैला = रसिक युवा।

हे रंगरेज! हमारी कंचुकी अर्थात् चोली रंग दे। पहले कुसुम्बी रंग में रंगना फिर दूसरा रंग श्यामल रंगना अर्थात् चोली दो रंगी होगी। हे प्रिय! पैसे तो मैं तभी दूँगी जब इनसे पहिन लूँगी। जब यह चोली पहिनकर ईसुरी के सम्मुख खड़ी हुई तो अनेकों छैला मर गए।

कजरा अबै न दैबी कारे,
बारे बलम हमारे।
पारै धरै नई कजरौटी,
ईंगुर कैसे गारे।
माँथे की बिंदिया ना दैबी,
लैजा तैं मनहारे।
छूटन लगै बिचौला छूटा,
बाजू बन्द उतारे।
'ईसुर' हती मायके नौनी,
नाहक जीरा जारे।

बारे = नाबालिग छोटे से, पारै = पारकर बचकर, धरै = रखे, कजरौटी = काजल की डिब्बी में, ईंगुर = सिन्दूर, गारे = गलाकर, बिचौला, छूटा, बाजूबन्द = यह सब जेवरों के नाम हैं, मायके = पीहर में, नौनी = अच्छी, नाहक = व्यर्थ में ही, जीरा = प्राण, जारे = जलाए।

अभी प्रियतम नाबालिग छोटे से ही हैं, इस कारण काला काजल अभी न आजूँगी। वैसे मैंने काजल तैयार करके सिन्दूर की तरह गलाकर नई काजलदानी में सुरक्षित रख लिया है। माथे पर बिन्दी भी न लगाऊँगी इसलिए मनहार क्षमा करना अभी सब चीजें वापिस ले जाओ, नहीं चाहिए। मेरे जेवर भी अपने आप खुलने लगे हैं। बिचौला, छूँटा, बाजूबन्द वगैरह सब ढीले हो गये हैं। मैंने उन्हें भी उतारकर रख दिया है। इससे तो मैं पीहर में ही अच्छी थी, व्यर्थ में यहाँ आकर जी जलाना है। पूर्व में ऐसे विवाह भी हो जाते थे कि लड़का छोटा बहू बड़ी।

गुदना गोदौ धीरें धीरें,
सईं न जानें पीरें।
सालै सूज बदन में मोरे,
देत कलइयँन चीरें।
बाँय पकरतन डर लागत है,
ननदी बैठी नीरें।
गोरे बदन अजूबा लिखदो,
'ईसुर' नई तस्वीरें।

सई = सही, पीरें = पीड़ाएँ, सालें = चुभती हैं, सूज = सूई, कलइयँन = कलाइयों को, बाँय = बाँह, नीरें = निकट ही, अजूबा = विचित्र ही, लिख दो = बना दो।

गोदना जरा धीरे-धीरे गोदो, इसकी पीड़ाएँ सहन नहीं होतीं। मेरे शरीर में इसकी सुई साल रही है। हाथ की कलाइयाँ जैसे फटी जाती हैं। उस पर भी तुम मेरी बाँह पकड़ते हो, मुझे डर लगता है क्योंकि ननद जो निकट बैठी है। मेरी गोरी देह पर कुछ विचित्र सुन्दर आकर्षक चित्र बना दो।

चैती बिलवारी

लैदौ हमखाँ हरियल सारी,
पलकन मचली हैं प्यारी।
सूतौ महीन झीन नई होबै,
बड़ी मुलाम तरज बारी।
छोरन मोर-पपीरा रागै,
जरद कोर रंग जरतारी।
बीचन बीच बेल बूटन से,
भरी होय जौ फुलबारी।
कहत 'ईसुरी' सुनलो प्यारी,
भोर मँगा दैं सुकमारी।

लैदो = खरीद दो, हरियल = हरे रंग की, महीन = बारीक, झीन = जीर्ण, झीनी सी, मुलाम = मुलायम, तरज = फैशनवाली, छोरन = पल्लू पर, मोर-पपीरा=मोर-पपीहे के चित्रांकन, रागै=रहें, जरद कोर=जरद रंग की किनारी, जरतारी=जरी वाली, बीचन बीच=बीच-बीच में, भोर = सबेरे, मँगा दै =मँगा दिया जाएगा।

हरे रंग की साड़ी ले दो ऐसा कहती हुई प्रिया सेज पर मचल उठी है। कहती है – महीन सूत की हो लेकिन झीनी न हो, बहुत मुलायम नई तर्ज की हो। पल्लू पर मोर-पपीहे अंकित हों। किनारी जरद लाल रंग और जरी के काम वाली हो। बीच-बीच में भी बेल बूटे हों जो फुलवारी के समान भरी व भली लगे। लेकिन ईसुरी कहते हैं कि सुनो प्रिया! सबेरे ही तुम्हें मँगा दूँगा।

विशेष :- यह झूला की फाग है चौकड़िया से भिन्न छन्द है।

दिल रहौ दाबनी में बसकैं।
मौ फेरो इत खाँ हँसकैं।

झँझरीदार खुली अस पुतरी,
पटियन बीचों रइ लसकैं।
दोई भौंह दाब कै बैठी,
कानन लौं खैंचें कसकैं।
'ईसुर' प्रान कौन के लेती,
राधा के माँथे धसकैं।

दाबनी = दबाव में, बसकें = बसकर, मौ = मुँह, फेरौ = पलटो, घुमाओ, इत खाँ = इस ओर, झाँझरीदार = झिंझारियों के समान शिल्प लिखी सी, अस = इस तरह, पुतरी = बीजासेन की पुतली जो कि तावीज की भाँति गले में पहिनते हैं, पटियन = अलकावलि, बीचों = के मध्य, लसकें = जमकर दीप्तिमान होती है, कानन लौं = कानों तक, कसकैं = तानकर, धसकैं = पैठकर।

मेरा मन तुम्हारे प्रेम के दबाव में दबा हुआ है। तनिक हँसकर मुँह मेरी ओर तुम घुमाओ न! झिंझारियों के शिल्प में अच्छी लगती हुई बीजासेन की (मूर्ति) पुतली सी तुम अलकावलि के बीच बहुत अच्छी तरह दीप्तिमान हो रही हो। दोनों भृकुटियों की कमान कसकर खींची है जो कानों तक जा पहुँची है बोलो किसके प्राण लेने का विचार है, जो राधा के माथे पर जा बैठी हो।

विशेष :- यह झूला की फाग है।

चाहत तुम सिबाय ना औरै,
औरन पै दिल दौरै।
तुमाए सिबा कोउ मनै न भाबै,
जे बाँदे सिर मौरें।
जी के संग में परी भाँबरे,
परे न हम इक ठौरै।
हमै सनेई ऐसो सूजन,
ज्यों सूजत शिव गौरै।
हाल दिनन में ई सें 'ईसुर',
बसती बसत बगौरे।

औरै = अन्य किसी को, औरन = अन्य पर, दौरै = दौड़ता है, मनै = मन में, भाबै = पसन्द, सिर मौरें = सिर पर मौर को, इक ठौरै = एक साथ (हम बिस्तर), सनेई = प्रेमी, शिव-गौरे = शिव गौरी को, हाल दिनन = वर्तमान में, बसत = रहते हैं।

पतिव्रता नायिका की बेबसी है, इस रचना में नायिका पर पुरुष के प्रति आकर्षण नहीं रखती परन्तु पतिदेव सोचनीय हैं और वह यौवन की भरी पूरी है। अत: मैं तुम्हारे सिवा अन्य किसी को भी नहीं चाह पा रही हूँ। जबकि स्थिति यही है कि अन्य पर ही दिल मचलता है। तुम्हारे सिवा कोई मेरे मन को पसन्द ही नहीं, जिसने सिर पर मौर को बाँधा हो जिसके साथ सात फेरे लिए हैं उसके साथ सहवास का कभी सुयोग भी तो न मिल सका। खेद है मुझे तो ऐसा दीखता है, ज्यों गौरी को शिव का प्रेम हो लेकिन विवशता की बलिहारी है, अत: वर्तमान में तो मैं बगौरा में बस रही हूँ मेरी सूरत देखना हो तो बगौरा चले आओ?

विशेष :- ईसुरी बगौरा में पहुँच गए उनकी नायिका छूट गई परन्तु सुधियों की मनोव्यथा उक्त रचना में दृष्टिगोचर है।

छैला नैन तोरे उरजैला,
कड़न देत ना गैला।
लेबै गाँस आँस आबत के,
छोड़त नई छुटैला।
बने बिगारत ई बिगरूँ खाँ,
बिगरौ बड़ौ बहैला।
चौकी लगी चौक में चौकस,
चलै न चुपल चबेला।
भये दिमाने जिनपै 'ईसुर',
जंत्र-मंत्र नई फैला।

उर झैला = उलझ जाने की आदत वाले, कड़न = निकलने, गैला = रास्ते से, गाँस = जकड़ना, आँस = पीर, आबत के = आते ही, छुटैला = छोड़ने वाला, बिगरू = बिगड़ी हुई, बहैला = झमेला के अर्थ में, चौक = आगमन, चुपल = लुभावनी, चबेला = बातों के अर्थ में, दिमाने = दीवाने।

रसिक प्रिय! तेरे नयन अपने आप ही उलझकर अटक जाने वाले हैं, राह चलना भी दूभर हो गया है। वे पीर यानी पीड़ा को पहचानते हैं, पीर के उठते ही जैसे कोई जकड़ लेते हैं छूटना कठिन हो जाता है। इस पहल से बिगड़ी हुई को बनाकर फिर बिगाड़ते हैं, पूरा माहौल बिगड़ गया है। आँगन में चौकस नाकेदारी है। लुभावनी बातों का असर भी बेअसर है, बस जिसके दीवाने हुए हैं उन्हीं के हो गए हैं। अब मंत्र-तंत्र का प्रभाव भी व्यर्थ है।

मोरे भौरन बाग उजारे,
घर बालम है बारे।
बन–बन कैं बरबाद कियो है,
नाहक टटुआ टारे।
दो फल ते जे बड़ी मजाके,
समरत नई समारे।
बिन पूँछै हम तुमखाँ देकै,
कैसे हुयें न दारे।
'ईसुर' कात गुलाब कली पै,
कियै करौ रखबारे।

भौरन = भ्रमर (बहुवचन), उजारे = उजाड़ दिए, घर बालम = घर का ब्याहता पति, बारे = नाबालिग, बन–बन कैं = बन–बनकर, नाहक = व्यर्थ, टटुआ = टट्टू, टारे = टाला, टटुआ टालना = बलाय टालने के अर्थ में मुहावरा है), मजा के = आनन्द के, समरत = सम्हलते, तुमखाँ = तुमको, न दारे = निर्वाह, कियै = किसको, रखवारे = रक्षक के अर्थ में।

मेरे बगीचे को भ्रमरों ने उजाड़ दिया है और घर के ब्याहता पतिदेव अभी नाबालिग ही हैं। बना–बनाकर इन्हें मिटाया गया है। मैंने व्यर्थ बला सी टाली है। दो फल आनन्ददायक छोटे – छोटे थे अब तो सम्हाले नहीं सम्हलते। बगैर पूछे यदि मैं तुम्हें भी दूँ तो निर्वाह कैसे हो सकेगा? अतः इन गुलाब की कलियों पर रखवाला बनाकर किसे बैठाऊँ?

विशेष :– बन–बन के बिगड़ना, टटुआ टालना, अति क्षेत्रीय लोक मुहावरे हैं।

सबसे भली होत लरकइयाँ,
दयें न रऔ गुसइयाँ।
दौर झपट के सब काउकी,
चड़ जइयत ते कइयाँ।
खेलन करे लरकन के संगै,
फिर लियात ते गइयाँ।
'ईसुर' ज्वानी के आये सैं,
घर के होत लरइयाँ।

दयें = दिए ही, ना रऔ = न रखो, गुसइयाँ = भगवान् के अर्थ में, दौर = दौड़कर, काउकी = किसी की,

कइयाँ = गोदी में, लरकन = लड़कों,   लियात = लाते, लरइयाँ = लड़ने को उद्यत।

सबसे सुन्दर तो बाल्यावस्था है, हे भगवान्! यह अवस्था देते ही क्यों हैं। याद है दौड़कर झपटकर किसी की भी गोदी में चढ़ जाती थी। लड़कों के साथ ही खेला करती थी फिर गायें लेकर शाम को लौटती थी, कभी कोई रोक-टोक या आपत्तिजनक स्थिति न थी। लेकिन यौवन के आते ही घर के सभी लोग ऐसी गतिविधियों को देख लड़ने को उद्यत है।

ओ बउ हमैं सासरैं जानैं,
परै बाप से कानैं।
हो आये छाती के ऊपर,
जुबना जमत दिखानैं।
अपने-अपने घरै चाइयत,
लरका बिटियाँ स्याने।
एइ से 'ईसुर' लाज टोर कैं,
मन की बात बतानै।

बउ = दादी के अर्थ में, परै = पड़ेगा, कानैं = कहना, जमत = विकसित होने के अर्थ में।

मेरी दादी, मैं ससुराल (पतिगृह) जाने में रूचि रखती हूँ, क्या इसके लिए पिताजी से स्वयं मुझे ही कहना पड़ेगा? मेरे वक्षस्थल पर अब उरोज विकसित होते स्पष्ट दीखने लगे हैं। सोचो, परिपक्व आयु के युवक-युवतियों को अपने घर में ही रहना श्रेयस्कर है। इसीलिए आज लज्जा एवं संकोच तोड़कर यह लज्जास्पद बात मैंने तुम्हें बताई है।

ओंखन एकै यार नजरबी,
औरै चित्त न धरबी।
अपनी बात बनी जा नौनीं,
जी की बाँह पकरबी।
जो काउ और लुगायन देखे,
की के संग बिगरबी।
एक तरै परकै जीवन भर,
और तरै ना परबी।

'ईसुर' अपने एक जने से,
तेर जिन्दगी करबी।

नजरबी = आँखों में बसाने के अर्थ में, धरबी = रखने के अर्थ में, नौनीं = अच्छी के अर्थ में, पकरबी = पकडूँगी, लुगायन = स्त्रियों को, बिगरबी = बिगड़ने के अर्थ में, तरे = नीचे, परबी = सोऊँगी।

आँखों में एक ही मीत को बसाऊँगी, किसी अन्य को चित्त में ना रखूँगी। अपनी बात जो बहुत अच्छी बन पड़ी है (शादी होने से) बस उसी की बाँह पकड़े रहूँगी। यह भी कोई बात है जो परनारी पर निगाह करे ऐसे मैं किस-किसके साथ बिगडूँगी? अत: एक के साथ ही अभिसार जीवन भर करना है, अन्य के साथ रमण करने की सोच भी नहीं सकती। अपने एकमात्र मर्द के साथ जीवन का तरण-तारण करूँगी।

जौ है नदी नाव कौ भेलौ,
कउँ हम कउँ तुम खेलौ।
अपनी-अपनी भोर-गैल लैं,
रात मुसाफिर मेलौ।
घर जैबे की घरी आय जब,
एक घरी ना झेलौ।
जब धर देत चिता के ऊपर,
दिखा न परत दुकेलौ।
'ईसुर' कोउ काउ कौ नइयाँ,
सब सिनसार अकेलौ।

भेलौ = मिलन, कउँ = कहीं पर, मेलौ = ठहरा, झेलौ = समय न लगने के संदर्भ में, दुकेलौ = दूसरा और न कोई।

यह तो नदी और नाव जैसा संयोग है। अगले जन्म में तुम कहीं और हम कहीं खेलेंगे। इस जीवन में मात्र एक रात जैसा ठहरना है प्रात: फिर अपने-अपने मार्ग पर चले जाना है। जब पारब्रह्म के पास जाने का काल आयेगा तक एक घड़ी का भी समय नहीं लगेगा। मरणोपरान्त जब निर्जीव देह को चिता पर रख देते हैं उस समय कोई दूसरा नहीं होता। ईसुरी कहते हैं इस संसार सागर में कोई किसी का नहीं है। समूचा जगत् अकेला है। निर्गुण ब्रह्म की ओर ही संकेत है।

फागें कई रजउ की ईसुर,
एक एक सें बड़कें।

श्रृँगार खण्ड - चार

रजउ विषयक

दोहा – *घरी – घरी पै ईसुरी, घरी सौ दृगन दिखात।*
मुइयाँ बाँके छैलकी, नजर में झूलत रात॥

घरी = घटी (समय), बाँके = सुन्दर, छैल = रसिक युवा, रात = रहता है।

नायिका की ओर से ईसुरी कहते हैं कि समय-समय पर एक पल में सौ-सौ बार दृष्टिगोचर होता है। उस रसिक युवक का मुख मेरी दृष्टि में झूलता रहता है।

दोहा– *तरै-तरै के करत हैं, तोरे ऊपर प्यार।*
हमइँ अकेले ऐक हैं, रजउ की दमके यार।

तरै-तरै = विभिन्न प्रकार के, दमके = साहस के, यार = मीत।

विभिन्न प्रकार के लोग तुमको प्रीत करते हैं। लेकिन मैं ही एक ऐसा हूँ जो रजउ का प्रेमी हूँ। ये सौभाग्य मुझे ही प्राप्त है।

सोभा रजउ की कीसैं कइए,
किये उनारन जइये।
बड़कै चीज़ इकइसों सौनौ,
ईखौ का परखइये।
सबइ सरापा एक तरफ है,
जौहरी काँ सैं लइए।

साजी फागैं कहीं 'ईसुरी'
सुगर सुनइया चइये।

उनारन = देखने जाना / उदाहरण या उपमा के अर्थ में, किये= किसकौ, इकइसों सौनौ = चोखा स्वर्ण, परखइये = परखाया जाए, सरापा = जौहरी बाजार, सुगर = सुघड़, सुनइया = स्रोता।

नखशिख वर्णन के अन्तर्गत ईसुरी कहते हैं कि – प्रिय रजउ की शोभा मैं किससे कहूँ, किसे देखने जाऊँ, किसकी उपमा दूँ? वह तो सर्वप्रकार से इक्कीस है, चोखा सोना है उसे क्या परखा जाये? पूरा जौहरी बाजार सराफा एक ओर रह जाएगा। फिर जौहरी कहाँ से लाएँ? साजी फागे अर्थात् अच्छी रचनाएँ ईसुरी ने करही हैं इस सन्दर्भ में सुघड़ श्रोताओं की आवश्यकता है जो रसिकता से सुन सकें।

ऐसौ बदन बनौ बंधबारौ,
रजउ कौ डील दुबारौ।
पिड़री चढ़ी मसीली जाँगै,
कब जन कोद निहारौ।
औलैं तेरीं परें पेट में,
माफक को थुँदवारौ।
गोरे आंग श्यामली सारी,
लगै लिपड़तन प्यारौ।
'ईसुर' चली आउती ऐसें,
गज घूमत मतवारौ।

बँधबारौ = गठा हुआ, डील दुबारौ = शरीर की काठी, पिड़री चढ़ी = चढ़ी हुई पिण्डली, मसीली जाँगै = मसल्स युक्त गठी हुई जंघाएँ, तेरी = तिहरी/तीन तपे, आंग = शरीर, लिपड़तन = लिपटते हुए, मतवारौ = मतवाला।

ईसुरी रजउ के शारीरिक सौन्दर्य का चित्रण करते हुए कहते हैं – मैंने रजउ का गठीला शरीर देखा है उसकी शारीरिक काठी सुन्दर है। पिंडली उतार–चढ़ाव वाली, जंघाएँ भी अच्छी गठीली हैं, भुजाएँ ऐसी हैं, जिन्हें देखते रहने का मन करता है। पेट पर तिहरी सलवटें पड़ती हैं, उसका अग्रभाग अपने आपमें अनुपात में है। गौर वर्णी देह पर श्याम रंग का साड़ी का रंग–सामंजस्य देखकर लगता है कि इससे लिपटने पर कितना अच्छा प्रतीत होगा। ईसुरी कहते हैं उसकी चाल ऐसी है, मानो झूमता हुआ हाथी आ रहा हो।

मोरी रजउ से नौनौ को है,
डगर चलत मन मोहै।
अंग-अंग में कोल-कोल के,
ईंगुर रंग भरौहै।
मन कौ हरन गाल को गुदना,
तिल सो तनक धरौहै।
'ईसुर' कात उठत जोवन कौ,
बिरहा जोर तरौहै।

नौनी = लावण्यमयी / सुन्दर, कोल कोल के = कुरेद-कुरेदकर, ईंगुर = लाल सिन्दूर, हरन = हरने वाला, गुदना = गोदना का बिन्दु, बिरहा = विरह, तरो है = अवतरित हुआ है।

मेरी रजउ से सुन्दर लावण्यमयी अन्य कौन है। जो राह चलते का मन मोहती है। उसके अंग-अंग को मानो कुरेद-कुरेदकर यानी तराशकर उसमें सिन्दूरी रंग विशेष रूप से भर दिया है। तिल के समान गोल छोटा सा एक गोदना कपोल पर जो गुदवाया गया है, वह मन को हरण करने वाला है। उसके विकसित होते हुए उरोजों में जैसे विरह ने अवतार ले लिया है।

बाँकी रजउ तुमारी आँखें,
रव घूँगट में ढाँकें।
हमने अबै दूर से देखीं,
कमल फूल सी पाँखें।
जिदना चोट लगत नैंनन की,
डरे हजारन काँखें।
जैसी राखे रई ईसुरी,
असइँ रइयो राखें।

बाँकी = अच्छी, ढाकें = ढके हुए, पाँखें = पंखुड़ियाँ, जिदना = जिस दिन, काँखें= कराहते हैं, राखें = रखना।

प्रिय रजउ, तुम्हारी आँखें बेहद सुन्दर हैं, इनको तो तुम घूँघट में ही छिपा लो। अभी तो मैंने दूर से ही देखी है, मानो वे कमल की पंखुड़ियाँ हैं। जिस दिन इन आँखों से चोट किसी को लगेगी तो हजारों लोग (घायल होकर) कराहते मिलेंगे। परन्तु मेरे प्रति जैसा प्रेम भाव अब तक रखे रही हो, वैसा ही रखे रहना।

जिदनाँ रजउ पैरतीं गानों,
जीरा जात बिरानों।
सरमाला लल्लरी बिचौली,
मोहत हार सुहानों।
बेंदा बीच दाबनी दुर पै,
पान मलरया खानों।
बाँह बरा बाजूबंद सोहैं,
बइयँन जौन उवानों।
पाँव पोस पैंजनियाँ बजनूँ,
ऊपर कौन बखानो।
'ईसुर' देत बदन अत सोभा,
जब चोली बंद तानो।

पैरतीं = पहिनती, गानों = आभूषण, जीरा = जियरा, बिरानों = पराया सा, सुहानौ = सुहावना, बेंदा बीच = बीच में वेंदर, दाबनी दुर = नाक का आभूषण, पान मलरया = गढ़ी मलहरा का पान, बरा = बाँह का आभूषण, बाजूबन्द = आभूषण, बइयँन = बाहों के, उवानों = माप, पाँव पोस = पैरों का आभूषण, पैजनियाँ बजनूँ = बजने वाले पेंजना, बखानों = वर्णन किया, अत सोभा = बहुत शोभायमान।

जिस दिन मेरी प्रिय रजउ आभूषण धारण करती है तो उसका जियरा यानी मन पराया सा लगता है। सरमाला, लल्लरी, बिचौली, मोहित करने वाला हार, बीच में बेंदा, नाक में दबी हुई दुर, फिर गढ़ी मलहरा का प्रसिद्ध पान का बीड़ा मुख में दबा हुआ देखते ही बनता है। बाँहों में बरा और बाजूबन्द बिलकुल माप के शोभित हैं। पाँव के गहने पाँवपोस और झन्कार करने वाली पैजनियाँ का बखान क्या किया जाए। ईसुरी कहते हैं – कुल मिलाकर रजउ का सुडौल शरीर आभूषणों के साथ अत्यन्त शोभायमान है ऐसे में जब चोली के कसकर बाँधे गये हो, तब उसकी सुन्दरता अत्यधिक बढ़ जाती है।

विशेष :- जिन आभूषणों के नाम आये हैं वे शद्ध बुन्देली हैं बहुतों का चलन अब समाप्त हो चुका है।

आई नगन नगन पियराई,
रजउ के मों पै छाई।
कैधों तबक लगे सोने के,

कै केसर की खाई।
कै घूँघट के रये छाँहरे,
घूम गई बदराई।
कै संयोग बियोग बिथा में,
के आधान अबाई।
कैधों ईसुर छटा भोर की,
उगत भान की छाई।

नगन नगन = नग नग में, पियराई = पीलापन, मोपै = मुखपर, कैधों = या तो, तबक = वर्क, खाई = क्यारी के अर्थ में, छाँहरे= छाया में, बदराई=बदली, बिथा में = व्यथित हो, आधान = अवधान के अर्थ में, अबाई = अनेकों हैं, उगत = उदित होना, भान = सूरज के अर्थ में।

ईसुरी कहते हैं कि शरीर के रग-रग में एक नया सा पीलापन फैल गया है। प्रिय रजउ के मुख मंडल पर वही दीप्ति चमक रही है। मानो मुख पर सोने के वर्क चढ़ा दिए गए हैं या मुख पर केसर की क्यारी उग आई है अथवा घूँघट में छाया बैठ गई जिससे धूप नहीं लगने पाई अथवा बदली छा गई हो फिर संयोग-वियोग से व्यथित हो, अवधान यानी ध्यान सुधि के आने के कारण ऐसा हुआ है अथवा फिर वह उषाकालीन छटा है मानो सूर्योदय की स्वर्णिम पौ फूट रही है।

बूँदा रजउ माथैं चड़कैं,
लूटन लागौ सड़कैं।
बइ के उपर बैदीं दीनी,
सौने मइयाँ मड़कै।
दोरिन में हो निकर न पायें,
द्वार खोर हो कड़कै।
बीच लिलार वीर से बाँदे,
बंगालौ सौ पड़कै।
फागै कई रजउ की 'ईसुर'
एक-एक से बड़कै।

मइयाँ = में, मड़के = मण्डित कर, दोरिन = दरवाजों से, खोर = गली, कड़के = निकल कर, लिलार = माथा, वीर = तांत्रिक आत्माएँ, बंगालौ = बंगाल का मंत्र।

ईसुरी कहते हैं - वाह रे! बूँदा अर्थात् माथे की टिकुली तू रजउ के माथे पर चढ़ गया।

यानी रजउ ने सिर पर बूँदे का श्रृँगार क्या कर लिया। बूँदा सड़कें लूट रहा है। यानी सड़क पर आने–जाने वालों के दिलों पर कहर ढा रहा है। उसके भी ऊपर जो बेंदी पहनी हुई है, स्वर्ण मंडित हैं। ऐसी स्थिति में दरवाजे के सामने से भी कोई निकल नहीं सकता, द्वार–गली से होकर निकलना आसान नहीं है। मस्तक के मध्य में ऐसा प्रतीत होता है मानो तांत्रिक ने बलशाली आत्माओं को बंगाल के जादू द्वारा बाँधकर वश में कर लिया हो। रजउ के सन्दर्भ में भी ईसुरी ने ऐसी एक से एक बढ़कर रचनाएँ कही हैं।

विशेष :– ईसुरी की रचना परम्परा मौखिक रूप से ही विकसित हुई है वे कहते थे लोग याद करते थे।

बूँदा ना दै परम प्यारी,
अबै उमरिया बारी।
तुमखों छैला ऐसै डाटैं,
जैसै हिरन शिकारी।
छिन में भीतर छिन में बाहर,
छिन में चड़त अटारी।
'ईसुर' कात रजऊ के ऊपर,
डाँकौ परनैं भारी।

उमरिया = आयु, बारी = अपरिपक्क, छैला = युवा / रसिक, डाटैं = घात लगाने के अर्थ में।

ईसुरी कहते हैं प्रिय रजउ! तुम बूँदा न लगाओ अभी तुम्हारी कच्ची उम्र है। यदि रसिक युवक तुमको देख लेंगे तो ऐसे घेरकर घात लगाएँगे जैसे शिकारी हिरणी पर घात लगाता है। क्षण में तुम अन्दर जाती हो क्षण में बाहर और क्षण में अट्टालिका पर जा चढ़ती हो। यदि ऐसी ही गतिविधियाँ रही तो एक दिन रजउ के यौवन पर भयंकर डकैती पड़ेगी।

विशेष :– मुंशी अजमेरी जी का प्रेम का एक दादरा है– 'जुवन पै डाँके परे मोरी गुइँयाँ' रजउ के यौवन के उद्दीपन के लिए डाँका पड़ने की बात ईसुरी की विशिष्ट अभिव्यक्ति बन गई।

दुर बिन बुरइ लगत तीं मुइयाँ,
भलौ पैर लव गुइयाँ।

गाड़ी डाँड़ी जा मैं बैठी,
नई पुगरिया मइयाँ।
लैन लगी गालन के ऊपर,
मुतियन की झलकइयाँ।
रजउ रंगीली निकरीं 'ईसुर'
अकती खेलन खइयाँ।

दुर = नाक का एक बुन्देली आभूषण, बुरई = फीकी, तीं = थी, मुइयाँ = मुख, गुइयाँ = मीत, गाड़ी = उपयुक्त (ढीली नहीं), डाँड़ी = डंडी, नई = नई पर, पुंगरिया = नाक का आभूषण है, मइँयाँ = में, मुतियन = मोतियों, झलकइयाँ = झलक देने वाली, अकती = बुन्देलखण्ड का त्यौहार, खइयाँ = को / के लिये।

ईसुरी ने रजउ को पहले-पहल आकर्षक दुर नामक आभूषण नाक में पहिने देखा तो कहा - यह तुमने बहुत अच्छा किया जो दुर पहिन लिया, उसके बगैर मुख फीका-फीका सा लगता है। इस दुर की जो पुंगरिया है, उसके बीच डंडी छिद्र में ठीक बैठ गई है, अर्थात् ढीली नहीं है। इसीलिए कपोलों पर मोतियों की झलक दीप्तिमान हो रही है। ईसुरी कहते हैं - वास्तव में रजउ बहुत रंगीन तबियत की है जो आज अकती खेलने निकली हैं।

पैरे रजउ ने प्रान हरन के,
ककना कौमल करके।
बइयन पै बाजू बन्द बाँदे,
बिगरू संग बरन के।
छापैं, छरन बजुल्ला-छल्ला,
गजरा कैउ लरन के।
तकत तीर से लगत 'ईसुरी'
जे नग तराँ-तराँ के।

पैरे = पहिने, प्रान हरन के = प्राण हरने वाले, ककना = कंगन, बइयन = बाँहों में, बाजूबन्द, बिगरू, छापैं, छरन, बजुल्ला, छल्ला, गजरा = यह सभी आभूषणों के नाम हैं, कैउ = अनेकों, लरन = लड़ियों वाले, तकत = देखते हुए, तराँ-तराँ = प्रकार-प्रकार के।

ईसुरी कहते हैं - प्राण निकालने वाले सुन्दर कंगन रजउ ने अपने कोमल हाथों में पहने हैं। बाँहों में बाजूबन्द बँधे हैं। कई वर्ण के बिगरू हैं, छापें, छरन, बजुल्ला, छल्ला, गजरा आदि

अनेक आभूषण अनेक लड़ियों वाले हैं, जो देखने में तीर से लगते हैं, उसमें जड़े हुए रत्नों से तरह - तरह के रंगों की फूटने वाली रश्मियाँ मन मोह रही हैं।

पतरे सौने कैसे डोरा,
रजउ तुमाये पोरा।
बड़ी मुलाम पकरतन धरतन,
लग ना जाय मरोरा।
पैराउत में दइया-मइया,
दाबत परे ददोरा।
रतन भरे से भारी हो गए,
पैरन कंचन बोरा।
'ईसुर' कऊँ काँ देखे ऐसे,
नर-नारी के जोरा।

पोरा = शरीर के पोर-पोर के अर्थ में, मुलाम = कोमल, पकरतन = पकड़ने में, धरतन = रखने से, मरोरा = लचक पीड़ा, पैराउत में = पहनाते में, दइया - मइया = रुदन के शब्द विशेष, दाबत = दबाने पर, दरोरा = फफोले नुमा लाल चिह्न, बोरा = आभूषणों के भाग, जोरा = युगल।

ईसुरी अपनी नायिका रजउ की सुकमारिता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि प्रिय रजउ! तुम्हारी देह का पोर-पोर पतला मानो स्वर्णिम धागों जैसा है। पकड़ने में अति कोमल है, चलने-फिरने में डर लगता है, कही लचक न आ जाए, कुछ पहनाया जाए तो तुम दइया - मइया कह चीख पड़ती हो, मामूली दबाने से त्वचा पर लाल रंग के फफोले पड़ जाते हैं। फिर बहुमूल्य रत्न जड़े आभूषण अंगों में पहने हो उससे वे और भी भारी हो गए हैं। चलने में कठिनाई हो रही है। ऐसे भारी-भरकम गहने पहनो ही मत। ऐसे सुकमार नर-नारी के जोड़े कहीं किसी ने नहीं देखे होंगे, जैसी रजउ-ईसुरी की जोड़ी है।

नग-नग बने रजउ के नौने,
ऐसे की के हौने।
गाल नाक उर भोयँ चिबुक लग,
अँखियाँ करती टौने।
ग्रीवा, जुबन, पेट, कर, जाँगै,

सबही बहुत सलौने।
'ईसुर' कबै संग ले परबी
एकई पलंग बिछौने

नौने = सुन्दर, टौने = चंचलता के अर्थ में, सलौने = सुन्दर, परबी = लेटेंगे।

प्रिय रजउ के शरीर का अंग-प्रत्यंग बहुत सुन्दर है। ऐसे सुन्दर अंग और किसी के नहीं हो सकते हैं? कपोल, नासिका, भृकुटि, चिबुक के साथ-साथ नयनों की चंचलता देखने लायक है। ग्रीवा, उरोज, पेट, कर, जंघाएँ, सब ही बड़े सुगठित रसीले और लावण्यमयी हैं। कब वह दिन आएगा जब मैं प्रिय रजउ को लेकर एक ही बिस्तर पर शयन कर सकूँगा।

ठाँडी गुदनारी खों टेरे,
रजुआ बड़े सबेरे।
छूतन गात, रोम भये ठाँडे,
राधा उन तन हेरें।
धर दऔ सीस, सास की ओली,
सेत पुतरियाँ फेरें।
धीरे-धीरे गोद गुदनियाँ,
जेई लाड़ली मेरे।

ठाँडी = खड़ी हुई, गुदनारी = गोदना गोदने वाली, खों = को, टेरे = बुलाती है, छूतन = छूते ही, रोम = शरीर की रोम वाले, ठाँडे = खड़े होने के अर्थ में, उन तर = उनकी ओर, हेरें = देखती हैं, ओली = गोदी में, से पुतरियाँ = नयनों की श्वेत पुतलियाँ, फेरें = पलटने के अर्थ में, गुदनियाँ = गोदने वाली, जेई = यही मात्र।

रजउ बड़े सबेरे उठकर द्वार पर खड़ी हैं और गोदना गोदने वाली को पुकार रही हैं। ज्यों ही गुदनारी ने उसके शरीर को स्पर्श किया, उसके शरीर में रोंगटे खड़े हो गए फिर तो वह राधा की तरह उसी की ओर ताकती रह गई। अपना सिर उसने अपनी सासू माँ की गोदी में रख दिया, गोदने की पीड़ा से आँखों की पुतलियाँ फिर गईं। सासू माँ ने कहा - गोदने वाली धीरे-धीरे गोदो यह मेरी एकमात्र लाड़ली बहू है।

विशेष :- रचना ईसुरी की प्रेयसी रजउ के सन्दर्भ में है परन्तु बीच में गोदनारी की ओर ताकते हुए राधा का उल्लेख भी है। निश्चय ही यह कृष्ण लीला से प्रभावित थी। कृष्ण वेश बदलकर गोदने वाली बनकर राधा के पास गए थे। कदाचित् रजउ के नायक ने भी वही नाटक

किया हो, जिसके स्पर्श मात्र से ही रजउ को रोमांच हुआ, वह देखती ही रह गई अर्थात् पहचान गई। इसीलिए ईसुरी ने राधा का संकेत कर बात को स्पष्ट किया जान पड़ता है।

गुदना अब ना कबउँ गुदाबै,
रोकें रजुआ काबै।
मुख भऔ लाल रंज के मारें,
अँसुबा सोउ बुआबैं।
सास न ओली मूड़ पटकदव,
छोड़ देय जा चाबै।
बलहारी गुदनन की 'ईसुर'
फिर कै राम जिबाबै।

काबै = कहती है, रंज = दु:ख, ओली = गोदी में, जा चाबै = यह चाहती है, फिर कै = फिर से, जिबाबै= जीवित किया के अर्थ में।

गोदनों की पीड़ा से पीड़ित रजउ रो-रोकर कह रही है कि अब मैं कभी भी गोदना नहीं गुदवाऊँगी। दु:ख के कारण उसका मुख लाल हो गया है, आँसू बहा रही है। सासू माँ की गोदी में सिर पटक दिया है चाहती है कि यह गोदने वाली मुझे छोड़ दे। ऐसे गोदनों की बलिहारी है मानो राम ने ही पुन: जीवित कर दिया अर्थात् पीड़ा में प्राण ही निकल गए थे।

जाती पटियाँ पारै पानैं,
रजउ नजर लग जानैं।
कात दूर से तुम खाँ देखत,
हम खौं दे-दै तानें।
ऐसी हम अनरीत न देखी,
जैसी तुम हौ मानै।
'ईसुर' तोरी भरी खेप पै,
कितनउँ फिरैं दिमाने।

पटियाँ पारे = कंघी किए हुए, पानैं = पानी भरने के अर्थ में, दै-दै ताने = खींच-खींच देना। अनरीत = न करने वाली रीति के अर्थ में, भरी खेप = भरे हुए बर्तन पर बर्तन जो सिर पर रखें हो, कितनउँ = कितने भी, दिमाने = पागल हुए।

ईसुरी ने देखा तो कहा – रजउ कंघी चोटी करके सज–धजकर पनघट की ओर पानी भरने जा रही है, अवश्य उसे नजर लग जाएगी। दूर से देखकर लोग ताने मारने लगते हैं। ऐसी उल्टी रीति मैंने कहीं भी तो नहीं देखी, जैसी तुम मान बैठी हो। तुम जो भरे हुए बर्तन यानी पूर्ण यौवन सौन्दर्य लेकर निकलती हो, उस पर न जाने कितने लोग दिवाने होते हैं।

ना जा पटियाँ पारै पानैं,
रजउ नजर लग जानैं।
येकें यार खड़े दरवाजे,
येकें गावै तानैं।
ई बस्ती के लोग बुरे हैं,
बैन–भनेज नमानें।
'ईसुर' कात उमर है बारी,
हमैं कछू ना चानैं।

नजर = डीठ, येकें = एक तो, यार = रसिक युवक, नसानें = बिगाड़ना है, बारी = कच्ची, कछू = कुछ भी।

ईसुरी कहते हैं प्रिय रजउ! कंघी चोटी करके यानी सज–धजकर पानी भरने को मत जाओ नजर लग जाएगी। एक तो तुम्हें खींचकर अपने साथ ले जाने को तैयार है। इस बस्ती के लोग अच्छे नहीं है बहिन–भानजी तक को बिगाड़ते हैं। मैं तो कहता हूँ अभी तुम्हारी कच्ची उम्र है। अतः मुझे कोई अपेक्षा फिलहाल नहीं है।

नौनै नई नजर के मारैं,
राती रजउ हमारैं।
रोजउ – रोज झरइया गुनियाँ,
दस–दस बेराँ झारै।
मंत्र पड़ा कैं लट बंदबाई,
जंत्र गरें में डारै।
बिधना उदना अलफ बचाबै,
जिदना पटियाँ पारैं।

'ईसुर' रोजउँ रजउ के ऊपर,
राई नौन उतारै।

नजर के मारै = नजर लगने के कारण, राती = रहती है, हमारे = मेरे यहाँ, रोजउ = नित्य प्रति, झरइया = झाड़, फूँक करने वाले, गुनियाँ = ओझा, अलफ = मौत की घड़ी, जिदना = जिस दिन।

मेरे यहाँ रजउ की तबियत ठीक नहीं रहती नजर जो लग जाती है। घर में रोज-रोज झाड़-फूँक करने वाले ओझा दस-दस बार झाड़-फूँक करते हैं। मंत्र पढ़कर उसको लट बँधवाते हैं, भूत-प्रेत से बचने के लिए तावीज गले में पड़ा है। विधाता उस दिन इसकी अलें बचाए जिस दिन यह तेल कंघी कर सँवरती है। ईसुरी कहते हैं- रजउ के ऊपर से नित्य प्रति राई नौन उतारता हूँ जिससे नजर लगी हो तो निकल जाये।

विशेष :- अलफ बचाना, राई नौन उतारना जैसे लोक मुहावरों का सौन्दर्य अवलोकनीय है।

नइयाँ रजउ तुमारी सानी,
सब दुनियाँ हम छानी।
सिंगल दीप छान लऔ घर-घर,
ना पदमिनी दिखानी।
पूरब-पश्चिम उत्तर दखिखन,
खोज लई रजधानी।
रूप बंत जो तिरियाँ जग में,
ते भर सकतीं पानी।
बड़ भागी है ओइ 'ईसुरी'
तिनकी तुम ठकुरानी।

सानी = शान वाली, तुम्हारी जैसी के अर्थ में, छानी = देख फिरने के अर्थ में, तिरियाँ = स्त्रियाँ, सकतीं = सकती हैं, ओई = वहीं, तिनकी = जिसकी, ठकुरानी = ठाकुरों की बहू के अर्थ में।

ईसुरी कहते हैं - मैंने सारी दुनियाँ देख डाली है। प्रिय रजउ! तुम्हारे जैसी दूसरी नहीं दिखाई दी। सिंगलदीप (लंका) का घर-घर देख लेने पर भी तुम जैसी कोई एक सुंदर पद्मिनी स्त्री भी नहीं दिखाई दी। पूर्व से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक समस्त राजधानियों में भी जो रूपवती स्त्रियाँ संसार में हैं, वे सबकी सब तुम्हारे रूप के सम्मुख पानी भरती हैं। वह व्यक्ति भाग्यवान अवश्य है, जिसकी तुम ठकुराइन (बहू) बन गईं।

विशेष :- रजउ के लिए ईसुरी ने इस रचना की अंतिम पंक्ति में जिस संदर्भ से ठकुरानी शब्द प्रयोग किया है उसमें ईर्ष्या का भाव तो है ही साथ ही एक जाति का संकेत देकर यह भी प्रमाण उपस्थित किया है कि रजउ अवश्य ही ठाकुर जगजीत सिंह मुसाहिब जू के परिवार में शामिल हुई होगी। यह कल्पना मात्र नहीं है। यथार्थ कथा है।

दौरैं कड़ती रोज रजउआ,
हाती कैसौ छउआ।
छीता फली पैजनाँ पैरे,
होत जात अररौआ।
ककरिजिया धोती पै लटकै,
करदौनी कौ टौआ।
'ईसुर' गैल गली उड़ जातीं,
जैसे कारौ कौआ।

कड़ती = निकलती, रोज = नित्य प्रति, रजउआ = प्रिय रजउ, छउआ = बच्चा, छीता फली पैजनाँ = विशिष्ट प्रकार के बुन्देली पैजना जिनमें मक्का के भुट्टे जैसे दाने की आकृति होती है, अररौआ = पैजनों की अधिक आवाज के अर्थ में, ककरिजिया = रंग विशेष, करदौनी = किंकणि, टौआ = लटकने वाला झुमके नुमा भाग।

हाथी के बच्चे की तरह झूमती हुई प्रिय रजउ मेरे दरवाजे होकर नित्य प्रति निकलती है। छीताफली पैजने पहिने उनसे अर्राटे की आवाज निकलती है, ककरेजी रंग की साड़ी पर कटि किंकणि का एक भाग जब झूलता है, तब ऐसा लगता है मानो गली-गलियारों से काले रंग का काग उड़ गया है।

दोरैं पैर कड़ी नइ अंगिया,
बरौ हमै बैरगिया।
घूमत फिरै नसा के मारै,
हमै प्या दई भंगिया।
गैल चलत में दिखा परीं ती,
उनकी डेरी जंगिया।
'ईसुर' भये बाग के भौंरा,
रजउ भई फुलबगिया।

अंगिया = कंचुकी, बैरगिया = फकीर, प्या = पिलाना, भंगिया = भंग, डेरी = बाँयी, जंगिया = जंघा।

मुझे एक प्रकार से फकीर यानि वैरागी करके प्रिय रजउ मेरे द्वार से नई कंचुकी पहिन कर निकली है। मदमस्त घूमती फिर रही है मानो नशा हो, उसने मानो मुझे ही भंग पिला दी हो। मैंने राह चलते में उसकी बाईं जंघा (का फड़कना) देखी है। तबसे यही समझ लो मेरी रजउ फुलबगिया बन गई है और मैं (ईसुरी) उस बाग का भ्रमर बनकर मंडरा रहा हूँ।

विशेष :- संस्कृत काव्य में नायिका की बाँईं जंघा का फड़कना नायक के लिए शुभ शकुन माना गया है। यथा मेघदूत में कालिदास की नायिका-की भी जंघा फड़कने का संकेत है। उल्लेखनीय है कि अनपढ़ कहे जाने वाले ईसुरी की रचनाधर्मिता में यह शास्त्रीयता कैसे आ गई? एक प्रश्न।

दुर सै लगत लाड़लौ चैरा,
रजउ रंगीलौ पैरा।
लुर लुर परत कपोलन ऊपर,
सुन्दर आनन फैरा।
मजेदार मौतन के गुच्छा,
ठोड़ी ऊपर ठैरा।
हीरा लाल जड़े सर जामें,
मुख पर होत उजेरा।
'ईसुर' श्याम तनक न छोड़े,
नजर गई है भैरा।

दुर = नाक का आभूषण, लाड़लौ = दुलारा, चैरा = चेहरा/मुख, रंगीलौ = रंगीन, पैरा = पहनने के अर्थ में, लुर लुर = डोलने के अर्थ में, फैरा = फैलाव के अर्थ में, मौतन = मोतियों युक्त, ठोढ़ी = चिबुक स्थल, ठैरा = ठहरने के अर्थ में, उजेरा = पुकारा, भैरा = भूखों करने की दरिद्र स्थिति के अर्थ में।

दुर पहिनने से चेहरा बहुत सुन्दर लगता है। आज रजउ ने वही पहना है। वह कपोलों पर पड़ती हुई दुर मोतियों की सुन्दरता को और द्विगुणित कर रही है। उसमें झूलता मोतियों का गुच्छा चिबुक के ऊपर ठहर गया है। उसकी लड़ियों में उत्कृष्ट हीरे तथा लाल जड़े हैं, उसकी आभा भी मुख पर पड़ रही है। श्याम (राधा रूपी) रजउ को ऐसी स्थिति में तनिक भी नहीं छोड़ सकते हैं, उनकी दृष्टि रजउ के लिए भैरा गई है, यानी रजउ को देखे बिना ईसुरी एक पल भी नहीं रह सकते हैं।

दुर से नीकी लागै मुइयाँ,
कबै पैर लइ गुइयाँ।
डाड़ी है आड़ी है मौटी,
होत पुंगरिया नइयाँ,
दैन लगी मौतन की झुमकी,
ठोड़ी पै लुरकइयाँ।
टिक्का भरकैं हम ना हेरे
नजर लगै तुम खइयाँ।
'ईसुर' रजउ रंगीली निकरी,
अकती खेलन खईयाँ।

नीकी = सुन्दर, मुइयाँ = मुख, गुइयाँ = मित्र के अर्थ में, डाड़ी = दंडी, पुँगरियाँ = पोली डंडी के अर्थ में, मौतन = मोतियों की, झुमकी = घूमती आभा, लुरकइयाँ = लटकती सी, टिक्का = गौर से, हेरे = देखे, नजर लौं = डीठ गढ़ने के अर्थ में, रंगीली = रंगीन, अकती = एक त्यौहार, खइयाँ = के लिए।

इस भाव के कई पाठान्तर मिलते हैं उनमें से एक यह भी है कि – प्रिय रजउ तुम्हारा मुख दुर पहन लेने से सुन्दर लगता है। यह तुमने कब पहिन लिया है? इसकी डंडी आड़ी है कुछ मोटी भी है, यह पुंगरिया नुमा नहीं है अर्थात् नए फैशन की है। इसमें झूलती मोतियों की लड़ी घूमती हुई चिबुक स्थल पर लहर-लहर जाती हैं। मैंने गौर से नहीं देखा कि कहीं मेरी नजर न लग जाए। लेकिन तुम तो बड़ी रंगीन तबियत की निकली प्रिये! अकेली मिलने उद्यान में जा पहुँची।

जोते रजउ के मौं की जागैं,
चक चौंदी सी लागै।
कौंदन लगी बिजुरिया कैसी,
श्याम घटा के आगै।
सूरज अटा-छटा पै छूटे,
देखत ही रथ भागै।
कईं तीन सौ साठ 'ईसुरी'
रजउ - रजउ की फागै।

जोते = ज्योतियाँ, जागें = जगमगाने के अर्थ में, चक चौंदी = चकाचौंध, कौंदन = चमकने के अर्थ में।

ईसुरी अपनी नायिका रजउ की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि प्रिय रजउ का मुखमण्डल आभा युक्त है। उसमें ज्योतियाँ है जिससे चकाचौंध सी लगती है। जहाँ बिजलियाँ कौंध-कौंध जाती हैं, राधा रूपी रजउ की श्याम सलोनी रूपी छटा के सम्मुख जब वह अपनी अटारी पर खड़ी होती है तो उसकी छटा को देखकर सूर्य का रथ भाग खड़ा होता है। ऐसी सुन्दरतम रजउ की प्रशस्ति में मैंने (ईसुरी ने) तीन सौ साठ सरस रचनाएँ कही हैं।

विशेष :- रजउ विषयक बहुत सर्जना तो है परन्तु तीन सौ साठ दिन का एक वर्ष होता है ईसुरी का आशय यही है कि प्रत्येक ऋतु में नित्य प्रति पूरे वर्ष वह रजउ का ही स्मरण करता है।

देखौ रजुआ पटियाँ पारें,
सिर सब यार उघारै।
मौतिन माँग भरी सैंदुर से,
बेंदा देत बहारें।
ठाँडी हती टिकीं चौखट से,
सहजउँ अपयें दुआरें।
काम कमर में सर करबे खौ,
खोंसे दो तरबारें।
मानौं रूप-कनक कसबे खौं,
कनक कसौटी धारें।
सौने के गुम्मट पै 'ईसुर'
पंखा काग पसारें।

पटियाँ = केशों की व्यवस्थित स्थिति के अर्थ में, उघारें = नंगे सिर, हतीं = थी, सहजउँ = सहज, दुआरें = द्वार पर, खोंसे = खुसी हुई, कसबे खौं = परीक्षा करने को, कसौटी = निकष, धारें = धारण किये, गुम्मट = गुम्बज, पसारें = फैलाए।

ईसुरी की नायिका रजउ का नैसर्गिक चित्र इस रचना में उभरता है। मैंने रजउ को बालों में कंघी किए हुए देखा है, वह पूरा सिर उघाड़े थी। मोतियों युक्त सिन्दूर से उसकी माँग भरी थी, बेंदा की बहार का क्या कहना। अपने घर की चौखट से (गुमान भरी) टिकी हुई सहज ही द्वार पर खड़ी थी। तब उसकी बाँकी अदा देखने लायक थी। कामदेव की कटि पर वार करने हेतु ऐसा प्रतीत होता था मानो दो तलवारें कसकर खड़ी हैं। या फिर ऐसा समझो कि चोखे सोने की परख करने हेतु उसने सिर पर स्वर्ण-निकष धारण कर लिया है। ऐसा लगता है मानो स्वर्णिम गुम्बज पर काग ने अपने दोनों पंख फैला लिए हैं।

मुख पै मनके मोहन बारी,
गूदैं रजउ तुमारी।
नन्ही–नन्ही नौनी लगती,
कऊँ कऊँ कों टिपकारी।
शोभा दैन शीतला काढ़ी,
बिधना की बलिहारी।
सोही सौनै के तख्ता पै,
मनी लगा दइ कारी।
'ईसुर' सब दिन नौने जानो,
जिन देखी अंधियारी।

मोहन = मोहित के अर्थ में, गूंदें = चेचक के गहरे चिह्न, नौनी = लावण्यमयी सुन्दर, कउँ–कउँ= कहीं–कहीं, टिपकारी = बिन्दुओं जैसी, शीतला = माता (देवी) अर्थात् चेचक, काढ़ी = निकली, बिधना = ब्रह्मा, मनी = मणि, कारी = श्यामल, अंधयारी = अंधेरी।

रजउ को चेचक निकली होगी, उससे मुख पर चिह्न आ गए होंगे, ईसुरी को वह भी अच्छे लगे। मोहित करने हेतु मनपसन्द गुदे (चिन्ह) प्रिय रजउ तुम्हारे मुख की शोभा बढ़ा रहे हैं। कहीं–कहीं बिन्दियों के समान छोटी–छोटी सुन्दर लगती है, इसी शोभा को देने के लिए यह चेचक का प्रकोप हुआ। यही विधाता की बलिहारी है। स्वर्ण तख्त पर जैसे मणियाँ जड़ दी हैं। ईसुरी कहते हैं – सब दिन अच्छे हैं परन्तु वे क्या समझेंगे जिन्होंने मात्र अंधकार ही देखा हो।

जौ मौ रजउ लाड़ली तोरो,
भऔ खिलौना मोरौ।
देखत में खबसूरत लागै,
लगत थतोलत कोरौ।
गालन पै हैं परीं गलुरियाँ,
नई लछारी दौरों।
'ईसुर' जब से जा छब देखी,
हमै कछू न औरौ।

जौमौ = यह मुख, लाड़ली = दुलारी, तोरौ = तुम्हारा, भऔ = हुआ, मोरौ = मेरा, लगत = प्रतीत होने के अर्थ में, थतोलत = टटोलने के अर्थ में, कोरौ = मात्र, गलुरियाँ = कपोलों की लाली के अर्थ में, लछारी = लच्छेदार या लोचदार, दौरो = दुहारा, छब = छवि, औरौ = सुझा।

प्रिय रजउ तुम्हारा सुन्दर सा प्यारा मुख ही मेरा खिलौना है। देखने में अति सुन्दर लगता है। प्रतीत होता है उसे मात्र टटोलता ही रहूँ। कपोलों पर हल्की सी लाली है। शरीर लचकीला है, पर दुहरा यानी मोटा नहीं है। मैंने जब से यह छवि देखी है मुझे और कुछ भी नहीं सूझता है।

खातीं रइँ हलके सै पानन,
रचौ रजउ कौ आनन।
दाँतन की अरनाई आरी,
ज्यों अनार के दानन।
हँसतन चमक जात बिजली सी,
पीर होत है प्रानन।
मोइपै कई फाग ईसुरी
लगी गंगिया जानन।

रई = रहीं, हल्के से = बाल्यावस्था से ही, पानन = पान को, दाँतन = दन्तावलि, अरनाई = रची हुई/ लाली के अर्थ में, आरी = उपमा, दानन = दोनों जैसे, गंगिया = एक नर्तकी का नाम विशेष।

रजउ के न मिलने के गम में ईसुरी बेहद व्यथित हैं, अब वे बेड़नियों में ही बने रहते थे। एक गंगिया नाम की बेड़नी अर्थात् नर्तकी सजी–धजी गुमान भरी विशेष चंचल थी। उसे स्वयं पर भ्रम था कि ईसुरी मुझ पर मोहित हैं। मुझे ही इंगित करके रचना लिखते हैं। तब ईसुरी ने इस रचना के माध्यम से स्थिति स्पष्ट की है – जो अपने बाल्यकाल से ही पान चबाती रही है, उस रजउ का मुख सदैव लाल दीखता है। उसकी दन्तावलि में जो लालिमा पैठ गई है, उसकी उपमा तो पके अनार के दानों से ही दी जा सकती है। उसके हँसने पर बिजली सी चमक जाती है, तब मेरे प्राण एक अजीब सी पीड़ा अनुभव करते हैं। परन्तु यह कमबख्त गंगिया नर्तकी समझती है कि यह रचनाएँ मैं उसे इंगित करके रचता हूँ। अर्थात् ईसुरी के सम्पर्क में आने वाली प्रत्येक नारी ही अपने को रजउ समझने का भ्रम पालती है।

झलकी रजउ की देखौ ज्वानी,
चलतीं चाल दिमानी।
सोखी भरी आँख के ऊपर,
लाल गाल भए जानी।

तन में जोर काम कौ इतनौ,
जुड़त नजर मुसकानी।
कछू दिनन में काउ यार सो,
परनें बात जवानी।
हलकीं देखी हतीं ईसुरी
हो गइँ भौत स्यानी।

दिमानी = मस्ती भरी, सोखी = मस्ती भरी लालिमा, जोर = प्रभाव के अर्थ में, जुड़त = मिलते ही, हलकी = बालापन में, भौत स्यानी = बहुत बड़ी अर्थात् परिपक्व आयु की।

ईसुरी अपनी प्रिय रजउ के चालढाल में हुए परिवर्तन को देखकर कहते हैं कि – रजउ का यौवन देखो, स्पष्ट झलकने लगा है, देखते नहीं – उसकी चाल में एक मतवाली मस्ती आ गई है। आँखों की पलकों में एक शोखी का भार युक्त रंग दिखाई दे रहा है, कपोलों पर लाली दौड़ रही है। देह में कामदेव का इतना सामंजस्य बैठ गया है कि निगाह मिलते ही वह काम की मुस्कराहट दे जाती है ऐसा ही रहा तो कुछ ही दिन में किसी रसिक प्रिय से जवानी की बात के वारे-न्यारे ही हो जाएँगे। ईसुरी कहते हैं – मैंने इसको जरा सी देखी थी, इतनी जल्दी इतनी बड़ी हो गई है, भरोसा ही नहीं हो रहा है।

आइ रजउ पै भरदर ज्वानी,
दुनियाँ देख ललानी।
हमसे फिरत उड़नियाँ ऊपर,
छतरी सी धर तानी।
जो मिलजात गैल – खोरन में,
देखत ही मुस्कानी।
ईसुर कइयक फिरत पियासे,
कबै मिलै जौ पानी।

भरदर = पूरी तरह से, ललानी = लालायित है, हमसे = उठती के अर्थ में, उड़नियाँ ऊपर = ओढ़नी के ऊपर ही ऊपर, छतरी = छाता, धर तानी = खीच दी हो, खोरन में = गलियों में, कइयक = अनेकों, पियासे = प्यासे।

ईसुरी रजउ के यौवन के सन्दर्भ में कहते हैं – अब तो प्रिय रजउ पर यौवन आ गया है। सारा संसार उसके लिए लालायित है। ओढ़नी का पल्लू उठा सा रहता है, मानो ऊपर ही ऊपर

छाता तान लिया हो अर्थात् उरोज के उठाव ओढ़नी में से साफ-साफ दिखाई देने लगे हैं। यदि गली कूचों में वह मिल जाती है तो देखते ही मुस्करा देती है। इसकी काम पिपासा में अनेकों प्यासे भटक रहे हैं। उनमें ईसुरी प्रथम क्रम पर है, उन्हें कब वह पानी पीने को मिलेगा।

जानीं हमनै तुमनै सबनै,
जुबन रजउ कैं जमनैं,
सौने कलस कुरेदन कैसे,
छाती भौंरा भुमनैं।
जोर करै जब इनकी ज्वानी,
की के थामैं थमनै।
निकरत बजै चैन कीं बंशी,
कइयक पंछी रमनै।
जा दिन दृगन देखबीं 'ईसुर'
दान जु देबी बमनै।

जमने = विकसित होने के अर्थ में, सोने कलस = स्वर्णिम कलश, कुरेदन = खराद के अर्थ में, छाती = छातियों पर, थामे = पकड़े, थमने = स्थिर होंगे, कइयक = अनेकों, रमने = लीन हो जायेंगे, दिखान = आँखों से, देखबी = देखूँगा, देबी = दूँगा, बमने = ब्राह्मण को।

यह तो मैंने, तुमने बल्कि सभी ने जान लिया कि एक दिन रजउ के उरोज विकसित होंगे। तराशे हुए स्वर्ण कलश के समान इन उरोजों पर भ्रमर मंडराने लगेंगे, उरोजों के अनेक युवक प्रशंसक हो जायेंगे। यौवन का जोर यानी यौवनावस्था का मद, तब किसी के रोके नहीं रुकेगा। फिर वह जहाँ से निकलेगी, वहाँ चैन की वंशी ही बजेगी। यानी भरपूर नैन सुख मिलेगा। जहाँ अनेक पंछी मंडरायेंगे अर्थात् रसिक युवक वहाँ जमा होने लगेंगे। ईसुरी कहते हैं– यह घटना मैं जिस दिन भी अपनी आँखों से देख लूँगा उस दिन ब्राह्मणों को दान दूँगा।

छातीं करें जुवन नै डेरा,
जस करबे की बेरा।
कैउ एक तीरा हो ढूँके।
कैउ देत भौंतेरा।
प्रान प्यारी रजउ के ऊपर,

कैसे कैं हतफेरा।
लगलो आन गरे से गुइयाँ,
मन नइ मानत मेरा।
गदिया दैकैं ईसुर मसकैं,
मिठया कैसे पेरा।

डेरा = पड़ाव जमाने के अर्थ में, जस = यश, बेरा = समय, तीरा = किसी ओर के अर्थ में, भौतेरा = बहुत दिशाओं से, हत फेरा = हाथ मारने के अर्थ में, गुइयाँ = प्रीत, गदिया = हाथ दे देना, मसके = खूब खाएँ, मिठया = हलवाई, पेरा = पेड़े।

शरीर के अग्र भाग पर यौवन ने पड़ाव डालना शुरू कर दिया है। यही यश कमा लेने का समय है। जवानी का सौन्दर्य दिखाकर वाहवाही लूटने का समय है। उसके सौन्दर्य की झलक पाने के लिये कोई एक दिशा में होकर ताकता है तो कोई कई-कई चक्कर लगाते हैं। सभी सोचने लगे हैं कि इस पर कैसे हाथ मारा जाए अर्थात् इसे कैसे प्राप्त किया जाए। मेरा मन अब मेरे वश में नहीं है, अत: मेरे मीत अब तो तुम आओ और मेरे गले से ही लग जाओ। ताकि मैं तुम्हारे यौवन को उसी तरह दबाऊँ जैसे मिठया गद्‌दी से दबाकर पेड़ा बनाता है।

नौने पनमेसुर नै दए हैं,
जुबन रजउ के नए हैं।
अउअल माल मायके मइयाँ,
मनके हरन बनये हैं।
निरखत का उनके संग सोये,
स्वाद सासरे लय हैं।
सौ-सौ बैर सिपारिस कर रय,
सबई नै अच्छे कये हैं।
भागबान बे मानुस 'ईसुर'
जिनके हातन गए हैं।

दये हैं = प्रदान किया है, भए हैं = हुए हैं अर्थात् विकसित हुए हैं, अउअल = प्रथम श्रेणी के अर्थ में, मायके = पीहर, मइयाँ = में, हरन = हरने वाले, बनये = बनाए गए हैं, निरखत = देखते हैं, सासरे = ससुराल में/पिया के घर में, सिपारिस = अनुशंसा, कये हैं = कहा है, भागवान = भाग्यशाली।

परमेश्वर ने प्रिय सुन्दर रजउ को आकर्षक उरोज दिए हैं। भगवान् ने स्त्रियों को यह प्रथम श्रेणी का माल पीहर में ही मन को हरण करने के लिए बनाया हैं। इन्हें देखना क्या है इनके साथ

सोने से ही उनका रसास्वाद पिय गृह में लिया। सौ-सौ बार सिफारिश की जा रही है, सभी ने इन्हें बहुत अच्छा कहा है। ईसुरी कहते हैं – वह व्यक्ति सचमुच ही भाग्यशाली है जिनके हाथों में यह उरोज पहुँचे हैं।

जे भुस हुयें जुवन की टौनें,
रजउ गये सै गौनें।
ऐके रये उपासे इनपै,
बैठ करै दातौनै।
ऐके रये फरारै इनपै,
बरसन खाबै रौने,
रात-रात भर बैठें काड़ी,
पा इन सुख सै सौनै।
जा दुरदसा भइ सासरैं कइये,
'ईसुर' घर-घर हौनै।

भुस = भूसा अर्थात् अस्त-व्यस्त होने के अर्थ में, हुयें = हो जाएगी, टौने = नुकीला पार्श्व भाग, एकै = एक तो, उपासे = व्रत लेकर बैठे, दातौने = दांत साफ करना, फरारै = फलाहारी के अर्थ में, बरसन = वर्षों तक, रौने = फीके, काड़ी = व्यतीत की, सासरे = ससुराल में पिया के घर।

रजउ जब अपनी दूसरी विदा अर्थात् गौने में जाएगी तब उसके इन उरोजों के नुकीले शीर्ष भाग भूसे की भाँति चूर-चूर अर्थात् अस्त-व्यस्त हो जाएँगे फिर वह आकर्षण नहीं होगा। क्योंकि उसके स्वामी उसके लिये निराहार व्रत लिए बैठे हैं, उन्हें खाने के लिये वे दाँत माँजकर बैठे हैं। मात्र फलाहार व्रत लिए इनके लिए वर्षों बीत गये पर नमक अर्थात् लावण्य का स्वाद अब तक नहीं जाना। इस स्वर्णिम सुख पाने के लिए रात जागते हुए बैठे हैं। अतः पिया के घर जाने पर यही दुर्दशा होना है। जो एक सहज बात है, घर-घर में ऐसा ही होता है।

सपरन रोजउँ जात तला में,
बैंदी धरैं डबा में।
जब-कब रजुआ जात अकेली,
जब-कब जात झला में।
छूटे केश भुजन के ऊपर,

उड़–उड़ जात हबा में।
ईसुर कात छरकतीं रइयो,
लै ना भगै दगा में।

सपरन = स्नान हेतु, रोजउ = नित्य प्रति, तला = सरोवर, डब = डिब्बा के अर्थ में, भला = झुण्ड में, छरकती = छड़कती, दगा = धोका।

ईसुरी अपनी नायिका की पूरी नाकाबन्दी उसकी समस्त गतिविधियों पर दृष्टि रखे हुए हैं। वह कब कहाँ–कहाँ आती जाती है। ईसुरी को सब पता है। उन्हें मालूम है – रजउ अपनी बेंदी डिब्बे में रखकर नित्य प्रति सरोवर में स्नान हेतु जाती है। कभी–कभी सखियों के साथ झुण्ड में जाती है तो कभी अकेली भी चली जाती है। (स्नान कर लौटने की छवि ऐसी है।) केश राशि खुली हुई भुजाओं पर लहरा रही है जो वायु के झकोरों से उड़ती भली दीखती है। ईसुरी आगाह करते हुए कहते हैं प्रिय छड़कती रहना अर्थात् सावधान रहना कहीं कोई धोखे से तुम्हें ले न भागें अर्थात् तुम्हारा कहीं अपहरण न हो जाय।

जौ लौं रये जुबनबा नौनें,
रजउ गईं ना गौनें।
फूट जाय नीचे की पलिया,
टूट जांय दउ टौनै।
जौन बस्तु पै गरबी फिरतीं,
ऊकी कुगतें हौनें।
अबै बिसाल छाल हो जैहै,
रैहें आँतर कौनें।
कात 'ईसुरी' बात मान लो,
इनखाँ परहैं ढौनें।

जौलों = जब तक, रये = रहे, पलिया = पलड़े की आकृति वाला गोल भाग / ढक्कन, गरवी = गर्व से भरी, अबै = अभी, बिसाल = विशाल, छाल = त्वचा के अर्थ में, रैहै = रहेगा, आंतर = अन्तर, ढोने = ढोना।

तभी तक उरोज बहुत कसे हुए अच्छे है, जब तक रजउ अपने पिय के घर दूसरी विदा में गई नहीं। नीचे का ढक्कन ही जब खुल गया अर्थात् जब वे रजस्वला भी हो जायेंगी, उरोजों की नोंके, ढील पड़ जायेंगी। जिस वस्तु पर वे गर्व करती हैं, उसकी दुर्गति होगी यह मालूम न था। अभी बहुत पके हैं बाद में मात्र छाला रह जायेंगे और वे चोली में यहाँ–वहाँ दबे रहेंगे। ईसुरी कहते हैं मेरी बात मान लो इन उरोजों को बोझ की तरह ढोना पड़ेगा। विविध अनुभूतियाँ हैं।

हमखाँ लागौ दिव्य दुआरौ,
रानी रजउ तुमारौ।
मरजी होय हमइँ कर लेवें,
रातन रात गुजारौ।
आँगूं कुआ दुगइ दालानें,
देत पारुआ पारौ।
साजे रूख देख कें हमने,
डेरा इतइँ उतारौ।
'ईसुर' उतै अस्त भऔ सूरज,
इतै पगन सों हारौ।

दिव्य दुआरौ = भव्य द्वार, मरजी = इच्छा, गुजारौ = गुजर बसर, दुगई-दालानें = बराण्डेनुमा पोर्च, पारुआ = पहरे वाली स्त्रियाँ, पारों = गस्त/बहरा, साजे = अच्छे के अर्थ में, रुख = वृक्ष, डेरा, अपनी घर गृहस्थी, इतइँ = यहीं पर, उतै = वहाँ, पगन सों = पैरों से।

ईसुरी आश्रय की टोह में भटकते हुए जब बगौरा पहुँचे तो वहाँ की हवेली देखकर (आबादी बेगम) उसकी मालकिन में ही अपनी रजउ के दर्शन किए और कहा - मुझे तुम्हारे घर का यह भव्य द्वार बहुत अच्छा लगा। तुम घर की रानी हो, जिसे मैं रजउ के रूप में ही देखता हूँ। यदि आपत्ति न हो तो मैं भी यहाँ रेन-बसेरा कर लूँ, यहाँ सभी सुविधाएँ हैं। आगे कुँआ है, पोर्च और दालानें बनी हुई हैं, पहरे वाले सिपाही पहरा देते हैं। पुष्ट वृक्ष देखकर ही मैंने अपना डेरा डालने का विचार किया है। क्योंकि अब मेरा भी अन्तिम समय है अर्थात् सूर्य अस्त होने को है। मैं भी चलते-चलते अर्थात् समाज से संघर्ष करते थक चुका हूँ।

विशेष :- निश्चय ही यथार्थ रजउ ग्राम धौर्रा में थी। उसके वियोग में ईसुरी की अन्त में यही दशा हुई कि संसार में सभी में वे रजउ देखते थे, आदमियों में ही नहीं मन्दिर की मूर्तियों तक में। तब बगौरा पहुँचकर यदि अपनी नई आश्रयदाता आबादी बेगम से आश्रय की याचना हेतु यदि उन्होंने रजउ का सम्बोधन उसे दिया जो एक स्वाभाविक बात है।

दिखवा दई रोशनी छब की,
ऐसी कुदरत रब की।
कानौ बरनै बुद्ध बिचारी,
काम करै ना कब की।
सिनसारी में मनो आन के,

सरग–तरइयाँ टबकी।
रजउ के मौपै दिपत 'ईसुरी'
मातावन की भबकी।

दिखवा दई = दिखा दी, रोशनी = प्रकाश–आभा के अर्थ में, छब = छवि, कुदरत = प्रकृति, रब = परमेश्वर के अर्थ में, कानौ = कहाँ तक, बरनै = वर्णन करें, विचारी = बेचारी, संसारी = दुनियादारी के अर्थ में, सरग तरैया = स्वर्ग के तारे अर्थात् अति दुर्लभ वस्तु के अर्थ में, टबकी = टपकने / बरसने के अर्थ में, मौपे = मुख मण्डल, मातावन = चेचक के चिह्न, भबकी = भव्यता के अनुसार अर्थ में।

रजउ ने अपने मुख मण्डल की आभा जो प्रकृति ने या परमेश्वर ने उसे भरपूर दी है, आज मुझे दिखा दी है। उसका वर्णन मैं कहाँ तक करुँ? मेरी बुद्धि बेचारी कब से बेकाम हो गई अर्थात् वर्णन करना उसके वश की बात नहीं है। मुख अवर्णनीय है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस संसार में वह पृथ्वी की वस्तु नहीं है, निश्चय ही कोई स्वर्ग का दुर्लभ तारा है, जो किसी प्रकार यहाँ टपक पड़ा है। इसके मुख पर चेचक के (दाग) चिह्न भी कितने सुन्दर दीप्तिमान हो रहे हैं।

नेहा करौ जान लैबै खों,
रजुआ जी खैबै खों।
उते हते बे नैन कसाई,
बिना पौख दैबै खों।
इतै दुक्ख दूनौ दैदे कैं,
देह करी जैबै खों।
हम तो भये बदनाम 'ईसुरी'
दुनियाँ के कैबै खौ।

नेहा = प्यार, करौ = किया है, जान = प्राण, जी खैबै खों = जान खाने के लिए, उतै = वहाँ, नैन कसाई = नयन रूपी कसाई, बिना पौख = बगैर पुष्टि में, जैबै खों = जीने के लिए, कैबै खों = कहने को।

रजउ ने मेरी जान खाने और प्राण लेने के लिए ही तो मुझसे प्यार किया है। वहाँ तो उसके नयन ही कसाई थे (जो प्राण ले लेते थे) जो बगैर पुष्टि के ही दुख देने को तैयार हैं। वहाँ दुख दोगुना दे–देकर मेरी देह भी अब इस योग्य बना दी कि मानो अब वह जाने को ही है। ईसुरी कहते हैं – दुनिया के कहने के लिए मैं तो अब बदनाम हो गया हूँ।

विशेष :- दुनिया के कैबे खों से ईसुरी का संकेत संसार के प्रेमी युगल यथा लैला – मजनू , शीरी–फरहाद, सोनी–महिवाल की ही भाँति रजउ–ईसुरी के रूप में प्रसिद्ध हो जाने से है।

हम पै इक मुख जात न बरनी,
रजउ तुमाई करनी।
जाँ ठाँड़ीं हो जातीं जाके,
दिपन लगत बाघरनी।
हते नक्षत्र नइ पुक्खन में,
नई भद्रा नइ भरनी।
आईं हो औतार माँग भव,
तीन ताप की हरनी।
धन्न तुमाये भाग 'ईसुरी'
कैउ करी बैतरनी।

वरनी = वर्णन के अर्थ में, करनी = क्रियाकलाप के अर्थ में, दिपन = प्रतीत होने के अर्थ में, बाघरनी = वाघिनी, पुक्ख = पुष्य नक्षत्र जो श्रेष्ठ होता है, नई = झुक गई, भव = संसार में, तीन ताप = (वात,पित्त, कफ) त्रयताप, कैउ करी = अनेकों के लिए बनी।

ईसुरी कहते हैं कि एक तो मुझसे प्रिय रजउ तुम्हारी करनी वर्णित नहीं हो पा रही है। तुम अवर्णनीय तुम्हारी करनी भी वर्णनातीत है। जहाँ भी तुम खड़ी होती हो, वाघिनी सी प्रतीत होती है जैसे खा ही जाओगी। अब तक कुछ अशुभ ग्रह नक्षत्र ही थे, जैसे भद्रा और भरनी। लेकिन पुष्य नक्षत्र में इस संसार में तुम अवतरित हुई हो। तीनों ताप हरने के लिये ईसुरी अपने आप को संबोधित करके कहते हैं तुम्हारे भाग्य धन्य हैं, रजउ से मिलकर कई वैतरणी पार कर ली हैं।

नेहा कौन थराइ निबाये,
गुनागार हो आये।
माँ की कूंखन मानस कौ तन,
इन के हेत लिबाये।
अपनी आँख यार खों देखत,
दरद न जात दबाये।
हड्डी डार उजा दई उनके,
स्वारथ बीस लगाये।
रजउ हात ऊ जनम 'ईसुरी'
हम करिया तिल खाये।

थराइ = अहसान के अर्थ में, निबाये = निभाने के अर्थ में, गुनागार = अपराधी, मानस कौ तन = मानस शरीर, हेत लिवाए = लिए गए, हड्डी डार = हड्डी डालने के अर्थ में, उजा दई = उकसा दिया / बता दिया, ऊ जनम = उस जन्म में, करिया = काले।

यदि तुमने मुझसे प्यार किया तो क्या कोई अहसान के कारण किया जो मुझे अपराधी होना पड़ा। मुख से निकली वराह एवं मनुष्य शरीर इन्हीं के लिए तो है। अपनी दृष्टि सदैव प्रेमी को देखती है। दर्द छिपाए नहीं छिपता है। मानो एक हड्डी डालकर तुमने उन्हें उकसा दिया तो बीसों स्वार्थी लोग मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ गए। लगता है मैंने पिछले जन्म में रजउ के हाथ से काले तिल खाए थे।

विशेष :- कौन भराई, दरद न जात दबाए, हड्डी डार में श्लेष है एक तो कबाव में हड्डी का मुहावरा, दूसरे हड्डी का टुकड़ा डालकर कुत्तों को उत्तेजित करना के अर्थ में दोनों ही मुहावरे हैं। काले तिल खाकर आना आदि मुहावरे अवलोकनीय हैं।

हैंसा परे आगले मेरे,
रजउ नैंन दो तेरे।
जाँ हम होबै मई खाँ हैरो,
अन्त जाँय ना फेरे।
जब देखो तब हमखों देखौ,
दिन में साँज सबेरे।
ईसुर चित्त चलन ना पाये,
कभउँ दायनैं-डेरे।

हैंसा = हिस्से में, आगले = अभी से है, मई खाँ = उसी ओर को, दायनै डेरे = दायें - बाँयें।

प्रिय रजउ! तेरे दोनों सुन्दर नयन पहले से ही (पूर्व जन्म से) मेरे ही हिस्से में आए हैं। जहाँ मैं होता हूँ, मुझे ही देखती हो, दूसरी ओर देखा ही नहीं जाता। जब देखा तब साँझ सबेरे मात्र मुझे ही तो तुम देखती हो। तुम्हारा चित्त यानी कि मन कभी दाँये बाँये यानी डँवाडोल नहीं होता है।

करतन जान लेत संसारी,
रजउ तुम्हारी यारी।

हेरत जातीं लौट-लौट के
जौं नौ नजर पसारी।
खेलौ चाय खेल कर पारे,
लुक के लगत सिकारी।
मछरी बनी रात जल भीतर,
को जल पियत निहारी।
'ईसुर' मरद समझ ना पावैं,
प्रेम मयी हो नारी।

करतन = करते हुए, यारी = दोस्ती को, हेरत = देखती हुई, लौट-लौट के = पलट-पलटकर, पसारी = फैलती है, पारे = लिटाने के अर्थ में, लुकके = छिपकर, सिकारी = आखेटक, निहारी = देखते हुए, मरद = युवकों के अर्थ में।

प्रिय रजउ! तुम्हारी दोस्ती को संसार समझ जाता है अर्थात् तुम्हारा किया प्यार प्रकट हो जाता है, छिपा नहीं रह पाता। पलट-पलटकर तुम देखती हो, जहाँ तक तुम्हारी दृष्टि दौड़ती है। तुम्हारा स्वभाव भी खूब है। जिन्हें खिलाना चाहती हो, उसे खेल - खिलाकर धराशायी कर देती हो। जब छिपती हो तो शिकारी सी प्रतीत होती हो। मछली जल के भीतर रहती है। कौन है जो पानी देखकर पीता है। तुम्हें कोई पुरुष समझ नहीं पाता कि तुम एक प्रेम से पगी अर्थात् प्रेम से ओतप्रोत स्त्री हो।

होवै बसकतया बसती कौ,
रजउ कभउँ ना नीकौ।
साँसी कये भरै ना हूँका,
कूका देत बदी कौ।
अपने मतलब ही की सोचै,
करैं रहे मन फीकौ।
चका मूँड के लेत 'ईसुरी'
भेद देत घर ही कौ।

बसकतया = बाहर का आदमी गाँव में रहने वाला के अर्थ में, हूँका = स्वीकारोक्ति, ना नीकौ = बुराई का, कूका देत = शोर करता है, मूँड के = मूर्ख बना देने के अर्थ में।

प्रिय रजउ! बस्ती में जो दूसरे गाँव का रहने वाला होता है, वह कभी भी अच्छा आदमी

नहीं होता। सच कहने पर या सही बात पर तो वह मौन रहता है, जबकि बुरी बात को वह चीख चीखकर कहने को तैयार होता है। मात्र अपने ही मतलब की बात सोचता है और सदैव अपना मन फीका यानि खोटा ही रखता है। पर वह अपनी बात को बना लेता है। वह गाँव वाले या घर वाले को मूर्ख बनाकर उसका भेद ले लेता है और दूसरों को दे देता है।

कैसे मिले पेट की थायें,
मों से बिना बतायें।
धीरे-धीरे मेर होत है,
ऐंगर आयें जायें।
मन मिल जात मजा में प्यारी,
आँख न आँख मिलायें।
कात 'ईसुरी' सुनौ रजउआ,
कालौ हम समजायें।

थायें = थाह, मों से = मुख से, ऐंगर = निकट, मजा में = आनन्द में, का लौ = कहाँ तक।

ईसुरी का कहना है कि मुख से स्पष्ट कहे बगैर किसी के पेट की थाह अर्थात् अन्तर्मन की बात जानना कठिन है। धीरे-धीरे निकट आने-जाने से मेल-जोल बढ़ता है। जब मन मिल जाता है, तब वह आनन्द से प्यासी आँखें आँखों में मिलाने लगती है। तभी यह सम्भव है। प्रिय रजउ! यह प्यार करने का व्याकरण मैं तुम्हें कहाँ तक समझाऊँ!

रजुआ तनक न चलती नैकें,
नैन पछारी फैकें।
पतरी कम्मर बनी लबोदर,
बायँ हात खों पैकें।
सकरी खोर रोज को कड़बौ,
पुरा भरे खों छैकें
'ईसुर' कौनउ भूँकौ ढूँड़ौ
अबै आए हम जैकें।

तनक = जरा भी, नैकें = नभकर, झुककर, पछारी = पीछे को, फैकें = फेकते हैं/प्रक्षेपण करती है,

लबोदर = लचकदार के अर्थ में (पतली), सकरी = संकीर्ण, खोर = गली, कड़बौ = निकलना, पुरा = मुहल्ला, छैके = रोके हुए हैं, ढूँड़ौ= खोजो, जैकें = भोजन करके।

नायिका के गर्व गुमान की ओर इंगित करते हुए ईसुरी कहते हैं कि – प्रिय रजउ कभी भी झुककर तो चलती ही नहीं है अर्थात् गुमानभरी है आगे चलती है देखती पीछे है। कटि क्षीण लचकदार है। बाँए हाथ को हिलाकर चलने से सँकरी गली में इसको निकलने के लिये मार्ग शेष नहीं रहता। गली तो पहले से ही संकीर्ण है, जहाँ से नित्य प्रति वह निकलती है तो मुहल्ले भर का रास्ता रूक जाता है। तुम किसी भूखे को अर्थात् उसे खोजो जिसे चाह हो, मैं तो पूर्ण रूपेण तृप्त बैठा हूँ। मुझ पर डोरे क्यों डालती हो।

कइयक हो गए छैल दिमाने,
रजउ तुमाये लानै।
भोर-भोर लौ डरे खोर में,
घर के जान सियानै।
दोउ जोर कुआ पै ठाँड़े
जब तुम जाती पानै।
गुन कर करकैं गुनियाँ हारे,
का बैरिन से कानै।
'ईसुर' कात खोल दए प्यारी,
मंत्र तुमाये लानै।

कइयक = अनेकों, छैल = रसिक, दिमाने = दीवाने, तुमाये = तुम्हारे, सियाने = समझदार, दोई जोर = सुबह-शाम पानै = पानी भरने को, गुनियाँ = झाड़-फूँक वाले, ओझा, बैरिन = शत्रु, कानै = कहना।

प्रिय रजउ! तुम्हारे लिए अनेकों रसिक युवक दीवाने हो गए हैं सबेरा हो जाने तक तुम्हारी गलियों में पड़े रहते हैं। घर के समझदार ही इस बात को समझते हैं। सुबह-शाम दोनों समय वे कुएँ पर जा बैठते हैं। जब तुम पानी भरने जाती हो। तुम्हारी वय और उसकी स्थिति ही शत्रु बनी है। उसे क्या कहा जा सकता है? झाड़-फूँककर ओझा लोग भी हार गए हैं। मैंने तो तुम्हारे लिए वशीकरण मंत्र छोड़ दिये हैं।

जब से रजउ से नैन लगाये,
बड़े कसाले खाये।

तस्वन तरै फलक पर आये,
उपनये पावन धाये।
भए अदमरे प्रेम के बस में,
पिरान निकर न पाये।
ककरा गड़े कसक गए काँटे,
सेरन खून बहाये।
'ईसुर' भौत भुगतना भुगती,
तउ न भले कहाये।

कसाले = कष्ट के अर्थ में, तस्वन = पैर के टखना, फलक = फफोले, उपनये = नंगे पैरों, धाये = दौड़े, अदमरे = अधमरा, पिरान = प्राण, ककरा = कंकड़, गड़े = चुभने के अर्थ में, सेरन = कई सेर (आज के माप में कई किलोग्राम), भुगतना = तकलीफें, भुगती = सहन की, तउ = तो भी।

ईसुरी कहते हैं – जबसे मैंने प्रिय रजउ से नैन लगाए हैं, तब से बहुत ही परेशानियों से जूझना पड़ रहा है। पैरों के टखनों के नीचे देखो फफोले पड़ गए, क्योंकि उसके लिये नंगे पैरों ही दौड़ता रहा। इस प्रेम–व्यापार के कारण सच पूछो तो मैं अधमरा ही हो गया। मेरे प्राण भी तो नहीं निकलते। पैरों में कंकड़ और काँटे भी चुभ गए, कई किलोग्राम रक्त बहा चुका हूँ। मैंने बहुत कष्ट उठाये हैं। तो भी मैं तुम्हारी दृष्टि में भला नहीं हो सका – खेद है।

बाँदै प्रान हरन के बाने,
रजुआ नैन निसाने।
बूँदा पै बुँदकी केसर की,
बान मेंनके ताने।
ई नैंनन के बचे बचन सै,
बूँदा खौं जी खाने।
तीन टिकट से बिकट 'ईसुरी'
कैसे जात निबाने।

बाँदै = बाँध लिए, बाने = तीर, निसाने = लक्ष्य भेदी, बूँदा = माथे की बिन्दी, बुँदकी = बिन्दु, बान मेंनके = कामदेव का तीर, बचे बचन = बच गए, जी = प्राण, निबाने = निर्वाह।

प्रिय रजउ के दोनों नयन मानों प्राण लेने के लिए धनुष पर चढ़े तीर की तरह हैं। मस्तक की बिन्दी के मध्य केशर की बुँदकी तो ऐसी प्रतीत हो रही है मानो कामदेव ने अपना तीर साध

लिया है। यदि किसी प्रकार इन नयनों की मार से बच भी गए तो यह मस्तक का बूँदा प्राण खा जाएगा। इस प्रकार कोई कहाँ तक बचेगा क्योंकि मैं तो अकेला एक हूँ जबकि ये तीन टिकट महाविकट हैं।

विशेष :- तीन टिकट महाविकट की लोकोक्ति का सटीक प्रयोग।

कड़तन दईं नैन तरबारें।
रजुआ अपने दुआरें।
आउत देख लये अकता से,
ठाँड़ी हती उबारे।
दुबरी दसा देय की हो गई,
धसत चली गइँ धारें।
जर-जर भऔ करेजौ मेरौ,
समरत नइँ समारें।
'ईसुर' इनकौ कोउ इतैना
की सै करें पुकारें।

अकता से = पहले से ही, उबारे = वार करने की स्थिति में, दुबरी = दुर्बल, दसा = स्थिति, देय = देह, धसत = पैठने के अर्थ में, समरत = सम्हलता, समारें = सम्हालने से।

रजउ ने अपने दरवाजे पर खड़ी होकर दोनों नयनों की तलवारों से वार कर दिया। उसने मुझे आता हुआ पहले से ही देख लिया था, अत: वार करने के लिये तैयार खड़ी थी। मेरा शरीर और भी दुर्बल हो गया, उसकी नयन तलवार की धार मुझमें पैठती ही चली गई। मेरा कलेजा विदीर्ण हो गया। मेरी सुनने वाला यहाँ कौन है? किसे पुकारूँ कि आकर मेरी रक्षा करो।

सूजी इन आँखन अलबेली,
जग में रजउ अकेली।
भरकें मूँठ गुलाल धन्न बे,
जिनके ऊपर मेली।
भागवान् जिनने पिचकारी,
रजुआ ऊपर ठेली।

ईमइना की आउन हमपै,
झिली मस्त के झेली।
अबकी बेरे उननै 'ईसुर'
फाग सासरें खेली।

सूजी = दिखाई दी, अलबेली = अनोखी, जग में = संसार में, धन्न बे = धन्य हैं वे, मेली = छोड़ी, ईमइना = इस माह, आउन = आना, झिली = सहन हुई, मस्त के झेली = मस्ती की झोक में, बेरे = बार, सासरें = पिया के घर।

संसार में ऐसी कहीं भी नहीं दिखाई दी जैसी मात्र यह अकेली रजउ है अर्थात् रजउ निरूपमेय है। वही धन्य है जिसके ऊपर रजउ ने एक मुट्ठी गुलाल दे मारी होगी। वह बेशक भाग्यशाली है, जिसने रजउ पर पिचकारी दे मारी होगी। इस माह का आना मेरे लिए एक मस्ती की बहार झेलने के लिए था, परन्तु खेद कि इस बार रजउ ने होली अपने ब्याहता पति के घर खेली है।

बेमन हो गये गाँव भरे सै,
रजुअन मेर करे सै।
लगन लगी जा छूटत नइयाँ,
कौनऊँ जतन करेसै।
भए बदनाम तुमारे घर में,
तुमरे संग परे सै।
दिल की दुबदा छोड़ौ प्यारी,
लगलो आन गरे सै।
हमरी तुमरी प्रीत 'ईसुरी',
टूटै एक मरे सै।

बेमन = मन से उतरने के अर्थ में, गाँव भरे सै = गाँव भर से, मेर करे सै = प्यार करने के कारण, जतन = प्रत्यक्ष, संग परोसे = साथ पड़ने से, दुबदा = दुविधा, लगलो = लग जाओ, गरे से = गले से।

मैंने रजउ से प्यार किया है इसी कारण पूरे गाँव भर के लोगों के मन से मैं उतर गया। लेकिन जो लगन लग जाती है, वह कहीं छूटती है, कदापि नहीं। कोई भी कितना ही प्रयत्न करे लगन नहीं छूटती। मैं तो तुम्हारे ही घर में तुम्हारे साथ रहने के कारण बदनाम हूँ। इसलिए तुम दिल से दुविधा को निकाल दो। प्रिय! आकर मेरे गले से लग जाओ। मेरी और तुम्हारी प्रीति मृत्यु के पूर्व टूट भी तो नहीं सकती।

अपने खोलौ रजउ किबारे,
हो आये भुन्सारे।
दीपक जोत मलीनी भइ अब
हो गए लो उजयारे।
गैल-गली अपने दोरै हो,
कड़न लगे गैलारे।
मुरगा बाँग दइ, कइ बेराँ,
पपिया मोर पुकारे।
'ईसुर' कात भोर के होतन,
झरन लगे सब द्वारे।

किबारे = किवाड़, भुन्सारे = सबेरा, जोत = ज्योति, मलीन = मलिन, उजयारे = प्रकाश, गैलारे = राहगीर, बाँग दइ = बोलने के अर्थ में, कइ बेराँ = अनेकों बार, पपिया = पपीहा/पापी भी (दोनों अर्थ में), झरन = बुहारने के अर्थ में।

रात्रि में रजउ का दरस-परस नहीं होता होगा। अत: चकई-चकवे की भाँति ईसुरी पल-पल को जैसे-तैसे काटकर रात व्यतीत करते हुए प्रात: काल की प्रतीक्षा में रतजगा करते रहे होंगे कहा भी है- 'अंखियाँ जब काउ सै लगती सब सब रातन जगतीं।' इस आधार पर प्रात: होते ही रजउ की एक ललक पाने के लिये उसके द्वार पर पहुँच जाते हैं। एक झलक रजउ के किवाड़े कब खुलें और कब उसके दर्शन हों। इसी सन्दर्भ में यह रचना है - प्रात:काल हो चुका है। प्रिय रजउ अपने किवाड़ खोलो। दीपक की ज्योति मलिन हो गई है। अब तो यत्र-तत्र प्रकाश फैल चुका है। गली-मोहल्लों में आने-जाने वाले राहगीर भी निकलने लगे हैं, सुना नहीं, मुर्गे ने कितनी बार बाँग दी है। पपीहा और मोर ने भी पुकारकर सबेरा होने की घोषणा कर दी है। सबेरा होते ही सभी लोग अपना-अपना द्वार बुहारने लगे हैं तुम भी उठो न?

मानस होत बड़ी करनी से,
रजुआ कइये तीसे।
नेकी - बदी पुन्न - परमारथ,
भक्ति-भजन होयजी से।
अपने जान गुमान न करिये,
लरिये नहीं किसी से।

वे ऊँचे हो जात कात हैं,
नीचे नबैं सभी से।
फूँक-फूँक पग धरत 'ईसुरी',
स्याने कहै इसी से।

मानस = मनुष्य, करनी = कर्मफल के अर्थ में, तीसे = इसलिए, नेकी बदी = भलाई-बुराई, पुन्न-परमारथ = पुण्य एवं परमार्थ, जीसे = जिसके कारण, गुमान = गर्व, लरिये = झगड़ने के अर्थ में, कात है = कहते हैं, नबै = नम्र होकर चलें, स्याने = गुरुजन।

प्रिय रजउ! तुमसे मैं इसीलिए कहता हूँ कि मनुष्य योनि पूर्व जन्म के भारी कर्मफल के कारण ही मिलती है। अतः भलाई-बुराई, पुण्य-परमार्थ, भक्ति-भजन, इसी से होता है। अपने समय में कभी भी गर्व न करना और न किसी से झगड़ना चाहिए। वही ऊँचे होते हैं, जो नीचे की ओर नभ कर चलते हैं अर्थात् नम्र होते हैं। गुरुजनों का कहना है कि फूँक-फूँककर कदम रखना चाहिए।

कैसीं भईं हीन मन प्यारी,
होकें रजउ हमारी।
लगियो ना भरमाय काउके,
ना करियो भैमारी।
हमनै अबै आज लौ तुमखाँ,
दुबदा नईं बिचारी।
'ईसुर' कात तुमाई दम पै,
जनम जिन्दगी हारी।

मन-प्यारी = मन से प्रिय, भरमाय = बहकावे में, भैमारी = भय खाने के अर्थ में, दुबदा = दुविधा।

प्रिय रजउ! तुम मेरी होकर के भी अपने मन में हीनता का भाव क्यों ला रही हो। तुम किसी के बहकावे में मत आ जाना, न ही डरने की आवश्यकता है। मैंने आज तक तुम्हारे प्रति दुविधा का विचार नहीं माना। मेरे मन में तुम्हारे लिये जरा सी भी शंका-कुशंका नहीं है, बल्कि मात्र तुम्हारे ही दम पर मैंने अपना जन्म अपना जीवन तुम पर हार दिया है, न्यौछावर कर दिया है।

दुरलभ हो जानै जे खोरें
यार बैठ लो दोरें।
दादुर मीन किलोले कररए,
जहाँ किलक रइँ मोरें।
बिछरन परत फटत है छाती,
बहै नैन की कोरें।
'ईसुर' कात प्रान जीबे हैं,
रजउ तुम्हारे दोरें।

दुरलभ = दुर्लभ, यार = प्रिये, किलोलैं = क्रीड़ाएँ, किलक रइँ = बोल रही हैं, कोरें = किनारें।

प्रिय रजउ! मेरी मीत, तनिक द्वार पर ही बैठ लो। कौन जाने कल मिलें या न मिलें। तुम्हारे बिना फिर यह गली-मोहल्ला सूना हो जाएगा। देखो, कितना सुहावना मौसम है। मेंढक-मछली प्रसन्नता से यहाँ-वहाँ क्रीड़ाएँ करते हैं। एक तरफ मयूर बोल रहे हैं। तुमसे बिछोह होने के कारण मेरी छाती फटी जा रही है। नयन की कोरों से आँसू बह रहे हैं। मेरी प्राण प्रिय रजउ! तुम्हारे ही द्वार की चौखट पर जीना-मरना है अर्थात् जब तुम्ही न रहोगी तो मुझे भी निर्जीव ही समझ लेना।

अजमा लैने तौ पैलाँ सें,
मेर करौ तौ जाँसें।
जो हम जान जाँय जगता से,
तौ ना जाते गाँसें।
जे बातै अब चित्त फटे की,
हमै तुमारी आँसें।
'ईसुर' कात अब लगीं उठाउन,
रजउ दूद में फाँसें।

अजमा लैने तौ = अजमा लेना था, पैलाँ से = पहले से ही, जीसें = जहाँ से, अगता = आगे से ही, गाँसें = फँसता, चित्त फटे की = मन फटने की, आँसें = खलती हैं, फाँसे = दूध में भी फाँस।

प्रिय रजउ! जहाँ तुमने प्यार किया, उसे तुम्हें पहले से ही आजमा लेना चाहिए था। यदि मैं जान पाता तो पहले से ही तुम्हारे प्यार के चक्कर में फँस न गया होता। जो तुम अब यह मन

फटने की बातें कर रही हो, यह मुझे खल रही हैं। आश्चर्य है तुम अब दूध में ही फाँस निकालने लगी हो। अर्थात् मैं तो शुद्ध दूध की तरह ही तुम्हें प्यार करता हूँ।

विशेष :- दूध में फाँस होना मुहावरा अवलोकनीय है।

लय रजउ की खिदमतगारी,
याही बिरत हमारी।
प्यास लगे जब कब कर देबैं,
हाजर जल की झारी।
साँझ - सबेरे सबरेइ गाबैं,
सुख खौ सेज सँवारी।
देबै खबा पान कीं बिरियाँ,
कर याबै जब ब्यारी।
तरबा झारन लगै 'ईसुरी'
सो गइँ राजदुलारी।

खिदमतगारी = सेवा का व्रत, बिरत = व्रत, बिरियाँ = बीड़ा, ब्यारी = रात्रि का भोजन, तरबा = पैर के तलवे।

मेरा यही व्रत है कि मैंने रजउ की सेवा का प्रण लिया है। उसे प्यास लगे तो मैं जल भरकर झारी उपस्थित कर दूँ। उसकी सुख - सुविधा के लिये सुबह से शाम तक खुशी-खुशी गाते हुए उसके सोने तक सेवा में लगा रहूँ। उसकी सेज सजा दूँ। जब वह रात्रि में व्यालू कर ले तब मैं उसकी सेवा में पान का बीड़ा लगाकर दे दूँ। उसके तलवे साफ कर दूँ। ईसुरी कहते हैं- ऐसा करते-करते मेरी राजदुलारी आराम से सो जाय। बस मैं यही चाहता हूँ।

विशेष :- बुन्देलखण्ड में प्रत्येक ठाकुर को राजा का सहज सम्बोधन प्रचलित है। यदि रजउ ठाकुर पुत्री न होती तो उसे राजदुलारी की संज्ञा न मिलती।

देखौ रजउ लगीं भरमायें,
मानत नई मनायें।
भूलौ नई देख धन - जोबन,
जै हौ ना लदयायें।

भाई बन्द औ कुटुम कबीला,
कोऊ काम न आयें।
'ईसुर' कात जो बख्त बुरौहै,
समज जाब समजायें।

भरमायें = बहकावे में, मनायें = मनाने पर भी, धन-जोबन = यौवन रूपी सम्पत्ति, लदयायें = बोझ लेकर, बख्त = वक्त / समय, समजायें = समझाने से।

देख रहा हूँ कि प्रिय रजउ! बहकावे में आ गई है। मनाने पर भी मानती नहीं है। यह यौवन धन देखकर गर्व मत करो। यह थोड़े दिन रहने वाला है। यह सदैव लदा नहीं रहने वाला है। इसे कब तक लेकर फिरोगी। भाई-बन्द, कुटुम्ब कबीला यह कोई भी काम नहीं आयेंगे। मैं कहता हूँ यह समय बुरा है, समझ जाओ, मैं समझा रहा हूँ।

मानुस बड़े भाग से होबै,
रजउ छोड़ दो लौबै।
मिलके चाल चलौ दुनिया में,
सब सै राख घरोबै।
जिन्दगानी कौ कौन भरोसौ,
जुबन गये पै रोबै।
भरे तला में सपरत 'ईसुर'
नंगौ कहा निचोबै।

लौबे = लोभ को, घरोबै = घर घरोने के अर्थ में, भरोसौ = विश्वास, जुबन = यौवन, तला = सरोवर।

प्रिय रजउ! तुम लोभ लालच छोड़ो, मनुष्य योनि बड़े भाग्य से मिलती है। संसार में मिलकर ही चलना चाहिए, सभी से घरोबा रखना चाहिए। जीवन का क्या विश्वास? यौवन चला जाने पर रोना ही पड़ता है। फिर भरे हुए सरोवर में स्नान करने वाला क्या निचोड़ेगा जब उसके तन पर वस्त्र ही न होगा अर्थात् नारी के लिए नर वस्त्र के समान है, यह उसका आवरण-समाज की पुरूष प्रधानता सिद्ध करता है।

मानुस हौनै कै ना हौनैं।
रजउ बोललो नौनैं।

जियत – जियत लौ सबके नाते,
मरै घरी भर रौनैं।
कितनी बेराँ प्रान छोड़ दए,
की के संगै कौनैं?
'ईसुर' हात लगैना हड़िया,
आबै सीत टटौनैं।

नौनै = अच्छी तरह से, बेराँ = समय, कौने = किसने, हड़िया = हंडी, सीत टटौनै = एक दाना टटोलना।

प्रिय रजउ! कौन जाने फिर मनुष्य योनि मिलती है कि नहीं। अत: आओ प्रेम से थोड़ी देर अच्छा भला बोल लें, बात कर लें। नाते-रिश्ते केवल जीवित रहने तक के ही होते हैं। मरने पर घड़ी दो घड़ी रोकर वे समाप्त जाते हैं। ऐसा कब-कब हुआ है जब किसी के मरने पर किसी ने प्राण त्याग दिये हों। हंडी को हाथ नहीं लगाया जाता, मात्र उसका एक कण ही टटोलकर अनुमान लगाया जाता है।

विशेष :- सीत टटौनैं मुहावरा।

की-की हुऔ हमाईं होकैं,
रजउ न रइयो धोकैं।
बातन मानौ तौ समझाबी,
नातर हातन ठोकैं।
जो बतकाब और से कर हों,
धरना देय संगोकैं।
चार जनन की आँखन हेरो,
हम काहे ना रोकैं।
'ईसुर' कात बैठ ना रइयो,
प्रान पराये खोकैं।

कीकी = किसकी, हुऔ = होगी, हमाई = मेरी, होकैं = होकर, धोकैं = धोखे, बातन = बातों से ही, समझाबी = समझाऊँगा, नातर = अथवा, बतकाय = वार्तालाप, और से = अन्य से, संगोकै= साथ होकर के अर्थ में, जनन = लोगों, आँखन हेरौ = आँखों की ओर देखो।

प्रिय रजउ! तुम धोखे में न रहना, मेरी हो चुकने के बाद तुम फिर किसकी हो सकेगी?

बातों से मान सको तो मैं समझा दूँगा, अन्यथा हाथों से पिटाई लगाऊँगा। तुम किसी और से बात करोगी तो तुम्हें पूरी तरह मारूँगा। समाज देखता है। मैं क्यों न तुम्हें इसके लिए वर्जित कर दूँ? इसीलिए तो कहता हूँ कि दूसरे के प्राण लेकर बैठे मत रह जाना। वर्ना तुम्हारे प्रेम की बहुत हानि हो जायेगी।

कइये का काहू सै कानैं,
कय सैं का मिल जानैं।
मौटी राखौ पुरत ना उगरैं,
का बदनाम बखानैं।
जो तुम कई रजउ हम पइयाँ,
हमै आय गम खानैं।
चौथाँ मोर गिरत धरनी में,
लेबै तीन उड़ानैं।
गए थैला की चोट 'ईसुरी'
बनियाँ कौ मन जानैं।

कानैं = कहना है, उगरैं = उघड़ जाए, बखानैं = वर्णन करें, हम पइयाँ = मेरी ओर, आय = पड़ेगा, गमखाने = सन्तोष कर रुक जाने के अर्थ में, चौथाँ = चौथी बार, गए = जाने के अर्थ में, थैला = धन की थैली।

कहो, किसी से क्या कहना है फिर कहने से मुझे भला क्या मिलने वाला है। कुछ मोटी तह ही रखी जाए ताकि वह उघड़ न जाए। तब बदनाम करने वाला क्या बखान कर पाएगा? प्रिय रजउ! तुमने जो मेरे बारे में कह दिया है तो मुझे गमखाकर रह जाना है। क्योंकि मयूर तीन उड़ाने तो उड़ लेता है, चौथी बार धराशायी हो जाता है। रुपयों से भरी थैली जाने का आघात तो केवल बनिये का मन ही जान सकता है, अन्य क्या जाने?

विशेष :- उड़ान भरना, गए थैले की चोट आदि मुहावरे विशेष हैं।

सब कोउ रजउ खौं देखन दौरें,
रजउ न देखत औरैं।
रजउ लौ मनुआ धन कौ बारौ,

राबै एकई ठौरें।
मानस की के तान-बान है,
दउतन के मन बौरें।
तुमे सनेही ऐसे चाहत,
जौं चाहत शिव-गौरें।
हाल दिनन में जासे 'ईसुर'
बसती बसत बगौरें।

दौरें = दौड़ पड़े, औरें = अन्य को, बारौ = छोटा सा, ठौरे = जगह पर, तान-बान = ताने-बाने के अर्थ में, बौरें = बौरा जाएँ, गौरें = गौरी से, हाल दिनन में = वर्तमान में, बगौरें = ग्राम बगौरा में।

सभी लोग रजउ को देखने हेतु आतुर होकर दौड़ रहे हैं, जबकि वह अन्य किसी को भी नहीं देखती। रजउ का मन धन वाला है अर्थात् समृद्ध है, बड़ा है। अतः एक ही जगह में (ईसुरी मात्र में) स्थिर है। मनुष्य पशुतन ऐसे ताने-बाने से है? जिसे पाने के लिये देवताओं तक का मन बौरा जाता है। तुम्हें स्नेह करने वाले ऐसे चाहते हैं जैसे शिव जी पार्वती को चाहते हैं। अतः वर्तमान में तो ईसुरी ऐसे ही बगौरा नाम के ग्राम में ही हैं।

देखीं रजउ काउ नै नइयाँ,
कौन बरन तन मइयाँ।
काँ तौ उनकी रहस-रास है,
काँ दए जनम गुसइयाँ।
पैलऊँ भेंट हमई से ना भइ,
सो कृपा हम पइयाँ।
'ईसुर' हमने रजुआ फागें,
करदइँ मुलकन मइयाँ।

बरन = वर्ण की, तन मइयाँ = देह में, रहस - रास = रहने का ठिया-ठिकाना, पइयाँ = पर, मुलकन = देश विदेश में।

रजउ के दीवाने तो सभी हैं, लेकिन उसको किसी ने भी नहीं देखा कि वह शरीर से किस वर्ण की है? कहाँ तो वह रहती है और कहाँ उसने जन्म लिया है? कई लोग नहीं जानते। जब मुझसे ही उसकी पहले भेंट नहीं हुई थी, लेकिन अब मैं उसका बड़ा कृपापात्र रहा हूँ। मैंने रजउ पर हजारों फागें लिखकर उसे देश-विदेशों में सर्वत्र प्रसिद्ध और व्याप्त कर दिया है।

विशेष :- यह रचना सम्भवत: उस समय की है जब वे बघौरा में रहते थे, उनकी रचना धर्मिता के कारण रजउ बोलचाल का मुहावरा बनकर सभी की जबान पर चढ़ गई थी तो ईसुरी को रजउ की बदनामी पर हँसी आई होगी और यह रचना लिखी होगी। उन्हें सामाजिक घृणा से बचाने के लिये। क्योंकि रजउ का विवाह हो गया होगा। अध्यात्म की सीढ़ी तक पहुँचकर भी उनकी रचनाधर्मिता बदल गई होगी। क्योंकि सभी सन्त शिरोमणि प्रथम प्रीत के गलियारे से होकर ही अध्यात्म की चौखट तक पहुँचे हैं।

नइयाँ रजउ काउ कै घरमें,
बिरथाँ कोउ भरमें।
सब में है औ सबसे न्यारी,
सब ठौरन में घरमें।
को कय अलख - खलक कीं बातें,
लखी न जाय नजर में।
'ईसुर' गिरधर रयँ राधे में,
राधा रयँ गिरधर में।

बिरथा = व्यर्थ ही, भरमें = भ्रम पालता है, ठौरन = स्थानों की, अलख-खलक = लोक-परलोक, नजर में = दृष्टि में।

रजउ कहीं भी किसी के भी घर में नहीं है, व्यर्थ ही कोई भ्रम पालता है। वह तो सभी में है और सबसे पृथक भी है, सभी स्थानों में सभी घरों में व्याप्त है। लोक-परलोक की कौन कहे? दृष्टि से देखी भी नहीं जा सकती है। क्योंकि ईसुरी ने देख लिया कि वह उसमें समा चुकी है, यथा गिरधर राधा में और राधा गिरधर में समाकर एक राधेश्याम हो गए हैं।

विशेष :- ईसुरी के अन्तिम जीवन में लिखी यह रचना व्यक्तिगत रजउ को उठाकर चिन्तन के धरातल पर समष्टिगत एवं अलौकिक बनाकर ईसुरी को सूफी की स्थिति में पहुँचा देती है।

हम खाँ मिल गइ रजउ बिरानी,
नई किसी की जानी।
को जानै की के घर की है,

कब की फिरत हिरानी।
धन्न भाग अपने हम मानें,
अन्तस पीर सिरानी।
'ईसुर' सिद्ध वही बन पाता,
जिसने दुनिया छानीं।

बिरानी = पराई, जानी = समझी हुई, हिरानी = खोई हुई, सिरानी = शीतल हुई, छानीं = समझ ली खोज ली।

जिस रजउ के वियोग में ईसुरी जीवन भर फकीर बने रहे, अन्त में उसे पारलौकिक रूप में प्राप्त करके वे कहते हैं कि – वह पराई रजउ मुझे आज मिल गई है, हममें से किसी ने भी नहीं जान पाया अर्थात् लोग अभी भी उसी व्यक्तिगत हाड़मास की रजउ को ही सब कुछ मान रहे हैं कौन जाने कि वह किसके घर की है? कब से खोई हुई है? परन्तु मैं तो अपने अहोभाग्य समझता हूँ कि मेरे अन्तस की पीड़ा शान्त हो गई। सिद्धि इसी को कहते हैं अर्थात् सिद्ध वही है, जिसने इस संसार को छान लिया अर्थात् इसकी निस्सारता को समझ लिया है।

दुइ कर परमेसुर से जोरें,
करौ कृपा की कोरें।
हमना हुयें दिखइया देखें,
हित अनहित के ठौरें।
उदना जान परै अन्तस की,
जिदना अँसुआ ढोरें।
बँदा के ठठरी करै रमानी,
रजउ कोद की खोरें।
बना चौतरा देय चतुर्भुज,
इतनी खातर मोरें।
होबै कउँ पै मरै ईसुरी
किलेदार के दोरें।

दिखइया = दर्शक, ठौरें = जगहें, उदना = उस दिन, ढौरें = बहाएँ, खोरें = गलियों की ओर, चौतरा = समाधि, चतुर्भुज = धौर्रा ग्राम निवासी चतुर्भुज किलेदार जिन्होंने ठाकुर साहब द्वारा निष्कासित होने पर ईसुरी को शरण दी थी, खातर = हेतु।

मैं दोनों हाथ परमेश्वर से जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि मुझ पर कृपा दृष्टि कीजिए। मैं न रहूँगा, लेकिन दर्शक देखेंगे हित और अहित की जगहों में मुझ ईसुरी को और मेरे अन्तस् की बात तभी प्रकट होगी, जिस दिन सभी की आँखों से आँसू बहेंगे। मेरी शवयात्रा निकलेगी, रजउ की तरफ से होकर जाने वाली गली से। भाई चतुर्भुज मेरे लिए मेरी एक समाधि वहाँ जरूर बनवा देना, मुझे विश्वास है। अन्त में मेरी यही एक विनय है कि मैं कहीं भी जाऊँ, कहीं भी होऊँ, परन्तु अन्त में आकर किलेदार साहब के द्वार पर अर्थात् ग्राम धौर्रा में ही मरूँ।

विशेष :- ईसुरी की इस नसीहत की आज तक पूर्ति नहीं हुई खेद।

हाय-हाय कर हा-हा ईसुर,
इन नैनन से हारे।

श्रृँगार खंड - पाँच

नेंन सेंन की

मारे नैना तिरछे करकैं,
कोयन काजर भर कैं।
जे हत्यारे नैक ना मानैं,
घायल होत नजर कैं।
बड़े-बड़े रनधीर सिपाई,
बिदते सामू पर कैं।
'ईसुर' कयँ का लगै कूर कैं,
पूरे लगै सुगर कैं।

कोयन = पलकों के किनारे, नैक = तनिक, रनधीर = योद्धा, सिपाई = सिपाही, बिदते = फँस जाते हैं, पर कैं = पड़ करके, कूर = कूड़-मूर्ख के अर्थ में, सुगर = सुघड़ अर्थात् रसिक के अर्थ में।

काजल लगी पलकों की कोर से देखकर आँखें ऐसा धारदार तेज वार करती हैं जिससे अच्छे-अच्छे घायल हो जाते हैं। यह नयन कटाक्ष बहुत तेज धार वाला है। दृष्टिपात मात्र से लोगों को आहत कर देते हैं। बड़े-बड़े योद्धा, सिपाही भी उनके सम्मुख घायल हो जाते हैं, बच नहीं पाते। हाँ, कोई कोरस व्यक्ति हो उस पर क्या प्रभाव पड़ेगा? पूरा प्रभाव तो सुघड़ जानते हैं अर्थात् रसिकजनों पर ही होता है।

हम खों नैनन की संगीनै,
हँस मारी प्यारी नै।
पूरी लगी दूर लौ दूखै,
नइयाँ घाव उद्दीनै।

आये नई मलम–पट्टी पैं,
दवा काय खों कीनै।
गये हकीम हार सब हिम्मत,
डारत बनी न सीनै।
हाय 'ईसुरी' दरद न जानै,
जौ लौ जग में जीनै।

संगीन = बन्दूक, दूखै = दर्द देती हैं, घाव = व्रूण, उद्दीने = ऊपरी, मलम = मरहम, दवा = चिकित्सा के अर्थ में वैसे दवा का अर्थ औषधि है, न सीने = हृदय में के अर्थ में।

मुझ पर अपनी नयन रूपी संगीनों से प्रिया ने वार किया है। पूरी तरह से उनका लक्ष्य ठिकाने पर जा लगा दूर तक पीड़ा दे गया। परन्तु घाव ऊपरी नहीं है अर्थात् अन्दरूनी है। उसके लिए आकर मरहम–पट्टी भी नहीं की अर्थात् दर्द न हो सहलाया भी नहीं, परन्तु इसका इलाज ही किसलिए किया जाए, वह तो ऐसा रोग है कि हकीम भी अपनी हिकमत भूल जाते हैं, बेचारे की हिम्मत चुक जाती है। वे दवाई देना तक भूल जाते हैं। हाय इस दर्द का जाना सम्भव नहीं जब तक जीवन है तब तक यह दर्द ठीक इसी प्रकार रहने वाला है।

नैना काजर में भर मारे,
कर घूँगट से न्यारे।
तन की तुबक सुरत की दारू,
नजर लोइया डारे।
मन मुस्कान जपा दई रंजक,
भौंर कली के पारे।
धरकैं असल अनीके ऊपर,
छुरा हात के ढारे।
हाय हाय कर गिरे 'ईसुरी',
गिरतन आय तमारे।

भर मारे = भरकर मारे, न्यारे = पृथक, तुबक = ताप यानि बन्दूक के अर्थ में, सुरत = यादों के अर्थ में, दारू = बारूद, लोइया = लोहे की वह छड़ जिससे भरतल बन्दूक भरी जाती है, जपा दई = झाँसा देने के अर्थ में, रंजक = दुख की स्थिति में, भौंर कली = भ्रमर की कलियाँ अर्थात् आँख की पुतली, पारे = अंकित किए, अनी = नुकीली केन्द्र बिन्दु, छुरा = खंजर, ढारे = ढाले हुए ढलवा, तमारे = गस्त आ जाने

के अर्थ में।

नयनों को काजल युक्त करके उन्हें घूँघट से बाहर फेंक करके करारी चोट की है। शरीर मानो बन्दूक है। बारूद भरने वाली लोहे की छड़ का काम नयन करते हैं जिससे यह प्राण लेवा बारूद अच्छी तरह पैठ जाए। हृदय की मुस्कान ने रंजगम को छुपा दिया है जागृत रहकर भ्रमर कलिका में पड़ गए अर्थात् पुतलियाँ रूपी भ्रमर आँख रूपी कली में पड़ गए हैं। ऐसी अनी के ऊपर धार धरकर हाथ के ढले हुए खंजर भी हैं तब आह करके गिरे-गिरते ही होश उड़ गये अर्थात् गस्त आ गया।

नैना तरबारन सें पैनें,
करे सामनें तैनें।
उसइँ अनीदार ते कइये,
कछू चला दइ सैनें।
प्रान खान गंगइया-सुन्दरिया,
ऐसी दइ की दैनें।
मुलकभरे खों घायल करदब,
मार-मार के सैनें।
'ईसुर' श्याम सामने परके,
सये ससन भर मैनें।

तरबारन = तलवारों से, पैनें = धारदार-पानीदार हैं, तैनें =तूने, उसइँ = वैसे ही, अनीदार = पानीदार नुकीले, सैनें = संकेत - इशारे, गंगइया - सुन्दरिया = दो नर्तकियों के नाम यह दोनों ईसुरी की समकालीन बेड़नियाँ हैं, दैनें = देन के अर्थ में, मुलक = देश, घायल = आहत, सामने परके = सम्मुख पड़ जाने पर, सये = सह गए, ससन = साँस रोककर।

तूने अपने दोनों नयन जो तलवारों से भी अधिक तेज हैं मेरे सम्मुख कर दिए हैं। वैसे भी उनकी प्रसिद्धि तेज तीखी नोंक के समान है। फिर दूसरे कुछ उन्हें चंचलता प्रदान कर संकेत करना भी सिखा दिया। गंगइया और सुन्दरिया बेड़नियाँ दोनों की हँसी जो उन्हें विधाता से सहज मिली है जानलेवा हँसी है। उन्होंने नयनों के बाणों से पूरे देश के लोगों को घायल कर दिया है। श्रीकृष्ण भी सम्मुख पड़ जाएँ तो साँस रोककर वार सहेंगे जो मैंने बराबर सहे हैं।

नैना खेलन लगे सिकारैं,
रहत नबेली नारैं।
दीने लगा बहिलिया कैसे,
नजर-फन्द हर द्वारैं।
आउत चले चलाउत चउअर,
पट घूँगट कौटारैं।
'ईसुर' सुनौ सबद बेदी है,
सक हो गई हमारैं।

सिकारैं = आखेट करने लगी, नारैं = स्त्री के अर्थ में, बहिलिया = बहेलिया एक शिकारी जाति, नजरफन्द = दृष्टि का फन्दा, आउत = आते हुए, चलाउत = चलाने के अर्थ में पट = घूँघट का भाग, टारैं = हटाकर, सबद बेदी = शब्द भेदी, सम = शंका।

नई नवेली के नयन अब आखेट करने लगे हैं। नयन ऐसे लगते हैं मानो शिकारी बहेलिया हो। दृष्टि गढ़ाये फन्दे में फँसाने हेतु लगातार बैठे हैं। जो उधर से धोखे से भी निकलते हैं उन पर घूँघट पट को एक ओर करके नयन तीर चला दिया जाता है। सुनो चुपचाप रहना यह नयन शब्द भेदी मार करते हैं मेरे मन में उनके प्रति शंका उत्पन्न हो गई है।

जब से नैन तमन्चा बाँदे,
प्रान सूक गए आदे।
दुआली बन्द काम नै करकै,
बालापन सैं सादे।
चूकैं नई चोट बारी के,
जो कउँ कोऊ बतादे।
लागै जबैं कौन गत हूहै,
बिना लगैं भए आदे।
बिजाने साद-साद 'ईसुरी',
छिदनन पै आमादे।

तमंचा = देशी पिस्तौल, आदे = आधे, दुआली बन्द = बख्तरबन्द के अर्थ में, सादे = सादी है, बारीके = कच्ची उम्र वाली के, जबै = जब ही, जादे = अधिक, बिजाने = लक्ष्य संधान का निशाना, छिदनन= छेद-छेद कर देने पर, आमादा = आरूढ़ है।

जबसे उसना अपने नयन रूपी तमंचा संभाला है मेरे तो प्राण आधे सूख गए। बचपन से ही उस बख्तरबन्द को कामदेव ने सजाकर उसे सुरक्षित रखा है। उसकी चोट अचूक होती है। जहाँ कोई कहे वहीं वह सीधी चोट लग सकती है। जब चोट लगेगी तब क्या हालत होगी जबकि बगैर चोट लगे ही अधिक भय लग रहा है। लक्ष्य संधान का अभ्यास उन्होंने अच्छी तरह किया है तभी तो छेद-छेद कर डालने पर आमादा है। सीना छलनी करने पर आरूढ़ है।

नैना रंगरेजन नै मारे,
कर दए प्रान दरारे।
अउअल बाड़ ढाल पै धरकें,
छुरा हात के ढारे।
फिरकी लेतन हमने देखे,
छूँटा तीन – तियारे।
तलफा रइ अलफा के भीतर,
जुबन दोइ अनयारे।
हाय-हाय कर हा-हा 'ईसुर',
ई नैनन सै हारे।

उस रंगरेजन के नैन बहुत चंचल हैं उसकी नजरों की मार से ईसुरी के दिल में दरारें पड़ गई हैं, अर्थात् दिल के टुकड़े-टुकड़े हो गये हैं। पहले तो लोहे से बने तेज नजर रूपी खंजर को हाथ में लिया है। दूसरे जब वह नृत्य में घेरदार घूमती है तब तो वह खंजर और पैना होकर दिल पर असर करता है। तब हम स्वयं के नहीं रहते। उसके उरोजों की नोकें मेरे कुरते के भीतर अर्थात् सीधे दिल में वार करते हैं। ऊपर से उसके नयनों के बाण से विद्ध होकर ईसुरी हाय-हाय करते हार गये हैं।

उनने नैन तोंख के मारे,
कट गए हाड़ हमारे।
कसका उठौ कमल के भीतर,
बै गए रकत फुआरे।
घूँगट में से नैन निकारे,

हिये तरीछे डारे।
हाय-हाय कत मरे 'ईसुरी',
गिर तन आयँ तमारे।

तोंख = ताकने के अर्थ में फेंककर मारने जैसा ही, हाड़ = अस्थि पंजर, कसका = कसकनयुक्त पीड़ा, रकत = रूधिर, हियै = हृदय में, तरीछे = कटाक्ष से, भीतर तक तरी में, तमारे = गस्त आ जाना।

उन्होंने नयनों को साधकर ऐसी चोट की कि मेरा शरीर का पूरा ढाँचा तक विदीर्ण हो गया। मेरे हृदय रूपी कमल में पीड़ा उठ खड़ी हुई। मानो घायल हृदय से रक्त के फव्वारे फूट पड़े हों। घूँघट में से नयन बाण ने हृदय की तलहटी तक को भेद दिया है। ईसुरी हाय-हाय करते हुए जमीन पर गिर गये और बेहोश हो गये।

मारे नैन तरीछे करकैं,
बन्दूकैं सीं भरकैं।
आँगू खों डग धरती नइयाँ,
रै गइ हमैं नजर कैं।
खाँय पछार गिरे धरती में,
ठाँड़े भये समर कैं।
कात 'ईसुरी' अपुन चली गईं,
हमखों घायल करकैं।

तरीछे = नीचे को पोजीशन लेने के अर्थ में, डग = कदम, नजर कैं = देखते ही, पछार = पछाड़ खाकर, समरकै = सम्हलकर, घायल = आहत।

आँखों को तनिक नीचे कर कटाक्ष करते हुए ऐसा वार किया मानों बन्दूकें भरकर चला दी गई हैं। आगे उन्होंने एक भी कदम न रखा बस मुझे देखती ही खड़ी रह गईं। उनके ऐसे देखने से मैं पछाड़ खाकर धरती पर गिर पड़ा फिर बड़ी मुश्किल से सम्हलकर खड़ा हुआ। ईसुरी कहते हैं स्वयं तो चली गई परन्तु मुझे घायल अवश्य कर गई।

ठाँड़ी नैना दोइ उघारें,
इनकी पैनी धारें।

छुआ उड़त बदन के ऊपर,
गुरा-गुरा कर डारैं।
है मुकराल करै का लेती,
मानै ना ललकारै।
जो को इनकी कड़त खोर हो,
जिये खाल कर डारैं।
'ईसुर' बिगरू बसन पुरा में,
सबरे देत बिगारैं।

उघारैं = उघाड़े हुए, पैनी = तेज, छुआ = स्पर्श, गुरा-गुरा = अस्थि पंजर के जोड़-जोड़, अर्थात् टुकड़े-टुकड़े, मुकराल = भयानक बेशर्म, खाल = चमड़ी, बिगरू = बिगड़ी हुई, बसत = वस्तु, रहने वाला, पुरा में = मुहल्ले में।

घूँघट से दोनों नयन उघाड़े हुए वह बाहर खड़ी है जिनकी बड़ी तेज धारे हैं। पूरे शरीर को अपनी तेज नजर से स्पर्श करती जैसे उड़ रही है। उसने शरीर के खण्ड-खण्ड कर डाले हैं। बड़ी ही भयावह एवं बेशर्म है लगता है क्या कर लेगी? ललकारने पर भी नहीं मानती। जो भी इनकी गली से होकर गुजरता है उसकी जीवित ही खाल निकालकर रख लेती है। ईसुरी कहते हैं यह मेरे मुहल्ले में ऐसी वस्तु है, जो बिगड़ चुकी है और सभी उसे बिगाड़ने पर तुले हैं।

तुमनें नैन कसाई कीने,
पाप पुरातन लीने।
बे-बे ज्वान जान से मारे,
छटा-छटा के बीने।
बरनी डोर डार के फाँसे,
काँढे से सिर छीने।
उनके हाथ काय काजर के,
सौंप बगुरदा दीने।
'ईसुर' इननै कइयक मारे,
दया तनक ना चीने।

कसाई = वधिक, पुरातन = पुराने, ज्वान = युवक, छटा-छटा के = छाँट-छाँटकर, बीने = संचित किए, बरनी = कह-सुनकर किसी कार्य को करना (घोषणा) = नष्ट करने के अर्थ में, सौंप = देने के अर्थ में, बगुरदा = गदा कैसा, कइयक = अनेकों।

तुमने अपने नयनों को कसाई अर्थात् वधिक बना दिया है, पर पुराने पाप तुमने ओढ़ लिए हैं। कई छँटे हुए योद्धा युवक तुमने जान से मार डाले। तुम जलने-भुनने वाली हो। पहले जोर डालकर फाँसती हो और फिर विदीर्ण कर देती हो। ईसुरी कहते हैं ऐसों के हाथ में मंत्रित श्वेत श्याम उड़द के दाने सौंप दिए? आँखों की श्वेत फलक पर काली पुतलियाँ अभिमंत्रित उड़द के दानों के समान श्वेत-श्याम दिखाई देती हैं। इन्होंने अपने इस तांत्रिक नयन व्यापार में अनेकों मार डाले हैं इनके निष्ठुर हृदय में तनिक भी दया की पहचान नहीं है।

नैना पिस्तौलै सीं भरकैं,
मारन चात समर कैं।
दारू लाज दरस की गोली,
गज कर देत नजर कैं।
देत लगाय सैन की सूजन,
पल की टोपी धरकैं।
बड़े-बड़े रनधीर सिपाई,
बैठ रहे लर-लर कैं।
'ईसुर' फैर होत फुरती सै,
कोउ कहाँ लौ बरकें।

समर कैं = सम्हलकर, दरस = देखने के अर्थ में, गोली = कारतूस, गज = लोहे की छड़, सैन = संकेत, सूजन = सूत्रों के अर्थ में, पल = पलक, रनधीर = रणबाँकुरे, फुरती = फुर्ती से बरकें = बचे।

नयन रूपी भरी पिस्तौलों से निशाना साधकर सावधानी से मारना चाहती है। लाज की बारूद दरस अर्थात् दृष्टि को गोली, नजर की छड़ से बन्दूक में भर देती है फिर संकेतों से सुइयाँ चुभोकर पलक की टोपी चढ़ाकर गोली चला देती है। बड़े-बड़े रणबाँकुरे योद्धा लड़-लड़कर हार गए। वह इतनी फुर्ती से फैर करती है कि कोई कहाँ तक अपने को बचाए? यानी उनकी नजरों की गोली से कोई बच नहीं सकता। ईसुरी को अस्त्र ज्ञान भी था।

बैंदी लगै प्रान से प्यारी,
हेरन हसन तुमारी।
नैन सैन तरबार बाँन सम,
तैनें हमखों मारी।

बा हेरन मुसकान माधरी,
बिसरत नई बिसारी।
हँस-हँस हेर मोड़-मुख फिर-फिर,
निघा तरीछी डारी।
कात 'ईसुरी' चैन परत ना,
करियो नेह समारी।

हेरन = दृष्टिपात के अर्थ में, नैन सैन = आँखों के हवाले, तरबार = तलवार, बान = तीर, तैनें= तूने, माधरी = मधुर, बिसरत = भूलती, निघा = दृष्टि, तरीछी = नीचे की ओर मोड़कर कटाक्ष।

तुम्हारी बिन्दी मुझे प्राणों से भी प्यारी है तिस पर हमें देखकर हँसना तो और भी प्रियकर हैं। नयन के संकेत मानो तलवार या तीर के समान है जो तूने मुझे मारे। यह देखते हुए मुस्कान की गुराई-मधुरता मुझे भुलाए नहीं भूलती। वह हँस-हँसकर देखना वह बार-बार मुख मोड़-मोड़कर तिरछी दृष्टि नीचे कर कटाक्ष करना। ईसुरी कहते हैं मुझे चैन नहीं है अब प्यारे सम्हलकर ही करना?

नैना काय मारे बेदरदन,
करकैं ऊँची गरदन।
दसउ उँगरियन रचाके माउर,
कर हरदी कौ मरदन।
ऐकैं छैल खड़े पारे में,
ऐकैं चढ़ गये सरदम।
'ईसुर' कात हमारे पाछैं,
कटी जात का गरदन।

काय = क्यों, बेदरदन = बेदरदी के अर्थ में, माउर = महावर, हरदी = हल्दी, पारे में = पहरे में (सुरक्षा में), सरदम = दम भर के तत्काल।

ओ बेदरदी! तूने मुझे देखकर नयनों के बाण से कटाक्ष क्यों किया। जबकि तेरे हाथों में हल्दी और पैरों में माहुर पड़ी है। यानी तुम्हारा विवाह होने वाला है। पर परकीया नारी तेरे हाल तो खराब हैं, तुम्हारा चाहने वाला एक छैला तो दरवाजे पर खड़ा है। एक हिम्मत करके ऊपर छज्जे तक आ गया है। ईसुरी कहते हैं- तुम्हारे पीछे मेरी भी गर्दन कटने वाली है?

नैंना भँवर भये बारी के,
रंगरेजन प्यारी के।
एक से दोउ भेस धरे है,
रुचिर रेख कारी के,
सालिगराम बीच कमलन के,
चितवन अनयारी के,
लेत सुगन्ध फूल नये फूले,
मानस सिन्सारी के।
'ईसुर' परे इसक के फन्दे,
आशिक है यारी के।

भँवर = पानी में घूमने वाली भँवर, बारी के = कच्ची उम्र में, एक से = एक समान, दोउ = दोनों ने, चितवन = दृष्टि, अनयारी के = अनर्थ करने वाली, सिन्सारी के = संसार के, इसक = इश्क, फन्दे = फन्दे में।

प्रिय रंगरेजन के नयन भँवर की भाँति चंचल हो गये हैं। दोनों नयनों में काजल की सुन्दर रेख खींची हुई है। मानो कमल पाँखुड़ी पर शालिगराम की मूर्ति रखी हो, तुम्हारी यह चितवन अनूठी है। नए फूल की सुगन्ध संसार के मनुष्य लेते ही हैं। ईसुरी कहते हैं– जो इश्क के फन्दे में फँसे हुए हैं, वे ही सच्चे आशिक हैं।

राखी रूप नैन पै फाँसी,
जो काजर बिसबासी।
कोरन कोर डोर काजर की,
मन मोहन कै आँसी।
मनमथ कौ अनुराग त्याग सब,
भूल गये हर हाँसी।
ब्याकुल भई बैठ मिहलन में,
ऊँची लेत उसाँसी।
'ईसुर' श्री बृषभान दुलारी,
बैठी बनी रमाँसी।

राखी = रखी, कोरन कोर = किनारों के किनारे, डोर काजर की = पतली रेखा के अर्थ में, आँसी = खली,

मिहलन = महलों में, उसाँसी = निश्वास लेना, रमासी = साक्षात् लक्ष्मी सी।

तुम्हारे नयनों की सुन्दरता एक फाँसी के समान है। काजल उसका विश्वासपात्र है। काजल की पतली रेखा इतने करीने से लगी है, कि बार-बार मनमोहन यानी प्रियतम को खल रही है, बार-बार उसका ध्यान बटा रही है। उन्हें देखकर कामदेव का सारा रूप गुमान आदि सब कुछ भूल गया। शिव हँसना तक भूल गए। अब यह ठण्डै निश्वास लेती हुई व्याकुल बेचारी अपने महल में बैठ गई है। यही वृषभानु कुँवर राधा आज साक्षात् लक्ष्मी के समान विराजमान है।

दोई नैनन की तरबारैं,
प्यारी फिरैं उबारैं।
अलेमान गुजरात सिरोही,
सुलेमान झकमारैं।
ऐंचन बाढ़ म्यान घूँगट की,
दै काजर की धारैं।
'ईसुर' स्यान बरकते रइयो,
अंधयारैं उजयारैं।

उबारैं = वार करने के अर्थ में, ऐंचन = खींचना, बाढ़ = बढ़ाकर, म्यान = जिसमें तलवार रहती है, स्यान = होशियारजन, बरकते = बचते, अंधयारैं-उजयारैं = अंधेरे-उजाले में।

नयन रूपी दोनों तलवारें प्रिय पर वार करने को तत्पर हैं। अर्थात् नैनों से घूँघट हटाकर, अमुक व्यक्ति, गुजरात सिरोही और सुलेमान यहाँ-वहाँ सब झक मार रहे हैं। बेचारे करें भी तो क्या करें? घूँघट को उठाकर खींचना मानो म्यान से तलवार खींचना है। जिस पर काजल की रेखा से धार चढ़ाई गई है। चितवन बहुत पैनी है। ईसुरी कहते हैं उनसे होशियारजन को अंधेरे उजाले में भी बचने की आवश्यकता है।

घाली नैनन की संगीनै,
तिरछी कर कर ईनै।
लागे आन करेजे अन्दर,
छार-छार कर दीनै।

कईयक डरे कलारैं निस दिन,
जीनै कै नइ जीनैं।
'ईसुर' करत अधर की रंगत
आन कही संगी नै।

तिरछी = कटाक्ष के अर्थ में, ईनै = इनने, करेजे = कराहने के अर्थ में, जीनै= जीवित रहेंगी, अधर की रंगत = अर्थात् निरोष्ठि की महफिल में।

कटाक्ष कर-करके उसने नयनों की बन्दूकें तान दी है। जो सीधे कलेजे के अन्दर जाकर आहत कर बैठी हैं। कलेजा छार-छार अर्थात् तार-तार हो गया है। अनेकों घायल पड़े हुए नित्यप्रति कराह रहे हैं, वे जीवित बच पायेंगे या नहीं? कुछ कह नहीं सकते। यह निरोष्ठि रचना सभा में सुनाने को कहा था। अत: मेरे साथी ने यह रचना सुनाई है। इसमें अधर से अधर नहीं लगते।

विविध :- निरोष्ठि रचना में ओंठ से ओंठ लगने वाले वर्णों का प्रयोग नहीं होता।

चोटैं करन लगे नए नैना,
हुशयारी सै रैना।
पटियाँ पारै माँग समारै,
धरैं सामनै ऐना।
जो कोउ उनकी खोर कड़त है,
तिरछी मारै सैना।
'ईसुर' कात बरकते रइयो,
जिन्दा जियत बचैना।

रैना = रहना, पटियो पारे = तेल कंघी कर बाल सँवारने के अर्थ में, ऐना = दर्पण, तिरछे = कटाक्ष करके, बरकते = नचते हुए, जियत = जीवित।

जरा होशयारी से रहना, गोरी के नयन अब वार करने लगे हैं। आज कल वह अच्छी तरह से सजने सँवरने लगी है। तेल कंघी कर बाल व्यवस्थित किए है। माँग भी सम्हाल ली है। सम्मुख दर्पण रखा है। जो भी उसकी गली से होकर निकलता है, वह कटाक्ष करके नयनों का वार कर देती है। इनसे बचे रहना अन्यथा जीवित न बचोगे।

तोरे नैना मुलक उजारे,
मोय होतनइँ मारे।
काजर की धारन सै धाकैं,
ठाँड़े मानस फारे।
दऔ लंगोट भसम में भरकें,
बाबा बना निकारे।
जौ लऔ पुन्य प्यारी तुमनै,
घर में पूरे पारे।
'ईसुर' साहू गरीबन ऊपर,
अच्छे गजब गुजारे।

मुलक = देश, उजारे = प्रकाश फैलाने के अर्थ में, मोय = मुझे, होतनइँ = होते ही, ठाँड़े = खड़े हुए, फारे = चीर डाले, भसम = राख, पूरे पारे = पूरा कर दिया, काम तमाम के अर्थ में, गरीबन= गरीबजनों पर।

मुझे देखते ही तूने जो नयनों के बाण चलाये हैं इससे पता चलता है कि तुम्हारें नयन सारे जग में उजागर हो गये हैं तेरे नैनों की छवि सबने देख ली है। काजल की तलवार सी पतली काजल रेख की धार पर अनेक निर्दोष लोगों को चीर डाला है। मेरे तो कपड़े ही उतार लिये, मात्र एक लंगोट ही तुमने छोड़ दिया है, वह भी धूल-धूसरित हो गया है अब बचा ही क्या है, सिवाय तन को भस्म लगाकर बाबा बनकर निकल जायें। हे प्रिय! तुमने यह पुण्य घर बैठे-बैठे ही कमाया है। ईसुरी कहते हैं- साहूकार हो या गरीबजन सभी पर तुमने खूब गजब ढाया है।

तोरे नैना हैं मतबारे,
तिन घायल कर डारे।
खंजन खरल सैल से पैने,
बरछन से अनयारे।
तरबारन से कमती नइयाँ,
इनसे सबरइ हारे।
'ईसुर' चले जात गैलारे,
टेर बुला कें मारे।

मतबारे = मतवाले, तिन = तिन्होंने, खंजन = पक्षी की उपमा, खरल = विष बुझे, सैल = पर्वत शिखर

(साँग), बरछन = बरछी जैसे, सबरइ = सबही, गैलारे = राहगीर, टेर = पुकार का।

प्रिय तुम्हारे नयन बड़े मतवाले हैं, जिन्होंने घायल कर रखा है। तुम्हारे ये नयन खंजन जैसे आकर्षक, विष के बुझे हैं। पर्वत शिखर (साँग) से नुकीले हैं। बरछी की नोंक की तरह तीखे और भी पैने हैं। यह तलवारों से कम नहीं हैं। इनसे सभी हार मानते हैं। राह चलते राहगीरों को यह पुकारकर बुला लेते हैं फिर मार देते हैं।

फाग बिलवारी

जादू सौ कर गइ हेरन में,
दुरवारी दृग फेरन में।
जौ भर तेज-तेज चितवन कौ,
सो नइयाँ समसेरन में।
उड़त फिरत जैसे मन पंछी,
गिरत बाज की घेरन में।
जब कब मिलत गैल खोरन में,
तिरछी नजर तरेरन में।
कात 'ईसुरी' सुनलो प्यारी।
तनक सैन की टेरन में।

हेरन = दृष्टिपात, फेरन = घुमाने के अर्थ में चंचलता से तात्पर्य, समसेरन = तलवारों में, गिरत = गिरते हैं, घेरन में = घेराव से, खोरन = गलियों में, तरेरन = तानकर देखना, टेरन = पुकार।

चितवन से ही वह जादू सा कर गई है। उसकी दृष्टि का फिरना अर्थात् चंचल होना गजब था। आगे पैनी चितवन में इतना तेज भरा हुआ है, जो तलवारों में भी नहीं है। मानो मन पंछी प्राण बचाता इधर-उधर उड़ता फिर रहा है लेकिन वह भी जमीन पर आ गिरता है जब बाज रूपी पैनी दृष्टि उसका घेराव कर लेती है। जब कभी वह गली कूचों में भी मिल जाती है तब तिरछी निगाहों से कटाक्ष करते हुए सब कुछ देखती है। ईसुरी कहते हैं - प्रिय सुनो! तनिक से नयन संकेत मात्र से यह सब सम्भव है।

विशेष :- ईसुरी प्राय: चौकड़िया फाग ही कहते हैं यदा - कदा अन्य छन्द भी बने हैं। यह फाग झूला की फाग या डिड़ खुरयाउ फाग है। इसे चैती या बिलवारी कहते हैं।

नैना ना मारौ लग जैहैं,
मरम पार हो जैहै।
बख्तर जुलम कहा कर लेहै,
ढाल फार कढ़ जैहै।
नैना मार चली ससुरे खों,
डरे कलारत रैहै।
ओखद मूर एक ना लगहै,
बैद गुनी का कैहै।
कात 'ईसुरी' सुन लो प्यारी,
दरस दबाई दैहै।

लग जैहै = लग जाएगी, मरम = मर्म, पार = प्रकट होने के अर्थ में, जुलम = अपराध, ससुरे = पिय गृह, कलारत = कराहते हुए, ओखद = औषधि, मूर = संजीवन बूटी के अर्थ में।

प्रिय! नयन मत मारो लग जाएँगे और मर्म प्रकट हो जाएगा। तुम्हारे नैनों के जुल्म के आगे बख्तरबंद भी क्या कर लेगा? ढाल पर सीधे प्रहार कर हृदय में पैठ जाएगा। नैन के बाण-चेला कर तुम तो ससुराल चली जाओगी। यहाँ हम पड़े-पड़े कराहते रहेंगे जिसकी कोई दवा नहीं है कोई जड़ी-बूटी भी काम नहीं आएगी। गुणी वैद्य क्या कहेंगे। ईसुरी कहते हैं - सुनो प्रिय! तुम्हारे दरस रूपी दवा के बगैर काम नहीं चलेगा।

नैना परदेसी से लरकैं,
भए बरबाद बिगरकैं।
नैंना मोरे सूर सिपाही,
कबउँ न हारे लरकैं।
जे नैना बारे से पाले,
काजर रेखैं भरकें।
ईसुर 'भींज' गई नइ सारी,
खोबन अँसुआ ढरकैं।

लरकैं = लड़ाने के अर्थ में, बरबाद = नष्ट के अर्थ में, सुर = बहादुर, बारे से = बचपन से, खोबन = अँजुलियाँ।

नयन परदेशी के संग इस तरह परदेसी के साथ बिगड़कर बरबाद हो गए। मेरे नयन शूर-सिपाही हैं। युद्ध में कभी हारे नहीं हैं। इन नयनों को बचपन से पाले पोसे हैं, इन्हें सदैव काजल की रेखा से भर-भर करके रखा है। परदेसी तो छोड़कर चला गया। उसकी याद में रोती रहती हूँ। आँसुओं से मेरी नई साड़ी भींग गई है। अंजुलियाँ भर-भरकर आँसू ढुलक रहे हैं।

काजर काये देती नइयाँ,
हमैं बतादो गुइयाँ।
बिना कजर के फीकी लगरइ,
चूमाँ लायक मुइयाँ।
काजर दैकै मजा लूटलै,
फागुन होत कड़इयाँ।
'ईसुर' ज्वानी निकर जात है,
बादर कैसी छइयाँ।

काय से = किसलिए, गुइयाँ = मित्र के अर्थ में, चूमा = चुम्बन, मुइयाँ = मुखड़ा, मजा = आनन्द, कड़इयाँ = व्यतीत होने वाला है, ज्वानी = यौवन, छइयाँ = छाया।

प्रिय सखि! तनिक बताओ तो सही, नयनों में काजल क्यों नहीं लगा रही हो? बिना काजल के तुम्हारा मुखड़ा ही फीका लग रहा है, चुम्बन योग्य नहीं है। काजल आँजकर मौसम का आनंद लूट लो, नहीं तो फागुन व्यतीत हुआ जा रहा है। यह यौवन तो थोड़े दिन में निकल जाता है क्योंकि यह यौवन बादल की छाँव के समान है, जो थोड़ी देर ही ठहरता है।

मोरे नैनन सें ना टरतीं,
तुमइ नजर में भरतीं।
हम देखत ते अपने घर हो,
तुम तौ अपने घर तीं।
हम तौ लगे तुमे बिसरे सें,
तुम ना हमै बिसरतीं।
हम तो चरचा करैं तुमारी,
तुम चरचा ना करतीं।

'ईसुर' सरग थिगरियाँ देतीं,
चलतीं नइयाँ धरतीं।

टरतीं = टलती, तीं = थी, बिसरे से= भूले से, बिसरतीं = भूलती, सरग = स्वर्ग में, थिगरियाँ = थेगड़े, पैबन्द, सरग थिगरियाँ देना– बुन्देली मुहावरा है।

हे प्रिये! तुम मेरी आँखों से कभी ओझल ही नहीं होती हो। तुम ही मेरी आँखों में समाई हुई हो। मैं तो अपने घर से ही देखता था और तुम अपने घर पर थीं। लगता है, तुम मुझे भूल गई हो, जबकि मैं तुम्हें नहीं भुला पा रहा हूँ। मैं तो सदैव तुम्हारी चर्चा किया करता हूँ। तुम मेरी चर्चा कतई नहीं करती हो। तुम तो सदैव धरती से ऊपर चलती हो, ऐसा लगता है जैसे तुम आकाश में पैबन्द लगाने जा रही हो।

जब से तुमसे नैंन लगाये,
बड़े कसाले पाये।
भये अधमरे, भौत मरइयाँ,
प्रान कड़त न काये।
ककरा गड़े कसक गए काँटे,
सेरन खून बहाये।
'ईसुर' भुगती भौत आफदे,
ना अब भले कहाये।

कसाले = कष्ट के अर्थ में, मरइयाँ = मरणासन्न, उड़न = उड़ने न पाए, ककरा = कंकड़, कसक = चुभ गए, सेर = किलोग्राम सरीखा तत्कालीन बाँट, आफदे = परेशानियाँ।

मैंने जबसे तुमसे नयन लगाए हैं बड़ा कड़वा अनुभव हुआ है। मैं अधमरा होकर मरणासन्न हो गया बस प्राण पखेरू उड़ते क्यों नहीं हैं। पैरों में कंकड़ गड़े, काँटे भी चुभे, कई किलो खून बहाया। बहुत परेशानियों को झेला फिर भी तुम्हारे लिए मैं अच्छा न कहाया।

हमखों बिसरत नइ बिसारी,
हेरन हँसन तुमारी।
जुबन बिसाल चाल मतबारी,

पतरी कमर इकारी।
भोंय कमान बान से तानैं,
नजर तरीछी मारी।
'ईसुर' कात हमारे कोदै,
तनक हेरलो प्यारी।

बिसरत = भूलती, बिसारी = भुलाने से भी, हेरन = चितवन, इकारी = इकहरी, कमान = धनुष, बान = तीर, तरीछी = कटाक्ष से, कोदै = ओर, तनक = थोड़ा, हेर लो= देख लो।

प्रिय तुम्हारी हँसमुख चितवन भुलाये नहीं भूलती है। आँखों में बस गई है। तुम्हारी पतली कमर वाली इकहरी देह पर उभरे बड़े गोल-गोल उरोज और उस पर तुम्हारी चाल कभी भुलाई नहीं जा सकती है। जिस पर भृकुटि के धनुष पर, चितवन की प्रत्यंचा पर नयन के बाण संधान करना और तिरछी निगाहों से कटाक्ष करना, यह सब अविस्मरणीय है। ईसुरी कहते हैं - हे प्रिय! जरा हमारी तरफ भी देख लो।

सुन हौं? कै ना सुन हौ? अब तुम,
द्विज ईसुर कौ कैबौ?

सामाजिक

अनुभव की पुटरिया

तन कौ कौन भरोसौं करनै,
आखिर इक दिन मरनै।
जौ संसार ओस कौ बूँदा,
पबन लगे से ढुरनै।
जौ लो जी की जियन जोरिया,
जी खों जै दिन भरने।
'ईसुर' ई संसारै आकें,
बुरे काम खाँ डरनै।

कौन = क्या, भरोसौं = विश्वास, आखिर = अन्त में, ढुरनै = ढुलकने के अर्थ में, जियन - जोरिया = जीवन अवधि।

इस शरीर का क्या विश्वास करना है? अन्त में एक दिन तो मरना ही है। यह संसार तो ओस बिन्दु है, जो हवा के एक ही झोंके में ढुलक जाएगा। जब तक जिसकी जीवन - अवधि है उतने दिन उसे पूरे करने ही है। अत: इस संसार में आकर बुरे कार्यों से डरना चाहिए।

घर में नई अन्न कौ पउआ,
अब भए मोल बिसउआ।
मरे जात भूंकन के मारैं,
नन्ने - नन्ने छउआ।
भाजी पालौ एक बचौ ना,
लौंच खाव कन कउआ।
सवा डेढ़ कौ नाज विका रव,

दो के हो गए मउआ।
घांटी अटके प्रान 'ईसुरी'
कब घर आय लठउआ।

पउआ = पाव भर अर्थात 1/4 सेर (या किलोग्राम का चौथा भाग) बिसउआ = खरीदने वाले, छउआ = बच्चों के अर्थ में, लौंच खाओ = चींथ कर खा गए, कन कौआ = रिश्वतखोरों के अर्थ में, घांटी = गले में, लठउआ = हल्का अनाज लठारा बसारा आदि।

घर में अनाज का एक दाना भी नहीं है, इस कारण अनाज खरीदकर खाना पड़ रहा है। छोटे-छोटे बच्चे भूख से मर रहे हैं। अब तो शाक-भाजी तक का इन्तजाम नहीं है। बच्चे भूख के मारे चिल्ला रहे हैं, हमारे कान सुन्न पड़ गये हैं। सवा-डेढ़ सेर का अनाज बिक रहा है। दो सेर में महुआ है। प्राण गले में अटककर रह गए हैं कि कब मोटा अनाज लठारा बसारा ही मिल जाए तो काम चले।

तन के शुभ लच्छन सब जाके,
व्याकरनन कर ताके।
जिनाउरी उर बड़ी धीरता,
साका सील क्षमा के।
अर्थ धर्म अरु काम - मोक्ष फल,
पुन्न पुरातन जाके।
पति बिरता कै धरम - करम में,
ऊ जस होत उमाके।
होत चीकने पात 'ईसुरी'
होनहार बिरबाके।

लच्छन = लक्षण, व्याकरनन = वैयाकरणियों द्वारा, जिनाउरी = पशुतापूर्ण वीरता, साका = शाख, पुन्न = पुण्य, पतिविरता = पतिव्रता, ऊ = वह, जस = यश।

पंडित विचारकों के हाथों में उनके शुभ लक्षणों का आकलन हुआ है कि उनमें पशुता है या बड़ी धीरता है। शील और क्षमा की वे शाखा हैं। अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष, यह चारों फल उनके पूर्व पुण्य के अनुसार परिपक्व हुए हैं। पतिव्रता के धर्म-कर्म में ही उमा के समान यश होता है। ईसुरी कहते हैं कि- होनहार व्यक्ति के लक्षण बचपन से ही दिखाई देते हैं।

सिर पै थर लव बिपत न बोजा,
तै पर सूदी होजा।
कन्नै नई सूम की संगत।
दाता कौ घर खोजा।
हिन्दू के तो बिरत होत हैं,
मुसलमान के रोजा।
घायल भये हजारों तुमपै,
जबसै पैरे मोजा।
ईसुर सात–पाँच की लाठी,
एक जने कौ बोजा।

बोजा = बोझ / वजन, सूम = नीरस स्वभाव वाला, बिरत = व्रत, (कृपण एवं अव्यवहारिक)।

ईसुरी इस रचना में रीति–नीति का पाठ पढ़ाते हुए कहते हैं कि सिर पर लोग विपत्तियों का व्यर्थ बोझ ढो रहे हैं परन्तु तू सावधान होकर चल। सूम यानी कंजूस तज दे और उदार मना का घर खोज। हिन्दू–मुस्लिम एक ही बात है, वे व्रत करते हैं तो ये रोजा रखते हैं। जब से तुमने यह बूट मौजे पहिन लिए हैं। यानी हिन्दू मुसलमान का भेद मिटा दिया है और अँग्रेजों के खिलाफ उन्हीं की टक्कर में जूते मौजे पहन लिये हैं। अन्त में सीख यह है कि सात–पाँच की लकड़ी मिल जाय तो एक व्यक्ति का बोझ उठाने में दिक्कत नहीं होती।

यारी बेवकूफन से करबौ,
होत सुगर कौ मरबौ।
बिना ज्ञान मूरख ना जानैं,
बनबो और बिगरबौं।
अपुनयाई में बन है कैसे,
एकई गैल डिगरबौ।
जरिया कैसौ जार 'ईसुरी'
मुश्किल परै निनरबौ।

यारी = मित्रता, सुगर = चतुर, बनबो = बनना, बिगरबौं = बिगड़ना, अपुनयाई = आपसदारी या स्वार्थपरता, डिगरबौ = राह चलना, जरिया = झरबेरी कटीली झाड़ी, निनरबौ = सुलझना।

मूर्खों से मित्रता करने का अर्थ है चतुर की मौत। बगैर ज्ञान के मूर्ख कुछ नहीं जानता कि

क्या बनना है और क्या बिगड़ना है? आपसदारी में यानी स्वार्थपरता में एक ही मार्ग पर मिलकर कैसे चला जा सकता है। ईसुरी कहते हैं – यह ऐसा कंटकजाल है, जिसमें एक बार उलझने के बाद सुलझना मुश्किल है।

विशेष :- जरिया कैसौ जार, मुश्किल परै निनरबौ, बनबौ और बिगरबौ, एकई गैल डिगरबौ इस रचना में मुहावरे का अनुपम प्रयोग।

गाँजों पियौ न पीतम प्यारे,
जरजै कमल तुमारे।
जारत काम बिगारत सूरत,
सूकत रकत नियारे।
जौ – तौ आय साधु सन्तन कौ,
अपुन गिरस्ती बारे।
'ईसुर' कात छोड़ दो ईखाँ,
अबै उमर के बारे।

गाँजों = गाँजा, पीतम = प्रियतम, जरजै = जल जाएगा, कमल = हृदय के अर्थ में, सूकत = सूखता है, रकत = रक्त, नियारे = पृथक ही, गिरस्ती बारे = गृहस्थ, बारे = छोटी आयु के।

प्रियतम! तुम गाँजा मत पियो, इससे तुम्हारा हृदय कमल जल जाएगा। काम को जलाता है, शक्ल सूरत बिगाड़ता है, रक्त को अलग सुखा देता है। यह तो साधु–सन्तों की वस्तु है, तुम ठहरे गृहस्थ। अभी तुम्हारी आयु भी अधिक नहीं है, कहना मानो इसे छोड़ ही दो।

जैहौ नरक कुठरियन धाँदे,
पाप पीठ पै लादे।
कुकरम करत कछू नइ सूजत,
हौ ज्वानी के मादे।
दईया–दईया करत जोउ लौ,
सरग पौंच गय आदे।
'ईसुर' इसक होत होतब से,
सदत कौनकै सादे।

कुठरियन = कोठरियों में, धाँदे = ठूँस दिए के अर्थ में, सूजत = दिखता, ज्वानी = यौवन, मादे = उन्मत्त/ मदहोश, इसक = इश्क, होतन = होता।

पीठ पर पाप लादते रहोगे तो एक दिन नर्क की कोठरियों में ठूँस दिए जाओगे। कुकर्म-दुष्कर्म करते समय कुछ भी नहीं दिखाई देता, यौवन में इस प्रकार मदान्ध हो। जब तक दइया-दइया का शोर जवानी का जोश होता है, तब तक आधे लोग स्वर्गीय हो जावेंगे। ईसुरी कहते हैं- प्यार जैसी चीज किसी होनी यानी भाग्य से ही होता है, किसी के कुछ करने से कुछ नहीं होता।

जी पै किरपा होय तुमारी,
अनतस अधिक मुरारी।
हलौ असमान बाकी ठोकर,
इन्द्र तखत में मारी।
बड़-बड़ सूर समर में थाके,
समर भूमि नइ हारी।
दये उतार पील ऐरावत,
ऐसी पाती डारी।
कोउ भऔ ना हौनै 'ईसुर'
अर्जुन सौं धनुधारी।

इन्द्र तखत = इन्द्रासन, पील ऐरावत = इन्द्र का ऐरावत हाथी, पाती = पत्र।

जिस पर तुम्हारी कृपा हो उसके हृदय में कृष्ण मुरारी बसते हैं। जिसकी ठोकर से इन्द्रासन तक हिल गया। बड़े-बड़े योद्धाओं को भेदकर रख दिया लेकिन युद्ध भूमि नहीं थकी और जिसने अपनी शक्ति से इन्द्र का ऐरावत हाथी नीचे उतार लिया, उसके पक्ष में इतनी ताकत थी। सच ही अर्जुन सा धनुर्धारी न हुआ न कभी होगा।

मारत बिना अन्न हर सालैं,
पनमेसुर का पालैं।
काय खाँ दुख दयै रात है,
काटइ करौ हलालैं।
सबै समैट इखट्टौ लैजा,

कात काय ना कालैं।
नौनौ लगै अकेलौ 'ईसुर'
जब सब भक्ष बड़ालैं।

हर सालैं = प्रति वर्ष, पनमेसुर = परमेश्वर, काय खाँ = किसलिए, सबै = सभी को, समैट = इकट्ठा करके, कात = कहते, काय ना = क्यों नहीं, कालै = काल को, भक्ष = दुरभिक्ष अर्थात् अकाल पड़ना।

जनपद में आये दुर्भिक्ष से द्रवित होकर कवि कहता है कि भारत देश प्रतिवर्ष अन्न की कमी से परेशान है, ऐसे में भला परमेश्वर उसको कैसे पाल सकेगा? अर्थात् विपुल उत्पादन हेतु कर्म करो। देश किसलिए इतना दु:ख देखता है, सबको काटकर हलाल क्यों नहीं कर देते? आबादी अधिक है खाने के लिये अन्न नहीं है, ऐसे में काल कहीं सबको इकट्ठा करके एक साथ ले जाये। ईसुरी पारब्रह्म को इंगित करके कहते हैं आपको अकेला अच्छा लगे तो सभी का भक्षण कर लें।

आसौं दै गव साल करौंटा,
करौ खाब सब खोंटा।
कौऊ पिसी खों गिरुआ लग गये,
मउअन लग गओ लौंका।
ककना दौरी सब घर खाये,
रै गओ फकत अनौटा।
कात 'ईसुरी' बाँदें रइयो,
जबर गाँठ कौ घोंटा।

आसौं = इस वर्ष, करौंटा = करवट, करौ = किया हुआ, खाब = खा लिया, पिसी = गेहूँ, गिरुआ = गेहूँ में लगने वाला रोग, लौंका = महुओं में लगने वाला रोग, ककना दौरी = हाथ के आभूषण, फकत = मात्र, अनौटा = एक आभूषण सुहाग का विशेष, जबर = मजबूत।

इस वर्ष यह साल करवट ले गया, जो कुछ किया हुआ सब खोंटकर खा गया। गेहूँ में गिरुआ लग गया, महुओं में भी लोंका लग गया। अत: हाथ के कंगन दौहरी आदि तमाम आभूषण गहने गिरवी रख दिये, मात्र सुहाग चिह्न अनोटा आभूषण ही शेष बचा है। ईसुरी कहते हैं कि मजबूत सी गाँठ बाँधकर रखना यानी धैर्य से काम लें। समय नाजुक है।

निनरै जैसी राम निबारै,
घटी परी सिनसारै।
अगन–फूस लौ बइ औ जोती,
ढार–ढार ढरबारै।
माल गुजारी मांगन चाहत,
का दैबी सिरकारै।
नइ दै सकत जिमी को पइसा,
जिमींदार झकमारै।
'ईसुर' इनकै कछू बचौ ना,
साब के बार उखारै।

निनरै = सुलझे, निबारै = सुलझाए, सिनसारै = संसार में, बई = बोइ, ढार–ढार = पानी दे देकर, ढरबारै = सिंचित के अर्थ में, दैबी = देंगे, सिरकारै = सरकार को, जिमी = भूमि, साब = साहूकार जो कर्ज देता है, बार उखारै = कुछ न बिगाड़ने के अर्थ में मुहावरा।

फसल चौपट होने पर ईसुरी ने लिखा– सर्वत्र संसार भर में घाटा पड़ गया, अब जैसा राम सुलझाए वैसा ही सुलझेगा। अगहन एवं पौष तक जोता (एक अनाज) बोया, सिंचित भूमि को सींचा गया। मालगुजारी माँगने आने वाले हैं। अब सरकार को क्या दिया जाएगा? इस भूमि के लगान का पैसा पटाना मुश्किल है। जमींदार भी झक मारेगा उसके घर में जब कुछ शेष बचा ही नहीं है, तब साहूकार भला क्या कर लेगा?

ढप सौ ढाल सरीसौ चइये,
मिन्त ओई सों कइये।
सुख में रयै पछारूँ भारी,
दुख में आँगू दइये।
सबरी अनी के अस्त्र बचाबै,
तउ स्वारथ ना पइये।
काम देय मौका पै 'ईसुर'
आजाबै जाँ रइये।

ढप = एक वाद्य, मिन्त = मित्र, ओई सों = उसी से, पछारूँ = पीछे, आँगू = आगे, दइये = दिया जाए, सबरी = समूची, अनी = आपत्ति के अर्थ में, तउ = तो भी, काम देय = काम चलाए।

सच्चे मित्र को ढप (एक वाद्य) या ढाल के समान होना चाहिए। जो सुख में पीछे और दुख में अपने को आगे रखने वाला हो, सारी आपत्ति के समय तेज धार वाले अस्त्र शस्त्रों के प्रहारों से रक्षा करने वाला हो, जो स्वार्थ पूर्ण बात न करता हो। मौके पर काम दे और जहाँ चाहो जब चाहो वह आ जाए, ऐसा ही मित्र सच्चा मित्र है।

जग में बिना यार को–को है,
मिलतइ भाग बदौ है।
एक यार आमद के पाछूँ,
धन के संग लगौ है।
एक यार दये प्रान प्रेम में,
प्रीतन फूँद फँसौ है।
एक यार मज धार बहाके,
बीचन छोड़ भगौहै।
जे सब यार देखके 'ईसुर'
मो मन भौत हँसो है।

को है = कौन है, बदौ है = लिखा है, आमद = अर्थ लाभ, पाछूँ = पीछे, मो मन = मेरा मन, भौत = बहुत, फूँद = रस्सी का फन्दा।

इस संसार में बगैर मित्र का कौन है? बिना भाग्य के सच्चा मित्र नहीं मिलता है। मित्रता भी कई प्रकार की होती है। एक मित्र वह होता है जो अर्थ लाभ के लिये मित्रता करता है। एक मित्र वह होता है जो प्रेम के पीछे प्राण न्यौछावर करके अपनी प्रीति को बढ़ाता है। एक मित्र ऐसा भी होता है, जो मझधार में धक्के देकर बहा देता है अर्थात् बीच में साथ छोड़कर भाग खड़ा होता है। ऐसे मित्र देखकर मन में बहुत हँसी आती है।

तेरौ मन पापी तन नौनौ,
एक भाँत ना दौनौ।
मन माटी के मोल कदर कम,
तन कीमत में सौनौ।
मन से रात अदेख सबइ को,
तनकौ मचौ दिखौनौ।

ऐसे नौनै सुन्दर तन में,
मन दव बिध अनहौनौ।
'ईसुर' नमक अकेले बिन सब,
बिनजन लगत अरौनौ।

नौनौ = लावण्ययुक्त अच्छे के अर्थ में, भाँत = भाँति / समाज के अर्थ में, कदर कम = मूल्यांकन कम, कीमत = मूल्य, रात = रहता है, अदेख = अदृश्य, दिखौनौ = दर्शनीय, बिध = ब्रह्मा, अनहौनौ = विभिन्न, बिनजन = व्यंजन, अरौनौ = फीका।

तेरा मन पापी है और तन लावण्ययुक्त सुन्दर, दोनों एक समान नहीं है। मन मिट्टी मोल बिकता है जिसका मूल्यांकन नगण्य है, जबकि तन की कीमत सोने सी बहुमूल्य है। मन से सभी कोई अदृश्य रहता है उसे कोई भी देखना नहीं पसन्द करता जबकि तन की स्थिति दर्शनीय है। ऐसे सुन्दर लावण्ययुक्त तन में विधाता ने यह विचित्र मन स्थापित किया है। जैसे नमक के अभाव में बड़े-बड़े व्यंजन भी फीके लगते हैं। ईसुरी कहते हैं - हे भगवान्! इस शरीर सौन्दर्य के साथ मन को भी सुन्दर बनाना न भूलना।

हमना तुमखाँ बदी बिचारैं,
बचन अगारूँ हारैं।
सिम्भू कऔ कइलास बास सौं,
सिरपै गंगा धारैं।
बाहर कड़े फेर नइ मुरकत,
ज्यों गज दन्त निकारैं।
गहन - गही सो छूटत नइयाँ,
हाड़ल कैसीं डारैं।
सत से 'ईसुर' हटत सुनीना,
सती सहत है झारैं।

बदी = घात के अर्थ में, अगारुँ = आगे, सिम्भू = शिव, कइलास = कैलाश, फेर = पुनः के अर्थ में, मुरकत = मुड़ते, गहन - गही = गाढ़ी पकड़, हाड़ल = एक पक्षी विशेष जो लकड़ी लिए रहता है।

मैं तुम्हारे लिए बुरा कभी नहीं सोचता, पहले से ही जो वचन दे चुका हूँ। शिव जी जो कैलाश वासी हैं और सिर पर गंगा को धारण किए हुए हैं। एक बार गंगा की धारा निकलने के पश्चात् पुनः नहीं मुड़ती, हाथी के दाँत के समान सीधे निकलती चली जाती है, जिसने इस प्रकार

आगे बढ़ने की प्रगाढ़ता ग्रहण की है, वह हाड़ल पक्षी की भाँति छूटती नहीं है। किसी सती स्त्री को सत्य से डिगते किसी ने न सुना होगा, वह अग्नि की लपटों को सहज स्वीकार कर लेती है।

जाहर जा जगरीत जनाई,
जुगन–जुगन चल आई।
माता–पिता गुरु उर स्वामी,
जाँसे विद्या पाई।
मिलत रये जे पाँच ऐकसे,
सदा रये सुख पाई।
इनसे कपट चाइयत नइयाँ,
जब ही होत भलाई।
माया प्रेम गुरु चेला की,
'ईसुर' नई जुदाई।

जाहर = प्रकट, जा = यह, जगरीत = संसार का नियम, जाँसे = जहाँ से, पाँच = पाँचों अर्थात् माता, पिता, गुरु, स्वामी और शिष्य, चाइयत = चाहिए।

युगों–युगों से संसार में यह रीति चली आई है कि माता, पिता, गुरु और स्वामी अर्थात् इष्ट और शिष्य में सामंजस्य होना चाहिए जहाँ से ज्ञान प्राप्त हुआ, विद्या बुद्धि मिली। यह पाँचों समरूप में परस्पर एक दूसरे से मिले रहें, तो सौख्य का क्या कहना? यानी सदैव सुख ही सुख रहने वाला है। इनसे छलकपट कभी न रखना चाहिए, इसी में भलाई है। गुरु–शिष्य के बीच में जुदाई उत्पन्न माया जंजाल कर सकता है।

आऔ जौ कलजुग कौ पारौ,
सतजुग दै गव टारौ।
मौ देखी पंच्याट होत है,
देख चीकनौ द्वारो।
कर पंच्याट पर पंच चले गए,
कौनौ भवन निबारौ,
'ईसुर' कात चलो भग चलिये,
इतै न होत गुजारौ।

पारौ = पहरा, ओसरी, प्रहर, टारौ = टाल देना, पंच्याट = पंचायत, चिकनौ = सुन्दर या बड़ा, दुआरौ = द्वार, निबारौ = सुलझाने के अर्थ में, गुजारौ = गुजर बसर के अर्थ में।

यह कलयुग का प्रहर या कालखण्ड है। सतयुग टाला देकर प्रस्थान कर चुका। मुँह देखी पंचायत होने लगी। अच्छा द्वार देखा उसी के पक्ष में न्याय दे दिया। ऐसी पंचायत करके प्रपंच चल पड़े हैं। किसी भवन में यानी मन में, सुलझाव की बात शेष नहीं रही। ईसुरी कहते हैं – चलो यहाँ से भाग चलें अब यहाँ गुजर होने वाला नहीं है।

जानै कौन जमानौ आऔ,
गाँठन माल गमाऔ।
भोजन बार बरक्कत नइयाँ,
खाऔ जौन कमाऔ।
अपनी मूड़ जोरिया बाँदे,
फिरत लोग सब धाऔ,
सतयुग की बा राय चली गइ,
बिन बव काटौ गाऔ।
'ईसुर' कलस कुलीनन के घर,
कलजुग कलसा छाऔ।

जमानौ = समय, देशकाल, बरक्कत = ऋद्धि–सिद्धि के अर्थ में, जोरिया = रस्सी से, बिन बव = बगैर बोए हुए, गाऔ = उपजाओ।

जाने कैसा समय आ गया है, गाँठ का माल गँवाना पड़ता है। भोजन आदि में अब ऋद्धि सिद्धि नहीं है। जितना कमाओ उतना ही खाओ। अपने सिर पर रस्सी बाँधे हुए सभी लोग दौड़ते घूम रहे हैं। सतयुग की वह लीक भी चली गई जब बगैर बोए काटकर फसल प्राप्त कर लेते थे। आज तो कुलीन लोगों के भवनों पर कलयुगी कलश ही छत्र की भाँति चमक रहे हैं।

उदना रेख करम में खाँची,
हौनहार सो साँची।
जैसी लिखी भाग में भाबई?
आन अँगारू नाँची।

पक्की मौत होत पाँवन की,
उये गिनौ ना काँची।
राखी बात आप बिध हातन,
आन बेद मैं बाँची।
साजी-बुरई 'ईसुरी' चर्चा,
सिनसारी में माँची।

उदना = उस दिन, रेख = लीक, करम = कर्म, खाँची = खींच दी, हौनहार = भावी सम्भावनाओं वाले के अर्थ में, भाबई = भुगतने के अर्थ में, आन = आकर के, अँगारू = आगे, उये = उसको, बाँची-पढ़ी, साजी-बुरई = अच्छी - बुरी, सिनसारी = संसार में।

होनी को कोई टाल नहीं सकता। कर्म भी भाग्य अथवा होनी को मिटा नहीं सकता। होनहार तो होकर रहेगी। भाग्य में यदि कोई परेशानी लिखी है तो वह आकर रहेगी। मनुष्य चाहे जितनी कोशिश करे। होनी के पैर बहुत मजबूत होते हैं वह कमजोर कहीं से भी नहीं है। इसलिए जिसने सब कुछ उसी विधाता पर छोड़ दिया है, वही ठीक है। वेद और शास्त्रों में हमने पढ़ा है - भली-बुरी चर्चा इस संसार में चलती ही रहती है। संसार इसी का नाम है।

जौलौ जग में राम जियाबैं,
जे बातैं बरकाबैं।
हात पाँब दृग-दाँत बतीसउ
सदा एक से राबैं।
ना दिन ग्रेही करै काउ खों,
ना घर बनौ मिटाबैं।
बनी बिगारै ना आपुस की
कुलै दाग ना आबैं।
इतने में कुछ होय 'ईसुरी',
बिना मौत मरजाबैं।

जौलौ = जब तक, जियाबैं = जीवित रखें, बरकाबैं = बचावें, राबैं = रहें, मिटाबैं = नष्ट करने के अर्थ में, आपुस = परस्पर, कुलै = कुल को।

जब तक इस संसार में राम जीवित रखता है तब तक इतनी बातों से बचाए रखें। हाथ-पैर, दोनों आँखें और बत्तीसों दाँत सदैव समान बने रहें, कमजोर न पड़ें। न कभी किसी को ऋणी

बनायें न किसी का बना हुआ घर नष्ट करें परस्पर की बनी हुई बात भी न बिगाड़ें, न ही कुल को कोई कलंकित करे। इनमें से यदि एक भी बात हो जाए तो समझो बगैर मौत का मरना हो गया।

हौनी अब नइ बचत बचायें,
कोस लक्ष के धायें।
पोथी – पुरान भागवत गीता,
सालोत्तर समझायें।
कागै हाड़ हंस खों मोती,
मिलत रात अनचायें।
'ईसुर' जा करमन की रेखा
अब नइ मिटत मिटायें।

हौनी = होनहार, कोस लक्ष = एक लाख कोस तक, पोथी = धर्मग्रन्थ, सालोत्तर = वह नियमावली जिसमें घोड़ों के शुभाशुभ का ज्ञान होता है, कागै = कौआ को, हाड़ = हड्डी, रात = रहती है, अनचायें = बगैर चाह के, बिन प्रयास स्वत: ही, करमन = कर्मों।

लाख कोस तक भाग जाओ तो भी होनी से बचना असम्भव है। बचने का कितना भी प्रयास क्यों न हो सब व्यर्थ होता है। चाहे जितने धर्मग्रन्थ के लक्षण अर्थात् पोथी – भागवत, पुराण, गीता अथवा सालोत्तर आदि सब कुछ क्यों न समझ लो। होना वही है, जो भाग्य में लिखा है। कौए के भाग्य में हड्डी का टुकड़ा एवं हंस के लिए मोती अपने आप अनचाहे उपलब्ध रहता ही है। अत: यह कर्मों की रेखा अमिट होती है, मिटाए नहीं मिटती।

विशेष :- कर्मफल में आस्था।

चौपर है राजन के लानै,
जिनै जगीरी खानै।
बड़े भोर सै बिछौ गलीचा,
ठान ओइ की ठानै।
निसदिन तार लगी चौपर की,
मरे जात भैराने।

कात 'ईसुरी' जुरकै बैठत,
लबरा कैइ सयाने।

चौपर = चौसर का खेल, राजन = राजाओं, जगीरी = जागीरें, गलीचा = कालीन, ठान = कृत संकल्प के अर्थ में, तार = तारतम्य, भैराने = भूखे दरिद्र के अर्थ में, जरके = एकत्र होकर, लबरा = झूठे, सयाने = चतुर बदमाश के अर्थ में।

यह चौसर का खेल तो राजा रईसों के लिए है, जिन्हें बैठकर जागीरी से बैठे-बैठे खाने को मिल रहा है। यह जनसाधारण का खेल नहीं है। बड़े सबेरे से ही कालीन बिछ जाता है और दिन भर चौसर ही चौसर खेलना। चौसर के खेल में जैसे पागल ही हो गये हैं। यहाँ तक कि भूखे दरिद्र जन भी इसी में मरे जा रहे हैं। ईसुरी कहते हैं- झूठे एवं सयाने अनेक लोग ऐसे ही एकत्र होकर निठल्ले बैठे रहते हैं और चौसर के खेल में अपना अमूल्य समय गँवाते रहते हैं।

जुरकैं चार बताती गुइयाँ,
कीके कैसे सइयाँ।
पैली कात मिले है हमखाँ।
बड़े लजाउन सइयाँ।
पर तिरिया घर जातन अखरे?
दूजी भई कहइयाँ।
ऐसे बैन सिकारी राजा,
तीजी के मन मइयाँ।
चौथी 'ईसुर' पिया खों प्यारी,
रात हात की छइयाँ।

जुरके = इकट्ठे होकर, बतातीं = परस्पर बातचीत करती हैं, गुइयाँ = सखियाँ, कीके = किसके, पैली = प्रथम, कात = कहती हैं, लजाउन = लजाने वाले, पर तिरिया = परकीया, अखरे = खलते हैं, दूजी = दूसरी, कहइयाँ = कहने को, बैन = बहिन, सिकारी = आखेटक, मन मइयाँ = मन की मन में ही रही।

चार सहेलियाँ एकत्र हैं परस्पर बात करती हैं कि किसके प्रियतम कैसे हैं? प्रथम कहती है कि मेरे तो लजाने वाले हैं, क्या कहूँ जब वे परकीया गमन करते हैं, तब मुझे बेहद खराब लगते हैं। दूसरी सखी कहने ही वाली थी कि तीसरी ने कहा - मेरे तो शिकारी राजा हैं और मन ही में रहते हैं। चौथी कहती हैं मैं अपने प्रियतम की अतिप्रिय हूँ मुझ पर सदैव उनके हाथ की छाया रहती है।

पाइ खुदा के घर की कीनैं,
कीखौं मरनैं जीनैं।
बिध ललाट के अच्छर ऐसे,
लिखे न काउ चीनैं।
एकन खों धन-बान करत है,
एकन कौ धन छीनैं।
'ईसुर' ऐसे करम करत है,
अल्ला ख्याल नबीनैं।

कीने = किसने, कीखौं = किसको? विध = ब्रह्मा, ललाट के अच्छर = लिलार का लेखा, चीने = पहचाने।

किसको कब मारना है, कब जीना है यह खुदा के घर की बात है। इस रहस्य को कोई नहीं पा सका। ब्रह्मा ने जो अक्षर ललाट पर लिख दिए हैं, ऐसे अक्षर किसने पहचाने? किसी को तो धन सम्पन्न बनाया है तो किसी की सम्पन्नता छीनकर दरिद्री बनाया है। ईसुरी कहते हैं – विधाता ने सबके मस्तक पर यानी भाग्य में कुछ न कुछ लिख दिया है।

माँगें चार मिलैं ना भाई,
बिन पूरब पुन्नाई।
बिन पूरब के पुन्य मिलैना,
बिरथाँ जात बड़ाई।
बिन पूरब के पुन्य मिलैना,
जौ शरीर सुख दाई।
बिन पूरब के पुन्य मिलैना,
सुन्दर नार सुहाई।
बिन पूरब के पुन्य 'ईसुरी'
कीनै सम्पत पाई।

माँगें = माँगने से, पूरब = पूर्व जन्म की, पुन्नाई = पुण्य से, बिरथाँ = व्यर्थ, कीने = किसने, सम्पत = सम्पत्ति।

पूर्व जन्म के पुण्य के बगैर चार सच्चे भाई-बन्धु हितैषी माँगने पर भी नहीं मिलेंगे। बगैर पूर्व पुण्य मिले बड़प्पन भी व्यर्थ है। पूर्व पुण्यफल के बगैर भौतिक सुख भी दुर्लभ हैं। पूर्व पुण्य

फल के बिना सुन्दर नारी भी दुर्लभ है। बिना पूर्व पुण्य फल के सद्बुद्धि किसको मिली है? अर्थात् पूर्व के पुण्य फल के बिन चारों फल धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि सभी दुर्लभ हैं।

पैलें कुठिया में गुर फोरैं,
फिर पंच्यात निपोरैं।
माँय के नाँय, नाँय के माँय,
सब खाँ रात बिलोरैं।
ऊपर कौ चूपर करबे खों,
चार जने खों जोरैं।
'ईसुर' कात ऐइ के मारैं,
कड़ियत नइयाँ दोरैं।

पैलें = पहले, कुठिया = अनाज भरने की मिट्टी की एक टंकी, गुर = गुड़, फोरैं = फोड़ने के अर्थ में, निपोरैं = करने के अर्थ में, माँय = वहाँ के, नाँय = यहाँ, नाँय के माँय = यहाँ के वहाँ, बिलोरैं = भ्रम में डालने के अर्थ में, ऊपर कौ चूपर = ऊपर का नीचा करने के अर्थ में, कड़ियत = निकलता, दोरैं = द्वार से, खोरैं = गलियों से।

पहले गुपचुप कुठिया में गुड़ फोड़ते हैं अर्थात् किसी कार्य को गुप्त रूप में करते हैं। बाद में पंचायत बुलाते फिरते हैं? यहाँ का वहाँ और वहाँ का यहाँ यानी इधर-उधर करके सभी को चक्कर में या भ्रम में डालते हैं। हर किसी को ऊपर से नीचे गिराने की तजबीज भिड़ाने के लिए फालतू आदमियों को इकट्ठा करते रहते हैं। ईसुरी कहते हैं – इसीलिए तो मैं अब अपने घर से बाहर नहीं निकलता।

को नई जानत बुरैं चितैबौ,
रूखे मन मुस्कैबौ।
को नइ जानत आँस – गाँस की,
बात लगोई कैबौ।
लैबौ हुआँ रकत बराबर,
वे मन भिक्षा दैबौ।
का बौरन से बात बतानै,
अंदरै नैन निरैबौ।

पर घर 'ईसुर' साजौ नइयाँ,
बे आदर कौ जैबौ।

बुरैं = बुरी तरह, कुदृष्टि से, चितैबौ = देखना, आँस-गाँस = तिकड़म भिड़ाने के अर्थ में, लगोई = बनाकर, हुआँ = वहाँ, रकत = रक्त, बौरन = गूंगे, मूकबधिर, अंदरै = अंधे को, निरैबौ = दिखाना, जैबौ = जाना।

यानी उपेक्षा भाव की प्रतीति छुपती नहीं, रूखे मन उपेक्षित दृष्टि को कौन नहीं जानता है? यदि कहीं बेमन से भिक्षा मिले तो उस भिक्षा का लेना खून पीने के बराबर है। मूकबधिर से किस प्रकार - बात की जा सकती है और अन्धों को कोई क्या आँख दिखा सकता है। दूसरों के घर बिन आदर भाव के जाना भी अच्छी बात नहीं है। तिकड़मबाज लोगों सी बातें बना-बनाकर अपना उल्लू सीधा करने की बुद्धि के क्या कहने?

चूक जात सब कोई,
कैसुइ स्यानौ होई।
हय-गजदन्त पुनीत चड़इया,
चूक जात जे दोई,
चूक जात मानस परखइया,
परख रये है खोई।
चुकइ जात पुरानी - पांडे
बैरागी तप सोई।
'ईसुर' कात चुगल ना चूकै,
होबै बड़ौ अनोई।

कैसुइ = कैसा ही, स्यानौ = चतुर, हय = थोड़ा, चड़इया = सुन्दर, परखइया = पारखी, पुरानी = पुराण पंथी, चुगल = चुगलखोर के अर्थ में, अनोई = उद्यम का जोड़-तोड़ करने वाला।

एक दिन सभी कोई चूक जाते हैं, कैसा ही कोई चतुर क्यों न हो? घोड़े या हाथी पर सवारी करने वाले प्रवीण सवार दोनों भी कहीं न कहीं चूकते हैं। मनुष्य को परखने वाले पारखी भी परख करने में चूक जाते हैं। अच्छे-अच्छे पुराणों के ज्ञाता पुराण पन्थी पाण्डेय, तपस्वी, वैरागी भी चूक जाते हैं। ईसुरी कहते हैं कि चुगल प्राय: नहीं चूकता क्योंकि वह तिकड़म भिड़ाने में प्रवीण होता है।

जीके जब जैसे दिन आये।
कैसै जात बराये।
दिनन फेरके फेर परे सैं,
स्यार सिंग खौं धाये।
दिनन फेर से राय मुनइयाँ,
बाजै झपट दिखाये।
दिनन फेर से सरपन ऊपर,
मिदरन मूड़ उठाये।
बेर–बेर जे खात 'ईसुरी'
बेर बीन तिन खाये।

जीके = जिसके, बराये = बरकाने या टालने के अर्थ में, स्यार = श्रगाल या गीदड़, सिंग = शेर, गुनइयाँ = छोटी एक चिड़िया, बाजै = बाजको, सरपन = नागों, मिदरन = मेढ़कों ने, बेर–बेर = पुनः–पुनः।

जिसके जब जैसे दिन आते हैं उससे कोई बच नहीं सकता है? समय के फेर के कारण कभी गीदड़ भी शेर को खदेड़ देता है। दिनों के ही फेर पड़ने पर राय मुनइया जैसी नन्हीं चिड़िया भी बाज तक को झपट लेती है। दिनों के फेर से नागराज के सिर को मेंढ़क तक दबोच लेते हैं। सब समय का फेर है। जो लोग बार–बार खाते थे, आज केवल तीन फल खाकर जी रहे हैं। समय बहुत बलवान होता है।

विशेष :– इस पद पर महकवि भूषण का प्रभाव बेर – बेर खात तीं सो बेर बीन खात है स्पष्ट परिलक्षित है।

दुश्मन कुदनन कै – कै आबैं,
आन अजूकाँ दाबैं।
कुदन आयँ सब कोउ सब खाँ,
औघट घाट लगाबैं।
कुदनन आयँ पै होत इ ऐसौ,
बय खों और बुआबैं।
कुदनन सुधा साथ ना देबै,
सुदन सुभल पथ पाबै।

कुदनई से सुम्मेरे 'ईसुरी',
माटी में मिल जाबैं।

कुदनन = दुर्दिन, अजूकाँ = धोखे से, औघट = उबड़-खाबड़ घाट, बय = बहते हुए को, सुदन = खुशहाल, अच्छे दिन, सुफल = शुभ फल, सुम्मेर = सुमेरू पर्वत (जो सोने का था)।

भगवान् किसी को भी शत्रु की तरह लगने वाले बुरे दिन न दिखाये। ये चुपचाप आकर धोखे से धर दबाते हैं। ये दुर्दिन किसी को औघट यानी दु:ख के उबड़-खाबड़ रास्ते पर उतार देते हैं। दुर्दिन आते हैं तो ऐसा होता है कि जो डूब रहे हैं उन्हें और जोर से डुबाते हैं। दुर्दिनों में अमृत भी साथ नहीं देता जबकि भले दिनों में शुभ फल एवं पथ सहज मिलता है। दुर्दिनों में सुमेरू पर्वत की श्रेष्ठता भी मिट्टी में मिल जाती है।

रइयो करन हार सैं डरते,
पल में परलय परते।
पल में धरती बूँद न आबै,
पल में सागर भरते।
पल में बिगरे बना देत हैं,
पल में बने बिगरते।
तृन से बज्र – बज्र से तिनका,
तिल से बज्जुर करते।
'ईसुर' कयें करता की बातैं,
बिरले कोइ नजरते।

करनहार = करने वाले (विधाता), परलय = प्रलय, विरले = किंचित् कोई हो, नजरते = दीखते हैं।

उस कर्ता अर्थात् विधाता से डरते रहना, वे पलभर में प्रलय कर सकते हैं। पल भर में धरती पर पानी की एक बूँद भी न रह पाये और कहो तो पलभर में समुद्र भर जाए। पल भर में बिगड़े काम बना दें, और पलभर में बने हुए काम बिगाड़ भी दें। तृण से वज्र, वज्र से तृण या तिल से वजु बनाकर रख दें। ईसुरी कहते हैं – उस कर्ता की बातें विरले ही देख पाते हैं।

इनपै लगे कुलरियाँ घालन,
मउआ मानस पालन।
इनै काटबौ ना चइयत तौ,

काट देत जे कालन।
ऐसे रूख–भूख के लानै,
लगवा दय नंदलालन।
जे कर देत नई सी 'ईसुर'
मरी मराई खालन।

कुलरिया = कुल्हाड़ी, मउआ = महुआ, चइयत तो = चाहिये था, कालन = अकाल तक को, रूख = वृक्ष, मरी – मराई = मृतप्राय, खालन = चमड़ी को।

बुन्देलखण्ड का जातीय वृक्ष महुआ माना जाता है। महुआ वृक्ष को काटते हुए देखकर तो ईसुरी ने लिखा है – इन पर कुल्हाड़ी का प्रहार क्यों कर रहे हैं यह महुआ तो मनुष्य के पालक हैं। इन्हें काटना नहीं चाहिए, यह तो अकाल तक को काटने की क्षमता रखते हैं। ऐसे वृक्ष भूख के लिए भगवान् ने ही लगवा दिए हैं। यह तो मृतप्राय चमड़ी को नयी सी कर देने में सक्षम है।

अपनौ संसारी में यारौ,
समज–समज पगधारौ।
चलबै करौ धरम की रस्ता,
रामै नई बिसारौ।
बदमासी चुगली से हरदम,
चलियो काट किनारौ।
जौ कलजुग कौ बखत 'ईसुरी'
जतन–जतन से टारौ।

संसारी = सांसारिकता, यारौ = मित्रता, बिसारौ = भूलो, बदमासी = बदमाशी, चुगली = चुगलखोरी, बखत = समय, जतन = यत्न।

मित्रों! सांसारिक जीवन में अपने कदम सोच–समझकर रखो। धर्म की तरह चला करो, राम को मत भूलो। बदमाशी एवं चुगलखोरी से सदैव किनारा काटकर चलो। यह कलयुग का समय है इसे सावधानीपूर्वक टालना चाहिए। कलयुग स्वार्थ का समय है।

यारों पर नारी से बरकौ,
येइ हुकुम है हरकौ।

ई कलजुग कौ जाल कठिन है,
रहबौ बड़ी खबर कौ।
जिनके संगै परी भाँबरै,
जोड़ा – नारी – नर कौ।
जो सुख चाहौ घरी भरेकौ,
मिटै जनम कौ खटकौ।
'ईसुर' श्याम आस सब छोड़ौ,
भजन करौ रघुबर कौ।

यारों = मित्रों, पर नारी = परकीया, बरकौ = बचो, येई –= यही, भाँवरें = फेरे, खटकों = खटका।

मित्रों! पर स्त्री से बचो, परमात्मा भी यही चाहता है। इस कलयुग का जंजाल बड़ा कठिन है, सावधान रहने की जरूरत है। वही स्त्री – पुरुष जिसके साथ फेरे पड़े हैं वही जोड़ा है। परस्त्री गमन के घड़ी दो घड़ी सुख के लालच को छोड़ देने से जन्मभर का यह खटका समाप्त होगा। ईसुरी कहते हैं– सब कुछ विधाता पर छोड़ दो और सत्य की राह पर चलो, परम पिता परमेश्वर के भजन करने में अपना समय बिताओ। इधर–उधर मत भटको।

हौनी दो पग चलत अंगारै,
सब तन चलत पछारैं।
जैसुई पाँब धरौ आँगे खों,
भार देह का धारैं।
करमन बचन करत है ओई,
हौनी जौन बिचारैं।
सुर–मुन–नर व्याकुल हैं 'ईसुर'
ई हौनी के मारैं।

हौनी = भवतव्यता, अंगारै = आगे, पछारै = पीछे, जैसुई = जैसे ही।

होनी दो कदम आगे ही चलती है, शेष सब लोग पीछे चलते हैं। जैसे ही उसने आगे को कदम रखा नहीं कि देह का भार क्या से क्या हो जाता है? यौवन का आगमन हो चुका है। कर्म और वाणी भी होनी के अनुसार मनुष्य को मिलती है। जैसे होनी चाहती है, वैसे ही मनुष्य कर्म करता है और उसी के अनुरूप उसकी बोली भी निकलती है। सुर–मुनि–नर सभी इस होनी के कारण व्याकुल रहते हैं।

हौनी कबऊँ ना जात अनूठी,
जिदना जी पै रूठी।
इक दिन रूठी राजा नल पै,
हार लील गई खूँटी।
इक दिन रूठी कंसासुर पै,
मूड़ खपरिया फूटी।
इक दिन रूठी ती अर्जुन पै,
भील गोपका लूटी।
सौनै की गढ़ लंक 'ईसुरी'
घरी भरे में टूटी।

कबऊँ = कभी भी, अनूठी = व्यर्थ के अर्थ में, जिदना = जिस दिन, लील गई = निगल गई।

होनी कभी भी झूठी या व्यर्थ नहीं होती वह जिस दिन जिस पर भी रूठ जाए उस पर आ जाती है। होनी एक दिन राजा नल पर रूठी थी तो खूटी पर टँगा बहुमूल्य हार स्वयं खूँटी निगल गई थी और उन पर और अधिक दुर्दिनों की काली छाया मँडरा गई थी। एक दिन वह कंस पर रूठी तो उसकी सिर की खोपड़ी ही चकनाचूर हो गई। एक दिन योद्धा अर्जुन पर रूठी थी तो उनकी गोपियों को भीलों ने लूट लिया था। ईसुरी कहते हैं– इतना ही नहीं रावण की सोने की लंका घड़ी भर में जल गई थी। होनी का यही अनूठा खेल है।

जग में कठिन प्रीत कौ करबौ,
बिना मौत के मरबौ।
इक दिन जान मुफत में जाबै,
सूली कैसौ चढ़बौ।
करकै प्रीत न हमै परखियो,
पीछे होत अखरबौ।
'ईसुर' कात आसान न जानौ,
पर तिरिया संग परबौ।

करबौ = करना, परखियो = परख लेना, अखरबौ = खलना, पर तिरिया = पर स्त्री, परबौ = सोना।

संसार में प्रीति का करना अति कठिन होता है, यह बगैर मौत के मरने के समान है। प्रेम में एक दिन मुफ्त में ही प्राण भले चले जाते हैं। प्रेम करना मानो सूली पर चढ़ना है। अत: प्रीति

करके मुझे परखने की कोशिश मत करना अन्यथा पीछे बहुत पछताओगे। ईसुरी कहते हैं कि पराई स्त्री के साथ प्रेम करना और सेज पर सोना कोई सरल काम नहीं है।

जे दिन है वर्षा के आड़े,
कयें लगत है जाड़ें।
जिनके सदा असाड़ चूक गए,
तिनके भरे न भाँड़े।
ई खेती से सब जग लागौ,
राजा–जोगी पाँड़े,
'ईसुर' कात हमै का कन्नैं,
रोज करै रव ठाँड़े।

कयें = कहते हैं, जाड़े = सर्दी, भाड़ें = भंडार के अर्थ में।

यह एक ही रचना का अन्य पाठ है। आषाढ़ मास में कृषकों को खेती के कार्य में जुट जाना चाहिए। कुछ लोग सर्दी लगने का बहाना करके सो जाते हैं। ऐसे लोगों को चेतावनी इस रचना में दी गई है कि – यह वर्षा के दिन ही आड़े आएँगे, तुम कहते हो कि सर्दी लगती है, जिनके घर सदैव आषाढ़ मास चूक जाता है, उनके भण्डार कभी नहीं भरते। इस खेती से ही सारा संसार लगा है, चाहे राजा हो, योगी हो या पण्डित हो। ईसुरी कहते हैं– मुझे क्या करना! इसके बारे में सोचो। तुम नित्य तैयार खड़े रहो यानी आलस्य न करके खेती कार्य के लिये समयानुसार सदैव तैयार रहो।

तुमखाँ कात लगत हैं जाड़े,
बरसा के दिन आड़े।
ई अषाढ़ पै चूके कब कब,
कीनें भर लए भाँड़े?
ई बरसा से सब कोउ लगौ,
जोगी, राजा, पाँड़े।

कात = कहते हैं, जाड़े = सर्दी, झंडे = बर्तन, रोज = नित्य प्रति।

तुमको अब ठण्ड लग रही है, वर्षा के दिन जो आ गये हैं? इस आषाढ़ मास में चूक जाने पर कब किसके भंडार भर पाये हैं? इसी वर्षा से सभी लगे हैं, योगी, राजा, पाण्डेय आदि। अतः ईसुरी कहते हैं मुझे क्या करना नित्य ही उन्हें खड़ा किए रहो कार्य न करने दो?

दीपक दया धरम कौ जारौ,
सदाँ रात उजयारौ।
धरम करे बिन करम खुलै ना,
ज्यों कुँजी बिन तारौ।
समझा चुके करै न रइयो,
दिया तरै अंदयारौ।
कात 'ईसुरी' सुनलो भइया,
लगजै पार नबारौ।

जारौ = जलाओ, रात = रहता है, तारौ = ताला, अंदयारौ = अंधेरा, नबारों = जीवन के अर्थ में।

दया और धर्म का दीप जलाइये। उससे सदैव प्रकाश रहता है। धर्म किये बगैर कर्म की महत्ता नहीं है। जिस प्रकार बगैर चाबी के ताला नहीं खुलता। उसी प्रकार बिना धर्म के कर्म अधूरा है। समझा चुका हूँ अतः तुम दीपक तले अँधेरा न रखे रहना। ईसुरी कहते हैं – सुन लो इसी प्रकार जीवन पार लग सकेगा।

इनखों इतै ना राखैं रइयो,
पठै सासरैं दइयो।
जो ससुरे से कोउ न आबै,
चिट्ठी लिख पौंचइयो।
बंगाले, मस्ती के भारैं,
खबर भूल ना जइयो।
'ईसुर' कात मायकैं रैके,
अपजस ना कर लइयो।

पठै = भेजने के अर्थ में, सासरैं = ससुराल, चिट्ठी = पत्र, बंगाले = गाली के अर्थ में प्रयोग, मायकै = पीहर, अपजस = अपयश।

सयानी ब्याही बेटी के माता-पिता के लिए ईसुरी सीख देते हैं। इनको (बेटी को) यहीं मत रखे रहना, ससुराल भेज देना। यदि ससुराल से कोई लिवाने न आवे तो पत्र लिखकर भेज देना। कहीं अपनी मौज मस्ती में बेटी के सुख का विस्मरण मत कर देना। ईसुरी कहते हैं पीहर में अधिक दिन रहकर कोई अपयश न कर बैठना।

यारी कठिन होत है बानौ,
कोउ सहज ना जानौ।
जइ यारी में बाल चले गए,
राउन नई पुसानौ।
भारी सूर हतौ भस्मासुर,
छिन में भऔ रमानौ
पर तिरियन से मेर 'ईसुरी'
निबतन नईं दिखानौ।

यारी = मित्रता, बानौ = पहरावा-ओढ़ावा यानि वस्त्र, राउन = रावण, पुसानौ = सुहाया, रमानौ = जाता बना, पर तिरियन = परकीया, निबतन = निभते हुए।

मित्रता का बाना पहनना कठिन होता है, इसे कोई सहज न समझ ले, यह बड़ी कठिन बात है। यानी संसार में मित्रता को निबाहना बड़ा कठिन है। इसी मित्रता में बालि चले गए। रावण भी नहीं रहा। भस्मासुर तो बहुत बड़ा शूर था, क्षण भर में जाता रहा। ईसुरी कहते हैं- पर स्त्रियों से मेल किया जाए और वह निभ भी जाए ऐसा कभी नहीं देखा गया।

अपनौ होत कहाँ कौ जैबौ,
हो जाबै कै दैबौ।
ठाँड़े होकै तुमै चाइये,
दो बातैं सुन लैबौ।
इतै कोउ नइँ बाँदे राखत,
अटकौ तनक बतैबौ।
सुन हौ कै ना सुन हौ प्यारे,
द्विज 'ईसुर' कौ कैबौ।

जैबौ = जाना, कै दैबो = कह देना, अटकौ = रूको, तनक = थोड़ा, बतैबौ = बताना, कैबौ = कहना।

आप कहाँ जा रहे हैं? जहाँ भी जा रहे हो हमें बता दीजिये। थोड़ी देर रूककर मेरी दो बातें भी सुन लो। यहाँ कोई तुम्हें बाँधकर नहीं रखने वाला है। रुको, थोड़ा बता तो दो। इस ब्राह्मण ईसुरी का कहना सुनोगे या न सुनोगे।

सबसे बोलौ रस की बानी,
कौन बड़ी जिन्दगानी।
येइ बानी गजरा पैराबै,
येइ उतारै पानी।
येइ बानी बैकुन्ठ दिखाबै,
येइ नरक की खानी।
'ईसुर' चले बैकुन्ठ धाम खाँ,
करकै नाम निशानी।

येइ = यही, गजरा = पुष्पहार, पैराबै = पहिनती है।

सबसे मधुर वाणी बोलनी चाहिए क्योंकि जीवन बड़ा नहीं है यही बोली गले में पुष्पहार पहनवा दे अथवा यही पानी उतार दे यानी एक क्षण में इज्जत न रहे। यही वाणी स्वर्ग पहुँचा दे या यही नर्क की खान में ले जाकर पटक दे। ईसुरी कहते हैं – मधुर वाणी के कारण ही लोगों को स्वर्गधाम मिल सकता है। जीते जी मधुरवाणी नाम की ख्याति तो देती ही है, मरने के बाद भी लोग याद करते हैं।

आ गऔ बेइमानी कौ पारौ,
इतै ना डेरा डारौ।
पंचन में परपंच जुरत है,
करै न बारौ न्यारौ।
मौ देखी पंच्यात करत है,
तकैं चीकनौं द्वारौ।
'ईसुर' कात सबई के मन की,
जौ तगड़ा तो डारौ।

पारौ = प्रहर, पहरा, कालखण्ड, डेरा = पड़ाव, परपंच = प्रपंच, बारौ-न्यारौ = जैसे का तैसा सही, तकैं = देखें, चीकनो द्वारौ = भला द्वार, तगड़ा = दाँव पेंच।

अब ऐसा समय आ गया है जहाँ बेईमानी का ही बोलबाला है। अत: अब यहाँ पडाव डालने की आवश्यकता नहीं है। पंचों में प्रपंच ही होता है। सही-सही इन्साफ कहाँ है? मुँह देखी पंचायत होती है। जहाँ बड़ा द्वार देखते हैं, उसी के पक्ष में बोल पड़ते हैं। ईसुरी सभी के मन की कहते हैं इसके विरुद्ध सदैव आवाज उठाना चाहिए।

देखी रौताइन की बखरी,
तनक न चौंरी चकरी।
दैरी दोरै बऔ नरदबा,
जेइ बात मोय अखरी।
जौन दुआरै जेउन बैठे,
मई टँगी है तखरी।
बड़े घरन ना चइये 'ईसुर'
ऐसी जोगा सकरी।

रौताइन = रावत जी की घरवाली, बखरी = घर, चौंरी-चकरी = चौड़ी चक्कर वाली, बड़ी के अर्थ में, नरदबा = परनाला, अखरी = खली, जेउन = भोजन करने को, तखरी = तराजू।

मैंने रौताइन का घर देखा, उसका घर जरा भी बड़ा नहीं है। देहरी-द्वार पर बहता परनाला मुझे अच्छा नहीं लगता। जिस द्वार पर भोजन हेतु पंक्ति में बैठे, वहीं पर तराजू टँगी है। हर बात तोलमोल के साथ स्वार्थपरकता से की जाती है। बड़े घरों में ऐसी संकीर्णता उचित प्रतीत नहीं होती।

अपनों को खोबै ईमानैं,
घरी भरे के लानैं।
एक बूँद रंग-रस के लानैं,
कोटन जनम नसानैं।
जो जैसी करनी करहै सो,
दैनैं परहै छानैं।

जे बातैं बरकाव 'ईसुरी'
परमेसुर घर जानैं।

ईमानैं = ईमान को, नसानैं = बिगड़ेंगे, छानैं = छानकर, बरकाब = बचाओ।

मात्र घड़ी भर के लिए अपना ईमान कौन खोए? एक बूँद भर यानी थोड़े से रंग-रस के आनंद के लिए करोड़ों जन्म नष्ट किए जाएँ? जो जैसी करनी करेगा, उसे वैसा का वैसा बारीक से बारीक सपष्ट फल भुगतना पड़ेगा। ईसुरी कहते हैं – क्योंकि परमेश्वर के घर एक दिन सबको जवाब देना है।

ऐसौ अवगुन करौ न मैंने,
खबर बिसारी तैंने।
सारी बुरी मरे के ऊपर,
सब लोगन खों कैने।
जस-अपजस रै जात हात में,
एक साथ में रैनै।
माता और अमाता दो हैं,
दाता दया अदैनै।
इक बस्ती में बसत 'ईसुरी'
कुमत-सुमत दो बैनैं।

अवगुन = अनर्थ के अर्थ में, जस-अपजस = यश-अपयश।

तूने मेरी सुधि यानी याद भुला दी? ऐसा मैंने कौन सा अपराध किया है? मरणोपरान्त यश और अपयश ही रह जाते हैं? दोनों सदैव एक साथ ही रहते हैं? माता और कुमाता दो होती हैं। दाता भी दो तरह के होते हैं- एक दयावान दाता और दूसरे अनिच्छा से दान देने वाले। इसीलिए ईसुरी कहते हैं – एक ही नगरी में सुमति और कुमति नाम की दो बहिनें अवश्य रहती हैं।

मारे-मारे फिरत ईसुरी,
कोउ नइँ करत नबेरौ।

व्यक्तिगत

कवि की अपनी बातें

जाके होत विधाता डेरे,
को कर सकत सहेरे।
पाब रती के जोड़ लगाये,
परे हात के फेरे।
अदिन – दिना जब आन परत हैं,
दालुद्दुर नै घेरे।
मारे – मारे फिरत 'ईसुरी'
संजा और सबेरे।

डेरे = टेड़े, सकत = सकता है, सहेरे = सहायता, फेरे = चक्कर पड़ने के अर्थ में, अदिन = बुरे दिन, दालुद्दुर = दरिद्रता, घेरे = घेर लिया, संजा = संध्या तक।

जिसके स्वयं भगवान् ही प्रतिकूल हैं, उसकी सहायता भला कौन कर सकता है? एक-एक पाव – रत्ती यानी एक-एक पैसा जोड़-जोड़कर थोड़ी बहुत हैसियत बनाता हूँ, दुर्भाग्यवश वह सब एक क्षण में चला जाता है, वापस वही के वही दिन आ जाते हैं। जब बुरे दिन आ पड़ते हैं, तब दरिद्रता ही घेरा डालती है। ईसुरी कहते हैं – ऐसे में मारे – मारे भटकते हुए व्यर्थ सुबह से शाम हो जाती है।

उनकी बड़ी मोहनी भाखा,
चलै अगाँऊ साखा।
इनकी कहन लगत औरन खों,
गोली कैसौ ठाँका।
बैठे रऔ सुनौ सब बेसुध,

खैंचै रओ सनाका।
दूनर होत नचनियाँ फिर-फिर,
मई खों जात छमाका।
फागन खों है धीरे पन्डा,
'ईसुर' बड़े पताका।

साखा = शाख, दूनर = दुहरी, नचनियाँ = नर्तकी, मइयाँ = वहीं को।

उनकी बोली मोहित करने वाली है, अत: उनकी शाख सबसे ऊँची रहती है। उनका बोलना अन्य लोगों को ऐसे लगता है मानो बन्दूक की गोली निशाने पर जाकर लगती है। उनकी मीठी बातें सुनकर लोग अपनी सुधि भूलकर जैसे चुपचाप बैठे सुनते ही रहते हैं। ऐसा लगता है मानों चारों ओर सन्नाटा छा गया है। जिस प्रकार नर्तकी नाचती है, घूमती है और फिर नाचते-नाचते दुहरी-तिहरी हो जाती हैं। नाचते-नाचते ही पैर पटककर सम पर आकर जिस समय वह जो मुद्रा प्रदर्शित करती है, यह मुद्रा बड़ी आकर्षक होती है। इसी प्रकार फागें गाने के लिए जिस प्रकार एक ही नाम श्री धीरे पण्डा का प्रसिद्ध है, वैसे ही स्वयं ईसुरी फाग कुल के केतू हैं।

दुनिया लौट-पल्ट हो जाबै,
धरम खम्ब बल खाबै।
तौलै कौन सदा बरतन खाँ,
जाचक कौन खबाबै।
नईं लालची लाल राम कें,
बे कंगाल जिबाबै।
परमारथ कौ घटै न 'ईसुर'
अटल खजानौ राबै।

लौट-पल्ट = उलट-पलट के अर्थ में, सदा बरतन = सदावर्त वाले, जाचक = याचना करने वाले, खबाबै = खिलाए, बे = वह, जिबाबै = भोजन कराए, राबै = रहै।

संसार चाहे भले ही उलट-पुलट क्यों न हो जावे परन्तु धर्म की धुरी का बल और भरोसा फिर भी है। सदावर्त देने वालों को कोई क्या तोलेगा? यानी सदावर्त चलाने वाले को कौन देता है? याचकों को कौन खिलाता है। यह सब ईश्वर यानी राम ही कराता है। सदावर्त में लालची और कंगाल दोनों ही भोजन करते हैं। ईसुरी कहते हैं - परमार्थ कभी घटता नहीं है उसका तो अटल कोषागार भरा ही रहता है।

फागैं सुनयायें सुख होये,
दनुज देवता मोये।
ई फागुन में नर उर नारी,
एक फन्द में गोये।
भौंर भुमर कौ उगलन रै गओ,
कली – कली के जोये।
बस भर 'ईसुर' एक बचौना,
रस भर लये निचोये।

सुनयायें = सुनकर आने से, मोये = मोहित हुए, फन्द = फाँस, गोये = पिराये हुए, उगलन = उगला हुआ जूठा, जोये = देखते, निचोये = निचोड़ लिए।

फागें सुनकर आने में बड़ा सुख है। फागें सुनकर दुष्ट से लेकर देवता तक मोहित हो जाते हैं। इस फागुन अर्थात् वसन्तोत्सव के अवसर पर समस्त स्त्री और पुरुष मानो एक ही फाँस में पिरोये हुए प्रतीत होते हैं। फागें सुनने की उन्हें जैसे धुन लग गई है। इन फागों को सुनकर भँवरे भी कलियों का मुख चूमना भूल गये हैं। कलियों के मुख पर भँवरों की मात्र जूठन ही लगी रह गई है। ईसुरी कहते हैं – फाग सुनने में गाँव का एक भी आदमी नहीं बचा है। जैसे सब लोगों ने फाग का रस निचोड़ लिया है। यानी ईसुरी की फागों का मर्म सभी ने समझ लिया है।

हम खों उलट बाँच कै लइयो,
ताकी तनया कइयो।
ताके पति कौ नाँव कात हों।
जुगल समज के लइयो।
बार–बार काबें हम तुमसे,
हमें न लौटा दइयो।
सारंग बाहन धन है जाकें,
लौट पते की कइयो।
वृष, मेष उर मिथुन ईसुरी
येइ फाग में लइयो।

उलट = उल्टा, बाँच = पढ़ना, लइयो = लेना, ताकी = देखी / उसकी अर्थ में भी, तनया = बेटी, कइयो = कहना, ताके = जिसके, नाँव = नाम, कात = कहता, सारंग = मयूर, पते की = सही–सही के अर्थ में।

मेरा नाम उल्टा पढ़ लेना अर्थात् ईसुरी को उल्टा पढ़ो रीसुई यानी ऋषि, उसकी पुत्री कहना अर्थात् ऋषि पुत्री, उसके पति का नाम भी कहता हूँ, जोड़ा समझकर लेना। मैं तुमसे बार-बार कहता हूँ मुझ न लौटा देना। जिनके वाहन धन मयूर हैं अर्थात् भगवान् कार्तिकेय, उनकी लौटाकर सही-सही कहना। राशि चक्र - वृष-मेष-मिथुन वगैरह सब जन्मकुण्डली इन्हीं फागों में पाओगे।

सुनकै सीताराम तुमारी,
हमैं लगी है प्यारी।
हाजर भये हुकम के ऊपर,
परसी छोड़ी थारी।
जहाँ आपकौ गिरै पसीना,
उतै खून की धारी।
'ईसुर' कात भोर के पारन,
बोलो जै-जै कारी।

सुनकै = सुनकर, हाजर = उपस्थित, परसी = परोसी हुई, पारन = प्रहर में।

तुम्हारी सीताराम की वाणी सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगा है। मैं परोसी हुई थाली छोड़कर आपके आदेश पर उपस्थित हुआ हूँ। जहाँ आपके पसीने की बूँदें गिरेंगी, वहाँ मैं अपने रक्त की धार लगा दूँगा। सबेरे ही सबेरे तुम्हारी जय-जयकार करता हूँ।

हंसा फिरै बिपत के मारे,
अपने देश बिनारे।
अब का बैठे ताल तलइयाँ,
छोड़े समुद किनारे।
चुन-चुन मोती उगले उननै,
ककरा चुनत बिचारे।
'ईसुर' कात कुटुम अपने से,
मिलबी कौन दिनारे।

ककरा = कंकड़, बिचारे = बेचारे, कात = कहते हैं, मिलबी = मिलेंगे।

ईसुरी को जब जगजीत सिंह जू ने ग्राम धौर्रा से अपमानित कर निष्कासित किया था तब ठठेवरा ग्राम में ईसुरी अपने दुर्दिन बिता रहे थे। यह रचना उसी समय की है। हंस अब विपत्तियों से फिरे हुए दिनों में मारे-मारे घूम रहे हैं। अपने देश के (मेडकी) बगैर बेहद दुःखी हैं। अब वे मामूली ताल-तलैयों के किनारे भला क्या बैठें जबकि समुद्र के समान सरोवर उनसे छूट गए। जो हंस सदैव मोती चुग-चुगकर उगलते रहे, अब वे क्या कंकड़ चुनेंगे। ईसुरी कहते हैं - अब वह कौन सा शुभ दिन होगा जब हम अपने स्वजनों से यथावत मिलेंगे।

विशेष :- रचना में व्यंजना है, रूपक है, हंस से तात्पर्य स्वयं ईसुरी और अपने देस का तात्पर्य ग्राम धौर्रा से, वहाँ का सरस वातावरण मानो समुद्र सा अथाह अपरम्पार सौख्यकारी था। वहाँ का सुखभोग मोती सा बहुमूल्य था। अपने कुटुम अर्थात् स्वजन-परिजन की ध्वनि निश्चय ही उनकी काव्य प्रेरणा रजउ की ओर इंगित करती है। वस्तुतः वे ग्राम मेडकी जिला झाँसी के रहने वाले थे। कष्ट-काल में अपने कुटुम्ब एवं ग्राम का स्मरण होना भी स्वाभाविकता को इंगित करता है।

अब को हमसें रऔ किबइया,
ऐंगर बैठो भइया।
हते उनई खों परम प्यारे,
बैन सहित उर भइया।
पौंछै पुचकारैं ओली में,
फिर - फिर लेत बलइयाँ।
'ईसुर' अब सुरलोक चली गईं
प्रानन प्यारी मइयाँ।

किबइया = कहने वाला, ऐंगर = निकट, बैन = बहिन, ओली = गोदी, बलइयाँ = बलिहारी जाना, सुरलोक = स्वर्ग, प्यारी = ईसुरी की धर्मपत्नी का नाम।

ईसुरी अपनी माँ का स्मरण करते हैं और कहते हैं अब मुझसे कहने वाला कौन रह गया है जो कहे कि भइया पास बैठो। हम बहन-भाई उनको अति प्रिय थे। वे मुँह पौंछती थी और गोद में बैठाकर पुचकारतीं थी (प्यार करती थी) बार-बार, हमारी बलइयाँ लेती थीं। ईसुरी कहते हैं वे अब स्वर्ग लोक को चली गईं हैं जो मेरी प्राणों से प्यारी माँ थी।

पौंचै मिन्तन खों परनामै,
आए तुमारे नामै।

जौन कायदा हते पुराने,
बेइ कायदा यामें।
भीतर जाकैं जाहिर करदो,
आबैं पान डबामैं।
खुशी रये जे डील 'ईसुरी'
सुमरत रइये रामैं।

मिन्तन = मित्रों, परनामे = प्रणाम, गामै = ग्राम में, जौन = जो, बेइ = वही, यामें = इसमें, जाहिर = प्रकट, डबामें = पानदान में, डील = शरीर, व्यक्तित्व।

मित्रों तक मेरे प्रणाम पहुँचे, मैं तुम्हारे ग्राम में आया हूँ। जो नियम-कायदे पुराने थे, वही इसमें आज भी नजर आने चाहिए। पहले जैसे मेरा सम्मान होता था वैसे ही हो। अन्दर जाकर इस बात को बता दो अर्थात् कह दो कि पानदान में पान भरकर वैसे ही भेजे जाएँ। ईसुरी कहते हैं - आप सब लोग शरीर से स्वस्थ और प्रसन्न बन रहें, श्रीराम का स्मरण कर मैं सबके प्रति मंगलकामनाएँ सदैव करता हूँ।

पौंचै सीताराम हमारी,
सभा के बीच मझारी।
जितने मान होंय दंगल के,
उनै दन्डवत न्यारी।
हो गये एक बड़े से बड्डे,
उनखाँ है लाचारी।
'ईसुर' कात भोर के पारैं,
निहूँ परे गिरधारी।

पौंचै = पहुँचे, मझारी = मध्य, लाचारी = बेबसी।

सभा के मध्य मेरी जय-जय सीताराम अर्थात् प्रणाम निवेदन पहुँचे। इस दंगल में जितने सम्माननीय अतिथि आये हैं, उन्हें पृथक से दण्डवत प्रणाम करता हूँ। एक से एक बड़े से बड़े लोग हो गए हैं लेकिन उनकी भी अपनी विवशता है। ईसुरी कहते हैं - सबेरे के प्रथम प्रहर से हम कोरे ही पड़े हुए हैं। कुछ कहने-सुनने का मन ही नहीं हो रहा है, बस निश्चेष्ट पड़े हैं या कहिये फड़बाजी में फागों से विपक्षी हारकर विनम्र हो गये हैं।

विशेष :- 'निहूँ परे गिरधारी' एक बुन्देली मुहावरा है।

तुम खौं देखौ भौत दिनन में,
अबलाखा ती मन में।
हमरी – तुमरी प्रीत पुरानी,
छूटी बाला पन में।
दरसन दियौ न्यारे परके,
छिप जिन जाब सकन में,
हम तुम इक संगै खेले हैं,
मथुरा बिन्द्रावन में।
भली करा दई भेंट 'ईसुरी'
बिध नै ऐइ जनम में।

अबलाखा = अभिलाषा, ती = थी, बालापन = बचपन, न्यारे परके = पृथक से ही, सकन में = सखा–साथियों में।

रजउ की पीड़ा व्यक्तिगत स्थिति से उठकर समष्टिगत हुई और यह लौकिक प्रेम पारलौकिक हुआ। उस समय वृन्दावन में दर्शन करते समय ईसुरी की यह अभिव्यक्ति सहज फूट पड़ी – तुम्हें एक नजर देखने की मन में बड़ी अभिलाषा थी। तुमको बहुत दिनों में देखा। मेरी और तुम्हारी प्रीति कोई नई नहीं, बहुत पुरानी है, जो बचपन में बहुत पीछे छूट गई थी। अब तुम मुझे पृथक से ही दर्शन देना, अपने संगी सथियों में छिप मत जाना। मैं और तुम एक साथ ही तो मथुरा–वृन्दावन में खेला करते थे। प्रभु ने इसी जन्म में ही मेरी तुम्हारी यह भेंट अच्छी करा दी। अन्यथा मैं तो अगले जन्म की आशा लगाए था। ईसुरी प्रभु मूरत में रजउ की छवि देखकर विह्वल हो उठे।

अब के गये कबै तुम आऔ,
बौ दिन हमें बताऔ।
होय अधार तनक ई जी खों,
ऐसी सियात धराऔ।
जल्दी खबर लियो जौ जानौं,
इन पिरानन खौं चाऔ।
'ईसुर' नैक चलत की बिरियाँ,
कन्ठ से कन्ठ लगाऔ।

सियात = मुहूर्त, पिरानन = प्राणों को, चाऔ = चाहते हो तो, नैक = तनिक, बिरियाँ = बेला।

मुझे तुम वह दिन बता दो, जब तुम वापस आओगे? इस प्राण को तनिक आधार हो जाए आने का ऐसा मुहूर्त बता दो। मेरे इन प्राणों को यदि तुम चाहते हो यानी तुम्हें सच्चा प्रेम हो तो मेरी शीघ्र ही सुधि लेना। ईसुरी कहते हैं- अन्तिम समय में एक बार गले लग जाओ तो हृदय को सुकून मिलेगा।

देखौ कबउँ न देखौ जिनखाँ,
धन्न आज के दिनखाँ।
जिनकी देय दमक दर्पन सी,
देबता ललचें इनखाँ।
तेरौ जस-रस भलौ कात हौं,
नाम चलै पैरन खाँ।
सुख होबै जब जग आये कौ,
लगा छातियन छिनखाँ,
ऐसे नौने प्रान 'ईसुरी'
करैं निछाउर किनखाँ।

कबउँ = कभी भी, जिनखाँ = जिनको, देय = देह, ललचें = ललचाते हैं, इनखाँ = इनके लिए, कात = कहता, पैरन = पीढ़ी-दर-पीढ़ी के अर्थ में, छिनखाँ = क्षण भर के लिए, निछाउर = न्यौछावर, किनखाँ = किसके लिए।

देखो भला, जिन्हें मैंने कभी नहीं देखा वे पधारे हैं मेरे लिये आज का दिन धन्य है जिनकी देह में दर्पण सी स्वच्छ दमक है। ऐसी देह के लिये देवता भी ललचाते हैं। तुम्हारी इस यशकीर्ति का सर्वत्र वर्णन करता हूँ। तुम्हारा नाम पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता रहेगा। इस संसार में आने का तब सबसे बड़ा सुख होगा जब तुम्हारे जैसी देह वाली को क्षण भर के लिए छाती से लगा सकूँगा। ईसुरी कहते हैं - ऐसे सुन्दर प्राण भला ऐसी सुन्दर देह पर ही न्यौछावर किये जा सकते हैं।

फिरकैं कबै आव ई गामैं,
करौ बीच मैं रामैं।
जैसे आज अंगारी ठाँड़े,
नैन मिलायें सामें।

रैबो करियो आबत-जाबत,
भेंट होत रय तामै।
ऊ आशा की आस न टूटै,
प्यास लगत है जामै।
करैं जात पछताब 'ईसुरी'
चोट भौत दिन रानैं।

फिरकैं = पुनः, कबै = कब, आव = आओगे, ई गामैं = इस ग्राम, अंगारी = सम्मुख के अर्थ में, सामें = प्रत्यक्ष के अर्थ में, रैबो = रहना, करियो = करते, आबत-जाबत = आना-जाना, तामै = ताकि, पछताब = प्रायश्चित।

राम कसम! अब तुम इस ग्राम में पुनः कब आओगे? जिस प्रकार आज आप मेरे आगे नयन से नयन मिलाकर प्रत्यक्ष खड़े हो। ऐसे ही आना-जाना बना रहे ताकि मिलन होता रहे। बस यही आशा कभी टूट न जाए, यानी मिलने की उम्मीद बनी रहे। मिलन की प्यास यानी इच्छा सदैव बढ़ती रहे। ईसुरी कहते हैं - तुम चले तो गये पर मेरे लिए एक प्रायश्चित छोड़े जा रहे हो, जिसकी चोट मेरे हृदय में बहुत दिनों तक रहेगी।

जो कोउ राम कौ नाम बताबै,
सो गुनबान कहाबै।
दस उर चार भुअन चौदा में,
आठ कौ भाग लगाबै।
बाकी बचै शेष धन राखै,
तामै ध्यान जमाबै।
'ईसुर' ऐसी जुगत करौ के,
शेष सुन्न आ जाबै।

गुनबान = गुणीजन, तामै = उसमें, जुगत = युक्ति, सुन्न = शून्य।

जो कोई राम नाम का रहस्य बता दे अर्थात् राम नाम का मर्म समझा दे, वही तो गुणी है। दस और चार अर्थात् चौदह भुवन में आठ से भाग दिया जावे, शेष (अर्थात् 10 + 4 + 14 = 28 में 8 का भाग देने पर तीन बार गया 4 शेष रहे) धन को रखे उसी में ध्यान लगाए ऐसी युक्ति करने पर शून्य उपलब्धि हो जाएगी। (अर्थात् 8 भागे 28 = भाग तीन बार गया। इन तीन गुणों रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण से रहित त्रिगुणातीत बनो, शेष चार बची संख्या चार आश्रम व्यवस्थाएँ

हैं = बाल्याश्रम, ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम और वानप्रस्थ आश्रम। इनका यथानुकूल पालन करो तो वही शून्य अर्थात् विराट जिसे राम कहते हैं का साक्षात्कार हो जाएगा।) सीधे जोड़ में मात्र 14 आते हैं 8 से भाग देने पर 6 शेष रहता है। छै का अर्थ क्षय से है जब माया मोह का क्षय हो जायगा तो स्वयमेव पारब्रह्म से भेंट हो जायेगी।

ऐसी बोलो कौनउँ बानी,
ना काउ की जानी।
सगुन में होय ना निर्गुन में,
नाद बिरम में छानी।
ना आकाशै ना पातालै,
नई देबतन जानी।
ना भूतन में ना प्रेतन में,
ना जल जीव बखानी।
कये 'ईसुरी' जोड़ मिला दो,
तब जानै हम ज्ञानी।

कौनउँ = कोई सी, काउ = किसी, सगुन=सगुण, छानी = खोज ली के अर्थ में।

पहले रचनाओं को समझना कठिन होता है। कहा है – ऐसी कोई सी बोली बोलिए, जो किसी ने जानी न हो। यानी अभी तक उस रहस्य को जाना नहीं हो जिसे बह्म नाद कहते हैं। वह सगुण में है न निर्गुण में, न ही शरीर में कहीं खोजो। न आकाश में, न पाताल में, न देवताओं को भी ज्ञात है। न भूतों में, न प्रेतों में, न जलचरों में वर्णित है। ईसुरी कहते हैं ऐसी वाणी का जोड़ मिला दे ऐसे रहस्य की वाणी जानने वाले सच्चे ज्ञानी हैं।

राखै मन पंछी ना रानैं,
इक दिन सब खाँ जानैं।
खालो पीलो लैलो दैलो,
एही लगै ठिकाने।
कर लो धरम कछू बा दिन खाँ,
जा दिन होत रमाने।

'ईसुर' कई मान लो मोरी,
लगी हाट उठ जाने।

राखै = रखने पर भी, रानैं = रहना, रमाने = प्रस्थान, हाट = बाजार।

प्राण रूपी पक्षी पकड़कर रखने पर भी नहीं रहेगा। एक दिन सभी को जाना अनिवार्य है। खालो, पीलो, जितना प्रेम लेलो, देलो, यही सब अन्त में बचेगा। उस दिन के लिए कुछ धर्म – कर्म भी कर लो जिस दिन संसार से तुम्हारा प्रस्थान होगा। ईसुरी कहते हैं – मेरा कहना मानो यह संसार रूपी बाजार जो आज लगा हुआ है, वह कल उठ जाएगा। यानी जीवन बहुत थोड़ा है, इसमें अच्छे कर्म कर लो, वर्ना मौत की घड़ी शीघ्र आ जायेगी।

आऔ को अमरौती खाकैं,
ई दुनिया में आकैं।
मर गय सुदक लकरियन जर गए,
घर गय लोग जरा कैं।
कभउँ काउ के भले भये ना,
चले गये मौं बाकैं।
नंगे गैल पकर गये, धर गए,
का करतूत कमाकैं।
बेर–बेर ना हुये 'ईसुरी'
कूँख आपनी माँकैं।

अमरौती = अमर फल के अर्थ में, सुदक = सुधिजन के अर्थ में, लकरियन = ईंधन के अर्थ में, कभउँ = कभी भी, मौं बाकैं = मुँह खोले हुए, करतूत = करनी, कमाकैं = अर्जित करके, बेर–बेर = बार–बार, कूँख = कोख से।

इस संसार में भला अमरफल खाकर कौन आया है? कोई भी सदैव नहीं रहता। मनुष्य देह नश्वर है। बड़े–बड़े सुधिजन मर गए उन्हें सूखी लकड़ियों के संग जला दिया, स्वजन थोड़ी देर में सब कुछ फूँककर अपने घर चले गए। अपने–अपने कर्मों के अनुसार कई लोग इस गली से नंगे पैर चले गये यानी साथ में कुछ भी नहीं ले गये। ईसुरी कहते हैं– मनुष्य का जन्म माता की कोख से एक ही बार होता है। इसलिये मनुष्य को अच्छे काम करना चाहिए।

जीतब कौन भौत दिन रानैं,
उम्मर से बुड़यानै।
हात-पाँव कौ चलबौ थाकौ,
लगे कायली खानैं,
आँखन होके दिखा परत ना,
मद्दौ सुनियत कानैं।
थर-थर देय कँपत है सबरी,
हो गए दाँत रमानैं।
'ईसुर' नईं सदा मद सबके,
एक से जात जमानै।

जीतब = जिन्दगी, उम्मर = आयु, बुड़यानै = वृद्धापन आने के अर्थ में, कायली = कायल अर्थात् कायरता के अर्थ में, कमजोरी से कच्चा पड़ने के अर्थ में भी, मद्दौ = धीमा, काने = कानैं से, सबरी = समूची।

यह जिन्दगी बहुत दिन रहने वाली नहीं है, एक दिन उम्र में बुढ़ापा आना ही है। थकान के मारे हाथ पैर चल नहीं सकेंगे। फिर तो कमजोरी से चक्कर आने लगेंगे। आँखों के होते हुए भी दिखाई नहीं देगा, कानों से धीमा सुनाई पड़ेगा, पूरी देह थर-थर काँपेगी तथा दाँत भी जा चुके होंगे। ईसुरी कहते हैं- सबके एक से दिन सदैव नहीं रहते। बढ़ती आयु के साथ सभी इन्द्रियाँ शिथिल होती जाती हैं।

जिदना मन पंछी उड़ जानैं,
उरौ पींजरा रानैं।
भाई ना जैहै बन्दु ना जैहै,
हंस अकेलौ जानैं।
ई तन भीतर दस द्वारे हैं,
काँ होकैं कड़ जानैं।
कैबैखों हो जैहै 'ईसुर'
ऐसे हते फलाने।

जिदना = जिस दिन, पींजरा = पिंजड़ा, जैहै = जाएँगे, काँ = कहाँ, होकैं = होकरके, कड़ जाने = निकल जाना, कैबैखों = कहने को, फलाने = अमुक।

जिस दिन प्राण रूपी पक्षी उड़ जाएगा उस दिन यह देह रूपी पिंजड़ा पड़ा रह जाना है। भाई – बन्धु कोई भी साथ न जायेंगे, प्राण रूपी हंस मात्र अकेला जाता है। इस शरीर के अन्दर दस इन्द्रियों के द्वार हैं, कौन जाने किस द्वार से प्राण निकल जायेंगे। ईसुरी कहते हैं– कहने की मूल बात यह कि अमुक व्यक्ति कैसा था? बस यही बात लोगों के बीच चर्चा में रह जाती है।

तन कौ तनक भरोसौ नइयाँ,
राखै लाज गुसइयाँ।
उड़–उड़ पात गिरत धरनी में,
फिर नइ लगत डरइयाँ।
जर–बर देय भसम हो जैहे,
फिर ना चुनै चिरइयाँ।
मानुस चाम काम ना आबै,
पशु की बनत पनइयाँ।
'ईसुर' कोउ हात ना दैले,
जब जम पकरै बइयाँ।

तनक = थोड़ा भी, भरोसौ = विश्वास, पात = पत्ते, डरइयाँ = तरु शाखाएँ, जर–बर = जलकर।

इस शरीर का तनिक भी विश्वास नहीं है, इसे राम गुँसाई यानी ईश्वर ही चला रहे हैं। चलते–चलते कब गिर जाये, इसका भरोसा नहीं है। जैसे पेड़ से पत्ते टूटते हैं और उड़–उड़कर धरती पर जा गिरते हैं, वे पुनः तरु शाखाओं में नहीं लग पाते। जब जलकर यह देह भस्म हो जाएगी तो चिड़ियाँ भी न चुगेंगी। यानी पक्षी तक पास में नहीं फटकेंगे। मनुष्य की चमड़ी तो किसी काम में भी नहीं आती जबकि पशु के चमड़े से पैर के जूते तो बनते ही हैं। ईसुरी कहते हैं– जब यमराज बाँह पकड़ लेगा तब कोई भी उससे हाथ छुड़ा न पायेगा। मृत्यु सुनिश्चित है।

जीकौ होत विधाता डेरौ,
कोउ न होत सगेरौ।
जोरत बेतो एक, परत जब,
हात भरे कौ फेरौ।
जीके अदन उपरइँ आ गए,

दालुद्दुर नै घेरौ।
मारे – मारे फिरत 'ईसुरी'
कोउ न करत निबैरौ।

डेरौ = बाँया लेकिन यहाँ उल्टे के अर्थ में, सगेरौ = सगा सम्बन्धी, बेतो = बालिस्त, फेरौ = चक्कर, अदन = दुर्दिन के अर्थ में, दालुद्दुर = दरिद्र, खेरौ = गाँव खेड़े के अर्थ में, यहाँ डेरा जमाने के अर्थ में कवि ने प्रयुक्त किया, निबैरौ = निर्णय।

जिसका भगवान् ही वक्री हो जाता है यानी भगवान् ही जिसके विरुद्ध हो जाते हैं। उसे फिर कोई सगे-सम्बन्धी भी साथ नहीं देते। यदि वह एक बलिस्त यानी थोड़ा सा यश भी अर्जित करता है तो हाथ भर का हेर-फेर यानी बहुत बड़ा नुकसान भी तुरत हो जाता है। जिसके दुर्दिन ही आ जाते हैं, तो समझ लो, फिर वह दुख-दारिद्रय का गाँव ही बन जाता है। ईसुरी ऐसे ही दुर्दिनों में मारे-मारे फिर रहे हैं, कोई सहायता नहीं करता।

विशेष :- यह रचना उन दिनों की है जब ईसुरी को श्री मुसाहिब जू ने अपमानित कर ग्राम धौर्रा से निष्कासित किया था।

तनकौ कौन भरोसौ करनै,
आय एक दिन मरनै।
जा अलबेली देय आपनी,
ईंदन के संग बरनै।
जो काउ जैसी करै आप खौ,
करनी पार उतरनै।
जी की जौलौ जियन जोरिया,
जी खौ जै दिन भरनै।
'ईसुर' नियत न तकन तकैं रए,
बुरे काम खों डरने।

तनकौ = शरीर का, कौन = क्या, भरोसौ = विश्वास, करनी = कर्मफल, जौलौ = जब तक, जियन-जोरिया = जीवन अवधि के अर्थ में, भरने = पूरा करना है, नियत = नियति, तकन = दृष्टि, तकैं = देखते।

एक दिन सबको मरना ही पड़ेगा, इस शरीर का कोई भरोसा नहीं है। अपनी यह अलबेली देह जो है उसे ईंधन के साथ जलना ही पड़ेगा। जैसे जिसके कर्म हैं उसको उसी के अनुसार पार लगना है। जिसकी जितनी जीवन अवधि है, उतना उसे कर्मफल मिलना है। ईसुरी

कहते हैं – प्रकृति के न्याय को धैर्य से देखते रहो और बुरे कामों से भय खाते रहो, अच्छे काम करो। बस यही जीवन का सत्य है।

जब से दार उरद की खाई,
कफ नै दई दिखाई।
मारे खाँसी फटै पसुरिया,
ताप सोउ चड़याई।
धीरे पन्डा रौन लगे संग,
हमै न आइ रहाई।
लिखकें पाती दई बगौरा,
उत से आइ लुगाई।
रामनगर में परे 'ईसुरी'
कर रए बैद दबाई।

दार = दाल, दई = दी, दिखाई = प्रभाव के अर्थ में, पसुरिया = पसुली, ताप = ज्वर, चड़याई = हो आने के अर्थ में, रहाई = रहा न गया।

मैंने जब से उड़द की दाल खाई है तभी से कफ का प्रभाव दीख रहा है। मारे खाँसी के पसलियों में दर्द हो रहा है, ज्वर भी हो सकता है। यह देखकर जब श्री धीरे पण्डा रोने लगे तो मुझसे भी न रहा गया। मैंने बगौरा पत्र लिखकर भेजा तो वहाँ से मात्र एक अन्य महिला खबर लेने आई। रजउ खबर लेने तक नहीं आई। ऐसी स्थिति में ईसुरी अब रामनगर में ही मजबूरी में रहकर वैद्य की दवाई खा रहे हैं।

दूजी ना उपजी संसारी,
ऐसी परम प्यारी।
नेत्र हजार चरन अष्टादस,
दमकत चन्द मझारी।
भुजा लाख ता ऊपर सोहै,
माथै एक हजारी।
'ईसुर' लखौ नैन भर जबसे,
खुली मुनिन की तारी।

दूजी = अन्य, दूसरी, संसारी = संसार में, पछारी = मध्य में, ता ऊपर = उसके ऊपर, लखौ = देखा, मुनिन = मुनियों की, तारी = ध्यान की एकाग्रता।

यह पद एक पहेली है – ऐसी परम प्रिय स्त्री! संसार में अब तक अन्य दूसरी पैदा ही नहीं हुई। जिसके एक हजार नेत्र, अठारह चरण, मध्य में चन्द्र, शरीर पर लाखों भुजाएँ सुशोभित हैं जिसके एक हजार मस्तक हैं। ईसुरी ने जब से यह देखा है, तब से ऐसा लगता है – जिस विशिष्ट रूप को देखकर मुनियों की भी एकाग्रता टूट जाती है। उत्तर है– गीता में अर्जुन को दिखाया गया विराट स्वरूप।

जो कउ मोरी कारी कैहै।
चार खरी सुन लैहै।
कारी जाय काउ की बखरीं,
सो कड़ुआ ना दैहै।
कारी जीखों बुरइ लगत है,
संग बैठ ना खै है।
कारी बंदी गरे 'ईसुर' के
ऊकों ओइ निबैहै।

खरी = तेज बात के अर्थ में, बखरीं = बड़े घर के अर्थ में, कड़ुआ = कर्ज, बुरइ =बुरी, ओइ = वही, निबैहै = निर्वाह करेगा।

बड़ी अजीब स्थिति होती है जब किसी रसिक नायक का विवाह काली स्त्री से हो जाए, तब सभी उस पर कटाक्ष करते हैं। ऐसी स्थिति में कवि की यह अभिव्यक्ति अवलोकनीय है – जो कोई मेरी पत्नी को काली कहेगा, उसे चार खरी-खोटी बातें ही सुना दूँगा। यदि मेरी काली पत्नी किसी बड़े के घर जाये तो भले ही उसको कोई कर्ज तक न दे, काली पत्नी जिसको बुरी लगती हो, लगा करे, उसे उसके साथ बैठकर तो नहीं खाना है। ईसुरी कहते हैं– काली स्त्री जिसके गले से बँध गई है, उसे ही उसको निभाना पड़ेगा। दूसरे चाहे कुछ भी कहते रहें।

दोहा :- *युद्ध करत ते दो जने, इतै हती इक नार।*
इन तीनों के नेत्र हैं, दो हजार उर चार।
छत्तिस तीन जने के नैना,
अचरज कात बनै ना।

मानस कित्तौ तान-बान है,
बिरमा बेद रचै ना।
छै मइना की पूछी कीनै,
बरसन पतौ लगै ना।
'ईसुर' के चेलन से हारे,
जोड़ होय तौ देना।

जने = लोग, इतै = यहाँ, हती = थी, अचरज = आश्चर्य, कात = कहते, बिरमा = ब्रह्मा, मइना = माह, बरसन = वर्षों।

यह पद पहेली है, दो लोग युद्ध कर रहे थे यहाँ एक नारी थी, तीनों के नेत्र दो हजार और हृदय चार थे। तीन लोगों की छत्तीस आँखें हैं यह आश्चर्य कहते नहीं बनता। मनुष्य का ताना बाना कितना है? ब्रह्मा भी वेद नहीं रच सकते। छै माह की कौन पूछता है वर्षों पता नहीं लग सकता। ईसुरी के शिष्यों से हारना पड़ेगा। यदि इस प्रश्न का सही उत्तर दे सको तो दो।

उत्तर :-राम और लक्ष्मण युद्ध कर रहे हैं उस ओर उनकी एक सीता है, सीता कारण है राम लक्ष्मण कर्ता। तीनों मिलाकर एक हैं। तीनों के दो हजार नेत्र और चार हृदय हैं अर्थात् चौथा हृदय हनुमान का है जिसे चीरकर दिखाया। शेष इनके सहायक हैं जो युद्ध में इनके नेत्र बने जूझ रहे हैं।

जल में पाथर की उतरानैं,
बेद पुरान बखानैं।
चिटिया पर्बत धरै मुड़ी पै,
चढ़ी जात है बानैं।
कुकरु नाहर लील गई है,
ई को अर्थ मिलानै।
कात 'ईसुरी' सुन लो प्यारी,
जाकौ जोड़ बतानै।

पाथर = पत्थर, उतरानैं = तैरना, बखानैं = वर्णित है के अर्थ में, मुड़ी पै = सिर पर, बानैं = बान पर, कुकरू = मुर्गी, नाहर = सिंह, लील गई = निगल गई।

यह पद पहेली है - पानी में पत्थरों का तैरना वेद पुराणों में वर्जित है, पर्वत सिर पर लिए चींटी बाण पर चढ़ी जा रही है। मुर्गी ने शेर को भी निगल लिया है। इसका अर्थ मिलाइये। ईसुरी

कहते हैं इसका समझकर उत्तर दीजिए।

उत्तर :- 'मूक होय वाचाल........' वाली स्थिति है कि जिस पर राम की कृपा है तो सब सम्भव है राम के नाम का ही प्रभाव था जो पत्थर पानी में तैरे, चींटी से हनुमान भरत जी के बाण की नोंक पर बैठ पर्वत ले उड़े। सुरसा बेचारी मुर्गी सी हलाल हो गई जिसने हनुमान सा सिंह निगल लिया था। यह सब राम कृपा से हुआ।

जइयो ईकौ पेड़ बतायें,
नग-नग झोंका खायें।
कुसुम बरन जौ फूल बनौहै,
लीलक बीजा छायें।
लागै असल केर सौ गाबौ,
लामे फल लटकायें,
'ईसुर' ई कौ अन्त ना खोलो,
जइयो जुआब बतायें।

ईकौ = इसका, झोंका = झोंक से हिलना, लीलक = नीली, बीजा = बीज, केर = कदली, गाबौ = कदली खम्भ, लामे = लम्बे, जुआब = उत्तर।

यह पद भी पहेली है। इस वृक्ष का नाम बताते जाना जिसका अंग-अंग झोंके खाकर झूम रहा है, जिसका कुसुम रंग का फूल है, नीले से बीज हैं। जो असली कदली खम्भ से सुकुमार एवं लम्बे-लम्बे फल देने वाला है और जिसका अन्त न होने वाला हो, इसका उत्तर दो।

उत्तर : यह वृक्ष भी राम कृपा का कल्पवृक्ष है। मूल में बीज स्वरूप नील वर्ण साक्षात् श्रीराम विष्णु के अवतार हैं। कुसुम वर्ण उनकी माता-सीता हैं जिन्हें कदली खम्भ सी सुकुमारिता पूर्ण सौन्दर्य प्राप्त है। राम कृपा के फल बहुत लम्बे अर्थात् दीर्घकाल तक हैं।

पिया के मिहल चली सुकमारी,
सस बदनी ब्रजबारी।
कर में लये एक सस देखौ,
चढ़ गई तुरत अटारी।

सोरा ससी के और साथ में,
बे सस कन्त निहारी।
भये उदास बिना सस बालम,
लौटी तुरत बिचारी।
कारन कौन 'ईसुरी' मुरकी,
पूछत सखी बतारी।

मिहल = महल, सस = चन्द्रमा, अटारी = अट्टालिका पर, सोरा = सोलह, बिचारी = बेचारी, मुरकी = मुड़कर आई।

एक सुंदर चन्द्रमुखी ब्रजवासिनी! सम्पूर्ण श्रृँगारकर मिलने के लिये अपने प्रिय के महल की तरफ चल दी है। वह हाथ में एक शशि (दीपक) लिए हुए है, वह अट्टालिका पर चढ़ गई। सोलह चन्द्रकलाओं से परिपूर्ण पूनम के चन्द्रमा के साथ नायिका अपने कन्त यानी प्रियतम को देख रही है। पर उदासी तब छा गई जब प्रिया बगैर शशि के लौट पड़ी। बेचारी तुरन्त क्यों लौट आई? ईसुरी पूछते हैं, उसके लौटने का कारण क्या है, कोई सखी बताए।

उत्तर :- श्रीराम सूर्य कुलभूषण है तो श्रीकृष्ण को शशि की उपमा दी गई है। यह महारास का ही चित्रण है जहाँ सोलह कलाओं से पूर्ण महाशशि श्रीकृष्ण राधा रूपी एक शशि वदना के साथ रास रचा रहे हैं। एक शशि तो अपनी सोलह कलाओं के साथ हैं पर कृष्ण रूपी शशि उस दिन रास में नहीं पहुँचे। इसके कारण कृष्ण को न देखकर राधा शीघ्र अट्टालिका से नीचे आ गई।

बैठे सोचें पंडित ज्ञानी,
काँ की - की रजधानी।
बिरम लोक में बिरमा नइयाँ,
काँतें कात कहानी।
चारउ बेद पुरान अठारा,
कथा भागबत छानी।
कहै मुनी सुर कबि हैं 'ईसुर'
जाकौ पता निसानी।

काँ = कहाँ, की की = किसकी, बिरमलोक = ब्रह्मलोक, काँतें = कहाँ से, कात = कहते हैं।

यह पद पहेली है – ज्ञानी पंडित बैठे विचार करते हैं कि कहाँ पर किसकी राजधानी है? ब्रह्मलोक में ब्रह्मा भी ऐसे नहीं हैं, वे कहाँ से यह कहानी कहते हैं? चारों वेद अठारह पुराण छान डाले, भगवत् कथा आदि कुछ भी नहीं छोड़ा। देव और ऋषि कहते हैं – ईसुरी कवि के पास ही इसकी यथार्थ पहचान है।

उत्तर :– तुलसी ने जो श्रीरामचरितमानस की रचना की है जिसमें उनके कथनानुसार चारों वेद और अठारहों पुराणों की कथाओं का सार तत्व है। उस मानस की राजधानी में तुलसी ने वाल्मीकि के मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को ब्रह्म रूप में प्रस्तुत कर स्थापित किया है। इस मर्म को ऋषि, मुनि एवं कवियों ने बखान दिया है।

हमखाँ लेब बलम ओली में,
प्रान कड़त बोली में।
आये बैद लये रस ठाँडे,
का हौनै गोली में।
हात हमारौ सबनै देखौ,
नइ पिरान चोली में।
'ईसुर' लै गए बिदा कराकें,
चार जने डोली में।

ओली में = गोदी में, कड़त = निकलते, बैद = चिकित्सक, रस = आयुर्वेदिक औषधि, गोली = दवाई, पिरान = प्राण, चोली = शरीर।

यह रचना ईसुरी की पत्नी के अन्त समय की है। वे कहती है प्रियतम! मुझे अपनी गोदी में ले लो, अब तो प्राण बोलने में ही निकले जाते हैं। चिकित्सक आए रस लिए खड़े हैं उनकी गोलियों से अब क्या होना है? मेरी नब्ज सभी ने देखी, उस शरीर में अब प्राण है ही नहीं? ईसुरी कहते हैं कि चार लोग अंतिम समय में लेकर चले गये। चेतावनी का रूपक भी है।

हो गऔ फुनगुनियाँ सों फोरा,
पैलाँ हतौ ददोरा।
एक के ऐंगर भऔ दूसरौ,
दो के भए कई जोरा।

गदिया तरें हतेली सूजी,
सूज गये सब पोरा।
दबा होत रइ दरद गओ ना,
एक मास दिन सोरा।
फोरा से भव खता 'ईसुरी'
जो रब आन बिलोरा।

फुनगुनियाँ = छोटी सी फुन्सी, फोरा = बड़ा सा ब्रूण, फोड़ा, पैलाँ = पहले, हतो = था, ददोरा = त्वचा पर लाल रंग का दाना पड़ना, ऐंगर = निकट, जोरा = जोड़े, गदिया = हाथ की गद्दी, सूजी = फूल गई, पोरा = पोर-पोर, खता = पका हुआ ब्रूण, बिलोरा = गड़बड़ी।

पहले जो त्वचा पर लाल रंग का मामूली सा ददोरा हुआ था, वह फुन्सी बना फुन्सी से फोड़ा हो गया। एक के निकट दूसरा हुआ, इसी क्रम में कई फोड़े हो गए। हाथ की हथेली की गद्दी खूब सूज गई है। पोर-पोर में सूजन हो गयी है। चिकित्सा होती रही परन्तु पीड़ा न गई। एक माह सोलह दिन हो गए। यही फोड़ा पककर अब घाव के रूप में हो गया है यही सबसे बड़ी गड़बड़ी है। पता नहीं घाव कब भरेगा?

विशेष :- यह व्यंजनापरक रचना है शारीरिक पीड़ा की उपमा देकर मानसिकता को प्रस्तुत किया है। प्रेयसी से साधारण बातचीत यदि हो जाए तो बात बढ़कर ऐसे ही पके ब्रूण सी पीड़ा देती है। ईसुरी ने एक अन्य रचना में इस बात को स्पष्ट भी किया है कि 'अँखियाँ जब काउ सें लगती........ पके खता सीं दगतीं।'

होबै गंदौ रोग तिजारी,
जा भारी बेजारी।
अपनौं उधम दयें फिरत है,
बिच-बिच बज्जुर पारी।
बंगालन जा बात लै आई,
हन गइ देय हमारी।
मरज भये तिदोस बीत गये,
कर लाई कफ जारी।
'ईसुर' जान परत है ऐसी,
येई मौत हमारी।

तिजारी = एक प्रकार का ज्वर जो तीन-तीन दिन में क्रम बनाकर आता है, बेजारी = परेशानी के अर्थ में, उधम = उत्पात, बज्जुर = वज्र, पारौ = पटक देने के अर्थ में, बंगालन = गाली के रूप में, हन गई = प्रहार हो गया, मरज = मर्ज, तिदोस = त्रिदोस।

मुझे परेशानी है कि यह तिजारी (तीसरे दिन का ज्वर) नामक रोग बहुत ही घृणित है। जो पूरे शरीर में अपना उत्पात मचाता है। बीच-बीच में वज्र सा पटक देता है। यानी बंगाल की जादूगरनी वात का रोग कहीं से ले आई है कि मेरी पूरी देह पर प्रहार हो गया है और वह नष्ट हो रही है। मर्ज त्रिदोष से होता है वह बीत गया, त्रिदोष अर्थात् वात-पित्त-कफ की शिकायत समाप्त हो गई है लेकिन अब भी कफ चालू है। ईसुरी कहते हैं - ऐसा प्रतीत होता है कि इसी में मेरी मौत सम्भावित है।

सिरपै करी साँप नैं बामी,
धन्न गरुड़ के गामी।
पीठ पछारूँ हो चढ़ आओ,
उतरन उतरौ सामी।
ना हम करी करन दई औरै,
भगत रहौ हौ कामी।
काये से रीझे 'ईसुर' पै,
करत जात हौ नामी।

बामी = सर्प का दीमक द्वारा निर्मित बसेरा, पछारूँ = पीछे से, सामी = सामने से।

एक बार ईसुरी के सिर पर एक सर्प चढ़ गया था, उसी अनुभूति को लिखा - सर्प ने मेरे सिर पर बसेरा बना लिया धन्य है जिसका गरुड़ पक्षी दुश्मन है। वह पीठ पर से चढ़ा और सामने से उतर भी गया। हम निश्चेष्ट होकर उसे देखते रहे। न हमने कुछ किया न किसी को कुछ (उसकी हत्या) करने दिया। वह भगत रहा होगा मैं तो कामी हूँ। यही सोच का विषय है। मुझ पर कैसे द्रवित हो गया? शायद इतनी ख्याति दिलवाने का उपक्रम सर्प महाराज ने किया है।

विशेष :- सर्प की जिस सिर पर छाया हो जाती है वह ख्यातिवान महापुरुष हो जाता है।

जौंलौं रये पगन से नीकैं,
आय गये सब हीकैं।

भये इक ठौर रंज के मारै,
जा नइ सकत किसी कैं।
उतनी खबर लैंय जी भर गऔ,
प्रेम कौ पानी पीकैं।
आना आठ गाँव में हिस्सा,
पजा मिलकियन जी कें।
बने बगौरा रात ईसुरी
कारिन्दा बीबी कैं।

जौलौं = जब तक, पगन = पैरों, इक ठौर = एक ही स्थान के, रंज = दु:ख, पजा = छककर अर्थात् अल्ले – पल्ले, बीबी = बगौरा की जमीदारिन श्रीमती आबादी बेगम।

जब तक हाथ–पैर चलते रहे तब तक सबके घर आना–जाना बना रहा। दु:ख के कारण एक स्थान का होकर रह गया हूँ। अब कहीं किसी के घर आ–जा नहीं सकता। आपने मेरी इतनी खबर तो ली, मेरा इतने में ही जी भर गया, तुम्हारे प्रेम का पानी ही मेरे लिए सब कुछ है। आठ आठ ग्रामों में जिसकी हिस्सेदारी है, खूब मिलकियत भरी–पूरी है, ऐसी बीबी (आबादी बेगम) के कारिन्दा बने हुए हम बस इसी बगौरा में बने रहते हैं।

मिथ्याँ नइ कबिन की बानी,
जिभ्या रात भुमानी।
छत पै छाइ छतरपुर मइयाँ,
धरम बेल हरयानी।
दोरे आय दच्छना पाबत
बिमुख जात ना प्रानी।
'ईसुर' हुये काम करबे खों,
ई गादी की रानी।

कबिन = कवि का बहुवचन, जिभ्या = जीभ पर, रात = रहती है, भुमानी = माँ शारदा, छत = ऊपरी मंजिल का खुला भाग, मइयाँ = में, हरयानी = हरी है, दच्छिना = दक्षिणा, ई = इस, गादी = राजगद्दी।

ईसुरी की प्रतिभा की ख्याति सुनकर छतरपुर नरेश ने उन्हें आमंत्रित किया। कहते हैं छतरपुर नरेश के कोई सन्तान नहीं थी और ईसुरी ने आशीर्वाद दिया तो सन्तान हो गई थी। उसी सन्दर्भ में यहाँ कहा गया कि – कवि की वाणी झूठ कभी नहीं होती क्योंकि उसकी जिह्वा पर

सदैव माँ सरस्वती का वास रहता है। छतरपुर की छत पर धर्म-कर्म की बेल हरी-भरी छा रही है। द्विज दौड़े हुए आते हैं, दक्षिणा प्राप्त करते हैं, कोई भी प्राणी कभी निराश नहीं लौटता। ईसुरी कहते हैं तुम्हारा कारोबार संभालने वाला अवश्य होगा अर्थात् पुत्र रत्न प्राप्त होगा। इस गद्दी की रानी के भाग्य प्रबल हैं। पुत्र रत्न प्राप्त हुआ नाम भवानी सिंह रक्खा गया था।

सब से साजी ती लरकइयाँ,
खेलत घरै बटइयाँ।
हम चड़ गये तुमारे ऊपर,
तुम चढ़ गइँ हम पइयाँ।
फिरत रये हम नंगे-उगारे,
चमक काउ की नइयाँ।
बिसर गई बे बातै बिन्नू,
हल्के की तुम कइयाँ।
'ईसुर' अधिक बालकन ऊपर,
करत बिधाता छईया।

साजी = अच्छे के अर्थ में, ती = थी, लरकइयाँ = बाल्यावस्था, बटइयाँ = पत्थर के गोल-गोल बट्टे, पइयाँ = पैर, चमक = लज्जा शर्म का संकोच, बिन्नू = लड़की हेतु सम्बोधन, कइयाँ = कनियाँ, गोदी लेना।

सबसे अच्छी तो बाल्यावस्था ही थी, जब हम घर में पत्थर की गोल-गोल गोटियों से खेला करते थे। हम तुम्हारे ऊपर चढ़ जाते थे और तुम मेरे ऊपर चढ़ जाती थी, हम तुम नंगे उघाड़े भी घूमते रहते थे। कभी किसी की शर्म लाज न थी। बिन्नू जी शायद वे बातें अब भूल गई हैं। जब छोटे में तुम्हें हम गोद में उठा लेते थे। बच्चों पर प्रभु की कुछ अधिक ही कृपा हुआ करती है, क्योंकि बच्चों के मन छल कपट रहित निर्मल होते हैं।

जिदना गुरन तुमें औतारों,
बिध नें अच्छर मारौ।
ऐसी नौंनी रूप-रंग की,
नख सिख से सिंगारौ।

उनपै अपनों जोर नहीं है,
पनमेसुर सैं हारौ।
'ईसुर' बेई पार लगाहें,
जिनने बनों बिगारौ।

जिदना = जिस दिन, गुरन = ईसुरी की पुत्री का नाम, बिध = ब्रह्मा, अच्छर = भाग्य के लेख के अर्थ में, नौंनी = सुन्दर, पनमेसुर = परमेश्वर, बेई = वही, बनों = बना हुआ।

ईसुरी की कनिष्ठ एवं लाड़ली पुत्री गुरन के बाल वैधव्य पर यह रचना लिखी गई थी। गुरन, जिस दिन तुम्हारा जन्म हुआ ब्रह्मा ने उसी दिन भाग्य का लेख लिख दिया होगा। जिसे नख से शिख तक स्वाभाविक श्रृँगारित सुन्दर रूप रंग मिला था लेकिन उस परमेश्वर पर किसी का जोर नहीं होता, वह जो चाहता है वही होता है उस पर परमेश्वर से मैं सहज हार मानता हूँ। वही अब पार लगायेंगे जिसने बना हुआ बिगाड़ा है।

गुरन = ईसुरी की पुत्री का नाम (उसके बाल विधवा होने पर रचित पंक्तियाँ)।

ज्वानी आस-आस में खोई,
जस कर लेब न कोई।
छाती लगा यार के संगै,
एक दिना ना सोई।
ना रस लूट पाब सेजन पै,
दुबदा में गए दोई।
'ईसुर' कात उतरती उम्मर,
देख देख कै रोई।

ज्वानी = यौवन, आस-आस = आशा ही आशा, यार = मीत, सेजन = सेज का बहुवचन, दुबदा = दुविधा, उतरती = ढलती, उम्मर = आयु।

आशा ही आशा में यौवन खो दिया, तनिक भी यश अर्जित नहीं किया। आलिंगनबद्ध होकर प्रिय के साथ एक दिन भी सोने का सुख नहीं मिला, सेजों पर सोने का जो रस है, वह भी कभी न मिला, दुविधा में ही दोनों रहे। अब ढलती आयु में यह सब देख-देखकर रोना आता है। दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम।

तरसै दोइ नैन मन मेरा,
मुख देखे खों तेरा।
जौं लौ जी कौ काम सटौ ना,
दयें रात है घेरा।
हमैं छोड़ कै अपुन चले गए,
जादइ राम अबेरा।
राम नगर में परे 'ईसुरी'
सुन्दरिया घर डेरा।

तरसै = तरसते हैं, जौं लौ = जब तक, जी कौ = जिसका, सटौ ना = न चला, घेरा = घेराव के अर्थ में, जादइ = यह दी, अबेरा = परेशानी के अर्थ में, सुन्दरिया = राई नर्तकी का नाम विशेष।

तुम्हारा मुख देखने के लिए मेरा मन और नयन दोनों तरसते हैं। जब तक जिसका काम न सधा तब तक सब घेरे रहे। अर्थात् चक्कर लगाते रहे। हमें छोड़कर आप चले गए। यही राम ने मुझे विपत्ति दी है। रामनगर में अब सुन्दरिया नाम की राई नर्तकी अर्थात् बेड़नी के घर ईसुरी का फिलहाल अर्थात् काम चलाउ डेरा पड़ा हुआ है।

अर्थी लगी आज दिखयाई,
आगी नहीं लगाई।
सर के ऊपर रखौ चेटका,
कंचन कलस धराई।
सारी सभा मौन हो बैठी,
बैरी देत दिखाई।
'ईसुर' आज सभा के अन्दर,
फाग रंग की भाई।

अर्थी = शवयात्रा के अर्थ में, दिखयाई = दीख पड़ी, आगी = अग्नि, चेटका = चिता।

आज मुझे स्वप्न में अपनी अर्थी दीख पड़ी, बस अग्नि नहीं दी गई थी। सिर के ऊपर चिता का स्वरूप स्पष्ट था, स्वर्ण कलश रखाए गए थे। सारी सभा मौन बैठी थी, दुश्मन तक वहाँ (मौन ही) दीख रहे थे। ऐसी विलक्षण सभा में ही आज ईसुरी की रंगीन फाग लोगों को याद आ रही है। जिन्हें वे ऐसे अवसर पर भी पसन्द करते हैं।

जाड़ौ तुरतइँ सैं लगयाऔ,
दिन डूबन ना पाऔ।
कमरा ओड़ पिछौरा ओड़े,
परया सौ चढ़याऔ।
सारी रात करत रए सी–सी,
गोड़न हो पिड़याऔ।
'ईसर' कात भोर के पारैं,
अगनी नै बरकाऔ।

जाड़ौ = सरदी, तुरतईं = शीघ्र से ही, लगयाऔ = लगने लगे, दिन डूबन ना पाऔ = संध्या भी न हो सकी, कमरा = कम्बल, पिछौरा = चादर, परया = पारी जैसा, पिड़याऔ = प्रवेश पा गया, भोर के पारैं = सबेरे के प्रहर, बरकाऔ = बचा लिया।

दिन डूबने ही न पाया था कि शीघ्रता से ही सर्दी लगने लगी। कम्बल ओढ़ी पारी के समान ज्वर का ताप चढ़ गया। सारी रात सर्दी में सी–सी करते रहे। पैरों की ओर से ज्वर ने प्रवेश पा लिया। सबेरे के प्रहर आग ने मुझे बचा लिया। अन्यथा सर्दी में अकड़ गये होते। ऐसी ठण्ड पड़ रही है।

हम पै डार गई मोहनियाँ,
गोरे बदन की धनियाँ।
बाँह बरा बाजूबन्द सोहै,
कर में जड़ी ककनियाँ।
नख सिख से सब गानौं पैरे,
पाँयन में पैंजनियाँ।
'ईसुर' कात चिता पै धर दऔ।
तो खाँ आज रजनियाँ।

धनियाँ = स्त्री, बरा–बाजूबन्द–ककनियाँ = यह सब हाथ के आभूषणों के नाम हैं, गानौं = आभूषण, पायन = पैरों में, तोखाँ = तुमको, रजनियाँ = पत्नी के लिए प्यार भरे सम्बोधन के अर्थ में।

यह गोरे बदन वाली स्त्री मुझ पर मोहिनी डालकर चली गई। बाँह में बरा, बाजूबन्द सुशोभित था। कलाई में जड़ाऊ कंगन थे। उसने नख–शिख तक सभी आभूषण पहिने थे। पैरों में पैजनियाँ थीं। ईसुरी कहते हैं – ऐसी प्रिय रजनियाँ आज तुझे जलती चिता में रख दिया गया।

यानी रजनिया का दाह संस्कार हो गया है।

विशेष :- यह रजनिया सम्बोधन विवादास्पद है कुछ विद्वान ईसुरी की पत्नी का नाम राजबेटी भी मानते हैं। जबकि कुछ विद्वान रजउ का ही दूसरा संस्करण रजनियाँ मानते हैं। लेकिन यह सत्य है कि ईसुरी के बाद ही रजउ की मृत्यु हुई है।

जौ तन कर दऔ राम निरासा,
की - की करिये आसा।
कीनौ गजब गरीबन ऊपर,
जाये कहा निकासा।
बारे कैसौ खेल मिटा दऔ,
करके तनक तमासा।
'ईसुर' प्रान लेत काये ना,
दुखिया तन की आसा।

की-की = किसकी, कीनौ = किया, निकासा = निकलने की राह, बारे = बचपन, तनक = तनिक, तमासा = खेल के अर्थ में।

अब मैं किसकी आशा करूँ? राम ने इस तन से निराश कर दिया है यानी शिथिल बना दिया है। गरीबों पर गजब ही तो कर दिया है जिसमें निकल बचने की कोई राह नहीं है। बचपन के खेल के समान सब कुछ मिटा दिया तनिक तमाशा दिखाकर। हे ईश्वर! अब तुम प्राण ही क्यों नहीं हर लेते दुखिया के तन की यही अब एक आशा शेष है। अपनी बेटी गुरन की मृत्यु पर लिखा है।

तुमरी बिदा न देखी जानैं,
रो - रो तुमे बितानैं।
कोसक उनके संगै जानैं,
भटकत पाँव पिरानैं।
पल्ली और गदेला जोरी,
नये दये उन्ना पानैं।
जो कऊँ, होते दूर तलक तौ,

सुनी न जाती कानैं।
रँधे भात जे कइये 'ईसुर'
की के पेट समानैं।

कोसक = एकाध कोस की दूरी (आज के लगभग 3 किलोमीटर), पल्ली = रजाई, गदेला = गद्दा, उन्ना = वस्त्र, कानैं = कान से भी, रँधे = पके हुए, भात = चावल।

तुम्हारी विदा मुझसे न देखी जाएगी। तुम रो-रोकर प्रदर्शन करोगी। कोस भर इनके साथ जायेंगे। इस भटकन में पैर दर्द करेंगे। तुम तो नई रजाई - गद्दा की जोड़ी एवं नये-नये वस्त्र पाओगी। चलो यदि कहीं हम तुमसे दूर होते तो तुम्हारी बातें कान से सुन न पाते। यह पके हुए अर्थात् बने हुए चावल यानी भात अब किसके पेट में समायेंगे?

विशेष :- यह विदा का रूपक नायिका की प्रिय गृह की विदा भी हो सकती है तथा यह प्रमाण की स्थिति भी। बेटी गुरन की मृत्यु की सूचना पर लिखा है।

मोरौ आब नजीक बुढ़ापौ,
अबै सौबतन तापौ।
तिरके बार नजर मारी गइ,
दाँतन सैं दिल काँपौ।
आँखन मद्दौ तकन लगे है,
खैंचौं सिर न सनाकौ।
जम राजा के दूत 'ईसुरी'
दैन चात अब छापौ।

नजीक = निकट, बुढ़ापौ = वृद्धापन, सौबतन = संगत के प्रभाव में, तापौ = तपना है, तिरके = झड़कर नष्ट होने के अर्थ में, भद्दौ = धीमा, तकन = देखने, दिनन = सुनने के अर्थ में, सनाकौ = सन्नाटा सा, जम राजा = यमराज, छापौ = गोरिल्ला वार, दबोचना।

मेरी वृद्धावस्था अब निकट आ गयी है। मेरी बुरी संगत ने मुझे बर्बाद कर दिया है। बाल झड़कर नष्ट हो गये हैं। दृष्टि भी समाप्त प्राय: है दाँत न होने से हृदय काँपता है। आँखें कमजोर हो गई हैं। सिर अर्थात् मस्तिष्क ने संसार के जाल बुनना छोड़, सन्नाटा सा बुन लिया है। ईसुरी कहते हैं यमराज के दूतों का बस छापा पड़ने ही वाला है। मृत्यु नजदीक है।

देइया बिरधापन की आई,
खबर करौ रघुराई।
हात – पाँब सब थकत भये हैं,
कइ न करै करयाई।
कानन होकै सुना परत ना,
आँखन जाली छाई।
'ईसुर' मर गए मोरे संग के,
मोय मौत ना आई।

देइया = देह, बिरधापन = वृद्धावस्था, खबर = स्मृति–स्मरण, थकत = थक चुके, करयाई = कमर, जाली छाई = अंधापन का प्रभाव।

अब तो हे श्रीराम! मेरी सुधि लो, देह की अब वृद्धावस्था आ गई है। हाथ पैर सब थककर निष्क्रिय हो गए हैं। कमर तक अब कहने में नहीं है अर्थात् बेकार हो गई। कानों से सुनाई नहीं देता आँखों में धुँध छा गई है। मेरे साथ के तो सभी दिवंगत हो गए हैं। मुझे मौत क्यों नहीं आ रही है अर्थात् अब यह कष्ट भोगा नहीं जाता, हे भगवान्! अब जल्दी उठा लो।

संगी चले गये सब मोरे,
टोर नेय के डोरे।
केसन कोद तनक तौ देखो,
भये कारे के गोरे।
दाँत दगा दै चले गये है,
कान राम नै फोरे।
आँखन मद्दौ तकन लगौहे,
थकत भए दोइ घोरे।
'ईसुर' देय सूक गई सबरी,
प्रान बचे है कोरे।

नेय = नेह, कोद = ओर, दगा = धोका, मद्दौ = कमजोर/धीमा, तकन = दिखाई देने के अर्थ में, दोई घोरे = पैर द्वय के अर्थ में, कोरे = मात्र।

नेह की डोर तोड़कर मेरे सभी साथी जा चुके हैं। अर्थात् दिवंगत हो गए। मेरे सिर के बालों की ओर तो देखो श्यामल से गौरवर्ण हो गये। दाँत बीच में ही दगा दे गये अर्थात् टूट गये

हैं। राम ने कान भी फोड़कर रख दिए, यानी सुनाई भी नहीं देता। आँखों से कमजोर दिखने लगा है। दोनों हाथ-पैरों से थक चुका हूँ अथवा तन और मन दोनों थक चुके हैं। समूची देह सूख चुकी है। मात्र प्राण ही शेष है।

ऐसी रीत ना जा जुग नय की,
सुत-सतजुग उत सय की।
हौनै भेंट दोस दुश्मन से,
छाती से लग लय की।
असबारी कर लेत देखना,
जुर के ज्वार अथय की।
पान खात उर कात 'ईसुरी',
राम-राम दशरय की।

रीत = नियम के अर्थ में, नय की = झुकने की, सुत = पुत्र, उत = वहाँ या उतना के अर्थ में, सय की = सहन करने की, असबारी = सवारी के अर्थ में,शराब पीने के, अथय की = संध्या बेला की, दस रय = दशहरा, ज्वार=भीड़।

पुत्र! आज का सतयुग सहन करने योग्य नहीं, ऐसी रीति आज नहीं चलेगी कि संसार नम्र होकर चले। भेंट तो दोष रूपी शत्रुओं से ही होना है। उसी से आलिंगन करने का समय है। संध्या को शराब की ही सवारी कर लेते हैं। देखना भीड़ किस प्रकार शाम तक रंग दिखाती है। दशहरा है अतः पान खाता हूँ और राम-राम करता हूँ। समय बहुत बदल गया है। (चलने की स्थिति है)

हमखाँ मिलो न हमसौ कोई,
ढूँड़ फिरे दृग दोई।
जीसें मिले कपट ना राखौ,
जब दिल ऐसा होई।
अपने अपने सब मतलब के,
मानस बड़ौ अनोई।
बारे से बिरधापन आ गब,
जियत जिन्दगी खोई।

'ईसुर' मिथ्याँ जो कोउ जानै,
ई कौ राम बिचोई।

हमसौ = मेरे जैसा अन्य, जी से = जिससे भी, अनोई = अनहोत्र, बारे = बाल्यावस्था, बिचोई = मध्य में साक्षी है।

मुझे मेरे जैसा अन्य कोई नहीं मिला, मेरे दोनों नैन खोज चुके। मैं जिससे भी मिला निष्कपट होकर ही मिला। जब उसका हृदय देखा तो वैसा नहीं मिला। सभी अपने–अपने मतलब यानी स्वार्थ में लगे हैं। सचमुच मनुष्य बड़ा अनूठा जीव है, बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक इसी प्रकार जीते पूरा जीवन खो दिया। जो मेरी इस बात को असत्य माने, उसके बीच राम ही साक्ष्य है।

आ गये मरबे के दिन नीरे,
चलन चात जे जीरे।
अब या देय अगन रइ नइयाँ,
हात – पाँव सब सीरे।
डारन लगे रात है नइयाँ,
पात होत जब पीरे।
जितनी फाग बनाबे 'ईसुर'
गावै पन्डा धीरे।

नीरे = निकट, चात = चाहते हैं, जे जीरे = यह प्राण, सीरे = ठण्डे पड़ गए, डारन = तरू शाखाएँ, रात = रहते, पात = पत्ते।

अब यह प्राण चलना ही चाहते हैं, मृत्यु के दिन निकट आ गए हैं। अब यह देह गर्म नहीं रही। हाथ पैर सब ठण्डे पड़ गए हैं। शाखाओं में पत्ते सदैव लगे ही तो नहीं रहते। जब वे पककर पीले होकर गिर जाते हैं तो शाखाओं से अनिवार्यत: पृथक हो जाते हैं। अत: ईसुरी ने जितना भी जो लिखा है, वह अब श्री धीरे पण्डा गा–गाकर सुनायेंगे।

लै लो सीताराम हमारी,
चलती बेरा प्यारी।

ऐसी निगा राखियो हमपै,
होय न नजर दुआरी।
मिलके कोकब बिछरत नइयाँ,
जितने है जिउधारी।
'ईसुर' हंस उड़न की बेरा,
झुकयाई अंदयारी।

निगा = कृपादृष्टि के अर्थ में, नजर दुआरी = वक्र दृष्टि के अर्थ में, जिउ धारी = प्राणी मात्र, बेरा = बेला, समय, झुकयाई = घिर आई, अंदयारी = अंधकार, तिमिर।

प्रिय, चलते समय मेरी ओर से सीताराम अर्थात् अभिवादन स्वीकार करो। ऐसी ही कृपा दृष्टि बनी रहे वक्रदृष्टि न हो जाए। जितने प्राणी हैं उनमें से ऐसा कौन है जो मिलकर बिछुड़ता नहीं है। अस्तु प्राण रूपी हंस के उड़ जाने की बेला में चारों ओर से तिमिर घिर आया है।

मोरी सब खों राधावर की,
भई तियारी घर की।
रातै आज भीड़ रई भारी,
घरके नारी-नर की।
बिछुरत संग लगत है ऐसौ,
छूटत नारी कर की।
मिहरबानगी मोरे ऊपर,
सूदी रयै नजर की।
बदी भेंट फिर हू है 'ईसुर'
आँगे इच्छा हर की।

तियारी = तैयारी, रातै = रात्रि में, मिहरबानगी = कृपा दृष्टि, बदी = लिखा होगा तो।

मेरी ओर से अब सबको जय श्री राधावर की स्वीकार हो, अब मेरी घर जाने (महाप्रयाण) की तैयारी हो चुकी है। रात्रि में बड़ी भीड़ एकत्र रही, घर के नर-नारी रूप ही थे। मेरे हाथ की नाड़ी भी अब साथ छोड़ रही है। मेरे ऊपर सबकी कृपा दृष्टि बनी रहे। लिखा बदा होगा तो अगले जन्म में पुन: भेंट होगी, अन्यथा आगे प्रभु की इच्छा है।

मोरी राम राम सब खइयाँ,
चाना करी गुसइयाँ।
दै दो दान बुलाके बामन,
करौ संकल्पै गइयाँ।
हात दोक जागा लिपबादो,
गौ के गोबर मइयाँ।
हारै – खेतै जाब न 'ईसुर'
अब हम ठैरत नइयाँ।

खइयाँ = को, चाना = चाह, बामन = ब्राह्मण को, गइयाँ = गो दान के अर्थ में, हात दोक = दो एक हाथ, लिपवा दो = गोबर से लीप दो, हारै – खेते = खेतों पर।

मेरी सभी के लिए राम–राम है प्रभु ने मेरी चाह की है। ब्राह्मण को बुलाकर दान दे दो, गोदान का संकल्प करा दो। दो एक हाथ धरती गाय के गोबर से लिपवा भी दो। सबसे कह दो कि आज कोई भी खेतों पर कार्य करने हेतु न जाए, अब मैं रूकने वाला नहीं हूँ।

जे हम चले सबई के सामैं,
जनम भूम के गामैं।
नंगा–झोरी दयें जात हैं,
डोरा ना करया मैं।
सरके धरे रये धरती में,
पाँव पसारैं लामैं।
'ईसुर' मुकत सुदारो हमरी,
तुम सब रऔ मजा मैं।

सामैं = सामने, गामैं = ग्राम, नंगा झोरी = नंगा करके तलाशी लेने के रूढ़ अर्थ में, करया = कमर, सरके = सरककर, लामैं = लम्बे, मुकत = मुक्ति।

लो, हम तो सभी के सामने ही चले, जन्म भूमि के ग्राम अर्थात् आत्मा जहाँ से आई थी वहीं जाती है। मेरी कमर में एक धागा तक नहीं है। मैं अपनी पूरी खाना तलाशी देकर दिगम्बर ही जा रहा हूँ। सरककर पृथ्वी पर ही पड़ा रहा लम्बे पैर पसारे हुए। अब तो तुम लोग मेरी मुक्ति कर दो और तुम सब सुखी रहो, यही कामना है।

छूटौ आज जगत से नातौ,
चले कौल दै तातौ।
बैठे रये खाट के ऐंगर,
को लब बाँट पिरातौ।
बैठे रये सगे सम्बन्धी,
लगा न दीनौ हातौ।
पाछूँ देख लगौ को-संगै,
भाई बन्द बतातौ।
पाप-पुन्न को धरौ 'ईसुरी'
धरमराज कै खातौ।

नातौ = रिश्ता, कौल = शपथ, तातौ = गर्भ के अर्थ में, ऐंगर = निकट, पिरातौ = पीड़ा, सगे = रिश्तेदार, हातौ = हाथ, पाछूँ = पीछे, खातौ = लेखा-जोखा।

आज इस संसार से रिश्ता छूटा, अब में अग्नि शपथ देकर चलता हूँ। मेरी खाट के निकट बैठे तो बहुत लोग रहे परन्तु मेरी इस पीड़ा को किसने बाँटा? मेरे नाते रिश्तेदार भी बैठे रहे, किसी ने हाथ नहीं लगाया न ही कोई मुझे जाता देख मेरे पीछे चल पड़ा। भाई-बन्धु आदि कोई भी नहीं आया। पाप-पुण्य का पूरा लेखा-जोखा तो बस धर्मराज के ही घर पर है।

सब दिन किचर-पिचर में खोये,
ज्वानी के मद मोये।
कीनी नईं गुरुन की सेवा,
तन के मैल न धोये।
भूक लगी जब भोजन कर लए,
नींद आइ जब सोये।
'ईसुर' कात मरत की बेराँ,
जान लई जब रोये।

किचर-पिचर = संसारी किच्च-पिच्च के अर्थ में, ज्वानी = यौवन, मोये = सूने हुए के अर्थ में।

आयु के सभी दिन सांसारिक किच्च-पिच्च में खो दिए। यौवन के मद में ही सने रहे। गुरुजनों की न सेवा की न तन का मैल धोया न मन का। भूख लगी तो भोजन किया नींद आने पर सो गए। इसी में जीवन के दिन पूरे हुए। मृत्यु के समय का तब पता चला, जब रूदन हुआ।

हमखों पार देब भू मइयाँ,
अब भए प्रान चलइयाँ।
ऐकैं हात मुड़ी पै फेरत,
ऐकैं पकरै बइयाँ।
उल्टी साँस चलत ऊपर खों,
पल भर ठैरत नइयाँ।
हात पाँव सब टूटन लागे
जम हो जात झुकइयाँ।
'ईसुर' प्रान निकर गए तुरतई,
अब ना हंस अबइयाँ।

पार = लिटा, देब = दो, भूमइयाँ = भूमि पर, चलइयाँ = चलने को है, मुड़ी = सिर, बइयाँ = बाँह, जम = यमराज, तुरतइँ = तुरन्त ही, अवइयाँ = आने को है।

मुझे भूमि पर लिटा दो। अब प्राण चलने को ही हैं। एक हाथ सिर पर फेरो। एक से मेरी बाँह थाम लो। अब श्वाँस उपर को उल्टी चलने लगी है। एक पल भर भी नहीं ठहरती। हाथ पैर सब टूट रहे हैं। यमराज झुका आ रहा है। तुरन्त ही प्राण निकल गए। अब प्राण रूपी हंस लौट कर आने वाला नहीं है।

यारों इतनौ जस कर लीजौ,
चिता अन्त ना कीजौ।
चलत श्रम से बहै पसीना,
भसम पै अन्तस भीजौ।
निगतन खुदै - चेटका लातन,
उन लातन मन रीझौ।
वे सुस्ती ना होंय रात-दिन,
जिनके ऊपर सीजौ।
गंगा जू लौ मरै 'ईसुरी'
दाग बगौरै दीजौ।

यारों = मित्रों, जस = यश, निगतन = चलने से, चेटका = चिता का स्थान, लातन = पैरों से, सीजौ = पसीजने के अर्थ में, बगौरा = ईसुरी का अन्तिम प्रिय ग्राम।

ईसुरी की यह दूसरी नसीहत है, इसके पूर्व उन्होंने ग्राम धौर्रा में 'किलेदार के दोरें' प्राण छोड़ने की बात कही है, जहाँ उनकी रजउ थी। परन्तु जीवन के उत्तरार्द्ध में व्यक्तिगत रजउ जब समस्त चराचर में परणीता हो गई, तब अन्तिम दिनों में रहे ग्राम बगौरा के प्रति यह भाव प्रकट किए गए – मित्रों इतना यश कर लेना कि मेरी चिता कहीं अन्यत्र मत करना। चलने के श्रम से पसीने बहेगा तो मेरी भस्म भीगेगी। मेरी आत्मा को शीतलता मिलेगी। उसके चलने पर चितास्थल पद चापों से खुद जाएगा। यह वही चरण होंगे जिन पर मेरा मन जीवन पर्यन्त रीझा रहा। वह आश्वस्त कभी न हो सकीं जिनके ऊपर मैं आसता रहा। अत: निवेदन है कि गंगा तट पर मेरे प्राण क्यों न निकले, परन्तु मेरी अन्त्येष्टि इसी बगौरा ग्राम में ही की जाए। इसे साहित्य जगत् उनकी प्रीत की सही वसीयत मानता है।

विशेष :- खेद है कि ईसुरी की यह अभिलाषा पूर्ण न हो सकी।

पन्डा धीरे इतै लौ आहैं,
हमें मरौ सुन पाहैं।
समजा दइयो सोच करैं न,
होतब पै बस ना है।
जितने मिलै चिनारी मोरे,
राम-राम सब खाँ है।
खबर करै उदना जे 'ईसुर'
जिदना फागे गाहैं।

इतै लौ = यहाँ तक, दइयो = देना, होतब = होनी, चिनारी = परचित स्वजन, खबर = स्मरण के अर्थ में, उदना = उस दिन, जिदना = जिस दिन, गाहैं = गायेंगे।

जब मेरे दिवंगत होने की बात सुनेंगे तो श्री धीरे पंडा यहाँ तक (ग्राम धवार तक) अवश्य आयेंगे। उन्हें समझा देना कि वे सोच न करें। होनी पर किसी का वश नहीं है। उनके अतिरिक्त मेरे अन्य जितने भी परिचित स्वजन मिलें, उन सभी को मेरी सादर राम-राम कह देना। स्मरण तो सब उस दिन करेंगे, जिस दिन मेरी फागें गायी जायेंगी।

ईसुर कात तुमारे सुमरे,
कटै जनम की फाँसी।

भक्ति खण्ड - एक

सुमिरन सन्दर्भ

जिनकौ सेर–सबेरे खइये,
जियें विशेष डरइये।
नौ दस माँस गरभ में राखौ,
जिनै पीठ ना दइये।
नर–नारी कौ कौन बला–बल,
जिनकी संगत गइये।
सब जग रुठौ–रुठौ रनदो,
राम ना रुठौ चइये,
'ईसुर' चार भुजा बारे सौं,
का दो भुजा निरइये।

डरइये = डरना चाहिए, जियें = जिनको, दइये = दीजिए, बला–बल = शक्ति सीमा, गइये = पकड़िये, रनदो = रहने दो, निरइये = उपेक्षा कर सकेगा।

ईसुरी जीवन के उत्तरार्द्ध में भाती की ओर उन्मुख हुए थे। जिनका दिया हुआ सेरभर (पुरानी तौल एक किलोग्राम) अनाज हम सबेरे ही खाया करते हैं अर्थात् जो हमें खुराक देता है उसी से विशेष डरना चाहिए। नौ–दस माह गर्भ के अन्दर जिसने यथावत पोषण देकर रखा उससे विमुख न होना चाहिए। अरे! स्त्री–पुरुष की भला शक्ति–सीमा ही क्या है? जिसके सहारे चला जाए। सारा संसार रुठ जाए तो रुठ जाने दो श्रीराम को न रुठना चाहिए। ईसुरी कहते हैं–चार भुजाधारी ईश्वर के समक्ष दो हाथों वाले इंसान की क्या विसात है।

मइया मैं तेरा बल पायें,
तनक न शंका खायें।

मैं आधीन दीन भव ठाँड़ौ,
बैरी मोय सतायैं।
हैं मानुस कीं टेड़ी नजरैं,
पाथर से फुट जायैं।
'ईसुर' कात दास अपने खाँ,
सदाँ रात बरकायँ।

मइया = मातेश्वरी आदिशक्ति भवानी, आधीन = निर्भरता के अर्थ में, अधीन, मोय = मुझे, कात = कहता है, अपन खाँ = स्वयं को, बरकाएँ = बचाकर/रक्षा करके।

ईसुरी शक्ति पूजक थे। हे माँ! मुझे तेरा ही बल प्राप्त है इसमें मुझे जरा सी शंका नहीं है। मैं तुम पर निर्भर दीन बना हुआ खड़ा हूँ, बैरी मुझे सता रहे हैं मुझ पर मनुष्यों की वक्र दृष्टि है, जिससे पत्थर तक फट जाते हैं। मैं तो अपने को तुम्हारा दास कहता हूँ। हे माँ! तुम मुझे सारी अलाय-बलाय से बचाये रखती हो। तुम्हारी कृपा मुझ पर अनन्त है।

आसन बाघम्बर पै मारैं,
गंग जटा सिरधारैं।
साँप ततइया सोरइ उनके,
मुन्ड माल बिस्तारैं।
माथे जिनके तिलक चन्द्रमा,
मलयागिर खाँ गारैं।
'ईसुर' अपने बाँय अंग पै,
पारबती बैठारैं।

ततइया = बर्र, सोरइ = सुहाती है, गारैं = गलाए हुए हैं।

भगवान् आशुतोष का ध्यान करके ईसुरी गाते हैं जो बाघम्बर पर आसन जमाकर विराजे, जटाओं में गंगा को धारण किए हुए है, नाग-बर्र आदि के साथ उतरे श्रृँगार में मुण्ड माल का विस्तार भी शोभायमान है। मस्तक पर चन्द्र तिलक है, जिसकी शीतलता मानो मलयागिर चन्दन के समान है जिसे उन्होंने बड़ी सुन्दरता के साथ लगाया है। जो अपने वामअंग में माँ पार्वती को बिठाए हुए सुशोभित हैं।

भजमन राम सिया भगवानें,
संग नहीं कछु जानें।
धन सम्पत सब माल खजानें,
रैजै एइ ठिकानें।
भाईबन्ध अरु कुटुम कबीला,
जे स्वारथ पैचानें।
कें ड़ा कैसो छोर 'ईसुरी',
हंसा हुए रवानें।

रैजै = रह जाएगा, एइ = इसी, पैचानें = चीने, केंड़ा = सूत की लच्छी, छोर = सिरा, रवानें = प्रस्थान के अर्थ में।

मन! तू सीता-राम भगवान् के भजन कर ले, साथ में और कुछ भी जाने वाला नहीं है। धन सम्पति कोषगार सब इसी जगह रह जाना है। भाई-बन्धु, कुटुम्ब-कबीला, रिश्तेदार यह सब स्वार्थ के कारण तुझे पहचानते हैं। ईसुरी कहते हैं- जुलाहे की ताना भरने वाली सूत की लच्छी के एक सिरे के समान यह हँसा यानी आत्मा प्रस्थान कर जाएगी।

कबलुक आहै राम तुमारे,
आन होंय रखबारे।
मोमें तोमें खड़ग खम्मन में,
कहाँ बता दो न्यारे।
धर नरसिंह रुप कड़याए,
लाल खम्ब खाँ फारें।
उर न होय प्रहलाद भगत सौं,
'ईसुर' उदर बिगारे।

कबलुक = कब तक, आहै = आयेंगे, आन = आकर, होंय = हों, रखवारे = रक्षक, मोमैं-तोमैं = मुझमें-तुझमें, खडग = तलवार, खम्मन = खम्भों में, कड़याए = प्रकट हो गये, फारे = फाड़कर, लाल खम्ब खाँ = प्रहलाद का वध करने हेतु तपता हुआ लाल खंभा।

इस रचना में ईसुरी ने प्रहलाद एवं हिरणकश्यप की कथा का उल्लेख किया है। वह अपने भगवद् भक्त पुत्र प्रहलाद के प्राण ले लेने को तैयार हैं। पूछता है बोल कब तक तेरे राम आते हैं जो आकर तेरी रक्षक होंगे? प्रहलाद उत्तर देता है। मेरे राम कहाँ नहीं है, मुझमें तुझमें

तलवार में खम्भे में वह सब दूर समाया है, उसे प्रकट करके में आपको कहाँ बता दूँ। जबकि वह कण–कण में व्याप्त सर्वव्यापी है। इतने में नरसिंह रूप धारणकर, भगवान् उसी लाल तप्त खम्बे को फाड़कर प्रकट हो गए जिससे बाँधकर प्रहलाद का वध करने का विचार था और कोई भी प्रहलाद सा नहीं हो सकता है। ईसुरी कहते हैं–यदि हृदय मिले तो प्रहलाद जैसा मिले, अन्य मनुष्य का जन्म व्यर्थ है।

अंडा भारत में अरई के,
बचा लये है दइ के।
घंटा टूट परौ है आके,
तिन ऊपर बेकइ के।
जे ना मरत काउ के मारे,
शिव रखबारे तइके।
बैठे रये पुराने बनके,
कढ़ गये उम्मर नइ के।
लोट–पल्ट का जानत 'ईसुर',
ईसुर ख्याल उसई के।

भारत में = महाभारत काल में, अरई = एक जन्तु विधि, दइ = दैवशक्ति, तइ के = जिसमें, नइ के = नवीन के, लोट पल्ट = उलटफेर, उसइ के = व्यर्थ के।

देवकृपा महान होती है इसी भारत में आग में पड़े हुए अरई पक्षी के अंडों तक की प्रभु ने रक्षा की थी । जिसके अंडों पर भारी वजन का एक घण्टा अचानक टूटकर गिर जाता है जो किसी के मारने से भी नहीं मर सकते हैं। जिनके भगवान् शिव स्वयं रक्षक होते हैं। अतः भगवान् पर सनातन रुप से विश्वास करके नई बातों को शीघ्र नहीं मान्यता देनी चाहिए। संसार में जो कुछ घटित हो रहा है, वह सब तुम्हारे कारण हो रहा है, ऐसा सोचना व्यर्थ है।

गिर सै पटक दऔ प्रहलादें,
बिना हरी कौ सादें।
राजा रानी त्रास देत हैं,
ताते खम्मन बाँदें।
शिव कौ नाम लेत काये ना,

जनम करत बरबादै।
जान हरन खौ जाल पसारै,
काल कुठरियन धाँदै।
बैर पिता सैं करै रात हो,
दसरत सुत कों यादै।
जिनकौ नाँव जगत जस फैले,
दऔ बैकुण्ठ निषादै।
'ईसुर' तुम खाँ सूजत नइयाँ,
दूजौ नाँव बता दै।

को सारै = कौन साधेगा, त्रास = कष्ट के अर्थ में, ताते= गर्म, खम्मन = खंभ, पसारै = फैलाए, काल कुठरियन = काल कोठरी में, धाँदै = ठाँस दे, करै रात = करता रहता हूँ, दसरतसुत = श्रीराम, यादै = स्मारक में।

प्रहलाद को पर्वत पर से फेंका गया था विचारणीय यह है कि बगैर प्रभु की कृपा के और कौन उसे बचा सकता था। राजा रानी उसे त्रास देते हैं, गर्म खम्भे से बाँधकर वह कहता है–नींद का नाम क्यों नहीं लेता, जन्म व्यर्थ गँवा रहा है। राजा उसके प्राण लेने हेतु जाल फैलाता है उसे काल कोठरी में बंद कर दिया जाता है तब वह कहता है– हे तात! मेरा कुछ नहीं बिगड़ सकेगा क्योंकि मैं अयोध्यानंदन श्रीराम का स्मरण सदैव करता हूँ। जिनके नाम की कीर्ति पूरे संसार में फैली हुई है उन्होंने निषाद तक को वैकुण्ठ दे डाला। तुम्हें यह सब नहीं दिखता तो दूसरा अन्य कोई ऐसा नाम बता दें, जिसके भजने से मेरी आत्मा का उद्धार हो जाय।

मन से करत काय कौ सोचन,
चल बताब तिरलोचन।
को दानी डमरु बारे सें,
दिरब अलोचन खोचन।
पारबती के पत सुखरासी,
वे दुख करत बिमोचन।
बिनै करत अपने मालक सें,
इसको कौन सकोचन।
रमन राव सागर के ऊपर,
'ईसुर' संकट मोचन।

सोचन = चिन्ता के अर्थ में, काय = क्यों, तिरलोचन = शिवजी, दिरब = द्रव्य / सम्पत्ति, अलोचन-खोचन = अल्ले-पल्ले के अर्थ में, बिनै = प्रार्थना, मालक = स्वामी, सकोचन = संकोच की लता।

रे प्राणी! तू मन में चिन्ता क्यों करता है? अपने दुख दर्द तीन आँखों वाले भगवान् अर्थात् शिवजी को सुना दो। उनके जैसा डमरुधारी ओघड़दानी कौन है। द्रवित होने पर वह बारे-न्यारे कर सकता है। वह उमा पति है। जो सुख के विपुल स्वामी हैं। वे सारे दुखों का अवसान करते हैं। ऐसे परम दयालु अपने स्वामी से प्रार्थना करने में किस बात का संकोच होना चाहिए। वे सर्वशक्तिमान और समर्थ हैं।

नारद हो गये नारी नर सें,
सब कोउ हारे हर सें।
साठ पुत्र द्वादस कन्या हाँ,
दिया निकारत घर सें।
जो जानें सो करै उचित सब,
क्या बस जोर जबर सें।
'ईसुर' इनके गरभ अहारी,
शिव जी कात गरुड़ से।

जोर-जबर = शक्ति और शक्तिशाली के अर्थ में, गरभ = अहम्, अहारी = भोजन के अर्थ में।

महर्षि नारद भी नर से नारी हो गए, तात्पर्य यह कि शिव से सभी हारे हैं। साठ पुत्र बारह कन्याओं को घर से तत्काल निष्कासित किया। वे सब कुछ जानते हैं और उचित ही करते हैं। उन पर किसी का वश नही चलता क्योंकि वे शक्तिशाली हैं। वे अहंकार को खोते हैं। यह सब शिवजी गरुड़ जी से कहते हैं।

सरमन गैल पकर गए बनकी,
आसा हर चरनन की।
तज खट राग लादकै काँवर,
राय गये कानन की।
अवध नरेश लिये सर ठाँड़े,
चाह करैं मिरगन की।

'ईसुर' प्यास लगी पित-मातै,
त्यारी करी गमन की।

गैल = राह, खट राग=घर गृहस्थी के षटकर्मों के अर्थ में, लादकै = उठाकर, काँवर = कंधे पर भार वहन करने की तराजूनुमा डोली, कानन = जंगल, मिरगन= मृगों।

पितृभक्त श्रवण कुमार की कथा ही इस चित्रण की पृष्ठभूमि है। श्रवण कुमार ने वन की राह पकड़ ली है क्योंकि वह धर्मपरायण हैं, हरि चरणों को पाने की इच्छा उसके हृदय में बलवती है। अत: सारी दुनिया का जंजाल अर्थात् षटराग छोड़कर माता-पिता की काँवर उठाई और तीर्थ यात्रा के लिए जंगल की राह चल पड़ा। उधर अवध नरेश महराजा दशरथ धनुष बाण लिए खड़े थे। मृगों के समूह निकले और वे आखेट करें, तभी श्रवण के माता-पिता को प्यास लगती है और श्रवण तालाब किनारे पानी लेने जाता हैं। आगे की कथा ईसुरी ने कही नहीं है, लेकिन कथा का अन्त दशरथ के श्राप से होता है- जो राम के जन्म का संकेत भी है।

ये मन जपै काय ना रामैं,
आय आखरी कामैं।
सुआ पड़ावत गणका तरगइ,
लेत हरी के नामैं।
अपने जन खाँ पठा देत हैं,
बैकुन्ठन के धामैं।
जो ना भजे राम खों 'ईसुर',
परै नरक के गामैं।

जपै = जपता, रामें = राम को, कामैं = काम, सुआ = तोता, पड़ावत = पढ़ाते हुए, नामैं = नाम से, पठा = भेजने के अर्थ में, बैकुन्ठन = स्वर्ग का बहुवचन।

रे मन! तू राम का नाम क्यों नहीं जपता, वही अन्त में काम आएगा। तोते की भाँति हरि का नाम पढ़ाते-पढ़ाते गणिका तर गई। अपने प्रिय भक्तों को वह स्वर्ग धाम भेज दिया करते हैं। जो राम को नहीं भजता, वह नर्क के मुँह में ही जाता है।

नग से मन मुंदरी में रानै,
राम रतन कह जानैं।

डरे आनन्द खुसी में खासे,
पौचौ निबती कानैं।
परे पसार सार भीतर खाँ,
जीबै बाइ खजानैं।
राम नाम धरम ना जानौ,
धरौ ध्यान मर जानैं।
तुमरौ संग करौ जब 'ईसुर',
तब जा जात दिखानैं।

नग = रत्न, रानै = रहना है, कानैं = कहाँ तक, सार = लम्बा सा घर जहाँ जानवर बँधते हैं अथवा सार तत्व, भीतर खाँ = अन्दर को, बाइ = उसी, खजानैं = कोषागार।

हृदय रूपी अंगूठी में रामरूपी बहुमूल्य रत्न जड़ा होना चाहिए क्योंकि राम के सिवाय कोई दूसरा नहीं है। राम की भक्ति से अपने आपको लगा दो फिर कैसे पार नहीं पाया जा सकता? अर्थात् रामभक्ति में लवलीन होने से उसे पाया जा सकता है। इस संसार में सब उसी परमात्मा का सार समाया हुआ। उसी के खजाने से इस संसार की गतिविधियाँ चल रही हैं। राम की भक्ति ही जीवन का सार है, वही सच्चा धर्म है, यदि अभी तक इस मर्म को नही समझ पाये हो तो इस बात पर ध्यान दो। अन्यथा एक दिन मर जाना है। ईसुरी कहते हैं–जब परमात्मा की संगति हो जायेगी, तब तुम्हें सब साफ–साफ दिखाई देने लगेगा।

मैंने मन मुँदरी में गाड़ौ,
राम नाम ना छाँडौ।
तन कंचन की डार दई है,
सुरवा खटाई काड़ौ।
नैम कौ बाँध धरम कौ पलवा,
प्रेम तराजू जाड़ौ।
तिसना तौल धरी जा 'ईसुर',
रंग रसना से माड़ौ।

गाड़ौ = जड़ देने के अर्थ में, छाँड़ौ = छोड़ा, डार दई = डाल दी, सुरवा खटाई= सुनारों के यहाँ आभूषण चमकाने हेतु खटाई और उसका पात्र, काड़ौ = निकालने के अर्थ में, नैम = नियम, पलवा = पलड़ा तराजू वाला, तिसना = तृष्णा, माडौ = एक रस करके गूँदना।

मैंने हृदय रूपी अँगूठी में रामनाम को रत्न की भाँति जड़ लिया है। अब मैं राम का नाम नहीं छोड़ूँगा। शरीर कंचन यानी की काया है मैंने उसे खटाई में डालकर और उजला कर लिया है। नियम की मैंने डंडी बना ली है, प्रेम की तराजू ली है, जिसमें धर्म रूपी पलड़े लगाये हैं। ईसुरी कहते हैं– तृष्णा को तोलकर रखा है, तृष्णा को बाँध लिया है और इस आनंद को मैंने प्रभु रस में गूँथ दिया है।

जिनके रामचन्द्र रखवारे,
को कर सकत दगारे।
बड़े भये प्रहलाद पक्ष में,
हिरना कुश को मारे।
राना जहर दऔ मीरा खों,
प्रीतम प्रान समारे।
मसकी जाय ग्राह की गरदन,
गह गजराज निकारे।
'ईसुर' प्रभु ने गाज बचाई,
सिरपै गिरत हमारे।

रखवारे = रक्षक, दगारे = धोका, हिरना कुश = हिरणकश्यप, समारे = सम्हाल लिए, गाज = तड़ित टूटना,बिजली टूटकर गिरना।

उसको कौन धोखा दे सकता है, जिसके स्वयं श्री रामचंद्रजी रक्षक हैं। जब हिरणकश्यप ने अति की तो वे भक्त शिरोमणि प्रहलाद के पक्ष में जा खड़े हुए थे। राणा साहब ने जब मीरा को विष दिया था तब भी प्रियतम होकर आपने उसके प्राणों की रक्षा की थी। जब जल के अंदर ग्रह और गज लड़ बैठे उसने गरदन धर दबाई थी तो आपने पकड़कर गजराज को बाहर किया था। ईसुरी कहते हैं– प्रभु ने सिर पर टूटकर गिरने वाली बिजली से रक्षा की।

जिनकी करिये ताबेदारी,
वे लयँ खबर हमारी।
इक मन्दिर में रामचन्द हैं,
इक में कुँज बिहारी।
जिनकी पूजा करत रात हैं,

पंडित और पुजारी।
'ईसुर' जग में वे ना रुठैं,
रुठ जाय संसारी।

करिये = की जाए, ताबेदारी = चाकरी के अर्थ में, रात = रहते।

उनकी चाकरी करना उचित है, जो हमारी सुधि लेते हैं। एक मंदिर में श्री रामचन्द्रजी हैं और एक में श्री कुंजबिहारी जी हैं, जिनकी पूजा पंडित और पुजारी किया करते हैं। संसार में बस वे ही एक न रुठ जाएँ फिर चाहे संसार ही क्यों न रुठ जाए। ईश्वर की कृपा सदैव बनी रहे।

सेबै कबैक पराईं उरिया,
लगी राम सैं डुरिया।
घंटा बजौ भोग लगौ जब,
आये बसोर-बसुरिया।
सब भगतन के सामल सुनियत,
ओई में एक पतुरिया।
एक से आठ भगत कयँ काँलौं,
बिदत बेद बिद धुरिया।
तुलसी भये सुम्मेर 'ईसुरी',
भक्त माल कौ गुरिया।

सेबै = सहेजने के अर्थ में, उरिया = घरों में पानी निकास हेतु छतों पर बनाई जाने वाली मोहरी को उरिया कहते हैं, डुरिया = डोरी, बसोर-बसुरिया = बुन्देलखण्ड की एक जाति, सामल = सम्मिलित, सुनियत = सुना गया है, ओई में = उसी में, एक पतुरिया =वैश्या, कयँ = कहें, काँलौं = कहाँ तक, बिदत = ज्ञात, बेद बिद = वैदिक नीति से।

अरे! हम दूसरों की छाया में कब तक रहेंगे? जबकि राम से हमारी सीधी डोर लगी है। यानि राम भक्ति में हम मग्न हैं। घंटे बजते हैं, भोग लग जाता है, छूत - अछूत सभी एक होकर दौड़ पड़ते है। क्योंकि वह सभी भक्तों को सम्मिलित रूप से सुनते हैं। उनके यहाँ कोई भेदभाव नहीं है। उन्हीं में एक वैश्या गणिका भी थी। एक सौ आठ भक्त हैं, कहाँ तक कहा जाए? ईसुरी कहते हैं- वैदिक रीति से सर्वविदित है कि इस भक्तमाल में तुलसी सुमेरु रूपी कवि हैं। कवि ने यहाँ बसोर और उसकी नारी बसुरिया का जानबूझकर उपयोग किया है। बसोर को धानुक भी कहते हैं। धर्म ग्रन्थों में धानुक को मूर्ति पूजा का प्रवर्तक कहा गया है। वहीं कवि ने छुआछूत को पाप माना है, ईश्वर सबका है।

अब मन करौ चाकरी हरकी,
आस छोड़ कैं नरकी।
बाल्मीकि मुन की गत देखौ,
उल्ट सिमन्नी सरकी।
सौरी सी सुरधाम चली गइ,
मरजी सांरग धरकी।
खैंच दई बकसीस 'ईसुरी',
लंक अर्थ सब घरकी।

चाकरी = नौकरी / सेवा, उल्ट = उल्टी, सिमन्नी = सुमरनी, सरकी = फिसली अर्थात् चली, सौरी = आखिरी, मरजी = इच्छा, बकसीस = पुरस्कार, सारंग धरकी = धनुष धारण करने वाले अर्थात् श्रीराम।

रे मन! अब तो प्रभु की चाकरी यानी सेवा करना उचित है। इन्सान को छोड़ दे। महर्षि वाल्मीकि को ही देखो उनकी उल्टे राम नाम स्मरण से ही सद्गति हो गई। शबरी भीलनी भक्ति भाव के कारण तर गई, यह सब हरि इच्छा से ही सम्भव हैं। ईसुरी कहते हैं– उन्हीं भगवान् राम ने सोने की लंका के असुर रावण को मारकर अपने भक्त विभीषण को राजा बनाकर पुरस्कृत किया था।

रसना राम–राम कहजारी,
कौन जात तै हारी।
जौ हर नाम सजीवन बूटी,
खात बनै तो खारी।
काँ लौं दिन उर रात सिखइये,
कऔ जात बिरथाँरी।
'ईसुर' हमना कोउ तुमाये,
तै ना कोउ हमारी।

हारी=थकने के अर्थ में, जौ=यह, खारी=खा ले, काँलौं=कहाँ तक, सिखइये=सिखाया जाए, कऔ=कहा।

रसना! राम–राम कहने से तू कोई थक थोड़े ही जायेगी। यह हरिनाम संजीवनी शक्ति है उसे खा सके तो खा लो अन्यथा यह जीवन थोड़े दिन का है। यह बात मनुष्य को कहाँ तक दिन–रात सिखायी जाए। ईसुरी कहते हैं जो कुछ कहा जाता है, वह सब व्यर्थ चला जाता है। मैं कोई तुम्हारा नहीं, न तू कोई मेरी है। यहाँ कोई किसी का नहीं है।

मेरी लोग करत हैं हाँसी,
हनौ शत्रु खाँ गाँसी।
कै कलजुग में कला उठी है,
कै रै गई चिमाँसी।
खन्ड-बन्ड कर देव आनकें,
जब मानौं मैं साँसी।
'ईसुर' कात तुमारे सुमरै,
कटै जनम की फाँसी।

हाँसी = उपहास के अर्थ में, हनौ = प्रहार करो, गाँसी = तेजधार का अस्त्र, चिमाँसी = सोने का बहाना कर आँख मींचने के अर्थ में, खन्ड-बन्ड = नष्ट, साँची = सच, फाँसी= मृत्यु के फन्दे पर लटकाना।

शत्रु पर तेजधार वाले अस्त्र से प्रहार कीजिए, लोग मेरा उपहास उड़ाने लगे हैं। या तो इस कलिकाल में शक्ति समाप्त हो चुकी है या वह सुप्त होने का बहाना कर रही है। ऐसी स्थिति को नष्ट कर देना चाहिए, तभी मैं सच मानूँगा। ईसुरी कहते हैं- तुम्हारें स्मरण मात्र से जन्म जन्मांतर के पाप कट जाते हैं।

जग में भूलौ फिरै बिरथाइँ,
कोउ काउ कौं नाईं।
कीने ओर निबा दई की-की,
सदाँ लई गह बाईं।
धन-दौलत अस-मद कौ आबै,
उरिया कैसी छाईं।
हितू दूसरौ कौ है 'ईसुर',
तुमइ अकेले साईं।

बिरथाइँ= व्यर्थ ही, निबा = निर्वाह, कीकी = किसकी, गह = पकड़ना, बाईं = बाँह, अस = ऐसा, उरिया = मकान की छोंह जो सूरज के साथ बदलती रहती है।

अरे पगले! यहाँ कोई किसी का नहीं है, तू व्यर्थ ही संसार में भटक रहा है। बाँह पकड़कर यानी भरोसा देकर यहाँ किसने किसकी बात निभाई है, यह धन-सम्पति और उसकी मद मस्ती उरवतियों की छाया के समान है। अत: ईसुरी कहते हैं- मेरा हितैषी अन्यथा कौन हो सकता है, तुम्ही एक मेरे स्वामी हो।

जीपै किरपा राम की होई,
करै देत का कोई।
पनमेसुर कैं चारभुजा हैं,
मानुस कैं हैं दोई।
उँगरी करै मरौ ना जाबै,
ककरी कौ फल नोई।
'ईसुर' दरद दीन खाँ देकै,
दीन बन्द कौ होई।

किरपा = कृपा, करै देत = किए देता, पनमेसुर = परमेश्वर, उँगरी = अँगुली, ककरी = ककड़ी, नोई = नहीं, दीनबन्द = दीनबन्धु (पारब्रह्म परमेश्वर)

जिस पर राम कृपा होती है, उसका कोई क्या बिगाड़ सकता है? परमेश्वर, वैसे भी चार हाथों वाला है, अँगुली दिखाने मात्र से कोई मर नहीं जाता है। यह कोई ककड़ी का फल नहीं है। ईसुरी कहते हैं- दीन-हीन को पीड़ा देना, कोई अच्छी बात नहीं है फिर आप तो दीन-बन्धु हैं। गरीबों के सम्बल हैं।

पूरौ पाप पहार हमारौ,
जाय तुमइ से टारौ।
मैं अपराधी पार-पारना,
पार-पिरन कब पारौ।
मो खों अधम जानकें भारी,
जाब ना खेंच किनारौ।
'ईसुर' जबइँ तारबौ तुमरौ,
बिना भगत जब तारौ।

पहार = पर्वत, तुमइ से = तुमसे ही, टारौ = हटाया, पार = उद्धार करने के अर्थ में, पिरन = प्राण /प्रतिज्ञा, पारौ = पूरा करोगे, मो खों = मुझे, जबई = जब ही, तारबो = उद्धार करना।

मेरा तो पापों का पूरा पर्वत खड़ा है यानी मैने जीवन में बहुत बुरे कर्म किये हैं जिसे तुम्ही समाप्त कर सकते हो। मै दोषी हूँ, मुझे पार लगाना है अर्थात् मेरा उद्धार करना है। उद्धार करने का प्रण या प्रतिज्ञा भला तुम कब पूरी करोगे? मुझे बहुत बड़ा पतित समझकर ईसुरी कहते हैं- हे प्रभु! तरण-तारण आप तभी सच्चे हो जब आप मुझे तार दो।

लैबो राम नाम इक सच्चा,
दूर होंय दुख दच्चा।
हिरनाकुस प्रहलाद के लानै,
कौन तमासौ रच्चा।
सबरे बर्तन पके अवाके,
बौ बर्तन रऔ कच्चा।
बरत आग से कूँदत आ गए,
मनजारी के बच्चा।
लै-लै नाम निकारौ 'ईसुर',
मिल्ला-दुल्ला-फच्चा।

लैबौ = लेना, दच्चा = गड्ढों के अर्थ में, तमासौ = खेल, रच्चा = रचना की, अवाके = बर्तन पकाने का भट्टा, बरत = जलती हुई, कूँदत = उछलते, मनजारी = बिल्ली, मिल्ला = प्रथम श्रेणी, दुल्ला = दूसरी श्रेणी, फच्चा = पिछड़ा, अंतिम (लेकिन यहाँ इन तीनों शब्दों को काम, क्रोध, मद के अर्थ में भी लिया जा सकता है)।

राम नाम लेना ही एक सच्चाई है दु:खों के दचके अर्थात् सभी प्रकार के कष्ट दूर हो जाते हैं। हिरणकश्यप से प्रहलाद की आपने रक्षा की थी। एक भी बर्तन कच्चा न रहा और ऐसे धधकते मटके में से बिल्ली के बच्चे कूदते-उछलते जीवित निकल आए। यह उस प्रभु की कृपा का ही चमत्कार है। ईसुरी कहते हैं- उस परमपिता परमेश्वर का पवित्र नाम काम, क्रोध और लोभ को त्यागकर निशदिन लेने से वे सदैव कृपा बनाये रखेंगे।

सखीरी भाग हमाए भारी,
हार गये गिरधारी।
दस औ चार भुवन चौदह में,
जिनै भजत संसारी।
राम-कृष्ण में भेद कहाँ है,
जिन गौतम तियतारी।
पठये सुरग मरीच सुबाहु,
तकत ताड़का मारी।
हैं गरीब के नाथ 'ईसुरी'
दीनन के हितकारी।

भाग = भाग्य , भारी = बड़े के अर्थ में, तिय = स्त्री, पठये = भेजे, तकत = देखते हैं।

सखि! मेरे बड़े भाग्य हैं जो गिरधारी हार गए। दस और चार अर्थात् चौदह भुवन में जिन्हें संसार के लोग भजते हैं, उन श्रीराम और कृष्ण में अन्तर क्या है? जिन्होंने गौतम की स्त्री अर्थात् अहल्या का उद्धार किया। मारीच और सुबाहु जैसे निसाचरों को सीधा स्वर्ग भेज दिया। ताड़का को तो देखते ही मार डाला। वे गरीबों के स्वामी और दीनों के हितैषी हैं।

गरबी गरब हरन सामलियाँ,
गरब की तज दो गलियाँ।
खौंट दई निकसन ना पाई,
मदनलाल की कलियाँ।
भुमरन भूल फूल खाँ मारत,
फरन देत ना फलियाँ।
धरैं मुड़ी पै फिरैं 'ईसुरी',
नारद कैसी डलियाँ।

गरबी = घमण्डी, गरब = घमंड, गलियाँ = राह, खौंट = कुतर देने के अर्थ में, भुमरन = मन के चक्कर, फरन = फलित होने के अर्थ में, फलिया = प्रतिफल के अर्थ में, फरें = रखे, मुड़ी पै = सिर पर।

साँवरिया श्याम सारा गर्व चूर-चूर कर देता है। इसलिए मनुष्य को गर्व यानी घमण्ड की राह तज देना चाहिए। कामदेव की शक्ति ने जीवन की अरुणाई की कलियाँ कुतरकर फेंक दी। कली फूल ही नहीं बन पाई। सुगन्ध के वश व्यक्ति सुवासित पुष्प को ही तोड़ लेता है। पुष्प के बगैर फल पैदा नहीं हो सकता। ईसुरी कहते हैं- सिर पर रखे हुए यह पापों की डालिया यानी पोटली लिये कई लोग घूम रहे है।

नइयाँ काउन काउ सहाई,
सब दुनिया अजमाई।
गीता अर्थ कृष्ण सौ जानै।
पिता सों जानै माई।
जा दइ देह आपदा जानै,

की खाँ पीर पराई।
अपने मर गए बिना 'ईसुरी',
सरग न देत दिखाई।

काउकौ = किसी का, सहाई = सहायक, अजमाई = देख ली के अर्थ में, आपदा = विपत्ति, की खाँ = किसको, सरग = स्वर्ग।

कोई किसी का सहायक नहीं, सारा संसार देख लिया है। कृष्ण ने गीता का मतलब समझाया है, जो पिता को जान लेता है वही माँ को भी जान पाता है। यह काया विपत्तियों से पूर्ण है, किसको पीड़ा सुनाई जावे? प्रत्येक आदमी दुःखी है। ईसुरी कहते हैं– स्वयं मरे बगैर किसी को स्वर्ग नहीं दिखाई देता यानी स्वयं की अनुभूति ही सच्ची होती है।

नइयाँ कोउ निबाउन बारौ,
तुम बिन श्याम हमारौ।
टूटे धुजा–पताका सरदें,
दौ में परौ निबारौ।
कैसों करों कौन कौ बस है,
बिछरौ खेबन हारौ।
मैं आधीन पुकारों 'ईसुर',
ताबेदार तुमारौ।

निबाउन = निभाने, बारौ = वाला, धुजा = पताका, सरदें = रस्सियाँ, दौ = दह अर्थात् गहरा गर्त, परौ = पड़ा, निबारौ = सुलझाने के अर्थ में, बिछरौ = छूट गया, खेबन हारौ = खिवैया, ताबेदार = सेवक।

कोई भी मुझसे निभाने वाला नहीं है। सिवाय तुम्हारे हमारा कोई नहीं है मेरी सब ध्वज पताकाएँ व उसके बन्धन टूट गए हैं। यश–कीर्ति, धन दौलत, सारे संबंध समाप्त हो गये हैं। देह यानि कुंड में पड़ा हुआ हूँ। आकर सुलझा दो मैं कैसे क्या करुँ? कोई बात समझ में नहीं आ रही। कोई बात मेरे वश की नहीं है। मेरा खेवनहार मुझसे बिछुड़ गया है। मैं आश्रित होकर पुकार रहा हूँ, प्रभु मैं तुम्हारा सेवक हूँ।

श्याम शब्द श्लेषार्थी है, श्याम बाई कुछ विद्वानों के अनुसार ईसुरी की पत्नी भी थी। 'बिछरौ खेबन हारौ' में यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है।

जब सें नन्द नंदन जू हेरे,
सुफल मनोरथ मेरे।
दिन उर रैन जात है हमखाँ,
सुख में साँझ सबेरे।
इतनी खबर रात है उनखाँ,
घर आवत हैं मेरे।
सीधे करम करे करनानिध,
बिधना नै दिन फेरे।
उन के अब हो रहौ 'ईसुरी,'
चरन कमल के चेरे।

हेरे = देखे, द्रवित होने के अर्थ में, सुफल = सफल, हमखाँ = मेरे लिए, रात = रहती, उनखाँ= उनको, करनानिध = करुणानिधि, बिधना = विधाता, उनई = उनकी है, चेरे = दास।

जब से नन्द नन्दनजी यानी श्रीकृष्ण मुझ पर द्रवित हुए हैं, मानो मेरे सभी मनोरथ सफल हो गए हैं। मेरे दिन और रात, सुबह और शाम सुख से बीतते हैं। उन्हें मेरी इतनी खबर है कि वे स्वयं मेरे घर पधारते हैं। मैंने सीधे ही कर्म किए होंगे। हे करुणा निधान! तभी तो विधाता ने मेरे दिन फेर दिए। अब तो मैं उन्हीं के चरण कमलों का दास होकर रहूँगा।

बृज में बृज गोविन्द बिहारी,
जिनकी तुमसें यारी।
जिनकी प्रीतें प्रेम नैम कीं,
अधिक राधका प्यारी।
जिनके बसत बीच हिरदै में,
श्री बृषभान दुलारी।
जिनकी क्रीड़ा करन केलकी,
कथा व्यास बिस्तारी।
'ईसुर' गुन कैबे के लायक,
इतनी बुद्ध निहारी।

बसत = स्थित होना, हिरदे = हृदय, केल = केलि अर्थात् लीलाएँ।

ब्रज में ब्रज-गोविन्द यानी श्रीकृष्ण बिहारी रहते हैं, जिनकी तुमसे ही प्रीति है, हे राधे! उनकी प्रीति से रीति ही ऐसी है, जो सबसे अलग है, जिन्हें राधिका जी सर्वाधिक प्रिय हैं। जिनके हृदय के मध्य श्रीकृष्ण दुलारी जी बस गई हैं और जिनकी क्रीड़ाएँ-लीलाएँ विस्तार पूर्वक कथा के रूप में श्री व्यास जी महाराज ने कही हैं। मेरे गुण तो कहने योग्य भी नहीं, मेरे पास इतनी बुद्धि कहाँ है।

केसन दई स्यामता अलखाँ,
गइ बृषभान महल खाँ।
बैनी देत राधिका जू की,
त्रिबैनी के कलखाँ।
पार-पाट जल जोत माँग भर,
सकल गंग के जल खाँ।
जमना स्याम लाल सर सुर्त्ती,
माँजत मन के मल खाँ।
'ईसुर' पार परेंगे पापी,
जा नौका भइ कलिखाँ।

केसन = अलकावलि, स्यामता = श्यामवर्ण, अलखाँ = अनेकों, बैनी = वेणी / चोटी, त्रिबेनी = त्रिवेणी, कलखाँ = भविष्य हेतु, पार = किनारा पाड़ना अर्थात् बनाना भी, पाट = चौड़ाई / केशों की व्याधि, सकल = सम्पूर्ण, सुर्ती = सुख, माँजत = परिमार्जन करते, पार परेंगे = पार लगने के अर्थ में, कलिखाँ = कलिकाल के लिए।

ईसुरी श्री राधिका जी के भक्त जान पड़ते हैं। अत: उनकी रचनाओं में राधिका की अनेक छवियों के रूपक मिलते हैं। इस रचना में भी वे राधिका जी को देखकर कहते हैं- केशों में श्याम अर्थात् स्वयं श्रीकृष्ण का प्रभाव है, जिसमें यह अलकें दीप्तिमान हैं। क्योंकि श्रीकृष्ण कुँवरि अभी उसी महल की ओर गई हैं। राधिका जी की वेणी मानो त्रिवेणी की छवि दे रही है। जिसे देखकर ही त्रिवेणी स्नान का पुण्य मिलता है। किनारों और पाट के बीच बहने वाले जल के समान माँग की ज्योति आभा निखर रही है। समूचा गंगा जल मानो यहाँ विद्यमान है। यमुना की श्यामलता भी है और लाल सिंदूर सिर पर सूरज की याद कर रहा है। यहाँ मन को परिमार्जित कर विकार दूर करें। अवश्य ही मेरे जैसे पापी पार लगेंगे कलिकाल में राधा की छवि एवं स्मरण पार लगाने वाली नौका है।

ऐसौ कबै होय मन मेरौ,
कृष्ण कृपा कर हेरौ।
भूँक लगै जब माँग खात ते,
घर-घर छाछ महेरौ।
प्यास लगै तब जाय पियतते,
जमना जल बहुतेरौ।
साँझ भये नौ लऔ 'ईसुरी'
कदमन तरै बसेरौ।

कबै -कब, हेरौ = देखो / द्रवित होओ, खातते = खाता था, छाछ = मट्ठा, महेरौ= मट्ठे में ज्वार या चावल से बनाया जाने वाला गरीबों का खाद्य पदार्थ, पियतते = पीते थे, तरै = नीचे, शरण में के अर्थ में।

हे कृष्ण जी! मेरी ओर द्रवित होकर कृपापूर्वक दृष्टि कीजिए। मेरा मन ऐसा कब योग्य हो पाएगा। भूख लगने पर घर जाकर माँग-माँग कर मट्ठा महेरी खाते थे, प्यास लगने पर जमुना का बहुतेरा जल पीते थे। अब मेरे जीवन से साँझ है, अत: संध्या होने तक मैंने आपके श्री चरणों की शरण में बसने का विचार किया है।

हमारी पार करौ जा नइया,
बंसी के बजबइया।
जौ भव सागर अगम भरौ है,
तुम बिन कौन खिबइया।
लोग कुटम धन काम न आहै,
भइया बाप लुगइया।
'ईसुर' के हौ तुमइँ दयानिध,
जनकी टेर सुनइया।

खिबइया = विघ्नहरा, आहै = आएगी, लुगइया = स्त्री, टेर = पुकार।

मेरी यह नाव पार कीजिए। हे वंशी बजाने वाले प्रभु! यह भवसागर अगम है, तुम्हारे बगैर कौन खिवैया मिलेगा। लोग जिसमें कुटुम्ब, धनसम्पति, भाई-बन्धु, पिता-माता या स्त्री पुत्र ये कोई भी यहाँ काम न आएँगे मात्र तुम ही ऐसे दयानिधान हो, जो जन-जन की पुकार को सुनते हो।

रे मन बिन्द्राबन में रइये,
कृष्ण राधका कइये।
झाडूदार बनै गोकुल के,
खोरैं साफ करइये।
गोपिन ब्रजबासिन के घर-घर,
माँगत टुकड़ा खइये।
करिये नइ अभमान जगत में,
प्रभु से नीके रइये।
चार भुजा बारे खाँ 'ईसुर',
का दो भुजा निरइये।

खोरैं = गलियाँ, अभमान = घमंड, नीके = अच्छे, निरइये = निराना अर्थात् अलग करके रखना।

अरे मन! तू कृष्ण राधिका का स्मरण करते वृन्दावन में ही रह। उस गोकुल नगरी का झाडूदार बनकर वहाँ की गली-गलियारे की सफाई कर, गोपियाँ एवं ब्रज निवासियों के घर-घर जाकर टुकड़े माँगकर खा। संसार में आकर घमण्ड मत कर, प्रभु कृपा से सदैव साफ सुथरे ही रहना। उस चार हाथ वाले के सम्मुख भला दो हाथों वाला क्या कर सकता है। इसलिए ईसुरी कहते हैं- उसी की शरण में रहने की चेष्टा कर।

ईसुर साँसउ सुरग नसैनी,
रामायन तुलसी की।

भक्ति खण्ड – दो

राम विषयक

गिरजा मनो कामना करदें,
हो प्रसन्न जौ वरदें।
भरत, शत्रुघ्न लक्ष्मन देवरा,
रामचन्द्र से वरदें।
दसरथ ससुर सास कौशल्या,
अवधपुरी में घर दें।
'ईसुर' प्रेम नाम की मुंदरी,
श्याम नगीना जड़दें।

देवरा = देवर, मुंदरी = अँगूठी, नगीना = रत्न।

प्रसंग उस समय का है जब सीताजी पुष्प वाटिका में श्रीराम का दर्शन कर चुकी होती हैं और गिरिजा पूजन हेतु मन्दिर में पहुँचकर माँ गिरिजा की स्तुति करती हुई याचना करती हैं।

हे गिरिजा माँ! मुझे प्रसन्न होकर वर दें और मेरी मनोकामना पूर्ण कर दें। शत्रुघ्न और लक्ष्मण देवर के रूप में तथा श्रीरामचन्द्रजी वर रूप में मुझे प्राप्त हों। राजा दशरथ ससुर और कौशल्या जी सास हों, अवधपुरी में मुझे एक घर देना । मैं प्रेम रूपी अपने हृदय की अँगूठी में उस श्यामल वर्ण को रत्न की भाँति जड़ लेना चाहती हूँ।

विशेष :- वरदें शब्द का यमक चमत्कार रचना का संदर्भ बहुगुणित कर रहा है।

रामें लयें रागनी जी कीं,
लगै सुनत में नीकीं।

कैउ सास्त्र पुरान अठारा,
चार बेद सों झींकी।
गहरी बहुत अथाह भरी है,
थाह मिलै ना ईकी।
'ईसुर' साँसउ सुरग नसैनी,
रामायन तुलसी की।

रामें = राम को, लये = लिए हुए, जीकी = जिसकी, कैउ = अनेकों, झींकी= निकालने के अर्थ में, ईकी = इसकी, सुरग = स्वर्ग, नसैनी = कर्मों की बनी सीढ़ी।

तुलसीकृत श्री रामचरितमानस पर ईसुरी मुग्ध हैं। वे कहते हैं– श्रीराम को सम्पूर्ण रूप से अपने में समाये हुए जिसकी रागिनी है, वह श्रवण करने मात्र से बहुत सुन्दर है। जिसकी गहराई कई शास्त्र, अठारह–पुराण और चारों वेदों से सार तत्व रूप में बाहर निकालकर लाई गई है। जिसकी थाह या गहराई कोई नहीं पा सकेगा। सचमुच ही तुलसीकृत श्री रामचरितमानस स्वर्ग तक पहुँचाने हेतु एक मात्र सीढ़ी है।

जग मे प्रगटे अबध बिहारी,
दसरथ भुबन मँझारी।
मुन दुज धैन हेतियक तिनके,
करैं सदा रखबारी।
जन हित जीबन मूर जगत–पत,
दुष्ट दलन औतारी।
खेलें गोद कौशल्या जू की,
सन्तन के हितकारी।
धन्न अजुध्या नगरी 'ईसुर',
माया अजब पसारी।

मँझारी = मध्य में, मुन = मुनि, दुज = द्विज, धैन = धेनु, हेतियक = हितैषी, रखबारी = रक्षा, मूर = मूल, जड़, जगत–पत = जगत् का स्वामी, औतारी = अवतारी, पसारी = फैलाई।

संसार में अवध बिहारी श्रीरामजी पैदा हुए। तब से श्री दशरथ जी के महल में ऋषि–मुनि, ब्राह्मण एवं गौ रक्षा हेतु विशेष प्रयास किये जा रहे हैं। कल्याण ही जिनके जीवन का मूल उद्देश्य

है, जो दृष्टों के संहार हेतु अवतरित हुए हैं, जो सन्तों के हितैषी है । ईसुरी कहते हैं-धन्य है वह नगर अयोध्या, जहाँ परमात्मा ने स्वयं विचित्र माया फैलाई है।

सोभा का बरनौ ऊ दिनकी,
दसरथ राज भुबन की।
देब गन आद रिसी जुरयाये।
भीर भई मुनियन की।
तीरथ सकल आद चल आये,
नाचत बधू सुरन की।
नाचत शारद शेष गगन सें,
बरसा करैं सुमन की।
नर-नारी खों आस 'ईसुरी',
चरन कमल बंदन की।

बरनों = वर्णन को, उदिन = उस दिन की, जुरयाये = एक होकर आए, सकल = समस्त, सुरन = देवताओं।

शोभा का क्या बखान किया जाए, उस दिन राजा दशरथ के भवन की शोभा अपरम्पार थी? देवगण , ऋषि-मुनि आदि सब एकत्र होकर पधारे। जैसे सारे पुण्य तीर्थ आदि सभी अयोध्या में इकट्ठे हो गये हैं। देवताओं की बहुओं द्वारा नृत्य किया जा रहा है। पुष्प वर्षा की जा रही है। ईसुरी कहते हैं- जिन- जिन स्त्री-पुरूषों ने सुना, वे प्रभु रामचंद्र की चरण वन्दना के लिये दौड़ पड़े और उन्हीं की आशा करते हैं।

जमकें भीर भुबन भइ भारी,
जुरे नगर के नर-नारी।
दान दच्छना देत सबइ खाँ,
जैसे नाग इच्छा चारी।
भऔ आनन्द अबध नगरी में,
ताकी सबरी बलहारी।
मंगल सोहर और बधाई,

बाजे बाजत सुखकारी।
भू-कौ भार हरन भए 'ईसुर',
रघुबंशी हैं औतारी।

जमकें = खूब के अर्थ में, सबइ = बहुत के अर्थ में, जुरे = एकत्र हुए, दान दच्छना = दान दक्षिणा, इच्छाचारी = चारौं मन वांछित फल के अर्थ में, भऔ = हुआ, ताकी = उसकी, सोहर = जन्मोत्सव का लोकगीत, भू-कौ = भूमि का, हरन = हरण करने हेतु।

भवन में बहुत भीड़ थी नगर के समस्त नर-नारी वहाँ एकत्रित थे। दान-दक्षिणा सभी को दी मानो सबको चारों मनवांछित फल प्राप्त हो रहे थे। अवध में आनन्द ही आनन्द छा गया, राम जन्म की खुशियों के मंगल गीत, सोहरगीत और वाद्य यंत्र बजने से सभी खुश थे। पृथ्वी का भार हरने हेतु रघुवंश में यह अवतार जो हुआ है।

मुन संग चले राम दुइ भाई,
किरपा सिन्धु रघुराई।
जल जन यन मुख जलस गौर तन,
नील जलज सुखदाई।
कट पट पीत काटनी काँछैं,
कर-सर चाँप चढ़ाई।
असुर संघार भकत व्रतपालन,
सन्तन के सुखदाई।
'ईसुर' मुनबर लिये जात हैं,
मनहुँ महा निधि पाई।

जल जन = जल जैसा निर्मल, जलस = जल सरीखा ही, गौर तन = गौर वर्ण देह, नील जलज = नीला मुख, काटनी = बड़ी सी, काँछै = धोती की काँछ, सर-चाप = धनुष बाण, संघार = संहार कर, भक्त = भक्त।

यह प्रसंग उस समय का है जब विश्वामित्र यज्ञ रक्षा हेतु राम-लक्ष्मण को लिए जा रहे हैं। राह में राम लक्ष्मण की छवि जो देखता है वह दंग रह जाता है। ईसुरी के शब्दों में- मुनि के साथ दोनों भाई चले जा रहे हैं। जल के समान जिनका मुख और जल सरीखा ही गौर वर्ण तन है वे लक्ष्मण और नीलकमल वर्णन सुख देने वाले वे श्रीराम हैं। कटि पर पीले वस्त्र का फेटा, कसी हुई सुन्दर कोंछें धोती की शोभा बढ़ाती हैं, हाथ में धनुष बाण साधे हैं। निशाचरों का संहार

कर भक्तों के व्रत पालक, सन्तों को सुख देने वाले हैं। मुनि उन्हें अपने साथ लिए जाते हैं उन्होंने बहुत बड़ी निधि प्राप्त की है।

हरउर मुनवर दये दिखाई,
लखत ताड़का धाई।
एक बान से प्रान हने हैं,
तनक न देर लगाई।
गाध सुबन की रक्षा करकें,
हने दनुज समुदाई।
गौतम रिष की नार तारकें,
पाई प्रभु बड़ाई।
गवन जनकपुर करौ 'ईसुरी',
लखन सहित रघुराई।

हरउर = हरि को, ईसुरी का नाम हरप्रसाद भी था, मुनका = मुनिका, सुनत = सुनते ही, गाध सुबन = गांधर्व पुत्र अर्थात् विश्वामित्र, हने = प्रहार किए और मारने के अर्थ में।

मुनि श्री विश्वामित्र राम-लक्ष्मण के साथ दिखाई दिए। देखते ही ताड़का उन पर झपटकर दौड़ी। राम ने एक ही बाण से उसके प्राण हर लिए, तनिक भी विलम्ब न किया। मुनिवर विश्वामित्रजी की रक्षा हेतु राम ने राक्षसों के समूह पर प्रहार किए और उनका वध किया। गौतम ऋषि की स्त्री अहल्या का उद्धार करके प्रशंसा प्राप्त की। पश्चात् लक्ष्मण के साथ राम ने जनकपुर के लिए प्रस्थान किया।

दुइ सुत नृप दसरथ के जाये,
मुन हित भूप पठाये।
हैं बरजोर लखत के कोमल,
मारीचहीं भगाये।
जासु चरन रज परसत पावन,
मुन तिय पाप नसाये ।
भू के भार टारबे कारन,

रघुवंशी सुत आये।
मुन के वचन सुने जब 'ईसुर',
नृप नै वास कराये।

बरजोर = बलिष्ठ, लखत के = देखने मात्र के, परसत = स्पर्श करने के अर्थ में, मुन तिय= मुनि स्त्री अर्थात् अहल्या, नसाये = समाप्त किए, टारबे = समाप्त करने के अर्थ में, वास = ठहराव।

श्रीराम ताड़का एवं सुबाहू का वधकर मारीच को समुद्र पार फेंकने के पश्चात् विश्वामित्र के साथ जनकपुर पहुँचते हैं। तब ईसुरी कहते हैं– दोनों सुत राजा दशरथ के हैं, जिन्हें मुनिवर के लिए राजा ने भेजा है। देखने से भले ही मालूम पड़ते हैं, लेकिन बलशाली इतने हैं कि मारीच को समुद्र पार पहुँचा दिया। जिनके चरणों की पावन धूल के स्पर्श करते ही मुनि गौतम की स्त्री अहल्या मुक्त हो गई। पृथ्वी के भार का हरण करने को यह रघुवंशी सुपुत्र आए हैं। मुनि के वचन सुनते ही जनकपुर के नरेश ने उचित स्थान पर उन्हें ठहराया।

बागै राम लखन दुइ आये,
गुरू अनुशासन पाये।
बाग समीप पूँछे माली सें,
लखैं बाग फुलबाये।
टोरत पुष्प मनोहर सुन्दर,
नृप की करत बड़ाये।
भिरमन करत बाटका भीतर,
लछमन बचन सुनाये।
तौ लौ जनक नन्दनी 'ईसुर',
पूजन गौर पठाये।

बागै = वाटिका में, लखैं = देख लें, टोरत = तोड़कर चुनने के अर्थ में, भिरमन = भ्रमण, तौ लौं = तब तक, पठाये = भेजी गई।

गुरू की आज्ञा से श्रीराम एवं लक्ष्मण दोनों पुष्प वाटिका में आए। वाटिका के समीप पहुँचकर वाटिका की फुलवारी देखने हेतु माली से पूछा। फिर वे मनोहर सुंदर पुष्प चुनते हुए यहाँ की प्रशंसा करते हैं। इसी प्रकार जब वे वाटिका में भ्रमण कर रहे थे और श्री लक्ष्मण जी से चर्चा कर रहे थे तब जनक सुता सीताजी भी वहाँ गिरिजा पूजन हेतु पहुँच गईं।

इनखों लख-लख भईं दिमानी,
बोली सिया भुमानी ।
गद-गद कन्ठ ना मुख से भाखत,
बहैं नैन जल पानी।
तन-मन दसा बिसार जानकी,
छोड़ दई कुल कानी।
सुन्दर कुँअर सलौने की छब,
लख के भईं दिमानी।
'ईसुर' मनहुँ चित्र की पुतरी,
की के हाँत बिकानी।

लख-लख = देख-देखकर, सिया = सीता, भाखत = बोलती, गद्‌गद्‌ कण्ठ = भरा हुआ गला।

राम की सुन्दरता देख-देखकर ही वह बौरा गईं यानी पागल सी हो गईं और सीता बोलना चाहती थी लेकिन कण्ठ भर आया। मुख से बोलते नहीं बना, नैंनों से अश्रुधारा तन-मन की दशा बेसुध सी हो गई जो कह रहीं थी वह बीच में ही भूल गईं। अस्त-व्यस्त हो गईं, कुल की सारी मर्यादाओं का ध्यान नहीं रहा। सुन्दर कुमार सलोने की छवि देखकर ही वह दीवानी हो गईं। ईसुरी कहते हैं- मानों चित्र की गुड़िया किसी के हाथ बिक गई हो।

दुइ सुत राजा जनक निहारैं,
क्रीट मुकट सिरधारैं।
श्यामल गौर सरूप देख कैं,
तनक न दृगन टारैं।
शोभा सील गुनन में अगरे,
बारी बैस कुमारैं।
धन-धन माता पिता हैं इनके,
जनम लिये जिन द्वारैं।
जनक चरन मुनके गह 'ईसुर',
कोमल बचन उचारैं।

निहारैं = देखें, टारें = हटाने के अर्थ में, अगरे = बढ़े हुए, बारी = छोटी, बैस = आयु, कुमारैं = कुँवारे, गह = पकड़, उचारैं = कहें।

किरीट मुकुट शीश पर धारण करने वाले दोनों कुमारों को राजा जनक देख रहे हैं। साँवले एवं गौर वर्ण के स्वरूप वालों को देखकर तनिक भी दृष्टि उनपर से हटी नहीं है। शोभा एवं शील गुणों में भी वे आगे बढ़े हुए अधिक आयु के भी न थे कुँवारे थे। बोले-धन्य हैं वे माता-पिता जिनके यहाँ इन्होंने जन्म लिया कहते हुए राजा जनक ने मुनि श्री विश्वामित्र के चरण पकड़कर कोमल वचनों का उच्चारण पूरा किया।

मुनवर हमै ना जानौ जाता,
को इनके पित-माता।
चन्द बदन पंकज सम-लोचन,
मंद-मंद मुस्क्याता।
सुषमा-सौम सामले गोरे,
मृदुल मोह नइँ जाता।
छोटी वय जा लरम कलइयाँ,
धनुष बान लयँ हाँता।
'ईसुर' जोड़ी जुगल लखीजौ,
कोटन काम लजाता।

जानौ जाता = समय में न आने के अर्थ में, को = कौन, मुस्क्याता = मुस्कुराते हैं, साँमले = श्यामवर्ण, गोरे = गौरवर्ण, जा = यह, नरम = कोमल, कलइयाँ = कलाई, लयँ = लिए हुए हैं, हाँता = हाथ में, लानी = देखी।

हे मुनिवर! मेरी समझ में नहीं आता कि इनके माता-पिता कौन हैं? चन्द्र बदन, कमल से नयन, मन्द-मन्द मुस्कुराहट, सुषमा सौम्य साँवरे-गौर मृदुल, मोह रहित, छोटी वय और यह कोमल कलाई जिसमें इतना बड़ा धनुष बाण लिए हुए हैं। ऐसे युगल द्वय कभी देखने को नहीं मिले, जिन पर करोड़ों कामदेव लज्जित होते हैं।

दूला सामरिया रंग बारौ,
देखौ सिया तुमारौ।
मन हर लेत हसन हेरन में,
रसिया राज दुलारौ।

ऐसौ रूप आजलौं आली,
मैने नईं निहारौ।
तज दो पिरन पिता अपने को,
जैमाला दै डारौ।
टोरौ धनुष राम ने 'ईसुर'
बाजौ बिजय नगारौ।

दूला = दूल्हा / वर, सामरिया = श्याम, रंगबारौ = रंग का, हसन-हेरन में = हँसकर देखने में, रसिया = रसिक, आजलौं = आज तक, आली = सखि, निहारौ = देखा, पिरन = प्रण, जैमाला = वरमाला, दै डारौ= डाल दो।

सखि कहती है प्रिय सीते! मैंने साँवले रंग वाला तेरा वर देखा है। उसका हँसना, देखना, मन हर लेता है वह राज दुलारा रसिक ऐसा ही है। क्या कहूँ सखि, ऐसा रूप मैंने आज तक नहीं देखा। मेरी बात मानो अपने पिता का प्रण छोड़कर तुम तो जाकर उनके गले में वर माला डालकर उनका वरण कर ही लो। ईसुरी कहते हैं- इतने में रंग भूमि पर धनुष श्रीराम तोड़ देते हैं और विजय के नगाड़ों की गूँज वातावरण में भर जाती है।

मनहरण -छन्द

साजौ पत जोजन को भोजन पै सामाँ सब,
साजौ मंच डेरनगुल-गुलौ लियाय कै ।
तान दो बितान चार चाँदनी चंदेबा पूर,
पल में गलीचा फर्स मखमली बिछाय कै।
'ईसुरी' तरंगन में दीजियौ बँधाय सेत,
काट कै कुघाट बाट राखियो बनाय कै।
साज कै बरात-बेष आउत श्री कौशलेश,
पायँ न कलेश-लेश देश मेरे आयकैं।

साजौ - सजावट करो, पत योजन = प्रतिष्ठा की योजना, सामाँ = समय, डेरन = ठहरी के स्थान, गुल-गुलौ = मुलायम, चाँदनी-चंदेबा = सु-आकर्षक श्यामलता, कुघाट = गलत घाट, पाट =चौड़ान।

इस मनहरण छन्द अर्थात् कवित्त में विदेह के द्वारा भगवान् श्रीराम की बारात हेतु पूर्व तैयारी के निर्देश हैं। साज-सज्जा प्रतिष्ठानुकूल कई योजना तक की जाए भोजन सामग्री पर ध्यान दिया जावे। मंच सज्जा एवं बारात ठहरने के स्थान पर बिछौना मुलायम गद्दे लाकर

बिछाये जाएँ। आकर्षक वितान तान दिये जाएँ, बीच में रंग एवं सु-आकर्षक डिजाइनों के चंदेवा और फर्श पर सुंदर गलीचे बिछाये जाएँ। चार-चाँदनियाँ शामियाने की शोभा बढ़ायेंगे। पलकों के गलीचे अर्थात् बारात को आँखों पर लेना है, कर्वा -बिछात मखमली होना चाहिए। उमंग और तरंगों का समय है, प्रसन्नता का पारा नगर हृदय में समा नहीं रहा है। अत: इन तरंगों पर एक सेतु का निर्माण आवश्यक है जो दो परिवारों को दो हृदयों को परस्पर जोड़ेगा। उबड़-खाबड़ घाट को काटकर राह बनाकर रखना जहाँ सेतु बनेगा। जहाँ से बारात सजाकर श्री कौशलेश (कौशिल्या पुत्र) पधार रहे हैं, मेरे देश में उन्हें किसी प्रकार का भी कष्ट न होने पावे।

उबै नृपत जनक के द्वारैं
राम मोर सिर धारैं।
कंचन कलस लयँ सब ठाँड़ी,
मिथलापुर की नारैं।
नब से लेत सुमन के गजरा,
बना बना कें डारैं।
टींका होत त्रिलोक धनीकौ,
बिरमा बेद उचारैं।
'ईसुर' कान दऔ ना जाबै,
आँगौनी के मारैं।

उबै = शोभा पाने के अर्थ में, मौर = दूल्हा के शीश का श्रृंगार, नब = नभ, गजरा = हार-मालाएँ, बना = दूल्हा एवं निर्माण करना भी, आँगौनी = आतिशबाजी।

बारात जनक के द्वार पर पहुँची है- श्रीराम शीश पर मौर धारण किये हुए हैं। राजा जनक के द्वार पर अनुपम शोभा पा रहे हैं। जनकपुर की नारियां स्वर्ण कलश सिर पर लेकर खड़ी हुईं है। हार गजरा बना-बनाकर दूल्हे के गले में डाल रही हैं। त्रिलोकीनाथ का टीका हो रहा है। पंडित के रूप में स्वयं ब्रह्मा वेदोच्चार कर रहे हैं। लेकिन आतिशबाजी के धमाकों के कारण कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा है।

हरखाँ कैकइ नै बन दीना,
ऐसौ अपजस कीना।
अपने सुत खों राज दियो है,

ऐसी मत की हीना।
रामचन्द्र जी बनखाँ निकरैं,
संग लखन खाँ लीना।
'ईसुर' गमन जानकी सुनकैं,
चरनन में चित दीना।

दीना = दिया, कीना = किया, खाँ = को, हीना = हीन है।

राम को माता कैकेयी ने वनवास दिया। यह ऐसा अपयश है, जिसकी भरपाई नहीं हो सकती अपने पुत्र भरत को राज दिलाया है। वह ऐसी हीन प्रकृति की है। श्रीरामचन्द्र वन की ओर निकल पड़े हैं। साथ में श्री लक्ष्मण जी को लिए हुए हैं। उनके जाने की बात जब सीता ने सुनी तो, उनके चरणों में चित्त दिया अर्थात् वे भी उनके साथ हो गईं।

बनखाँ काये कैकइ मइया,
दोउ पठे दए भइया।
हते सुमित्रा कौशिल्या कैं,
ऐकइ एक डरईया।
जनक सुता खाँ संग पठै दऔ,
वन में बड़ी तसइया।
'ईसुर' कारी परी अवध में,
को है पार लगइया।

काये = क्यों, पठे दये = भेज दिए, हते = थे, तसहया = तकलीफों के अर्थ में, कारी परी = कालिमा छा जाने के अर्थ में।

कैकेयी माता तुमने दोनों भाइयों को वन क्यों भेज दिया? माता सुमित्रा एवं कौशिल्या जी के यह इकलौते बेटे ही तो थे, फिर सीता जी को भी साथ में भेज दिया है। जबकि वन में कठिन मुश्किलें हैं, परेशानियाँ हैं। इस कारण अयोध्या में कालिमा सी फैल गई है, अब कौन है जो इस कष्ट से उद्धार करे।

पूछै भरत बतादै माई,
काँ चए गए रघुराई।

काँ गई जनक सुता महरानी,
काँ गये लक्ष्मन भाई।
जा बसती रमनीक लगत ती,
अब ना मोय सुहाई।
जा जलनी जननी भइ बैरिन,
कपटन कुटिल कहाई।
काँ गए अबध नरेश 'ईसुरी',
अबध में सूनी छाई।

बतादै = बतला दे, काँ = कहाँ, चए गए = चले गये, बसती = नगरी, मोय = मुझे, जलनी = ईर्ष्यालु, कहाई = कहलाई।

भरत ननिहाल से लौटते हैं। श्रीराम वन को जा चुके हैं। तब गमगीन वातावरण को देखकर भरत पूछ रहे हैं– माँ! मुझे बतला दो कि श्री रामचन्द्र कहाँ चले गए हैं? कहाँ मेरी पूज्य भाभीजी अर्थात् महारानी जी गई हैं, श्री लक्ष्मण भैया भी नहीं दिखते वे कहाँ गए हैं? नगरी कितनी रमणीक लगती थी, क्या कुछ ऐसा हो गया जो अब यह नगरी मुझे तनिक भी नहीं सुहा रही है। यह ईर्ष्यालु माँ ही मेरी शत्रु बन गई। जो कपटी कुटिल कही जाती है। ईसुरी कहते हैं– अवधपति कहाँ गए? आज अवध में निपट सूनापन ही व्याप्त है।

माया रूप मिरग ना जानौं,
राम धनुष सन्धानौं।
ज्यों–ज्यों बड़त जात आँगे खाँ,
त्यों–त्यों होत रबानौं।
कउँ–कउँ छिपत अलोप होत है,
कउँ कों जात दिखानौं।
'ईसुर' जानौ दूर गऔ जब,
देखत देय बिलानौं।

मिरग = मृग, संधानौं = साधो, सन्धान करो, रबानौं = जाता है, कउँ–कउँ = कहीं–कहीं, अलोप = अदृश्य, कउँ कों = कहीं को, जात = जाता हुआ, देय = दिया, बिलानौं = अदृश्य हो गया के अर्थ में।

पंचवटी में सीता जी ने मायावी मृग को देखकर कहा– इसे मायावी न समझो यह मृग है। हे नाथ! धनुष संधान कीजिएगा। राम के धनुष बाण संभालते ही ज्यों–ज्यों राम आगे बढ़ते थे

त्यों-त्यों वह और तेजी से भागता चला गया। कहीं-कहीं वह छिप जाता था। कहीं अदृश्य हो जाता था, कहीं का कहीं दिखाई पड़ता था। ईसुरी कहते हैं- वह बहुत दूर निकल गया, देखते ही देखते वह अदृश्य हो गया।

पीतन परै सिया को हरबौ,
तुम राउन ना गरबौ।
तैने चाब जगत माता खों,
पापन नियत नजरबौ।
ऊ नारी संग नारायन हैं,
सागर पार उतरबौ।
मइँ देखो जै है कुलघाती,
तेब मारबौ मरबौ।
बे सुन आये खुदइँ 'ईसुरी,'
राज विभीषन करबौ।

पीतन = मँहगे, मुश्किल के अर्थ में, परै = पड़ेगा, हरबौ = हरण करना, गरबौ = इतराओ, चाब = चाहा, ऊ = उस, खुदइँ = स्वयं ही।

रावण तू इतरा मत। सीताजी का हरण करना बहुत ही मँहगा पड़ेगा। तूने जगत जननी को पाप की दृष्टि से देखने की कुचेष्टा की है? लेकिन वह साधारण स्त्री नहीं। उसके साथ स्वयं नारायण हैं, जिनके कारण भवसागर पार होता है अब वे ही देखेंगे तेरे जैसे कुलघाती को मारना या मरना। स्वयं सुनकर आए कि लंका का राज्य अब विभीषण करेंगे अर्थात् तेरा अन्त सुनिश्चित हो गया है।

चोरी ल्याए जानकी जिनकी,
खबर करौ बादिन की।
गाड़ौ ढील लंक दरवाजैं,
धुजा रोप दइ रनकी।
तुम हौ उनखों कूरा-करकट,
बे हैं झार अगन की।
बेद-बिचार गरब ना राखौ,

लक्ष्मन टेक परन की।
परों के रोज तुमाइ फिर है,
सबरी लंका भिनकी।
'ईसुर' कउँ लैन ना जानैं,
मौत सीस पै ठनकी।

ल्याए = लाए, बादिन की = उस दिन की, गाड़ौ = गाड़ी, ढील = खोलकर, धुजा = ध्वजा, रोप दई = स्थापित कर दी, रनकी = रण हेतु, उनखों = उनके लिए, कूरा-करकट = खरपतवार, झार अगन की= अग्नि की लपटें, ज्वालाएँ, टेक परन की = टेक पड़ जाने की, परों के रोज = भविष्य में, सबरी= पूरी, भिनकी = बिगड़ी हुई /नष्ट हो चुकी हुई, ठनकी = अलार्म बजाने के अर्थ में।

रावण की पत्नी अपने पतिदेव से कह रही हैं कि प्राणनाथ! उस दिन की याद कीजिए जिस दिन वे आयेंगे। जिनकी सीता को आप चोरी से ले आए हैं। लंका के द्वार पर अपना रथ खड़ी करेंगे। अब युद्ध की ध्वजा स्थापित हो गई है। लेकिन वे सर्वशक्तिमान हैं मानो धधकती हुई ज्वाला है, और आप उनके समक्ष खरपतवार के समान हैं। शास्त्र विचार अनुसार घमण्ड को त्यागें, लक्ष्मण जैसे वीर से तुम्हारा वास्ता पड़ेगा। भविष्य में वह दिन दूर न समझिए, जब आपकी यह लंका बिगड़ी हुई लगेगी। नष्ट हो जायेगी। ईसुरी कहते हैं- मौत खरीदने न जाना पड़ेगा, उसने तो आपके सिर पर मानो अलार्म ही बजा दिया है।

सुनकें हनुमान की हूकैं,
राउन के मौं सूकैं।
उचट लंगूर कंगूरन चढ़ गए,
चरन सिया के छूकैं।
कोटन अगन-पबन भइ ठाँड़ी,
लंकै उठै भभूकैं।
'ईसुर' कात होत जौई जानैं,
राज बिभीषन जूकैं।

हूँकैं = हुँकारे, मौं = मुँह, सूकैं = सूखता है, उचट = उछलना, लँगूर = बन्दर, कंगूरन = कँगूरों पर, छूकैं = स्पर्श करके, कोटन = कोट अर्थात् परकोटा का बहुवचन एवं करोड़ों भी, ठाँड़ी = खड़ी, भभूकै = धधकने के अर्थ में।

वीर हनुमान की हुँकारों को सुनकर रावण का गला सूख चला है। वानर समूह सीता जी के चरण स्पर्श करके उछल-उछलकर कँगूरों पर जा पहुँचा है। कोट परकोटों पर कोटि-कोटि

अग्नि और पवन सजग उपस्थित हैं। लंका उसे देखकर मन ही मन दहशत खा रही है। ईसुरी कहते हैं- यही जान पड़ता है कि लंका के राजा अब श्री विभीषण जी होने वाले हैं।

लू कैं आऔ एक लंगूरा,
पटकत बीर कंगूरा।
देखत रये सुभट सब ठाँड़ें,
तिने लगा दऔ धूरा।
राग विधवन्स भइ रजधानी,
जितने जुरत जहूरा।
'ईसुर' बारिद बांद करौ जब,
बालि पराक्रम पूरा।

लू कैं = अग्नि से लहकता हुआ के अर्थ में, ठाँड़े = खड़े हुए, तिनें= उन्हें भी, धूरा = धूल, जहूरा = औज-पौज के अर्थ में।

लंका के लोगों में चर्चा हो रही है। जलता हुआ एक वानर आया वह बहादुर ऊँचे-ऊँचे कंगूरों को गिरा रहा है। बड़े-बड़े सुभट सब खड़े देखते रह गए, उन्हें भी वह धूल चटा रहा है। राजधानी लंका पर विध्वंस राग गूँज रहा है, सभी ओर-एकत्र होकर फौज भौंचक सी देख रही है। ऐसा लगता है बारिश को बाँध दिया गया है, बालि जैसा पराक्रम ही पूरा प्रतीत होता है। कहते हैं बालि ने रावण को छह माह तक अपनी काँख में दबाये रखा था।

राउन राम न मोंसै बाँचे,
अभिमानन के साँचे।
जिनके जियत जिमी के ऊपर,
नजरत ककरा नाचे।
जाँ रामा को जोग जुरत तौ,
बे दसकत ना खाँचे।
शूर-बीर के साथ हमें जिन,
नईं ईरखा काँचे।
'ईसुर' और देव नइ ध्यायें,
सेवा खों शिव साँचे।

राउन = रावण, मौं सै = मुख से, साँचे = साँचे में ढला है, जिमी = भूमि पर, नजरत = देखते ही, ककरा नाचें = कण-कण नाचता था, जाँ = जहाँ पर भी, जोग = योग, जुरत = बैठता के अर्थ में, दसकत= हस्ताक्षर अर्थात् स्वीकृति के अर्थ में, खाँचे = खींचे अर्थात् बनाए, ईरखा = ईर्ष्या-द्वेष, काँचे = कच्चे।

राम-रावण के वैचारिक मतभेद का विश्लेषण इस रचना में ईसुरी ने किया है। रावण शैव है, राम वैष्णव। उस युग में शैव और वैष्णवों की दूरी एवं तनाव ही युद्ध का प्रमुख कारण था। अतः ईसुरी ने लिखा कि- राम अर्थात् विष्णु का नाम रावण मुख से नहीं लेता राम का नाम लेने में उसे बहुत बुरा लगता था। क्योंकि वह अभिमान के साँचे में ढला हुआ था। जहाँ राम का नाम होता, वहाँ हस्ताक्षर भी नहीं करता था अर्थात् मान्यता नहीं देता था। वह बेशक पराक्रमी शूरवीर था, लेकिन ईर्ष्याद्वेष से भरा हुआ था। वह किसी अन्य देवता की आराधना नहीं करता था। वह केवल शिव की सेवा करता था।

लंका मोरे जियत न पाहैं,
रघुवर लड़बे आहैं।
मोरे कहिये बड़-बड़ जोधा,
मार-मार कै खाहैं।
मेघनाद सौं बेटा कहिये,
कुम्भ करन भ्राता है।
ईसुर जुद्ध जुरै पै तुरतइँ,
लंक बिभीसन पाहैं।

पाहैं = पायेंगे, लड़बे = युद्ध हेतु, जुरै पै = ठान जो पाये, तुरत = शीघ्र ही, बिभीसन = विभीषण।

रावण कहता है- राम यहाँ जब युद्ध हेतु आयेंगे तो मेरे जीते जी लंका को प्राप्त न कर सकेंगे। मेरे पास योद्धाओं की कमी नहीं है। मेरी सेवा में बड़े-बड़े योद्धा हैं वे तो मार-मारकर इन्हें खा जायेंगे। मेरा पुत्र मेघनाद और भाई कुम्भकरण है। किस-किस का उल्लेख किया जाए? ईसुरी कहते हैं- युद्ध होने पर उसका परिणाम शीघ्र मिल जायेगा। लंका विभीषण की हो जायेगी।

बाजन लगे जुझाऊ बाजे,
राउन रन खों साजे।
सूरन खों समजारये संग में,
सुख में खाये खाजे।

नौन की चाल-चालना दइयो,
काल शीश पै गाजे।
लरे न कबउँ मोरचा खा गए,
असुरन नै सर माँजे।
भूप भुअन सै गमने 'ईसुर',
गिर गए शरब गराजे।

बाजन = बजने के अर्थ में, जुझाऊ = युद्ध के, रन खों = रण को, साजे = सजाए हुए हैं, नौन = नमक, चालना = छानकर अलग करना।

रावण ने रण का साज सजा लिया है। रण के जुझारू बाजे बजने लगे हैं। साथ ही वह अपने योद्धाओं को निर्देश दे रहा है कि अब तक सुख से माल छानते रहे हो। नमक खाया है तो उसकी चाल मत तज देना। भले ही सिर पर काल आकर गरज पड़े। लेकिन वे पड़े-पड़े माल छानने वाले निशाचर इसके पूर्व लड़े न थे, अतः मात खा गए, अब राक्षसों ने अपने सिर भींच लिए। भवनों से निकलते ही युद्ध की गर्जना के कारण कई स्त्रियों के गर्भ तक गिर गए।

राउन बीस भुजा दस सिरके,
डील डौल महँ गिर के।
समय चले जब शेष हने हैं,
दिग पालन के खिरके।
बाजे आए अनेकन रंग के,
लंकै अमर असुर के।
दिखा-दाव भए ऐंगर-ऐंगर,
जब दोई दल हिरके।
गरजैं दै दै ताल 'ईसुरी',
दल राउन रघुबर के।

डील-डौल = शारीरिक बनावट, महँ = में, गिर के = पर्वत जैसे, हने = प्रहार किए, लंकै = लंका में, ऐंगर = निकट, हिरके = आमने-सामने।

बीस भुजा एवं दस शीश वाले रावण की शारीरिक संरचना पर्वत सी विशाल थी। समय पड़ने पर जब उसने शस्त्रों से प्रहार किये तब दिग्पालों के द्वार हिल गए। अनेक प्रकार के तो युद्ध में उसने बाजे लगा दिये। अमर कहे जाने वाले निशाचर राज के यहाँ न जाने कितने योद्धा थे। जो

अपने अपने दाव दिखाने के लिये आतुर थे। दोनों दल आमने-सामने, आस-पास आए, तब ताल ठोक-ठोककर राम और रावण के दल गरजने लगे।

रोबै लच्छमन खों रघुराई,
बिपत कटाबन भाई।
मेघनाद ने ऐसी हन दइ,
तन गइ सकत समाई।
भये आसकत मूरछा छाई,
लोथ धरन में पाई।
सब कोउ कैहै नार के पाछै,
भइया बसत गमाई।
'ईसुर' लौट अजुध्या जैबी,
करबी कौन बड़ाई।

बिपत कटाबन = आपत्ति नष्ट कर्ता, हन दई = प्रहार किया, सकत = शक्ति, आसकत = अशक्त, लोथ = मूर्छित शरीर के अर्थ में, बसत = वस्तु, जैबी = जायेंगे, करनी = करेगा।

लक्ष्मण को मेघनाद के द्वारा शक्ति लग गई और श्री लक्ष्मण जी मूर्छित पड़े हुए हैं। विपत्ति काटने वाले भाई रघुवर श्री लक्ष्मण के लिए रो रहे हैं। मेघनाद ने ऐसा प्रहार किया है कि शरीर में शक्ति समा चुकी है। मूर्छित काया मृतवत् धरती पर पड़ी हुई है। सब कोई यही कहेगा कि स्त्री के पीछे भाई जैसी वस्तु खो दी। जब लौटकर अयोध्या जाऊँगा तो कौन मेरी प्रशंसा करेगा? अर्थात् मैं अभागा निन्दा का पात्र बनूँगा।

सरखों चली सुलोचन रानी,
तज राउन रजधानी।
जैसै बिना जीब बौ देइया,
नहीं डरी बिन पानी।
जैसे बिना पुरुष की तिरिया,
नाहक है जिन्दगानी।
राम दलन में पौंची 'ईसुर',
पूरन कर दइ बानी।

सरखों = सती होने हेतु, बौ = वह, देइया = देह, डरी = डरना, दलन = दल-समूह के अर्थ में, पूरन = पूर्ण।

मेघनाद वध हो जाने पर - रावण की राजधानी तजकर रानी सुलोचना सती होने हेतु आती हैं। जैसे बगैर प्राण के उसका यह शरीर है, पानी बगैर नदी का क्या महत्व? वैसे ही पुरुष के बगैर स्त्री की भी जिन्दगी व्यर्थ है। अत: श्रीराम के दल में (जहाँ मेघनाद का शव पड़ा था) वह पहुँची और अपने कथन को जाकर साकार किया अर्थात् पति के लिए अपने भी प्राण त्याग दिये।

रामा जो बनखों ना जाते,
गुनी कौन गुन गाते।
मरते नई असुर लंका के,
सिया ना लंक पठाते।
हनुमत से बल जोधा जग में,
कैसै बली कहाते।
'ईसुर' सन्त मुनी रिस आदिक,
कैसे कै सुख पाते।

गुनी = गुणीजन, पठाते = भेजते, रिस = ऋषि।

यदि श्रीराम वनगमन न करते तो गुणीजनों का गुणगान कौन करता? यदि सीता जी लंका न भेजी गई होती तो लंका के इतने निशाचरों का वध भी न होता। हनुमान जी सरीखे शक्तिशाली योद्धा संसार में बली (बजरंगबली) कैसे कहे जाते? सन्त, मुनि, ऋषि आदि कैसे भला सुखी होते।

बन बन व्याकुल फिरत ईसुरी,
राधा भई फकीरन।

भक्ति खण्ड - तीन

राधा–कृष्ण विषयक

जिनकौ बजत हुकुम को बाजा,
कान्ह रीत में आजा।
हमखों जान देव दध बेंचन,
मग रोकन नइँ साजा।
करौं फिराद जावगे पकरे,
रोके से गम खाजा।
जानत नइँ वृषभान कुँअर खों।
जिसकी सकल समाजा।
चौरासी ब्रज कोस 'ईसुरी',
हियाँ राधका राजा।

जिनकौ = जिनका, हमखों = मुझे, जान देव = जाने दो, फिराद = विनय, गम खाजा = मान जा, हियाँ = यहाँ पर।

कान्हा! कुछ नियम को समझो। कानून मत तोड़ो, जिनके हुक्म का यहाँ बाजा बजता है उनके कुछ नियम है। मुझे दही बेचने हेतु जाने दो। राह में रोकना सही नहीं है। यदि फरियाद अर्थात् विनय कर दूँगी तो पकड़े जाओगे। अतः यह वर्जित है, रूक जाओ। तुम श्री वृषभानु कुँवर जी को शायद जानते नहीं हो, जिनकी हम प्रजा हैं। ब्रज के चौरासी कोस तक यहाँ राधिका जी का ही राज्य चलता है।

मो बल रात राधकाजी कौ,

करें आसरौ की कौ।
दीनदयाल दूर दुख मेलत,
जिनकौ मुख है नीकौ।
पैले पार पातकी कर दये,
मोहन सौ पति जी कौ।
कैसौ लगत खात सब कोउ,
स्वाद कात ना घीकौ।
'ईसुर' कछू काम की जानौ,
कदमन के ढिंग झींकौ।

मोय = मुझको, आसरौ = आश्रय, की कौ = किसका, मेलत = छोड़ता है, पैले पार = उस पार, पातकी = पापी, जी कौ = जिसका, ढिंग = निकट, झींकौ = खींच लो।

मुझे श्री राधिका जी का ही बल प्राप्त है और भला मैं अन्य किसका आश्रय पकडूँ? वे दोनों पर दया करने वाली हैं उनके मुख की छवि सुन्दर है, उसे देखकर दुख दूर भाग जाते हैं। पापियों को सागर पार कराने वाले मोहन जैसे उनके पति हैं। उनकी महिमा अकथनीय है, जो समझे सो जाने। खाते सभी कोई हैं लेकिन घी का स्वाद कैसा है, सबको यह बता पाना कठिन है। ईसुरी कहते हैं- किसी कार्य की सेवा के लिए मुझे तो आप अपने चरणों में ले लीजिए।

जो कोउ गुन गाय राधा कौ,
जनम सुफल है ताकौ।
ऐसी नौनी नाब लाड़ली,
लेतन लगे मजा कौ।
ऐसौ नौनों गौनौ कर दव।
अजामील गनका कौ।
जेइ मजन सें पाप 'ईसुरी',
कटै कोट बाधा कौ।

ताकौ = उसका, नौनो = सुन्दर, मजा कौ = आनन्दपूर्ण, गौनौ = विदा।

जो भी श्री राधा जी का गुण गायेगा उसका जन्म सफल हो जायेगा। इतना सुन्दर नाम लाड़ली जिसके उच्चारण में ही आनन्द प्राप्त हो जाता है। अजामिल और गणिका जैसी पातकियों को कितने सुन्दर बैकुण्ठ के लिए उन्होंने गौने जैसी विदा कर दी है। उनके ही भजन से करोड़ों

पाप कट जाते हैं, बाधाएँ समाप्त हो जाती हैं।

नये नग निरखत चम्पकली के,
श्री वृषभान लली के।
जौ हो कड़ै चन्द से छुटकैं,
मिटतइ तिमिर गली के।
रतन अमोल लगे हीरामन,
गरदन बीच गली के।
हैं ना और काउके ऐसे,
बिरजन और अली के।
'ईसुर' मन हर लेत राधका,
मोहन छैल-छली के।

नग = रत्न, चम्पकली = चम्पाफूल की कलिका, जौहो = जहाँ से होकर, कड़ै = निकले, छैल = रसिक प्रिय, छली = छलने वाला।

श्री वृषभान लली चम्पाकली सी सुवासित हैं, जिनके आभूषणों में जड़े सभी नए रत्न चमक रहे हैं। जहाँ से होकरके निकलती हैं, सब दूर चन्द्रमा छिटक जाते हैं जिससे गलियारों तक में अंधकार समाप्त हो जाता है। अमूल्य रत्न हीरे और मणियों से जड़े सुन्दर हार उसके गले में शोभायमान हैं। ब्रज में ऐसे आभूषण अन्य किसी सखि के भी नहीं हैं। वह सहज ही मोहन जैसे रसिक छलिया का मन हरण कर रही है।

लटकन लगे लाड़ले लौना,
झूमत गाल तरौना।
बीदिन बिरी-बिदी बीरन की,
बंगाले के टौना।
लूमन लगीं साँकरैं लामीं,
देवै मदन टिकौना।
भवसागर नट नागर 'ईसुर',

नागर नगर निरौना।

लौना = बारीक घुँघरुओं के झुमके, तरौना = तक, बीदिन = फन्दे के अर्थ में, बिरी = बात, बिदी = फँसी, टोना = जादू, लूमन = डुलने के अर्थ में, साँकरैं = जंजीरें, लामी = लम्बी, टिकोना= टिकने का स्थान।

राधा के श्रृँगार का वर्णन है। राधा के कर्णफूल की लटकनें उसके गालों का नीचे तक झूमकर स्पर्श कर रही हैं। ऐसी स्थिति में यह घुँघरूदार लटकने झुमके बड़े सुन्दर लग रहे हैं। इनका असर बंगाल के जादू के समान है। मन को वह फन्दे में फँसाकर वीरों तक को मोहित करने में सक्षम है। झुमके में लगी साँकलें लम्बी-लम्बी डोलायमान हैं, जो कामदेव के टिक जाने की उत्तम जगह स्वयं हैं। ईसुरी कहते हैं- भवसागर में इन नटनागर यानी श्रीकृष्ण का सुंदर नगर निराला है, तभी तो कहा गया है तीन लोक में राधा न्यारी है।

कानन डुलैं राधका जी के,
लगे तरकुला नीके।
आनन्द कन्द चन्द के ऊपर,
दो तारा गन झींकै।
परतन पसर - परत गालन पै,
तरैं झूमका तीके।
जिनके घरसें जौ पैराऔ,
और जनन नैं सींके।
श्याम समेत 'ईसुरी' देखत,
बृजवासी बसती के।

कानन = कानों में, तरकुला = कान का आभूषण, परतन = पड़ते ही, पसर = फैलने के अर्थ में, परत = पड़ते हैं, तरैं = नीचे, तीके = जिनके, पैराऔ = पहनावा, और जनन = अन्य लोगों, समेत = सहित, बसती = नगर।

यह तरकुला (कान के आभूषण) श्री राधिका जी के कानों में डोलते हुए अति सुन्दर लग रहे हैं। आनन्दकंद मुखचन्द्र के ऊपर मानों दो तारागण उतर आये हों। इनके नीचे लटकने वाले झुमके गालों पर पड़ते ही पसर जाते हैं। इस फैशन का पहनावा अन्य लोगों ने इन्हीं के घर से सीखा है। श्याम सहित बस्ती के सभी ब्रज नागरिक इन्हें देखकर सुखी होते हैं।

लागै नख-शिख से तन नीकौ,
कुँअर राधका जी कौ।
केहर कट श्रीफल दाड़िम,
गत मराल गत सीकौ।
कंज-खंज, मृग-मीन धनुष सर,
उपबाहन भर फीकौ।
कुंभ, कूप, शुक, चूक ब्याल विधि,
विदरम बरनौ कीकौ।
'ईसुर' श्याम राधिका जूनै,
गिरधर कौ मन झीकौ।

केहरकट = सिंह सी कमर, गत = गति, सींकौ = सीखो, झींकौ = खींच लिया।

राधा का नखशिख श्रृँगार देखकर ईसुरी कहते हैं - कुँवर राधिका जी का तन नख से शिख अति सुन्दर है। सिंह सी कटि, श्रीफल से उरोज, हंस सी चाल सीखने योग्य है। नयनों में कमल, खंजन, मृग और मीन की चारों उपमाएँ एवं भृकुटि हेतु धनुषबाण आदि सभी उपमाएँ, प्रभावहीन अपूर्ण प्रतीत होती हैं। कुम्भ, कूप, शुक, व्याल चूकने की विधि आदि क्या- क्या वर्णन किया जाए? तात्पर्य यह कि राधाजी की सुन्दरता अनुपमेय है। ईसुरी कहते हैं- ऐसी राधिका जी ने गिरधर श्याम सलोने का मन अपने में खींच लिया है।

तुम खाँ बिध नै नीक बनायौ,
जनम साब घर पायौ।
बाधा हरन धन्य वह पंडित,
राधा नाम धरायौ।
धन्य वह धाय, धन्य वह नगरी,
जिनके बीच बसायौ।
धन्य वह पिता, धन्य वह माता,
जौन घरी जब जायौ।
गुन अरू रूप 'ईसुरी' बरनत,
मैं नाहीं कह पायौ।

तुमखाँ = तुमको, बिध = ब्रह्मा, नीक = सुन्दर, साब = बड़े आदमी के अर्थ में, घरी = समय।

आपको ब्रह्मा जी ने इतना सुन्दर बनाया है फिर एक बड़े घर में जन्म प्राप्त करना और भी महत्वपूर्ण है। आपका नाम बाधाओं को हरने वाला है, धन्य है वह पंडित जिसने यह नाम रखा। धन्य है वह धाम, धन्य है वह नगरी, जहाँ आप बस रही हैं। धन्य हैं वे पिता और माता भी। जिन्होंने राधा जैसी बेटी को जन्म दिया, वह घड़ी भी धन्य है। ईसुरी कहते हैं – आपके गुण एवं रूप स्वरूप का वर्णन करने में मैं स्वयं को अक्षम पाता हूँ।

आनन अजब लाड़ली जी कौ,
उनैं उनारौ की कौ।
चिपकत चोब चुबक चुम्बन पैं,
दाबत रूप कनी कौ।
दाड़िम मन्द होत मुसकातन,
चंद परत है फीकौ।
भिरकुटी भरबाँ रंग पै आई,
सज सर नैन अनीकौ।
श्याम समेत 'ईसुरी' देखत,
मन प्रसन्न सभी कौ।

उनारौ = उपमा दूँ, की कौ = किसकी, चोब = बिन्दु, चुबक = चिबुक, दाबत = दाबे हुए हैं, कनी = केन्द्र बिन्दु पैनेपन के अर्थ में, परत = पड़ता है, कीकौ = मलीन, भिरकुटि = भृकुटि, भरबाँ = कहने के अर्थ में, सर = तीर, अनी = अणि।

श्री लाड़ली जू अर्थात् राधा जी का मुख अनूठा सुन्दर है उसकी उपमा किस वस्तु से दी जाए? चिबुक स्थल पर एक तिल बिन्दु है चुम्बन स्थल पर भी रूप को दीप्ति देने वाली एक कणी यानी काला तिल है जिसकी मन्द मुस्कुराहट दाँतों से अनार के दानों सी द्युति बिखरती है। उसका आभास चन्द्र मलीन हो जाता है। भृकुटि के सम्बन्ध में कहूँ तो उसका अपना रंग है, पूरी भरी हुई है। नयनों में तीरों के समान पैनापन है। ईसुरी कहते हैं – श्याम सहित राधा को देखकर सभी के मन प्रसन्न होते हैं।

ऐसी को वृषभान सुता सी,
बात कात बृजवासी।
जब लग जात श्याम के ही सौं,

शीतल करन सुधा सी।
आनन्द दैन घूँगटा खोलन,
बोलन मुख सुख रासी।
लोचन किरपा करन दुख मोचन,
सोचन सोखन हाँसी।
'ईसुर' कीरत भरी भुवन में,
भइ फैरात धुजासी।

कत = कहते हैं, ही सों = हृदय से, खोलन = खुलना।

ब्रजवासी कहते हैं कि वृषभानु सुता के समान ऐसी कौन है? जब वह श्याम के हृदय से लग जाती है तो अमृत के समान शीतलता प्रदान करती है। उसके घूँघट का खुलना तो आनन्ददायक ही है तथा मुख के बोल मधुर स्वरों की विपुल राशि हैं। उसके नयन कृपा करने वाले दु:ख मोचन है। उसका सोचना, गम्भीर होना, हँसना सभी एक अलग प्रभाव छोड़ते हैं। ऐसी कीर्ति तीनों लोकों में नहीं है, जिसकी कीर्ति पताका सर्वत्र फहरा रही है।

राधा अलबेली कौ आनन,
तकै चन्द कौ कानन।
राखैं रहत चकोर चित्त मैं,
ज्यों चन्दा की मानन।
हँसी करन रस बस करबे खों,
मानौं रस की खानन।
भारत सौ पारत हेरन में,
पारथ कैसे बानन।
'ईसुर' कात श्याम नइ छोड़त,
जब सै लागौ जानन।

तकै = देखे, कौ = का, हँसी करन = विनोद करने को, खानन = खदानों के अर्थ में, भारत सौ = महाभारत सा, पारत = पड़ता है, जानन = जानने लगे।

अलबेली राधिका जी का मुख नन्दलाल देखते रहते हैं। मानो उसके हृदय में चकोर बस गई है, जो राधा के मुख को द्विगुणित करने में सक्षम है। वह आनन्द सबको अपने वश में करने

हेतु तत्पर है, मानो वह रस यानी आनंद की खदान है। उसकी दृष्टि महाभारत के समान उसके देखने में है। ईसुरी कहते हैं– जबसे इससे मर्म को समझा है, श्याम को बिसराया नहीं जाता।

बेटी भइँ वृषभान निरौना,
बृज को आय खिलौना।
लागत नजर इनै मोहन की,
दैबे करे ढिठौना।
गुनियाँ और नाबते आए,
कर कर हारे टोना।
करबे जोग इनइँ के 'ईसुर'
मोहन संग में गौना।

निरौना = नि + रोना अर्थात् जो रोनी न हो सलौनी के अर्थ में, आय = है, नजर = डीठ, दैबै करे = दिया करती है, दिठौना = डिठोना, गुनियाँ = झाड़ फूँक करने वाले गुणी, नाबते = टोना–टोटका करने वाले ओझा, टोना = जादू जैसा कुछ, करने जोग = करने योग्य, गौना = विदा।

वृषभानु जी की बेटी राधा सुघड़ सलौनी एवं ब्रज का मानो एक खिलौना है। इन्हें मनमोहन की डीठ लग जाया करती है। गोरे मुख पर कृष्णरूपी काला डिठौना देकर निकलती है। फिर भी झाड़फूँक एवं टोना–टोटका करने वाले आते हैं, जो टोना कर–करके हार मान लेते हैं। कोई लाभ नहीं हो पाता है, यह सब श्रीकृष्ण के डिठौना से होता है। यही श्रेयस्कर तथा उचित है कि अब तो मोहन के साथ ही इनकी गौने की विदा कर दी जाये।

जापै किरपा होय तुमारी,
अन्तस अधिक मुरारी।
गए असमान बान की ठोकर,
इन्द्र तखत में मारी।
लऔ उतार पील ऐरावत,
ऐसी चिट्ठी डारी।
बड़–बड़ सूर सरन में बैदे,
समर भूम ना हारी।
'ईसुर' भऔ न हौनै आँगै,

अर्जुन सौ धनुधारी।

असमान = आकाश, तखत = तख्त सिंहासन, पील ऐरावत = हाथी, सूर = शूर, सरन = तीर का बहुवचन, बैदे = भेदने के अर्थ में, भऔ = हुआ, आँगै = भविष्य में।

जिस पर तुम्हारी कृपा हो, वह आपके हृदय के समीप अधिक है आपकी शक्ति ऊपर चढ़कर बोलती है, तभी तो बाण के एक ही प्रहार में इन्द्र का सिंहासन आकाश में उड़ गया था। स्वर्ग से इन्द्र का ऐरावत हाथी धरती पर उतार लिया था। बड़े-बड़े शूरवीर इन तीरों की चपेट में आये थे। युद्ध भूमि में जिसने कभी भी हार नहीं मानी। आपकी कृपा का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि अर्जुन जैसे गाण्डीवधारी हैं, जो विश्व के श्रेष्ठतम धनुर्धर हैं।

अपने घर में कात सुदामा,
सोच करौ जिन भामा।
जिन दइ चौंच बेइ चुन दैहै,
जिन बक्सौ तन झामा।
ना प्रिय सोच हमै खैबै कौ,
ना रैबै को थामा।
राखौ खेत हेत अर्जुन के,
गिरौ आसुततथामा।
हे ईसुर, बेइ आयें 'ईसुर'
मिन्त हमाये श्यामा।

कात = कहता है, जिन = नहीं, जिन = जिसने, बेइ = वही, चुन = भोजन, तन झामा = तन ढँकने का कपड़ा, खैबै कौ = खाने का, रैबै को = रहने का, थामा = स्थान के अर्थ में।

अपने घर में गरीब सुदामा अपनी पत्नी से कहते हैं- हे भार्या! तुम चिन्ता न करो, जिसने चोंच दी है, वही दाने भी देगा। प्रिये! मुझे न खाने की चिन्ता है, न रहने के स्थान की। हमारी खेती तो वही प्रेम है। अर्जुन के लिए जो उन्होंने किया है, उसका परिणाम सबने देखा है। उनके सम्मुख अश्वत्थामा किस प्रकार गिरे थे? हे भगवान्! मेरे काम तो वही मेरे मित्र श्याम सलोने ही कर आयेंगे।

कइयो बृज के बनमाली सें,

उनकी घरबाली सें।
कैउ कंगाल गरीब जियत हैं,
छोल रूख छाली सें।
हमखों कुछ इंकार नहीं है,
लै चल खुशयाली सें।
हौ सो बासठ साल 'ईसुरी',
कठिन किहद साली सें।

घरवाली = पत्नी के अर्थ में, कैउ = अनेकों, छोल = छीलकर, रूख = वृक्ष, छाली = पेड़ों की छाल।

ब्रज के वनमाली यानी श्रीकृष्ण और उनकी श्रीमती जी यानी राधिका जी से भी कह देना, यहाँ ब्रज में अनेकों गरीब एवं कंगाल लोग वृक्षों की छाल छीलकर जी रहे हैं। यह भी उन्हीं की कृपा है। इससे मुझे कोई इन्कार नहीं है। वही खुशी की ओर ले जाने वाले हैं। मैं बासठ वर्ष का हो गया हूँ। बहुत कठिन भुखमरी को वर्षों भोगा है। प्राकृतिक आपदाओं की साक्ष-प्रस्तुत है। हे प्रभु! यही एक बात मन में कष्टदायक है। शीघ्र इसका निवारण करो।

बरसौ जामें बृज बै जाबै,
मेघन इन्द्र सुनाबै।
सात दिना औ सात रात लौ,
बूँदा गम ना खाबै।
ब्रज बासिन के घर आँगन में,
जल जमना कौ धाबै।
लऔ उठा गोबरधन नखपै,
छैल छत्र सौ छाबै।
कैसे मारे मरत 'ईसुरी',
जिनखौं राम बचाबै।

बै जाबै = वह जाए, गम ना खाबै = रूके नहीं, नखपै = नाखून पर।

एक बार इन्द्र ने ब्रज पर कोप किया। मेघों से कहा– ब्रज पर इतना बरसो कि ब्रज बह जाए, सात दिन और सात रात तक पानी की एक बूँद तक रूकना नहीं चाहिए, सतत झड़ी लगी रहे। ब्रजवासियों के घर-आँगन में जमुना जल पहुँच जाए। लेकिन कृष्ण भगवान् ने अपनी

अँगुली के एक नाखून पर गोवर्धन पर्वत उठाकर ब्रज पर छाता सा बना दिया। ईसुरी कहते हैं – जिसे प्रभु बचाता है, उसे कोई मार नहीं सकता है।

की के चरन जु ऐसे नीके,
करता रच राधा जी के।
मानिक प्रभा महावर शोभा,
कुसुम रंग लागत फीके।
झलकत है अरूनाइ छटा सी,
बिना लगै पग मैंदी के।
कोमल छटा समता न दाबै,
सती रती नस – नस चीके।
कैधो रतन जड़ित नूपुर पग,
दैन लगे बड़ सुख तीके।
कंज कमल उनहार 'ईसुरी',
खिले रात सागर ही के।

कीके = किसके, करता = ब्रह्मा के अर्थ में, फीके = मलीन, मैंदी = मेंहदी, उनहार = उपमा देने के अर्थ में।

ब्रह्मा जी ने श्री राधा जी के जितने सुन्दर चरण रचे हैं वैसे और किसी के नहीं हैं? महावर में माणिक की प्रभा है, उनके आगे कोमल कुसुम भी फीके पड़ते हैं, पैर में मेंहदी लगाये बगैर छटा बिखर आती है। सुकमारिता और कोमलता की छटा की समता नहीं की जा सकती। नस नस में जो चीख (पीड़ा) उठती है, उसे सहती रहती है (पैर धरती पर रखना कठिन है) उनके पग के नूपुर रत्नों से मंडित है जिसे देखने का सुख बढ़-चढ़कर है। ईसुरी कहते हैं- राधा रूपी कंज – कमल हृदय रूपी सागर में सदैव खिले ही रहते हैं।

हमसें राधा की सिबकाई,
ऐसी काँ बन पाई।
ना कबहूँ हम करी खुशामद,
चरन कमल चितलाई।

पिरन कर पाप करत रए, हो गव,
काँ कौ पुन्न सहाई।
परत लाड़ली 'ईसुर' जासें,
सिर पै गाज बचाई।

सिबकाई = सेवाभाव, खुशामद = सेवा, पिरनकर = प्रण करके, काकौ = कहाँ तक, गाज = बिजली तड़ित।

मुझसे श्री राधा जी का सेवा भाव कुछ ऐसा बन पड़ा कि क्या कहूँ? न कभी मैंने सेवा पूजा की न चरणों में ध्यान ही लगाया। प्राण प्रण से पाप करते ही समय व्यतीत किया फिर न जाने यह कहाँ से कौन सा पुण्योदय हो गया। यह कौन सा पुण्य अपने आप सहायक बन गया। लाड़ली जी के चरणों में शरण लेते ही सिर पर गिरती हुई बिजली तक से रक्षा हो गई।

सूरज उयें दूसरे तिनकें,
भईं राधका जिनकें।
हरि की संगत घरी महूरत,
कईं ज्योतसिन चिनकें।
जनम पत्र में गिरा लगा दये,
व्याकरनिन नै गिनकें।
शोभा फिरन बिसूरत परगए,
मूरत में शशि इनकें।
बरने 'ईसुर' सारद दइना,
इतनी बुद्ध कबिन के।

उयें = उदय होने के अर्थ में, तिनकें = जिन लोगों के, घरी = घड़ी समय, चिनकें = चुनकर के, गिरा = ग्रह, दईना = नहीं दी।

जिनके घर श्री राधिका जी हुई हैं, उनके घर कोई दूसरा ही सूर्य उदित हुआ होगा। यह हरि का सत्संग, घड़ी मुहूर्त, अनेक ज्योतिषियों ने शोधकर निकाला होगा। जन्म कुण्डली में गृह नक्षत्र भी वैयाकरणिकों ने गिन-गिनकर रखे होंगे। चिप शोभा बिखरती है, क्योंकि इस मूर्ति में तो स्वयं चन्द्रमा पड़ गया है। सरस्वती जी ने इतनी बुद्धि और विवेक कवियों तक को नहीं दिया है, जितना इन्हें सहज प्राप्त है।

सुख की दैन राधिका रानी,
मोरे दिरग समानी।
प्रात काल छब पाई नइ है,
उन झाँकी लै जानी।
अरुन नयन अम्भोग कहैं दुइ,
उठयाई अलसानी।
जा जमुहाइ लुनाइ लैआई,
तइ पै हैं ऐंड़ानी।
भाग 'ईसुरी' मिलीं भोर पै,
सापरतीत भुमानी।

दिरग = आँखों में, छब = छवि, अम्भोग = अछूते, उठयाई = सोकर उठ आई है, जमुहाई= जम्हाई लेने के अर्थ में, लुनाइ = लावण्य, तई पै = तिस पर भी, ऐंड़ानी = गुमान भरी, सापरतीत = साक्षात्।

सुख देने वाली महारानी श्री राधिका जी मेरे नयनों में समाई हुई हैं प्रात:काल उनकी छवि नई पाई जाती है। जो यह झाँकी देखते हैं, उस समय उनके नयन अलसाए हुए कुछ लालिमा लिए अछूते से दिखाई देते हैं। जब वे अलसाती हुईं उठकर आती हैं तब उनकी जम्हाई लावण्य युक्त होती है। उस पर जब वे अंगड़ाई लेती हैं तब उनके सौन्दर्य का क्या कहना? ईसुरी कहते हैं- अहो भाग्य है जो सुबह साक्षात् भवानी- ईश्वरीय सौन्दर्य के दर्शन मिल गए।

तुरतइँ हरी प्रान की बाधा,
नाम तुमारौ राधा।
ओमकार सुन रक्षा कीनी,
धरा अगिन में धाधा।
छाती तर पै लऔ दयाकर,
दरस देख कें जाधा।
गिरत पुकारैं टेर 'ईसुरी',
राधा, राधा, राधा।

तुरतइँ = तत्काल ही, तरपै = तरफ/और, जाधा = ज्यादा के अर्थ में।

जिसने तत्काल मेरे प्राणों की बाधा का हरण कर लिया, जिसका नाम ही राधा है। ओंकार

शब्द सुनते ही रक्षा की, जबकि यह पृथ्वी अग्नि में धूँ-धूँकर जल रही थी। मुझे माँ की भाँति दया करके छाती से लगा लिया। उनके दर्शन पाकर कुछ अधिक ही सुख प्राप्त हुआ। ईसुरी कहते हैं- मैं पतित, गिरते ही टेर लगाकर पुकार उठा हूँ - श्री राधा - श्री राधा - श्री राधा.......... रक्षा करो।

ऐसी राधा की सिबकाई,
मोसे कौं बन आई।
उनखों ध्यान लगाके हमनै,
एक दिना ना ध्याई।
ना करनी ऐसी कछु कीनी,
चरन पाय चितलाई।
'ईसुर' करी खुशामद होती,
जग में जस हो जाई।

सिबकाई = सेवा भाव, मोसे = मुझसे, काँ = कहाँ, चितलाई = चित्त लगाकर।

श्री राधा जी की ऐसी सेवा पूजा मुझसे कहाँ सम्भव थी? उनको ध्यान लगाकर मैंने एक दिन भी तो नहीं पुकारा। न ही ऐसी कोई करनी मैंने की है कि चित्त लगाकर उनके चरण प्राप्त किए हों। यदि ऐसी सेवा भावना से तनिक भी पूजा कर ली गई होती तो जगत् में यश कीर्ति सहज प्राप्त कर लेता।

ब्रज में कौन पुराँ तुम रातीं,
हमखों नई बतातीं।
हिल-मिलके जमना जू चलिये,
जहाँ सखीं सब जातीं।
नन्द गाँव में भवन हमारौ,
हर घर-घर फिरयातीं।
अब पैंचान भई जा 'ईसुर',
तुम मो जी से चातीं।

पुराँ = मुहल्ले में, रातीं = रहती हो, फिरयाती = घूमकर आ जाते हैं, पैंचान = पहचान, जी से = प्राणों से।

आप ब्रज के किस मुहल्ले में निवास करती हैं, यह मुझे नहीं बता रही हैं? राधा जी उत्तर देती हैं– पहले आप मेरे साथ हिलें–मिलें और यमुना तीर चलें, जहाँ मेरी तमाम सहेलियाँ भी पहुँचती हैं। फिर सुनें कि मेरा घर नन्दगाँव में हैं। जहाँ मैं प्रत्येक घर में घूमती–फिरती उपस्थित रहती हूँ। तब कृष्ण जी कहते हैं कि अब परिचय हो गया और मैंने जाना कि आप मुझे प्राणों से बढ़कर चाहती हैं।

छैला छलन चलौ नऔ काजर।
दयँ राधा ब्रज नागर।
मुतकी मोल बिकें मथुरा में,
कजरौटन के आगर।
श्री वृषभानु मन्दर में दीपक,
है सनेह कौ सागर।
कोयन भीतर रेखा गागइ,
परती दिखा उजागर,
कात 'ईसुरी' तुमलौ राबै,
प्रान हमारे हाजर।

छलन = छल करने को, नऔ = नवीन, काजर = काजल, दयें = लगाए हुए हैं, मुतकी = बहुत अधिक, मोल = भाव, कजरौटन = काजल की डिबियाँ, आगर = आगे बढ़कर के अर्थ में, कोयन = आँखों की पलक रेखाएँ, राबै = रहते हैं।

ब्रज नागरी राधा तुमने नयनों में जो काजल लगाया है, वह छल रहा है। मथुरा में ऐसे काजल की डिबियाँ बहुत सारी निकली हैं। श्री वृषभानु (लली) के भवन में जो दीपक है, वह स्नेह का समुद्र है। उस दीपक से बना काजल राधा ने लगाया है। आँख की पलकों सीमाओं पर उसकी रेखाएँ स्पष्ट दीख पड़ती हैं। ईसुरी कहते हैं – तुम्हारे पास मेरे प्राण सदैव सेवा में हाजिर हैं।

कैबौ कान राधका जू कौ,
का बिगरत काऊ कौ।
ब्रजवासी बन्देज करौ तुम,

अपनी गोप बधू कौ।
बेटी भईं वृषभानु कुँअर के,
है जौ लाल अनूकौ।
जब से जा अनरीत सुनी है,
बनौ रात मन सूकौ।
ऐसी साँसी कऔ न 'ईसुर',
साँसी कौ रंग – रूखौ।

कैबौ = कहना, कान = कान्हा, बन्देज = प्रतिबन्धित करने के अर्थ में, अनूकौ = अनूठे के अर्थ में, रात = रहता है, साँसी = सच।

कृष्ण राधिका जी कहने में किसी का क्या बिगड़ता है? हे ब्रजवासियों! अपनी गोप वधू यानी राधिका जी के लिये ब्रज में निवास करने का पूरा इन्तजाम कर लो। वे कृष्ण के साथ आ रही हैं। श्री वृषभानु कुँवर जी को पुत्री रत्न प्राप्त हुआ है। यह रत्न अनूठा है। जब से यह अनरीत अनहोनी सुनी है। तब से मन शुष्क रहता है। ईसुरी कहते हैं – लेकिन ऐसा सत्य भी मत कहो जिससे किसी का मन दुखे क्योंकि सच बोलने का रंग सदैव फीका ही रहता है।

चैती

पौछै पुचकारैं नन्द रनियाँ,
श्याम उठा लए जब कइयाँ।
थोड़ी देर मानजा लालन,
दध में डारैं मथनियाँ।
दौरे श्याम गए दुआरे लौ,
टेर रही हैं ग्वालिनियाँ।
लोटे धरन हात ना आबैं,
दिरगनन से डारैं पनियाँ।
ईसुर, हठ जा ठानी 'ईसुर',
छाँड़त नइयाँ काड़नियाँ।

पौछै = आँसू पोंछने के अर्थ में, पुचकारें = पुचकारकर दुलारना, कइयाँ = कनिया गोदी लेना, मथनियाँ = मथानी, दौरे = दौड़कर, जान = जाइये, दुआरे लौ = द्वार तक, ढेर = बुलाने के अर्थ में आवाज देना, ग्वालिनियाँ = गोपी के अर्थ में, लोटे धरन = धरती पर लोट जाना, हात ना आबैं = पकड़ने पर भी, पकड़ाई न देना, दिरगनन = आँखों से, छाँड़त = छोड़ते, काड़नियाँ = निकालने के अर्थ में।

बाल कृष्ण मक्खन हेतु मचल रहे हैं, रो रहे हैं, तब ईसुरी कहते हैं- नन्द जी की रानी अर्थात् यशोदा माँ आँसू पोंछती हैं, पुचकारकर दुलार करती हैं, घनश्याम को गोदी में जब उठा लेती हैं, और कहती हैं - तनिक देर उधर जाओ बेटे दही में मथनियाँ डालती ही हूँ अर्थात् बिलोकर मक्खन शीघ्र निकाल देती हैं। फिर बहाने से उन्हें बाहर भेजने के अभिप्राय से कहती हैं- दौड़कर द्वार तक जाओ न, वह गोपी तुम्हें बुला जो रही है। लेकिन वे धरती पर लोट-लोट जा रहे हैं पकड़ने पर भी पकड़ाई नहीं आते हैं, आँखों से अश्रुधार बह रही है। ऐसी हठ ठानी है कि अश्रु रूकते ही नहीं है। बाल हठ का अत्यन्त सुन्दर वर्णन है।

अपने वनमाली खाँ ताँसे,
कहौ जसौदा माँसे।
लै गव दूद - दही की दौनी,
आज हमारे नाँसे।
मैं तो बूँद-बूँद कै जोरौं,
ऐसौ आय कहाँ से।
नहीं डरात पराये घर में,
पैठौ जात खुलाँ से।
'ईसुर' छूट जात हातन से,
हाँडी नन्दलला सैं।

ताँसे = डपटें, दौनी = दोहकर रखा भरा पात्र, नाँसे = यहाँ से, जोरौं = एकत्र किया, डरात = डरता, पराये = दूसरों के, पैठौ = घुस जाने के अर्थ में, खुलाँ से = प्रकट ही, हाँडी = मिट्टी का पात्र जिसमें दूध दही रखते हैं।

चलकर माता यशोदा से कहें कि वे अपने बेटे वनमाली जी को डपट दें। मेरे घर से दोहने वाला पात्र जो दही से भरा था, ले भागा है। मैं तो मक्खन बूँद-बूँद करके एकत्र करती हूँ, ऐसे कहाँ से मिल पायेगा। वह तनिक भी नहीं डरता है, दूसरों के घर में प्रत्यक्ष ही घुसता चला जाता है, छिपकर नहीं जाता। वह छोटी वय का है उसके हाथ अभी छोटे हैं। अतः उसके हाथ से मक्खन भरी आरी मिट्टी की हाँडी छूट जाती है और फूट जाती है, दही मक्खन सब बिखर जाता है। कन्हैया दही मक्खन खाता कम है, नुकसान अधिक करता है।

आली मनमोहन के मारें,

जमना गैल बिसारैं।
जब देखौ तब खड़े कुंज में,
गहै कदम की डारैं।
जो कोउ भूल जात है रस्ता,
बरबस आन बिठारै।
जादाँ नइँ हँसी काहू सैं,
जाई रीत हमारैं।
'ईसुर' कौन चाल अब चलिये,
जेतौ पूरौ पारैं।

मारैं = वजह से, गहै = पकड़े, डारैं = शाखाएँ। रस्सा, बरबस = बेबस करके बलात् के अर्थ में, आन = आकर, जादाँ = अधिक, पूरौ पारे = पूरा पड़ जाए।

सखि! मनमोहन के कारण मैंने यमुना की राह भी छोड़ दी है, क्या करूँ? जब देखो तब कुँजों में कदम्ब की शाखा पकड़कर खड़ा ही तो रहता है। जो कोई पानी भरने की रस्सी कुएँ पर भूल जाता है तो वह उसे अपने पास रख लेता है और वश करके जबर्दस्ती घण्टों बैठाए रखता है, घर नहीं आने देता। किसी से हँसी दिल्लगी करने की रीति हमारे परिवार में नहीं है। ईसुरी कहते हैं– कहो अब हम कौन सी चाल चलें यानी क्या उपाय करें, जिससे मनमोहन से बच सकें।

जब से छौड़ौ जमना जाना,
मगै लगौ है काना।
जब देखौ तब खड़ौ कुँज में,
मोय फिरै पछियाना।
चर्चित चित्त विचित्र विथा से,
चाहै माल बिराना।
जुगतै जमा करत जोबन पै,
चाहत हाथ लगाना।
कात 'ईसुरी' दिल से चाहत,
बलमन खास खजाना।

काना = कान्हा, मोय = मुझे, फिरै = फिरता है, पछियाना = पीछा करता है, माल बिराना = दूसरे की

वस्तु, जुगतै = युक्ति से, जोबन पै = उरोज पर, खास खजाना = विशेष कोषागार।

सखि! जबसे मैंने यमुना का आना-जाना छोड़ा है, तब से देखती हूँ कि कान्हा और भी मदमत्त होने लगा है। जब देखो तब कुँजों में खड़ा रहता है, सर्वत्र मेरा पीछा करता है। इससे वह बहुचर्चित हो गया है, उसका चित्त स्वयं में विचित्र है, वह पराया माल उड़ाना चाहता है। इसके लिये वह अनेक युक्तियाँ करता है। मेरे उरोजों पर हाथ डालना चाहता है। ईसुरी कहते हैं - ये उरोज रूपी खजाना तो उसके पति के अधिकार क्षेत्र में है, फिर भी वह उसे दिल से चाहता है, यह अच्छी बात है।

जल खों कालिन्दी तट गइ री,
लैकै गागर नइ री।
जान अकेली छैल छली नै,
सैन सखन खौं दइ री।
मइया मेई तेय लाल नै,
आज लाज लैलइ री।
'ईसुर' रटत रात नित हर-हर,
ऐन रंग सै सइरी।

नई री = नवीन / झुकने के अर्थ में भी, जान = जानकर, छैल = रसिक, सैन = नेत्र संकेत, सखन खौं = सखाओं को, मेई = मेरी, तोय = तेरे, लै लई रे = ले ही ली, ऐन = खूब, सइरी = सहन की।

हे माँ यशोदा! मैं जल भरने यमुना तट गई थी, भरा हुआ नया घड़ा उठाने झुकी तो छैल को देखा। उसने भी अकेली जानकर अपने सखाओं को नयन संकेत दिया। हे माँ! फिर तो तेरे लाल ने वहाँ मेरी लाज लूट ली। ईसुरी कहते हैं- दिन रात कृष्ण-कृष्ण रटकर कृष्ण की रंगीन गतिविधियों का स्मरण करता रहता हूँ।

जसुदै दैन उरानौ जइये,
हाल लालकौ कइये।
हीरा हार बिचोली पैरी,
चोली फटी दिखइये।
कछुअक साँसी कछुअक झूँठी,

जुरै मिलैके कइये।
आठ घरी दिन रात 'ईसुरी',
कालौ कै गम खइये।

उरानौ = उलाहना, बिचौली = एक गहना, कछुअक = कुछ तो, साँसी = सच, जुरै मिलैके = जोड़ मिलाकर, गम खइये = धीरज रखने के अर्थ में।

सखि! चलो यशोदा माँ के पास चलकर उलाहना दें और उनके बेटे का हाल सुनाएँ। हम हीरा जटित हार एवं बिचौली पहिने थी। उस पर अपनी फटी हुई चोली उन्हें दिखायेंगी। कुछ तो सच कुछ झूठ जोड़-तोड़ कर कहेंगे, दिन-रात कोई कहाँ तक धीरज रखकर अनदेखा करे?

मइया तुम नाहक खिसयातीं,
इनके कयँ लग जातीं।
पानी मिला दूद में बैचें,
तासै गाड़ौ कातीं।
जे तो अपने सगे खसम खों,
साँसौ नई बतातीं।
'ईसुर' जे बृज की बृजनारी,
धजियन साँप बनाती।

नाहक = व्यर्थ, खिसयातीं = खीजती हैं, कय = कहने में, ताँसै = उससे, गाड़ौ = प्रगाढ़, सगे = खास, खसम = आदमी / पति।

हे माँ यशोदा! तुम तो व्यर्थ ही इनके कहने में आकर खीझ रही हो। इनका कोई चरित्र है? दूध में पानी पिलाकर बेचती हैं और उसी को प्रगाढ़ सही शुद्ध दूध बताती हैं। यह तो अपने सगे पति को भी सच नहीं बताती हैं। दूसरों की तो बात ही क्या? ये ब्रज की नारियाँ कपड़े का साँप बनाकर तमाशा खड़ा करना खूब जानती हैं।

बाड़ौ क्रोद जसोदा मइया,
लैकें उठीं सरइया।
बिन मारे हम ना छोड़ें,

तुम खाँ कुँअर कनइयाँ।
बारे के तुम मुरहा आऔ,
पूरे पजे तरइया।
'ईसुर' कात बना कै कै गए,
सूरदास से भइया।

बाड़ौ = बढ़ा, क्रोद = क्रोध, लैकें = लेकर, सरइया = संटी, बारे के = बचपन के, मुरहा = शरारती के अर्थ में, पजे = पैदा हुए, तरइया = अति शैतानी करने वाले के अर्थ में।

यशोदा माँ का क्रोध बढ़ गया। वह एक संटी लेकर बोली–कुँवर कन्हैया! मैं आज तुम्हारी पिटाई किए बगैर नहीं रहूँगी। मैं खूब जानती हूँ तुम बचपन से ही शरारती हो। ईसुरी कहते हैं– ऐसा लगता है कि मैंने यह रचना बनाकर सूर के समान कहा है।

विशेष :– यह रचना सूर द्वारा प्रदत्त वात्सल्य रस की एक अनूठी रचना बन पड़ी है। स्वयं ईसुरी भी उसे सूर के समानान्तर मानते हैं यह कहकर कि 'कै गए सूरदास से भइया।'

नैनन सामरिया लग लैहै,
जो तैं जमुनै जैहै।
जिनकौ राज जिनइकी रइयत,
उनकी कीसों कैहै।
चाहत है जो अपने कुलकी,
बाहर पाँव न दैहै।
'ईसुर' श्याम मिले कुंजन में,
मन मानी कर लैहै।

जो तैं = यदि तू, जमुने = यमुना को, जैहै = जाएगी, जिनइकी = जिनकी ही, रइयत = प्रजा, कीसों = किसकी, कैहै = कहेंगे।

यदि तुम यमुना पर पानी भरने जाओगी तो साँवरिया तेरी आँखों में लग जाएगा जिसका राज्य है, उसकी हम प्रजा हैं अत: उसकी शिकायत भी किससे की जाएगी। अत: यदि तू अपने कुल की भलाई चाहती है तो घर से बाहर पैर न निकालना क्योंकि ईसुरी कहते हैं– तब श्याम कुँजों में मिल जायेंगे तो मनमानी कर लेंगे।

बिछरौ न बालम बारी उमर,
तुमपै नेहा डारे भमर।
मदन नरेश देस चढ़ आये,
जोबनरा पै कारे समर।
तनके पाल सुरति की सरदें,
बिरहा कटरिया खोंसै कमर।
कड़ ना सकत यार दोरै लौ,
गिरी पलंग पै खाकैं तमर।
श्याम संजीवन मिले 'ईसुरी',
तौ राधे हो जायें अमर।

बिछरौ = बिछुड़ो, बारी उमर = कच्ची उम्र, देस = पूरे देह को राष्ट्र मानकर कहा है, कारे समर = कालिख सम्हालकर के अर्थ में, सरदें = बाण, कटारिया = कटार, सकत = सकते, तमर = गश आ जाना, संजीवन = संजीवनी।

प्रियतम! बिछोह न दो, अभी मेरी कच्ची आयु है, तुम पर प्रीति भ्रमरों ने डाली है। काम के सम्राट मदन ने मेरी देह रूपी देश पर आक्रमण किया है। उरोजों पर अब कालिख यथा स्थान आ गई है जिसके पाल सुरति के साथ सध गये हैं, अर्थात् जिसके फूलों के बाण काम को उत्तेजित कर रहे हैं जिसने विरह की कटारी कटि में बाँध दी है। द्वार तक निकल सकना संभव नहीं, अब सेज पर ही वह गश खाकर गिरती है। ईसुरी कहते हैं – श्याम रूपी संजीवनी से ही राधा अमर हो सकेगी यानी ठीक हो सकेगी।

अटकी पीरे पट वारे सें,
प्रीत पिया प्यारे सें।
निसदिन रात दरस की आशा,
लगी पौर द्वारै सें।
कैसै होत बड़े भयँ छूटै,
संग खेली वारे सें।
बिसरत नई भौत बिसराई,
बसी दृगन तारे सें।
'ईसुर' कात मिले मनमोहन,
पूरब तन गारे सें।

अटकी = उलझाने के अर्थ में, पौर – दुआरे = बाहरी द्वार, बारे से = बचपन से, पूरब = पूर्व जन्म के अर्थ में।

मेरी प्रीति उस पीताम्बर धारी श्रीकृष्ण के पीले वस्त्र में उलझी है। नित्य प्रति दर्शन की आशा में बाहरी द्वार पर ही खड़ी रहती हूँ। कितना प्रेम था, वह छूट कैसे गया? बचपन से ही उनके साथ खेलती रही हूँ। बहुत भुलाने पर भी याद नहीं भूलती जो नयनों में तारे अर्थात् ज्योति की भाँति समा गई है। वे मनमोहन तो पूर्व जन्म से ही तन गलाने अर्थात् तपस्या करने से ही मिलते हैं।

तुम बिन तड़फ रये दृग दोई,
आन मिलौ निरमोई।
सौने की जा बनी देइया,
कंचन जुबना दोई।
जब से बिछुरन देसन हो गइ,
नहीं नींद भर सोई।
कात 'ईसुरी' मुरली धर बिन,
हिलक-हिलक कैं रोई।

तड़प रये = व्याकुल हो रहे, दृग दोई = दोनों नयन, देइया = देह, हिलक – हिलक = हिचकी ले-लेकर।

निर्मोही आकर मिल जाओ न? तुम्हारे बगैर दोनों नयन व्याकुल हैं। स्वर्ण की यह देह जिसमें कंचन के उरोज द्वय हैं। जबसे तुम बिछुड़े हो, इस देह में से निद्रा ही गायब हो गई है। मुरलीधर के बगैर मैं हिलक-हिलककर रोया करती हूँ।

जब से मनमोहन बिछरै हैं,
भारी कष्ट परे हैं।
दिन ना चैन रात ना निदियाँ,
खान-पान बिसरे हैं।
भूषन – बसन सबई हम त्यागे,
जे तन जात जरे हैं।
'ईसुर' स्याम सौत कुब्जा पै,

जोगिन भेष धरे हैं।

बिछरै = बिछड़ गए, भारी = बहुत के अर्थ में, सबई = सब ही, जात = जाते, जरे = जले।

जबसे मनमोहन बिछुड़े हैं, बहुत कष्ट हो रहा है। न दिन में चैन और न रात में नींद है। भोजन पानी सब भूल गयी हूँ। आभूषण–वस्त्र आदि सब कुछ हमने त्याग दिए। यह शरीर राख हो रहा है। लगता है इस कुब्जा नामक सौत के लिये जान–बूझकर जोगी का रूप धारण किया है।

हो गइ श्याम बिछुरतन जीरन,
ब्रज में एक अहीरन।
कल नईं परत, काल की ढूँड़त,
कालिन्दी के तीरन।
भरमत फिरत, चित्त नई ठौरे।
उठत करेजे पीरन।
हमरौ जनम बिगार चले गए,
डारके मोह जंजीरन।
बन–बन व्याकुल फिरत 'ईसुरी',
राधा भई फकीरन।

जीरन = जीर्ण, कल = चैन, काल की = कल से, ठौरे = स्थान पर, जंजीरन = साँकलों से, फकीरन = फकीरी धारण करने के अनूठे अर्थ में।

ब्रज की एक अहीर बाला अर्थात् राधा की देह श्याम के बिछुड़ते ही जीर्ण हो जाती है। उसे चैन नहीं पड़ता है। कहती है– मैं तो कल से अर्थात् पूर्व जन्म से यमुना के तीर पर उन्हें खोज रही हूँ। न जाने कब से घूम रही हूँ। अर्थात् जन्म–जन्मान्तर से भ्रमजाल में फँसी हूँ जिसके लिए बार–बार जन्म लेती हूँ उसके लिए मेरी चेतना अपने स्थान पर नहीं पहुँच पा रही है। हृदय में पीड़ा उठ रही है। मेरा जन्म बिगाड़कर चले गए। मोह की साँकलें डाल गये। वन–उपवन में व्याकुल घूमती हुई राधा ने फकीरी धारण की है।

टेरौ बलदाउ के भइयै,
लगबाबे खों गइयै।
दोबत, श्याम पकर नै आबै,

बच्छा बारी बँइये।
कैसौ करैं कान नइँ परखत,
लीलै लेत किबइये।
सूदे दिखात कोउ नई अंधरा,
मूरख और जनइये।
खोटौ दाम 'ईसुरी' अपनौ,
दोष कहा परखइये।

टेरौ = बुलाओ, भइयै = भाई को, लगबाबे = दोहने के अर्थ में, गइयै = गाय को, पकर ने आबै = पकड़ना पड़ता है, बारी बँइये = छोटी उन बाँहों को, परखत = देखता है, लीलै लेत = खाए जाता है, किबइये = बहने वाले को, सूदे = सीधे, अंधरा = अंधे, जनइये = बताना, दाम = सिक्का, परखइये = परखने वाले को।

बलदाऊ जी के भाई को बुलाओ मेरी गाय का दूध निकाल दें। दोहनी करते समय बछड़े की इन सुकुमार छोटी-छोटी बाँहों को पकड़ना पड़ता है। कैसा किया जाए, कान्हा देखता ही नहीं है, कहने वालों पर गुस्सा करता है। कोई सीधे अंधा ही नहीं होता है मूर्ख को भी यह बात समझ में आ जाती है। राधा उस समय चाहती है कि वह उसकी ओर देखे और वह नहीं देखता तो कहती है कि यदि अपना ही पैसा खोटा हो तो परखने वाले को मैं क्या दोष दूँ? अर्थात् मुझमें ही अभी कमी है।

सबसे भली होत लरकइयाँ,
कर ना दइ गुसइयाँ।
सखियन साथ रहुनियाँ जाकैं,
मेल आउती गइयाँ।
दौर – दपट लरकन के संगै,
चढ़ जातीं बे कइयाँ।
गुइयाँ जोर पुरा पाले कीं,
खेलत चइयाँ-मइयाँ।
'ईसुर' श्याम हमाई दीजे,
बलदाऊ के भइयाँ।

लरकइयाँ = बचपन के अर्थ में, रहुनियाँ = रमन्ना अर्थात् जंगल, जाकैं = जा कर के, मेल = छोड़ने के अर्थ में, दौर दपट = दौड़कर-लपककर, लरकन = लड़कों, जोर = एकत्रकर, पुरावाले = मुहल्ले के अर्थ

में, चइयाँ–मइयाँ = चक्कर लगाने वाले खेल का नाम।

बचपन सबसे अच्छी अवस्था होती है। भगवान् ने वही स्थिर नहीं की। सखियों के साथ जंगल जाकर गायों को चरने हेतु छोड़ आती, दौड़ लपककर लड़कों के साथ किसी की गोदी में चढ़ जाती। मुहल्ले की सखियों–सहेलियों को एकत्रकर चइयाँ–मइयाँ का खेल खेलती। हे भगवान्! मेरी बड़ी अवस्था बलदाऊ के भाई यानी श्रीकृष्ण को लग जाये। राधिका जी उमर में श्रीकृष्ण भगवान् से बारह साल बड़ी हैं। वे तो चाहती हैं कि कृष्ण भगवान् हमारी ही आयु के हो जावें।

सुनकैं पैजनियन झनकारैं,
मोहन आये द्वारैं।
दैकैं कजरा नैंन रसीले,
पायजेब पग धारैं।
आँगैं जौन गलिन हो कड़तीं,
ताँ उड़ रही बहारैं।
आभूषण तन धार मनोहर,
सैंदुर माँग समारैं।
'ईसुर' बिकल भये मन मोहन,
इकटक दिरग निहारैं।

पैजनियन = पैजनियाँ की, पायजेब = पैर का जेवर, जौन = जिस, गलिन = गली से, दिरग = नयन।

पैजनियाँ की झनकार सुनते ही मोहन द्वार पर आ गए। काजल आँजे रसीले नेत्र वाली ने पैरों में पायजेब को धारण किया है। आगे जिस भी रास्ते से वे निकलती हैं तो बहारें उमड़ पड़ती हैं। शरीर में मनोहारी आभूषण हैं। माँग में सिन्दूर को लगाये हुए हैं। मनमोहन यह सब देखकर व्याकुल हुए और चातक की भाँति टकटकी लगाकर नयनों से निहारते हैं।

गुदना हरैं गोद गुदनारी,
कसकत बाँय हमारी।
हातन में लिख गुरु गोविन्दा,
हिरदे कुंज बिहारी।

गालन में लिख छब मोहन की,
फूलन फूल हजारी।
माथैं लिखदै गोबरधन की,
मूरत प्रान प्यारी।
'ईसुर' चीन लये राधा नै,
ठाड़े हँसत बिहारी।

हरैं = धीरे से, कसकत = पीड़ा देने के अर्थ में, बाँय = बाँह, चीन = पहचान, हजारी = सहस्त्र पंखुड़ियों का फूल गेंदा।

भगवान् कृष्ण छद्म वेश में गोदना गोदने वाली बनकर श्री राधा के सम्मुख प्रस्तुत होते हैं। राधा जी गोदना गोदने हेतु कहती हैं कि – गोदने वाली, तनिक धीरे-धीरे गोद, मेरी बाँह में गोदने की पीड़ा होती है। हाथों पर गुरु गोविन्दा, हृदय में कुंज बिहारी, कपोल पर मनमोहन की छवि, जिसमें गेंदे के फूलों की छटा हो, मस्तक पर प्राण प्यारे श्री गोवर्धन की मूर्ति अंकित करो। कहते-कहते राधा की आँखों ने पहचान लिया कि यह तो गोदने वाली नहीं साक्षात् श्रीकृष्ण जी ही मुस्करा रहे हैं।

चैती

हर भेस चुरेलिन कौ ठानै।
पौंचे जाकै बरषानै।
है कोउ अली भुवन के भीतर,
राधे जू के ढिंग जानै।
सुन्दर चुरियाँ जुरियाँ ल्याईं,
पैरौ गुइयाँ मनमानैं।
बाँय पकर राधा की 'ईसुर'
लगे श्याम जब पहरानै।

हर = हरि (इंकार ध्वनि लुप्त है) चुरेलिन = चूड़ी वाली, ठानै = धारण करने के अर्थ में, ठान लेना, चुरियाँ = चूड़ी, जुरियाँ = एकत्र करके, मनमाने = मनचाही।

वाह कैसा संयोग है कि श्रीकृष्ण ने आज चूड़ी वाली का वेश धारण किया है। वे बरसाने पहुँचे और आवाज देने लगे कि है कोई आली! इस भवन के अन्दर मुझे राधा जी के पास पहुँचना है। मैं सुन्दर-सुन्दर चूड़ियाँ एकत्र करके लायी हूँ। सखियों! अपनी मनचाही चूड़ियाँ

पहनो कहते हुए अन्दर पहुँचे और राधा जी की बाँह पकड़ ली और बड़े मजे से चूड़ियाँ पहनाने लगे।

जबसे लगे सौत के कानैं,
श्याम न मोय दिखानैं।
उन बिन ऊधौ व्याकुल हो गए,
न आये बरषानैं।
चाँय वे दासी संगै ल्याबैं,
हमैं कछू ना कानैं।
एक बेर दरसन दै जाबैं,
नैना जबइँ जुड़ाबैं।
'ईसुर' बिन मोहन के राधा,
तलफत भौत ठिकानैं।

सौत = प्रीतम की कोई अन्य प्रेमिका, कानैं = कहने में अथवा कहना है, बेर = बार, समय, दफा, जुड़ाबैं = शीतल होंगे।

जब से श्याम सलोने किसी सौत के कहने में लग गए हैं तभी से मुझे नहीं दीखे। मैं उनके बगैर व्याकुल हो रही हूँ, ऊधौ जी, वे बरसाने नहीं आए? चाहे वे दासी को साथ में ही क्यों न ले आवें, मैं आपत्ति नहीं करूँगी, कुछ न कहूँगी। बस एक बार वे मुझे दर्शन दे जावें, तो मेरे नयन शीतल होंगे। बगैर मोहन के राधा तड़फती हुई ठौर-ठौर परेशान घूम रही हैं।

मोहन उठयाये भुन्सारैं,
गये सौत के द्वारैं।
पीताम्बर पलका पै छोड़ौ,
सर पै चूनर धारैं।
काजर रेख लगी गालन मैं,
कानन करता डारैं।
नामानै राधे कौ कैबौ,
बेसरमाई धारैं।
'ईसुर' राधे की बातैं सुन,

हँस-हँस बैन उचारैं।

भुन्सारैं = अलख सबेरे, सौत = परकीया, पलका = पलंग, चूनर = स्त्रियों की ओढ़नी का एक प्रकार, कैबौ = कहना, बेसरमाई = ढीठता, ढिठाई, बैन = वचन, उचारैं = कहें।

यह एक अनूठी झाँकी है जब मनमोहन परकीया के घर रात्रि बिताकर सबेरे-सबेरे लौटते हैं- अपना वह पीताम्बर उसके पलंग पर ही छोड़ आए तथा उसकी चूनर धोखे से पीताम्बर समझकर सिर पर धारण किए हैं। कपोल पर काजल की रेख अंकित हो गई है। कानों में कुण्डलों के स्थान पर अन्य आभूषण आ गया है। ऐसी बेशरमी धारण की है कि राधा का कहना भी वे नहीं मानते। राधा के इन वचनों को सुन-सुनकर वे हँस-हँसकर अपने वचन उच्चारित करते हैं।

ओई घर जाब मुरलिया बारे,
जाँ रात रये प्यारे।
अब आबे कौ काम तुमारौ,
का है भबन हमारे।
हेरैं बाट मुनइयाँ हूहै,
करैं नैंन कजरारे।
खासी सेज लगा महलन में,
दियन धरे उजयारे।
भोर भयें आ गए 'ईसुरी',
जरे पै फोरा पारे।

ओई = उसी, हेरैं = देखें, बाट = प्रतीक्षा, मुनइयाँ = प्यार भरा सम्बोधन, दियन = दीप (बहुवचन में), फोरा = फफोले के अर्थ में।

सारी रात परकीया के घर रहकर जब प्रात: मुरलीधर घर लौटते हैं। जहाँ प्रिय तुमने रात्रि बिताई है, उसी घर जाओ। अब मेरे भुवन में आने का तुम्हारा क्या काम? तुमने तनिक भी नहीं विचार किया कि- मैं काजल आँजे नयनों से द्वार पर आँखें गढ़ाए रही। अच्छी खासी सेज सजाकर दीपों को प्रकाशित किया था। अब सबेरा होने पर जले पर फफोले पाड़ने आए हो?

विशेष :- जरे पै फोरा पारे-बुन्देली का मुहावरा जो हिन्दी के जले पर नमक छिड़कना के समानार्थी है।

कर गए थोरे दिन की यारी,
सपनौ सौ गिरधारी।
जा भई दिसा देय की देखौ,
हमैं दिखात हमारी।
दिलदारी कौ येइ नतीजा,
बिगर जात ब्रह्मचारी।
'ईसुर' माँ हो भये गुजारे,
कुंजन कुँज बिहारी।

थोरे = थोड़े, यारी = मित्रता, दिलदारी = दिल लगाने के अर्थ में, येई = यही, गुजारे = काम चल गए।

स्वप्न के समान गिरिवरधारी थोड़े दिनों की प्रीति करके चले गए। मेरी देह की दशा ऐसी हो गई। मेरी यह दशा मुझे ही दीख पड़ती है। दिल दे बैठने का शायद यही परिणाम हुआ करता है कि ब्रह्मचारी तक भ्रष्ट हो जाते हैं। कुंजन वन में कुँज बिहारी क्या पहुँचे, वहाँ न जाने कितनों के गुजारे हो गए।

विशेष :- 'हमैं दिखात हमारी' अभिव्यक्ति मीरा की अभिव्यक्ति 'घायल की गति घायल जाने जो कोई घायल होय' की तुलना में अधिक सटीक एवं प्रभावशाली बन पड़ी है।

जोगिन भई राधका गोरी,
अबै उमर है थोरी।
बाजन लगी चमीटा चुटकी,
नई लाजना चोरी।
अंग भबूत बगल मृगछाला,
डरी कँदा पै झोरी।
'ईसुर' जाय हरी से कइयो,
पालागन हे मोरी।

अबै = अभी, उमर = आयु, थोरी = थोड़ी / कम, चमीटा = चिमटा, चुटकी = उँगलियों से ताल देने वाली चुटकी, भबूत = भभूति अर्थात् भस्म, डरी = पड़ी हुई, कँदा = कंधे पर, झोरी = झोली, पालागन = पाँव लगकर प्रणाम निवेदन।

राधा जोगिन हो गई है, अभी उसकी वय कच्ची है लेकिन चिमटा एवं चुटकी की करताल बजने लगी, न ही कोई लज्जा है न चोरी। शरीर में भस्म रमा ली गई है। बगल में एक

मृगचर्म दबी हुई है, कंधे पर झोली पड़ी हुई है। ऐसी विरहिणी राधा जी कहती हैं कि जाकर हरि से मेरा चरण स्पर्शकर प्रणाम निवेदन करो।

विशेष :- वियोग की ऐसी पराकाष्ठा कि राधा जोगिनी होकर निकल पड़ी। सूर के भ्रमरगीत एवं विद्यापति की सर्जना में भी इतनी मार्मिकता नहीं। यह बुन्देली श्रावण गीत जो पारम्परिक लोक स्वर है, का प्रभाव है - सुनरी सखी सैंया जोगी भए, हमहू जोगन हो जायँ।

पाती किसन चन्द की आई,
छाती सें चिपकाई।
हातन-हातन लै गोपिन नैं,
राधाजुये गुबाई।
परी देय में फिर सें स्वाँसा,
मरी खाल जी आई।
अब हम पै भगवद् भए सूदे,
ऊधौ जू की ल्याई।
समाचार लिख दये 'ईसुरी',
सब लै बाँच सुनाई

पाती= पत्र, हातन-हातन= हाथों-हाथ, राधाजुये= राधा जी को, गुबाई= पकड़ाई, देय= तन, मरी खाल जी आई= (एक मुहावरा है) किसी भी जीवधारी में क्रिया का होना (क्रियाशीलता)।

ऊधौ जी सन्देश वाहक बनकर भगवान् कृष्ण के पास मथुरा गये थे। वहाँ से लौटे तब की स्थिति है- श्रीकृष्णचन्द्र जी का पत्र प्राप्त हुआ है जिसे ऊधौ जी लाये हैं। गोपियों ने एक हाथ से दूसरे हाथ में देकर श्री राधिका जी के कर कमलों में पकड़ा दिया है। पत्र प्राप्त करते ही श्री राधिका जी के तन में प्राण लौट आये हैं, उनमें निर्जीवता के स्थान पर क्रियाशीलता आ गई है। ऐसा प्रतीत होता है पारब्रह्म परमेश्वर हम लोगों पर प्रसन्न हो गये हैं। द्रवित श्री राधिका जी ने श्री कृष्ण के उद्‌गारों को सभी गोपियों को पढ़कर सुना दिया है।

ऊधौ रूप राधिका जू कौ,
कृष्ण बिछुरतन सूकौ।

मन उड़जात तिनूका नाईं,
मन्द–मन्द में फूकौं।
गदिया गिलम गदेला त्यागै,
परबौ ताकौ भू कौ।
भुगतै मिटै, करौ कछू हूहै,
कछू पाय आँगू कौ।
'ईसुर' पता लगत ना बाँदर,
फिरत डार कौ चूकौ।

तिनका = तृण, नाईं = सदृश के अर्थ में, गिलम = मुलायम, गदेला = गद्दे, परबौ = शयन, ताकौ = जिनका, आँगूकौ = भविष्य का।

ऊधौ जी, श्री कृष्ण के बिछुड़ते ही श्री राधा जी का रूप सूखकर मलीन हो गया। तनिक सी मन्द फूँक मात्र से ही मन तृण के समान उड़ जाता है। मोटे–मोटे मुलायम गद्दे त्यागकर उन्होंने भूमि पर शयन प्रारम्भ कर दिया है। यह ऐसी पीड़ा है जो भोगनी ही पड़ेगी। कुछ भी करो, वही होगा जो भाग्य में लिखा है। डाल का चूका बन्दर कभी ठिकाने लगता है?

विशेष :– डाल का चूका बन्दर मुहावरे का प्रयोग सुन्दर और सटीक है।

जइयो उतइँ कुँअर कन्हाई,
जाँ सब रैन गँवाई।
अब हो चुकी हमाइ तुमाई,
इत से भेंट भलाई।
चुन चुन कलियन सेज लगाई,
सबरत दिया जराई।
'ईसुर' काउँ न सुनी निबातन,
सौते–सौत सुहाई।

उतइँ = वही, जाँ = जहाँ पर, सबरत = पूरी रात।

हे कुँवर कन्हाई! तुम वहीं जाओ, जहाँ पर सारी रात तुमने बिताई है। हमारी और तुम्हारी प्रीति अब हो चुकी समझो। उन्हीं से भेंट करो, जिसमें तुम्हारी भलाई है। मैंने तो कलिकाएँ चुन–चुनकर सेज सजाई थी। पूरी रात दीप जलाया था कि श्रीमान् जी पधारेंगे। लेकिन ऐसा कभी

कहीं न सुना होगा कि सौत तनिक भी सुहाती हो। तब भला मैं कैसे सहूँ?

विशेष :- हमाई-तुमाई, सौते-सौत सुहाई, बुन्देली के मुहावरे हैं।

दुइ सो रए जेठ दुपारी में,
दै पट लपट अटारी में।
चन्दन चहल मची है बंगलन,
चिकैं डरीं हर द्वारी में।
अधिक मुलाम सेज फूलन की,
चाँद खिलै चितसारी में।
कर रए केल फरस के ऊपर,
खारए पान सुपारी में।
राधा रमन 'ईसुरी' कइये,
केल परे सुकमारी में।

जेठ = ज्येष्ठ मास अर्थात् भीषण ग्रीष्म ऋतु का समय, दुपारी = दोपहर, पट = किवाड़ और वस्त्र, लपट = लिपटने के अर्थ में, अटारी = अट्टालिका, चिकैं = चिक का बहुवचन, मुलाम = कोमल, चितसारी = चित्रशाला के अर्थ में, केल = अठखेलियाँ, परे = पड़े हैं।

ज्येष्ठ माह की तपती दोपहरी में दोनों एक ही वस्त्र में लिपटे हुए ऊपर अट्टालिका पर सो रहे हैं। उनके बंगले में चन्दन की सुवास के साथ विशेष चहल-पहल है। प्रत्येक द्वार पर चिके पड़ी हुई हैं। फूलों की सेज तो कुछ अधिक ही कोमल है। उसकी चित्रशाला में एक आकर्षक चाँदनी तनी हुई है जिसके नीचे फर्श पर ही केलि करते हुए पान सुपारी खा रहे हैं। राधा के साथ रमण विहार एवं केलि कर चुकने के पश्चात् सुकुमार आनन्द में लेटे हुए हैं।

विशेष :- यह झूला की फाग है।

सुन्दर सेत सरद कौ चंदा,
रास रचौ गोबिन्दा।
सेत उठाई सेत बिछाई,

सेत चाँदनी बंदा।
सेतई कली खिली सी दमकै,
अली करै आनन्दा।
जीबर सेत–सेत पो साखै,
सेत सुमन कौ कंदा।
'ईसुर' सेत सुपेती कौ सुख,
कृष्ण चन्द्र मकरंदा।

सेत = श्वेत, सुपेती = रजाई।

शरद पूर्णिमा के अवसर पर विहार करते युगल छवि का चित्रण करते हुए ईसुरी लिखते हैं कि – जहाँ पर श्री गोविन्द जू ने रास रचाया है, वहाँ शरद का श्वेत चन्द्रमा सुशोभित है। वहाँ की पूरी बिछात और उठात यानी आकाश भी श्वेत है तनी हुई चाँदनी का प्रत्येक बन्द भी श्वेत है। श्वेत कलिकाएँ सम्पूर्ण खिलने सी दीक्षित हैं। जहाँ पर आलि अर्थात् श्याम वर्ण का भ्रमर (स्वयं कृष्ण के अर्थ में) आनन्द कर रहा है। वस्त्र आभूषण भी श्वेत, श्वेत ही सुमनों की पंक्तियाँ हैं, श्वेत ही रजाई है जिसे ओढ़ने से अपूर्व सुख मिलता है। जहाँ कृष्ण चन्द्र सा मकरन्द है।

विशेष :– श्री राधा के मुख को शरदचन्द्र रूप में देखा गया, उनकी सम्पूर्ण गौर वर्ण झाँकी में स्वयं श्री कृष्ण मधुकर के समान हैं यह एक अनुपम सामंजस्य है।

सारी चोर बोर कर डारी,
कर डारी गिरधारी।
गिरधारी पकरन के काजैं,
जुरआईं ब्रजनारीं।
नारी भेस करौ मोहन को,
पैराई तन सारी।
सारी पैर नार भए मोहन,
नाचै दे दे तारी।
तारी लगा ग्वाल सब हँस रए,
'ईसुर' कयँ बलहारी।

चोर – बोर = चुराकर रस प्लावित करने के अर्थ में, पकरन = पकड़ने, जुरआइ = एकत्र हुई, पैराई = कहलाने के अर्थ में, नार = नारी, तारी = ताली।

गिरधारी ने साड़ी चुराकर उसे रस प्लावित कर डाला है। यानी साड़ी चुराने का आनंद लेने की ठान ली है। ब्रज की समस्त नारी ऐसे चोर को पकड़ने हेतु एकत्र हो गईं। लेकिन चोर ने वेश बदल लिया। वह स्वयं साड़ी पहनकर नर से नारी बन गए। फिर क्या था, साड़ी पहिने हुए नारी वेशधारी मोहन हाथ से ताल दे–देकर नृत्य करने लगे। यह झाँकी देखकर समस्त ग्वाल बाल भी ताली बजाकर हँस पड़े। कवि इस छवि पर न्यौछावर हो गया।

विशेष :– इस रचना में सिंहावलोकन का एक आकर्षक प्रयोग किया गया है। 'नार भए मोहन में मोहन' शब्द श्लेषार्थी है।

राधा ठाँड़ीं नन्द दुआरें,
भूसन सकल समारें।
देखत आज तुमें मनमोहन,
ऐसे बचन उचारें।
करै देत रनबन के तुमखों,
पिचकारी के मारें।
भई सुरंग रंग में 'ईसुर',
राधे संग बृज नारें।

देखत = देखूँगी के अर्थ में, रनबन के = तिड़ी–बिड़ीकर देने के अर्थ में, सुरंग = सु–रंग एवं अन्दरूनी गुप्त मार्ग को भी सुरंग कहते हैं।

होली का दृश्य है। नन्द के द्वार पर श्रीराधा जी अपने समस्त आभूषणों को सम्हाले हुए, होली मिलने को कटिबद्ध खड़ी हैं। आज देखूँगी मन को मोहित करने वाले मनमोहन को राधा ऐसे वचनों का मधुर उच्चारण कर रही हैं। अभी मैं सबको रंग देती हूँ। रंग–बिरंगा कर देती हूँ। होली के रंग में श्री राधा के साथ समस्त ब्रज नारियाँ भी सु–रंग में भीग गईं। अर्थात् उस प्रेम मार्ग की एक नई सुरंग यानी राह बन गई।

भींजीं फिरैं राधका रंग में,

मनमोहन के संग में।
मूठ गुलाल, हाँत पिचकारी,
ठेका लगरव चंग में।
एकै सखीं झूम झुक जाबैं,
एकै छक रइँ भंग में।
भारी भीर जुरी सखियन की,
जसुदा जी के अंगनें।
भूषन-बसन भींज गये 'ईसुर',
ढाँक लेव तुम ढंग में।

ठेका = ताल, चंग = ढप सरीखा एक वाद्य, एकै = एकाध, छक रइँ = तृप्त हो रही के अर्थ में, अंगनें = आँगन में, ढाँक = ढँक लेने के अर्थ में, ढंग में = उचित प्रकार से के अर्थ में।

होली है। मनमोहन के साथ श्री राधा जी रंग में भीगी-भीगी घूम रही है। गुलाल की मुष्टिका, हाथ में पिचकारी, भंग पर ताल बज रही है। एकाध सखि प्रहार से डरकर झुक-झुक जाती है तो एकाध सखि भंग की तरंग में तृप्त है। श्री माता यशोदा जी के आँगन में रसिकों की आज भारी भीड़ एकत्र है। सबके वस्त्राभूषण भींग गए हैं, अतः भींगे वस्त्रों के कारण अंग-अंग भी प्रकट हो रहे हैं। कवि कहता है कि उचित प्रकार से उन्हें ढँक लो।

खेलैं फाग राधका प्यारी,
ब्रज गलियन गिरधारी।
इन भर बाँह-बाँस की मारी,
उन मारी पिचकारी।
उनने झीकी लकुट-मुरलिया,
उन झीकी सिर सारी।
जे तो आँय नंद के लाला,
बे बृषभान दुलारी।
अपुन बनी नट नागर 'ईसुर',
उनै बनाऔ नारी।

गलियन = मार्गों में, इन अथवा उन = अन्य पुरूष में सर्वनाम, झीकी = छीन लो / खींच लो, लकुट = लाठी, आँय = हैं, जे अथवा ने = सर्वनाम सम्बोधन।

ब्रज के गलियारों में गिरधारी श्री राधा के साथ होली खेल रहे हैं। इन्होंने हाथ से पूरी ताकत लगाकर बाँस का प्रहार किया तो उन्होंने भी पिचकारी चला दी। इन्होंने उनकी मुरली लाठी छीन ली, तो उन्होंने सिर पर ओढ़ी हुई साड़ी खींच ली। ये तो है श्री नन्द के लाल और वे हैं श्री वृषभान जी जो इस समय स्वयं नट नागर (कृष्ण जी) बनी हुई हैं और उन्हें नारी बना रखा है।

विशेष :- ब्रज में आज भी होली में स्त्रियाँ हरे बाँस लेकर पुरुष वर्ग की पिटाई करती हैं तथा पुरुष वर्ग रंग अबीर से होली खेलते हैं। इस क्षेत्रीय प्रभाव को कवि ने बड़े सुन्दर ढंग से अंकित किया है।

ऐसी भर मारी पिचकारी,
तिन्नी तर गिरधारी।
लागी झोंक चली गइँ लिपड़ी,
लला लाज टो डारी।
भौत भुभाव मोर गव करया,
हात लगाकें तारी।
'ईसुर' नन्द बबा के दौरें,
फजियत भई हमारी।

तिन्नी = साड़ी बाँधना (स्त्रियाँ आगे पटली बनाकर साड़ी की चुन्नटें विशेष प्रकार से खोंसती हैं, उसे तिन्नी कहते हैं), तर = नीचे, झोंक = झौंके के अर्थ में, लिपड़ी = लिपटी हुई, टो डारी = तोड़ दी, भुभाव = घुमाया गया, मोर गव = लचक जाने के अर्थ में, करया = कटि/कमर, तारी = ताड़ लेने के अर्थ में, फजियत = किरकिरी होना।

मेरी तिन्नी साड़ी की पटली के नीचे से होकर गिरधारी ने ऐसी पिचकारी मारी कि पूछो मत। कुछ ऐसा झौंका आया कि मैं संयम छोड़कर उनके साथ लिपटी हुई आगे उन्हीं की ओर बढ़ती चली गई। फिर तो लाज संकोच कृष्ण लाला ने सब तोड़ ही दी। उन्होंने मुझे पकड़कर ऐसा चकरघिन्नी में घुमाया कि मेरी कमर लचक खा गई जिसे उन्होंने हाथ लगाकर तोड़ लिया। इस प्रकार श्री नन्द बाबा के द्वार पर आज मेरी फजीहत ही हो गई।

गहौ नंद के लाल कोउ कोअन,

हुकम दऔ ब्रज बालन।
जारी हुकुम करौ राधा नै,
छीन लेब बन मालन।
जान न पाबै नन्द लाड़लौ,
मारौ गुलचा गालन।
भौत दिनन उननै छल कीनौ,
आज परौ तिय जालन।
गै लैनै बृजराज 'ईसुरी',
जे तिरलोकी चालन।

गहौ = पकड़ने के अर्थ में, कोउ-कोउअन = कोई-कोई मिलकर के, तिय = त्रिया अर्थात् स्त्री वर्ग, गै लैनै = पकड़ लेता है।

ब्रज बालाओं को आदेशित किया गया कि सब मिलकर नन्द के लाला को पकड़ ही लो। राधा का यह आदेश लागू किया गया कि उनकी वनमाला वगैरह सब छीन ली जावे। वह बचकर जाने न पावें, उसके गालों पर अच्छी तरह गुलाल लगाया जाये। इन्होंने बहुत दिन तक छल किया है, आज वे त्रिया जाल में आ फँसे हैं। ब्रजराज को पकड़ ही लेना है। यही त्रिलोकीनाथ हैं, इनकी चालों को परखना जरूरी है।

विशेष :- त्रेता युग में विष्णु ने श्रीराम का अवतार लेकर मर्यादा पुरुषोतम का ही आदर्श प्रस्तुत किया था। तब स्त्रियाँ इनके संसर्ग में वचित रही थीं। द्वापर में ब्रजराज के रूप में उन्हीं त्रिलोकीनाथ की स्थिति बहुत दिन पश्चात् त्रिया जाल में फँसी हुई दर्शाकर ईसुरी ने गहराई से बात कही है।

पकरे गोपिन नै मनभाबन,
लागीं नार बनाबन।
छीन लई बनमाल मुरलिया,
सारी लगी उड़ाबन।
सकल आभूषन सजे राधका,
कटि लहंगा पहनाबन।
नारी भेस बनाकैं 'ईसुर',
फगुआ लगी मनाबन।

पकरे = पकड़ लिया, बनाबन = बनाने के अर्थ में, सारी = साड़ी एवं समूची भी, फगुआ = होली अर्थात् बसन्तोत्सव।

मनभावन श्रीकृष्ण को गोपियों ने पकड़ लिया है और वे उन्हें नारी बनाने में जुट गईं। उनकी वनमाला एवं वंशी छीन ली। सब मिलकर साड़ी उठा रही हैं। राधा ने सभी आभूषणों से उनका श्रृँगारकर सजा दिया है और कटि में लहंगा पहना दिया है। उनका नारी वेश बनाकर बसन्तोत्सव का महारास प्रारम्भ किया गया।

विशेष :- 'फगुआ' आज होली उत्सव के अर्थ में रूढ़ हो गया परन्तु यह प्राचीन भारत का बसन्तोत्सव ही है।

बिलवारो डारौ न लला की अलकन में,
परै मुकुट की झलकन में।
उड़त गुलाल लाल भये बादर,
परत आँख की पलकन में।
पकर-पकर राधे मोहन खों,
मलत अबीर कपोलन में।
खेलत फाग परसपर 'ईसुर',
राधे मोहन ललकन में।

अलकन = अलकावलि अर्थात् केश राशि, झलकन = आभा के अर्थ में, ललकन = उमंगों में भर-भरकर।

होली में गोपिकाएँ कहती हैं कि लाला की केश राशि में रंग न डाला जाए, क्योंकि मुकुट की आभा में रंग पड़ जाने से उसकी चमक मलीन हो जाएगी। गुलाल उड़ने से बादल मानो लाल हो गए हैं जो आँख की पलकों पर स्पष्ट रूप से जम गये हैं। राधा मोहन को पकड़-पकड़ कर उनके कपोलों पर अबीर मलती हैं। परस्पर दोनों होली खेलते हुए राधे एवं मोहन कुछ विशेष उमंग में है।

उरजौ ना श्याम कही मानौ,
फटै चुनरिया ना तानौ।
इत मथरा उत गोकल नगरी,

बीच बसत है बरसानौ।
राज बुरऔ है कंस रजाकौ,
मथरा बीच रूपौ थानौ।
मैं बेटी वृषभान लला की,
'ईसुर' काउकी जिन जानौ।

उरजौ = उलझो, तानो = खींचो, इत = यहाँ, उत = वहाँ, बुरऔ = बुरा, रूपौ = स्थापित है, थानौ = पुलिस थाना।

हे श्याम! मेरी कहा मानो। मुझसे मत उलझो, कहा न मेरी चुनरी फट जाएगी। इसे तुम बलात् खींचो मत। इधर मथुरा और उधर गोकुल नगरी है बीच में बरसाना बसा हुआ है। समझ लो राजा कंस का राज बहुत बुरा है। मथुरा के ही बीच में थाना स्थापित है। फिर जानते हो मैं श्री वृषभानु जी की बेटी हूँ, किसी अन्य की मत समझ लेना।

विशेष :- झूला की फाग है।

हो रई फाग नन्द के दौरें,
लाज सरम सब छौरें।
पिचकारिन के छरा छूट रए,
रंग की बैरइ खोरें।
बाबा नन्द अतर सुगन्दन,
लयँ कचुरलन घोरें।
'ईसुर' श्याम बदर हो रए हैं,
नचत बिरज की मोरें।

छोरें = छोड़कर, छरा = छर्रे के अर्थ में, कचुरलन = काँस्य का बड़ा कटोरा नुमा बर्तन विशेष जिसे कचुरला कहते हैं, अब प्रत्यय से बहुवचन बना है।

नन्द के द्वार पर होली हो रही है। सभी ने शर्म एवं लोक मर्यादा को तज दिया है। पिचकारियों से छर्रे के छर्रे निकल रहे हैं। गली-गली में रंग बह रहा है। बाबा नन्द ने इत्र-सुगन्ध काँस्य कटोरों में घोला हुआ है। श्याम ऐसे मेघ बन गए कि गोपी रूपी ब्रज के मयूर उन्हें देख-देखकर नाच रहे हैं।

मोहन पिचकारी ना मारौ,
ना केसर रंग डारौ।
ठाँड़े होके कम्पन लागौ,
थर–थर बदन हमारौ।
हुकम देब हम जाँय घरन खों,
हिरदै दया बिचारौ।
कात 'ईसुरी' सऔ जात ना,
अब जौ लाड़ तुमारौ।

सऔ = सहन करने के अर्थ में, लाड़ = प्यार।

मोहन पिचकारी मत मारो न ही केसर रंग मुझ पर डालो। खड़े–खड़े अब मेरी देह भी थर–थर काँपने लगी है। आज्ञा दो हम लोग अब अपने–अपने घरों को प्रस्थान करें, हृदय में तनिक दया विचारें। अब तुम्हारा यह प्यार–दुलार भी हमसे सहन नहीं होता।

भींजे पिचकारिन के मारैं,
राधा जूके द्वारैं।
हर पै डारै कुँअर राधका,
राधा पै हर डारैं।
ग्वाल–बाल जे रन पै ठेलैं,
गोपी बाँस उबारैं।
तर के ऊपर होय लाज ना,
लिपट आँक भरमारैं।
'ईसुर' भरी फाग में फूली,
फिरती आँग उगारैं।

जे रन = अन्य के अर्थ में, उबारैं = प्रहार करती हैं, आँक = अंक में, आँग = अंग–प्रत्यंग के अर्थ में, उगारैं = उघाड़े हुए।

श्री राधा जी के द्वार पर पिचकारियों के कारण सभी रंग में भीग रहे हैं। कृष्ण पर कुँवर राधिका जी रंग डालती हैं और हरि राधिका जी पर रंग डाल रहे हैं। ग्वाल बाल भी एक दूसरे पर अबीर और रंग डाले जा रहे हैं। गोपिकाएँ हरे बाँसों से प्रहार करती हैं। सब नीचे से ऊपर, ऊपर

से नीचे रंग में लथपथ हैं। सराबोर हैं आपस में। शर्म का अस्तित्व समाप्त हो गया है। राधिका कृष्ण से लिपटकर अंक में सिमिट-सिमिट जाती हैं। ईसुरी कहते हैं- ऐसी होली में राधिका फूली नहीं समाती। अंग-प्रत्यंग उघाड़े घूमती नजर आती हैं।

मोहन दै मारी पिचकरिया,
भरकै रंग केसरिया।
घाली आँग गाल डेरे हाँ,
बच गइ आँख पुतरिया।
तर हो गई तरै से ऊपर,
भींजी नवल चुनरिया।
'ईसुर' यार भगत भागत में,
भूअन मिली देहरिया।

घाली = चलाई या मारी, डेरे = बाँए, हाँ = पर के अर्थ में, आँख पुतरिया = आँख की पुतली, तर = प्लावित, तरै = नीचे, देहरिया = देहली।

केसरिया रंग भरकर मोहन ने पिचकारी दे मारी, पिचकारी ऐसी चलाई कि राधा के अंगों पर होकर बाएँ गाल पर जाकर पड़ी। आँख की पुतली बाल-बाल बच गई। नीचे रस प्लावित हो गई। इसकी नूतन चूनरी भी भीग गई। ईसुरी कहते हैं- मित्र! ऐसी भागमभाग में इस भुवन की देहरी मुझे मिल गई।

विशेष :- चूँकि भगवान् श्रीकृष्ण साक्षात् ब्रह्म हैं उनके संसर्ग में आने से गोपी रूपी आत्मा तर गई। तरने से वह अपने आप ऊपर हो गई। इस चौरासी लाख योनि के चक्र से वह मुक्त हो गई।

मोहन पिचकारी लयँ कर में,
ठाँड़े बीच डगर में।
मनन जड़त कंचन की सुन्दर,
भरै रंग केसर में।
कर डारत सरबोर सखीरी,
जो कोउ परत नजर में।

अपनौ भलौ चाइयो जो तुम,
बैठी रइयो घर में।
'ईसुर' बार पाँव ना दइयो,
कोउ ई औसर में।

ठाँड़े = खड़े हुए हैं, डगर = मार्ग, मनन = पहले वजन मन, सेर, छटाँक में होता था अतः मन का बहुवचन, सरबोर = रस प्लावित, बार = बाहर, औसर = अवसर।

मोहन हाथ में पिचकारी लिए हुए बीच मार्ग में खड़े हैं। मानों स्वर्ण जटित सुन्दर पात्रों में केसरिया रंग भरा हुआ है। सभी को वे रंगों से सराबोर करते हैं। सखि! जो भी उन्हें सामने दीख पड़ता है, उसे छोड़ते नहीं है। इसलिए हे सखि! यदि तुम अपना भला चाहो तो घर में ही बैठी रहना। इस अवसर पर घर से पाँव बाहर मत रखना।

मोहन कुसमानी कर डारी,
मोइ बसन्ती सारी।
झोरन लाल गुलाल उड़ाऔ,
झुकयाई अंधयारी।
बृजभव लाल लाल भइँ खोरैं,
बने कैउ नर नारी।
'ईसुर' मजा होत गोकल में,
चल बृषभान दुलारी।

कुसमानी = कुसुम वर्ण की अर्थात् लाल गुलाबी, मोइ = मेरी, झोरन = झोलियों भरा, झुकयाई = घिर आने के अर्थ में, कैउ = अनेकों।

मेरी बसन्ती साड़ी कुसुम रंग की कर डाली है। झोलियाँ भर-भरकर लाल गुलाल ऐसा उड़ाया कि अँधियारी घिर आई। ब्रज और ब्रज की गलियाँ सब लाल ही लाल हो गईं। अनेकों नर तो नारी बन गए हैं। ऐसा आनन्द गोकुल में छाया हुआ है। हे वृषभानु दुलारी जी! चलो, चलकर देखें।

राधा सामालिया से खैंलैं,

फाग सखिन के मेलैं।
भर-भर बाँय दाव कर दौरैं,
बाँस जोर से मेलैं।
गये गुपाल ग्वालन के संगै,
जौ जें जें रन ठेलैं।
भौत उपाब-दाव करती हैं,
छू ना पाँय अकेले।
'ईसुर' लरम लिपड़ती फिरतीं,
सौने कैसी बेलैं।

मेलैं = झुण्ड में / समूह में।

श्री राधा साँवरिया से होली खेलती हैं, जो सखियों के समूह के मध्य में है। भर-भर पिचकारी बाँहें दबाकर दौड़ती हैं, जोर से बाँस का प्रहार करती हैं अर्थात् लट्ठमार होली खेलती हैं। ग्वालों के साथ जब गोपाल होली खेलने पहुँचे तो उन्होंने इनको दूसरों की ओर ठेल दिया है। राधा बहुत उद्यत एवं दाब करती हैं, लेकिन वे छू भी नहीं पाती। ईसुरी कहते हैं-वे सुकुमारी लिपटती फिर रही हैं, मानो स्वर्णिम बेले हों।

विशेष :- कालिदास-'कुर्वन्ति कलियन सां सहसोत्सुकत्वं बालाति मुक्तलतिका: समवेक्ष्यणा:' युक्त लतिकाओं के माध्यम से ऐसी ही स्वर्ण लतिकाओं की अभिव्यंजना देते हैं, जो ईसुरी ने यहाँ सहज दी हैं।

केसर भई राधिका रानी,
गलन-गलन मिहकानी।
चम्पा जुही केतकी बेला,
चढ़त बेल लपटानी।
जिनसे भौत तड़ंगै उठतीं,
ज्यों गुलाब कौ पानी।
'ईसुर' किशनचन्द मधुकर नै,
लई सुगन्ध मनमानी।

गलन-गलन = गली-गली में, मिहकानी = महक गई, भौत = बहुत, तड़ंगै = तरंगें, मनमानी = मनचाही

खूब।

राधा स्वयं ही रूप रंग रस-सुगन्ध के कारण केसर हो गई हैं जिसकी महक गली-गली में भर गई है। चम्पा, जूही, केतकी, बेला ललित लता की भाँति लिपट रही हैं जिससे बहुत सी तरंगें उठती हैं मानो गुलाब जल हो। श्रीकृष्ण चन्द्र मानो मधुकर हैं जो इस पराग रूपी राधिका की मनचाही सुगन्ध अर्थात् रूप, रंग, रस और गंध का पान किए जा रहे हैं।

आरती

जीवन भी जगन्नाथ जाल से निनोरौ,
थाके ना हात-पाँव, कोउ ना धरै नाँव।
चलत फिर चलौ जाँव, घोरूआ न घोरौ। जीवन....
बनी रहै बान तान, इज्जत के संग सात।
दीन बन्धु दीनानाथ, रै गऔ दिन थोरौ। जीवन.....
हात जोर चरन परत, चरनामृत धोय पियत।
जियत राम देखौ ना, दूसरे कौ चोरौ। जीवन....
'ईसुरी' परभाती पढ़त, आबरदा सोउ बढ़त।
कीचड़ से सनौ भऔ, नीर ना बिलौरो। जीवन.....

निनोरौ = सुलझा दो अर्थात् मुक्त करो, घोरुआ = बेसन घोलकर बनाया एक पदार्थ विशेष, घोरौ = घोलो, थोरौ = थोड़ा, आबरदा = आवृति के अर्थ में / आयु बढ़ती है / आबदाना के अर्थ में भी है, सनौ = सना हुआ, बिलौरो = गड़बड़ करो।

प्रात:कालीन भैरवी के स्वर में प्रभाती में ईसुरी कहते हैं- हे श्री जगन्नाथ स्वामी! जीवन के जंजाल से मुझे मुक्त कीजिए। न हाथ पैरों से थकूँ, न ही कोई नाम धरे, चलता-फिरता ही चला जाऊँ, अब सत्तू सा घोल न घोलिएगा। मेरी आन-बान-शान बनी रहे, इज्जत के साथ ही। हे दीनबन्धु दीनानाथ! पार लगाएँ अब दिन थोड़ा ही शेष है। हाथ जोड़कर पाँव पड़ता हूँ, पैर धोकर चरणामृत पान करता हूँ, जीते जी तो कभी किसी अन्य का द्वार ताकना राम दिखाया नहीं, अत: अन्त में भी क्यों देखना पड़े? ईसुरी प्रभाती पढ़ता है जिसकी आयु बढ़ती ही जाती है। मैं तो पाप रूपी कीचड़ से सना हुआ हूँ, पावन करने वाले निर्मल नीर को कृपया मैला मत कीजिएगा।

भूलौ ना भली होत, भजन सी दबाई॥
नाच संग धावत में, नाम गान गावत में।
परबतै पदाबत में गनका नै खाई॥ भूलौ ना...
ऐसे बिद गऔ अंग लागौ है भजन चंग।
नामदेव-सूज संग, सीतन में पाई। भूलौ ना...
सुफल भऔ नरतन, सो सफा देय धरतन।
नित चाम काम करतन, रैदास नै लगाई। भूलो ना...
सूत बिनन चीर की, तारन तगदीर की।
मरजी रघुबीर की, कबीर नै मँगाई। भूलौ ना...
ई कौ इतवार करै, राज कौ ना दोस धरै,
गिरधर के हात धरै मीरा नै चाई। भूलो ना...
ऊ खों जा आँगू लऔ, मान राख मोरा दऔ।
सौनी सुरग सूदौ गऔ, सदन कौ कसाई। भूलौ ना...
जीव जौन इयै खात, हर हमेश खुशी रात।
पीपा के साथ अजामिल ने चटाई। भूलो ना...
धना जाट कण्ठ धरत, सोरी संग साक भरत।
औखद की भील, करै बैजुआ बड़ाई। भूलौ ना...
सबनै कही साजी पै, विदुर बनक भाजी पै।
भऔ राम राजी सै, इतनी रूचि आई। भूलौ ना... ।
घरै गये बामा के, मित्र आये रामा के,
तन्दुल सुदामा के, खात न अघाई। भूलौ ना.........
बिना नाम सेवा, सुख पावै ना देवा।
दुर्योधन की मेवा, थी खाइ ना मिठाई। भूलौ ना.........
तुलसी नै सत्य कही, मलूक टूक टोर दई।
खीचरी बनाय गई, करमा करवाई। भूलौ ना.........
बोलत ना हते मौन, जौन काम करौ तौन।
पंछी जौन जतन जान गऔ है जटाई। भूलो ना..........
कातन ना बने राम, दीनो है आप धाम।
उलट-पलट नाम, बालमीक थी पढ़ाई। भूलो ना........
जब सुपच आऔ, तब औ प्रसाद पाऔ।
जिन राम नाम गाऔ, ढुलकिया बजाई। भूलो ना.........

हरि थी भज हर थी कात, पूँछी ना जात पात।
एक ब्रह्म एक गात, राखें रघुराई। भूलौ ना.........
एक जैसे आठ दास, कर गये बैकुण्ठ बास।
हिरदै थी खुली खास, सूर नै सराई। भूलौ ना.........
जीव जबै बोलै, तब हिरदे नैन खोलै।
लै ईसुर परभाती, जा भोर समै गाई। भूलौ ना......

परबतै = तोते को, बिद गऔ = फँस गया, सूज = सुई, सीतन = सिलते में, चामकाम = चर्मकारी कार्य, औंखद = औषधि / दवाई, अघाई = तृप्ति, टूक टोर दई = दो टूक कहना, जौन = जो, तौन = वह, कातन = कहते हुए, ढुलकिया = ढोलक।

प्रभाती में नवधा भक्ति के भक्तों के तरण–तारण का उल्लेख करते हुए ईसुरी गाते हैं– भूलो मत! भजन श्रेष्ठ औषधि है। नृत्य संग दौड़ते हुए नाम गुण गाते हुए तोते को पढ़ाते हुए इसे नायिका ने खाया। यह मनुष्य शरीर ऐसा है कि भजन एवं चंग के साथ श्री नामदेव जी ने सुई से कपड़े सिलते हुए परमतत्व को पा लिया है। यह नर तन सफल हुआ, देह धारण करना स्वच्छ यानी सार्थक हो गया, चर्मकला का कार्य करते हुए श्री रैदास जी ने भी इसी दवा पर विश्वास करके राजा को दोष नहीं दिया। गिरधर के प्रति हाथ बढ़ाकर मीरा ने इसे सहज स्वीकारा है। इससे आगे मान–सम्मान से मयूर प्रदान किया। सूदन कसाई के कारण वह सोनी सीधा स्वर्ग गया। जो प्राणी इस दवा को लेते हैं अर्थात् भजन करते हैं वे सदैव प्रसन्न रहते हैं। पीपा और अजामिल ने भी यही दवा खाई है। धन्ना नाम के जाट ने कष्ट में रहते ही मुक्ति देखी। भक्ति के कारण भगवान् राम ने शबरी के जूठे बेर खाये। इस दवा के प्रभाव की बैजू भगत भी प्रशंसा करता है। सभी ने इसे उत्तम कहा। विदुर ने इसे भाजी में मिलाकर भगवान् को खिलाने की कोशिश की इतनी सुरूचि पूर्ण है यह दवाई। इसे भूलो मत। वामा के घर गए। रामा के भीतर बने सुदामा के चावल खाकर श्रीकृष्ण तृप्त न हुए, भूलो मत। बगैर नाम जप की सेवा के प्रभु को सुख नहीं, उसने दुर्योधन के मेवा मिष्ठान्न भी स्वीकार नहीं किये। नाम जप की महिमा तुलसी ने सत्य कही है। मलूकदास ने भी इसे दो टूक में कही, खिचड़ी बनाकर कर्मा बाई भी सहज पहुँच गई। वे मौन है, जो चाहो सो करो, पक्षी तक यत्न को जान वाल्मीकि को उलटा नाम जपने पर भी उसे निज धाम दिया। जब सु–पच हाता है, तभी यह प्रसाद पाया जा सकता है। जिन्होंने ढोलक बजा–बजाकर राम नाम का संकीर्तन किया है उन्होंने इसे पाया है। हरि को भजे सो हरि का होता है, इसमें जाति–पाँति का प्रश्न नहीं है। एक ब्रह्म है, एक ही देह है जिसकी श्री रघुराई रक्षा करें। एक सरीखे ही अष्ट छाप के सभी दास हैं। जो वैकुण्ठ धाम पहुँच गए। हृदय की यह सराय सूर ने ही खोली है। प्राणी जब बोलता है तभी हृदय एवं नयन खोलता है। इन भावों की प्रभाती सुबह ईसुरी ने गाकर सुनाई है।

जीव जीव की फागें ईसुर,
रये जीव से गाई।

भक्ति खंड - चार

कुछ बानगी निर्गुनी

जो कोउ जोग जुगतकर जानैं,
चढ़ चढ़ जात विमानैं।
बिरमा ने बैकुण्ठ रचौ है,
उनइँ दिनन के लानैं।
होन लगत फूलन की बरसा,
जिदना होत रमानैं।
'ईसुर' कात सबइँ के देखत,
ब्रह्म में जात समानैं।

जोग = योग, जुगत = युक्ति, विमानैं = विमान पर, सपन = स्वप्न, जिदना = जिस दिन, रमानैं = यहाँ प्रमाण के अर्थ में।

जो कोई योग की युक्ति करके जानता है, वही विमान चढ़कर सीधा मोक्ष द्वार तक पहुँचता है। ब्रह्मा ने यह वैकुण्ठ इन्हीं दिनों के लिए रचा है। वह जब महाप्रयाण को वरण करता है तो उस समय उस पर पुष्प वर्षा होने लगती है। इस प्रकार सबके देखते-देखते वह आत्मा जाकर ब्रह्म में लीन होकर समा जाती है।

नइयाँ ठीक जिन्दगानी कौ,
बनौ पिन्ड पानी कौ।
चोला और दूसरौ नइयाँ,
मानुस की सानी कौ।
जोगी जती तपी संन्यासी,

का राजा रानी कौ।
जब चायें ले लेव 'ईसुरी',
का बस है प्राणी कौ।

सानी कौ = समता करने वाला, बस = वश।

जीवन का कोई ठीक भरोसा नहीं है। वह तो पानी का पिण्ड है यानी पानी की एक बूँद है। मनुष्य योनि इसमें सर्वोपरि है, जिसके समान अन्य कोई भी योनि नहीं है। योगी, यती, तपस्वी, संन्यासी, क्या राजा और क्या रानी? यह सब मनुष्य योनियाँ है जो पानी की एक बूँद मात्र है। ईसुरी कहते हैं– यह बूँद जब चाहे ले लो, यानी पानी की बूँद कब उड़ जाय, भरोसा नहीं है। प्राणी का इसमें कोई वश नहीं होता।

बखरी रैयत है भारे की,
दई पिया प्यारे की।
कच्ची भीत उठी माटी की,
छाई–फूस चारे की।
वे बन्देज बड़ी बे बाड़ा,
तई पै दस द्वारे की।
किबार–किबरियाँ एकउ नइयाँ,
बिना कुची तारे की।
'ईसुर' चाँय निकारौ जिदना,
हमै कौन वारे की।

बखरी = घर, रैयत = रहते हैं के अर्थ में, भारे की = किराए की, दई = दी, भीत = दीवाल, बन्देज = बगैर किसी प्रबन्ध विशेष के, बेबाड़ा = यूँ ही उपेक्षित सी पड़ी हुई, तई पै = इतने पर भी, कुची – तारे की = चाबी ताले युक्त, वारे की = सुविधा जनक के अर्थ में।

यह मनुष्य योनि का शरीर एक किराए का मकान मात्र ही तो है जो प्रियतम अर्थात् प्रभु की अमूल्य देन है। इस मकान की कच्ची मिट्टी की दीवालें हैं, छत घास फूस से छाई हुई है। उस पर भी यह किराये का मकान है, जो बहुत उपेक्षित भी है। जिस पर भी यह दस द्वार दस इन्द्रियाँ वाली बखरी है। इसमें दरवाजे–खिड़की भी नहीं है। उसमें ताले चाबी भी नहीं है। ईसुरी कहते हैं– चाहे जिस दिन इसे खाली करा लिया जा सकता है। इसमें मुझे कोई सुविधा या दुविधा नहीं है।

विशेष :- 'मनुष्य शरीर का घर वह भी किराए का' घर की उपमा देकर इस रचना ने ईसुरी को कबीर के समकक्ष पहुँचा दिया है।

खबरै करौ राम के घरकीं,
काये फिरतीं फरकीं।
आ गये यार तुमारे लानै,
नारी मिट जौ नरकी।
आदी रात तिपारा ऊपर,
सुद ना रैहै तरकी।
छोड़त संग अंग मेरे सै,
छूटत नारी करकी।
कात 'ईसुरी' पारी जै हौ,
ठठरी ऊपर सरकी।

खबरै = स्मरण करो के अर्थ में, काय = किसलिए, फरकी = अलग के अर्थ में, नारी = नाड़ी, तिपारा = तीसरा प्रहर, तरकी = नीचे की, पारी = लेटाई, ठठरी = अर्थी।

राम के घर की स्मृति कीजिए, उससे अलग कहाँ फिरती हो। यह बात कवि आत्मा को संबोधित करके कहता है। तुम्हारे लिए तुम्हारे मीत आ गए तुम नर हो या नारी यह भेद भी मिट जाएगा। अर्धरात्रि में या तीसरे प्रहर के पश्चात् स्वयं अपने ही तले की सुधि तुम्हें न रहेगी। इस देह से सब नाता छूट जाएगा। जब हाथ की नाड़ी छूट जाएगी। अर्थी पर तुम लिटाई जाओगी।

विशेष :- संसार की निस्सारता में आत्मा की श्रेष्ठता का स्पष्ट चित्र।

सब खाँ ओई घर खाँ जानैं,
इतै कौन खाँ रानै।
एका-एकू आँगू पाँछू,
चलौ सबइ खाँ जानैं।
होबै हिल्लौ रुजक राय सें,
आबै मौत बहानैं।
बचे खुचे आसौं सै परलौं,

तैइ में घटत दिखानै।
उनके सबरे एक भाव हैं,
'ईसुर' नये पुराने।

इतै = यहाँ, रानैं = रहना है, एका एकू = एक-एक करके, आँगू - पाँछू = आगे-पीछे, हिल्लौ = धन्धा या रोजगार, रूजक राय से = उचित सलाह से, बचे खुचे = शेष, आसौं = इस वर्ष, पर लौं = अगले वर्ष तक, तेई में = उसमें से भी।

यहाँ किसी को भी नहीं रहना है, सभी को उन्हीं के (अर्थात् राम के) घर एक दिन जाना है। एक-एक करके आगे-पीछे सभी को चला जाना है। यह सब रोजगार धन्धे यानी उचित सलाह से ही होते हैं। मौत तो बहाना लेकर आएगी। जो शेष बचे हैं वे एक या दो वर्ष तक जी सकेंगे। वे भी घटते हुए दीखेंगे। मृत्यु के लिए सभी एक समान हैं चाहे नए हों या पुराने।

गुइयाँ हुआँ की बात नियारी,
जों ससरार हमारी।
ना हुआ चन्दा ना है सूरज,
ना दियला - उजयारी।
ना हुआँ मरना ना है जीना,
नहीं अवस्था चारी।
ना हुआँ रंग रूप ना रेखा,
ना कछु आय चिनारी।
ना हुआँ गरमी, ना है सरदी,
ना बरखा अंधयारी।
ना गुन तीन, विषय, रस पाँचउ,
ना इन्द्री दस चारी।
'ईसुर' कात पियै जो चीनें,
ता सुख की बलहारी।

हुआँ = वहाँ, नियारी = अलग ही है, ससुरार = पिय गृह / ससुराल, उजयारी = प्रकाश, आय = है, गुन तीन = त्रिगुण अर्थात् रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण (अथवा वात पित्त, कफ की स्थिति भी), विषय = काम वासना, रस पाँचउ = पाँच रस अर्थात् स्पर्श, दृश्य, श्रव्य, गन्ध, स्वाद, इन्द्री रस = पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ + पाँच कर्मेन्द्रियाँ, चारी = गति अर्थात् काम, क्रोध, मद, लोभ की स्थिति।

सखि! वहाँ की बात ही दूसरी है। जहाँ मेरे प्रियतम का घर अर्थात् मेरी ससुराल है। वहाँ न चन्द्रमा है, न सूर्य है। न दीप-प्रकाश अर्थात् वहाँ अलौकिक प्रकाश स्वत: है। जीवन-मरण से सर्वथा परे, चारों अवस्थाओं से पृथक, न वहाँ रंग, न रूप और किसी की पहचान नहीं है। ग्रीष्म, शीत और पावस भी वहाँ नहीं है। त्रिगुणातीत विषय से मुक्त, पंच रस रहित, दसों इन्द्रियों से विहीन वहाँ की स्थिति है। वहाँ पर जो प्रिया अर्थात् आत्मा अपने प्रियतम अर्थात् ब्रह्म को पहचान ले उसकी बलिहारी है।

जो कोउ जोगन भोग जगाबै,
सो गुनवान कहाबै।
सुन्न शिखर के ऊपर जाकै,
आसन अचल जमाबै।
धरती में ना आसमान में,
अमर मड़ैया छाबै।
'ईसुर' कात कुटुम अपने से,
आबागमन मिटाबै।

जोग = योग, भोग = काम, मड़ैया = कुटिया, छाबै = छाए, कात = कहते हैं।

जो कोई योग, तप एवं भोग विलास अर्थात् काम में सामंजस्य स्थापित कर ले। वही गुणवान है। जो शून्य शिखर के ऊपर पहुँचकर योग का अचल आसन जमा सकता है, वह न पृथ्वी पर और न ही आकाश में होता है। तब वह एक अमर मढ़ी में निवास करता है। ऐसा योगी ही भवसागर के इस चौरासी लाख योनियों का आवागमन समाप्त कर मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

करता करम रेख से न्यारौ,
बड़ौ न ऊधम धारौ।
दो उर तीन चार के संगै,
दस कौ होत गुजारौ।
रस के भरे खजाने बिलसौ,
अबै धरम कौ पारौ।
'ईसुर' कात एक जिऊ खों,
रूँद फिरत बैयारौ।

करमरेख = कर्म की लकीर, ऊधम = उत्पात के अर्थ में, गुजारौ = निर्झर होता है, बिलसौ = रखाने के अर्थ में, पारौ = पहरा है, जिऊ खाँ = प्राण को, रूँद = रौंदता, बैयारौ = त्रिया चरित्र अर्थात् माना जाता।

कर्त्ता अर्थात् नियति का सूत्रधार कर्मों की लीक से सदैव पृथक है। बढ़-चढ़कर उत्पात न करो। दो और तीन-चार के साथ में दस का भी निर्वाह हो जाता है। इस कारण विष के नहीं, रस के कोष भरो। यह धर्म पहरूआ है, रक्षा करेगा। कवि कहता है एक प्राण को रौंदती हुई यह महामाया अर्थात् त्रिया ताप पीछे ही पड़ी है।

रीती भरैं भरन खौं ओजैं,
पनमेसुर की मौजैं।
गरभन की गूंजै कर देबै,
अभमानन में खोजैं।
फेरत ध्वाई गरीबन की प्रभु,
फेर देत है फौजैं।
उनखों सब आसान 'ईसुरी',
कातन लगतीं चौजैं।

रीती = खाली, ओजैं = खाली करे, पनमेसुर = परमेश्वर, गरभन = गर्व के अर्थ में, अभमानन = घमंडियों के अर्थ में, खोजें = नष्ट कर देने के अर्थ में, ध्वाई = दुहाई, फौजैं = हँसी मजाक के अर्थ में।

परमेश्वर की इच्छा सर्वोपरि है। वह खाली को भर दे और भरे हुए को खाली कर दे। गर्व की गूँजों को पलभर में मिटा दे, अभिमानियों को आमूल नष्ट करके रख दे। वह प्रभु गरीबों की दुहाई फेरता है। उनके लिए बड़ी-बड़ी फौजें भी पलट देता है। उसके लिए सब कुछ आसान है, कहने को यह सब मजाक लगता है, लेकिन यह यथार्थ है।

मैंने लखे अबैलौ नइयाँ,
कौन बरन हैं सइयाँ।
ना भई भेंट पिया मोरे सौं,
आइ गइ हर दइयाँ।
मेय पिया से भैंट करादै,

तीकी लागौ पइयाँ।
निस दिन रात देय के भीतर,
भइ ना भेंट भलइयाँ।
संगै रात जनम जौ हो गऔ,
जानी नई बलइयाँ।
जीरा ललकत रात 'ईसुरी',
आस मिलन की नइयाँ।

अबैलौ = अभी तक, दइयाँ = मार, दया, समय, तीकी = उसके, देय = शरीर, ललकत = उत्सुक है / लालायित है।

आत्मा कहती है कि मैंने अपने प्रियतम अर्थात् ब्रह्म को अब तक पहचाना नहीं है कि वह किस वर्ण या रंग का है? मेरे प्रियतम से मेरी अब तक भेंट नहीं हुई। मैं हर बार आई गई अर्थात् चौरासी लाख योनियों में प्राण आता-जाता बना रहा। जो मेरे प्रियतम से मेरी भेंट करा दे, उसके पैर पड़ूँगी। (बलिहारी गुरु आपकी का भाव) मैं जानती हूँ कि वह मुझसे पृथक नहीं है। इसी देह का प्रतिफल है, परन्तु अज्ञानवश मेरी भेंट भलाई नहीं हो सकी। साथ रहते जिन्दगी बीत गई, मैंने उनका कभी प्यार नहीं देखा। अब तो मेरे प्राण उनके लिए लालायित रहते हैं। परन्तु मिलन की आशा टूटती सी दीख पड़ती है।

जौ है नदी नाब कौ भेलौ,
कऊँ हम कऊँ तुम खेलौ।
अपनी अपनी भोर गैल लैं,
रात मुसाफिर मेलौ।
घर जैबै की घरी आय जब,
एक घरी ना झेलौ।
जब धर देत चिता के ऊपर,
दिखा ना परत दुकेलौ।
'ईसुर' कोउ काउ कौ नइयाँ,
सब सिन्सार अकेलौ।

मेलौ = मिलन, मेला, कऊँ = कहीं पर, मेलौ = ठहर गया, झेलौ = सहन करने के अर्थ में, दुकेलौ = दूसरा कोई भी।

यह तो नदी और नाव जैसा संयोग है। फिर तो कहीं हम और कहीं तुम खेलते रहेंगे। रात भर के इस मुसाफिरी पड़ाव के पश्चात् भोर होते ही अपनी–अपनी राह पकड़ना ही है। घर जाने की बेला आने पर ठहरना भी तुम्हें सहन न होगा। जब चिता पर तुम्हें लिटाया जाएगा, तब कोई दूसरा तुम्हारे साथ न होगा। तात्पर्य कि कोई किसी का नहीं है, संसार में सब अकेले ही हैं।

हर इच्छा सें हते 'ईसुरी',
हाँत मुठी से रीते।

परिशिष्ट

कुछ स्फुट रचनाएँ

तन तन दोउ जने गम खायें,
करौ फैंसला चायें।
नाम बगौरा कौ मैड़ौ है,
बड़ेगाँव कौ माँयें।
माँझ पारिया पै झगड़ा है,
तूदा फिरत बनायें।
कानीगोजू कानन से लग,
सबखों मन्त्र बतायें।
लाला बन्सी मानत नइयाँ,
नाबसाब समजायें।
फिरै खतौनी औ खसरा खों,
लाला जू कखयायें।
हो गए हैं हैरान विचारे,
काँलौ किये बतायें।
अपनी लाँच खूँच खाबे खौं,
नाँय माँय मिलायें।
गड्डी–गाड़े ढड़कत नइयाँ,
ओंगन बिना लगायें।
उनका–मिनका छुनका बड़कें,
तिनें वकील बनायें।
मंगल टुड़िया पुबे रबूदे,
फल्ले खों दबकायें।

जिनके नइयाँ चून चनन कौ,
उनसे लाग मँगायें।
झल्ले मोदी कनक न देबें,
मोल बिसाकें खायें।
हो गये हैं हैरान बिचारे,
काँलों किये सुनायें।
लम्बरदार चतुर्भुज जू के
हम कारिन्दा आयें।
पन्द्रा सोरा दिन भए 'ईसुर'
डिप्टी जू खों आयें।

तन-तन = थोड़ा-थोड़ा, गम खाएँ = सब्र करें, नाँय = इधर, मैड़ौ = सीमा, माँय = वहाँ, उस तरफ, माँझ = मध्य में, पारिया = पहाड़िया, तूदा = तिल का पहाड़ बनाने के अर्थ में, कानीगो = राजस्व निरीक्षक, नाबसाब = नायब तहसीलदार, खतौनी-खसरा = पटवारी का अभिलेख, कखयायें = बगल में दबाये हुए, हैरान = परेशान, बिचारे = बेचारे, काँलौ = कहाँ तक, कियै = किसको, लाँच - खूँच = रिश्वत, नाँय की माँय = इधर-उधर की, ओंगन = गाड़ी के पहिये में डालने वाला चिकना पदार्थ, इनका, मिनका, छुनका = नामों का व्यंग्योच्चार, मंगल, टुड़िया, पुने, रबूदे, फल्ली = नाम विशेष, दबकायें = दबाव डालने के अर्थ में, लाग = सूखी भोज्य सामग्री, कनक = गेहूँ का आटा, मोल बिसाकें = मोल खरीदकर।

बगौरा और बड़े गाँव के बीच उस समय कोई पहाड़ी-भूमि सम्बन्धी विवाद चला था, जिसके सन्दर्भ में कवि की व्यक्तिगत स्पष्टोक्ति है - यदि निर्णय करना चाहो तो थोड़ा-थोड़ा दोनों पक्ष सब्र करें, जिद न करें। इधर बगौरा की सीमा है, उधर बड़े गाँव की सीमा और मध्य में यह पहाड़ी है, जिसको तिल का ताड़ बना रखा है। राजस्व निरीक्षक ने सबके कानों में विवाद निपटाने का मूल मंत्र डाल ही दिया है, परन्तु लाला बन्शीलाल मानने को तैयार नहीं। जबकि नायब तहसीलदार ने भी बहुत समझाया। लालाजी अर्थात् लेखापाल जी (पटवारी) अपना अभिलेख खसरा-खतौनी बगल में दाबे यहाँ से वहाँ घूमते नजर आते हैं। बेचारे परेशान हो गए, कहाँ तक किसे बताएँ कि अपनी रिश्वत खाने के ही चक्कर में इधर की उधर कर रहे हैं। सोचो भला गाड़ी के पहिए में चिकना पदार्थ ओंगन न लगाओ तो क्या गाड़ी चल सकेगी? यह इनके मिनके छुनके बड़के यानी छुट भय्ये आदि वकील बन गए? मंगल, टुड़िया, दुबे, रबूदे, फल्ले पर दबाव डाल रहे हैं। जिनके घर में चने का आटा भी नहीं, उनसे भोज्य सामग्री माँगी जा रही है? झल्ले मोदी गेहूँ का आटा भी नहीं देते, वे तो खरीदकर खा रहे हैं। ये सभी भी परेशान हो गए हैं कहाँ तक किसको सुनाया जावे? मैं तो श्री चतुर्भुज किलेदार का कारिन्दा हूँ अतः क्या कहूँ? अभी पन्द्रह - सोलह दिन पूर्व ही तो डिप्टी कलेक्टर होकर गए हैं।

कुण्डली– *स्वामी से सेवक सकुच, विनय करत करजोर।*
मर्जी माफक फर्द की, लगै सो अरजी मोर॥
लगै सो अरजी मोर, सुतर आगै खौ धाबै।
नाँय – माँय की खबर खुशी खातिर की ल्याबै।
लगी फिरै दिखनौस एक कौंतल का जोड़ा।
अच्छे से असवार उड़ै हाथी संग घोड़ा॥
राज चकरया चतुर छैल होबे छब बारे।
ठाँड़े जिनके नीक लगत ऊ समय पियारे॥

सकुच = संकोच के साथ, माफक = अनुकूल, फर्द = सूची, अरजी = निवेदन पत्र, सुतर = ऊँट, नाँय–माँय = यहाँ–वहाँ, दिखनास = प्रदर्शनी, कौंतल = घोड़े की जाति विशेष, असवार = घुड़सवार, राज चकरया = चक्रवर्ती के अर्थ में, छैल = रसिक युवा, छब = छवि।

ईसुरी साधारण बातचीत भी पद्यमय करते थे। अत: कहते हैं – स्वामी से सेवक संकोच के साथ हाथ जोड़कर विनय करता है कि – आपकी इच्छा के अनुकूल सूची में मेरा निवेदन पत्र शामिल होना चाहिए। क्योंकि ऊँट सदैव आगे को दौड़ लगाता है और यहाँ–वहाँ से शुभ सूचनाएँ लाते उसे देर नहीं लगती। एक कोंतल घोड़े का जोड़ा ले लिया जाए तो उसकी प्रदर्शनी भी लग जाएगी। अच्छे से अच्छे सवार को वह घोड़ा हाथी के साथ ले उड़ने वाला है। चक्रवर्ती राज में चतुर छैल छबीले होते ही हैं अर्थात् बड़े लोगों के यहाँ यह नीकी वस्तुएँ प्यारी लगती ही हैं।

कुण्डली– *छड़ी चौर पंखा हरकारा, दो सोंटा वरदार।*
बान लपेटी झाड़ियाँ, बल्लम बारे चार॥
बल्लम बारे चार, ऊँट पै नौबत बाजैं।
सुख कौ शुभ दिनहोय, सजन जब द्वारें साजैं॥
डँका संग निसान, जरी पटका के लाले।
ढोलक टामक बजे, हले राजन के भाले॥

छड़ी, चौर, पंखा, हरकारा = यह सब राजसी ठाठ की वस्तुएँ हैं, बान लपेटी झाड़ियाँ = बनात से लिपटे झाड़ फानूस जो साथ चलते हैं, नौबत = बड़े नगाड़े नुमा एक वाद्य, निसान = एक ऊँची पता का जैसा होता है, जरी पटका = जरी वाला वस्त्र।

किसी शोभा यात्रा का चित्रण है– छड़ी, चँवर, पंखा, दो–दो सेंटा वाले हरकारे, झाड़ फानूस वाले चार बल्लमधारी यथा स्थान चल रहे हैं, आगे ऊँट पर नौबत बज रही है। यह सुख

का शुभ दिन प्रतीत होता है। जब सजन द्वार पर बारात लेकर इस ठाठ-बाट से पधारते हैं। डंके के साथ ही निसान जिसमें जरीयुक्त वस्त्र हैं, ढोलक टामक ढभ बज रही है, राजाओं के भाल झूमते हुए हिलते शोभित हैं।

कुण्डली– *ढपला रमतूला तुरई, अलगोजा की॥ टेक॥*
मिलकें बजै कसावरी, सब बाजन में एक।
सब बाजन में एक, पालकी बीनस आबै,
थोरौ-थोरौ सबई बहुत, कौ रूप दिखाबै।
सनैयाँ संग ढोल, झाँझ संगै हो ठोकी,
बजे सुबा औ साँज, सुहाबन रोसन चौकी।
जितने है सामान सुनत साजन में साजे,
चलन चाल चल गई, चहत अँग्रेजी बाजे।
गाबे में परबीन, एक रंडी कौ डेरा,
रथ के संगै बहल, चाहिये मिल कर बेरा।
गाड़ी पन्द्रा - बीस, भार बरदारी एती,
मिहरबानगी होय सदा, मोउ पै जेती।
एक बार में खोंय, एक सै एक बिरादर,
ऐसौ आबत चहत, होय मंडप में आदर।
ईसें जुदे नतैत होय, होती बेबारी,
ईसे बाहर होंय, लोग, सब खिदमत गारी।
फूलन थी फुलबाद, अजूबा आतिसबाजी,
तेज मसालौ घलत लगै, सबउ खों साजी।
जगर मगर हो रहे जरब, जेबर की जोतें,
रवि से मारे होड़ होत भोरई के होतैं।

ढपला, रमतूला, तुरई, कसावरी, सनैयाँ = वाद्ययंत्रों के नाम, नतैत = रिश्तेदार, बेबारी = व्यवहारी।

बारात की शोभा यात्रा का वर्णन है - ढप, रमतूला, तुरही, अलगोजा के साथ ही सब वाद्यों में अलग कसावरी की खनक सुहा रही है। पालकी, वीनस आती है थोड़ा-थोड़ा सबका ही रूप यहाँ दर्शनीय है। शहनाई के साथ ढोल, झाँझ बजती है। सभी मंगलसाजों के बीच रोशनी की छटा अलग है। जितनी भी सामग्री है वह सुनते हैं साजों में सुन्दरता बढ़ाने वाली है। नयी चाल अँग्रेजी बैण्ड बाजों की भी चल गई है। गायन प्रवीण एक गायिका का डेरा भी है। रथ के

साथ एक बहल भी है। पन्द्रह–बीस बैलगाड़ियाँ भारी भार लिए हुए हैं। कृपा ऐसी ही मुझ पर बनी रहे। एक ही थाल में भोजन एक बिरादरी के लोग करते हैं ऐसा चाहते हैं कि हमारा मंडप में मान सम्मान हो। उनसे पृथक की फुलवाद आकर्षक आतिशबाजी से वातावरण जगमगा रहा है। स्त्रियों के जेवरों की दमक और भी बढ़ गई है। यह विचित्र आलोक सूर्य से होड़ ले रहा है।

कुण्डली– *हौ भन्डार के मिसरजू पूरन दुज कुलचन्द,*
लौर गाँव के नायकन, कीनौ सुख सम्बन्द।
कीनौ सुख समबन्द, समझ कें करी सगाई,
विश्वनाथ जहँ भूप बाई, भूधर की ब्याई।
दीनौ कन्या दान कहत कबि कीरत ताकी,
कों हौ देबै लाक, कहा दैबे में बाकी।
चरनोदक लै ईसुरी, धर चरनन पै सीस,
होय बरदान बरात कौ, नर छै सौ छत्तीस।

भन्डार = एक ग्राम, लौरगाँव = एक ग्राम, ताकी = जिसकी, चरनोदक = चरण धोकर जल के अर्थ में।

यह एकदम व्यक्तिगत बात है। आप भन्डार के श्री मिश्र जी हैं, पूरन द्विज के कुल चन्द्रमा हैं। लौरगाँव के नायकों के यहाँ यह सम्बन्ध अपने किया, समझ करके ही सगाई की है। विश्वनाथ जी को भूपबाई भूधर की बेटी ब्याही है। कन्यादान देकर कवि कीर्ति बखानता है, वे कहते हैं – मैं क्या देने योग्य हूँ? क्या शेष रहा? नहीं जानता। हाँ, आपके चरण धोकर पी लूँगा। चरणों में सदा शीश रखूँगा। बारात की ओर से मुझे वरदान मिले, जिस बारात में छै सौ छत्तीस नर श्रेष्ठ पधारे हैं।

विशेष :– ईसुरी का ममाना लौरगाँव के भूधर नायक के घर में था। उन्हीं भूधर नायक के घर में होने वाले किसी विवाह से सन्दर्भित यह रचना है।

कुण्डली– *दानौ आयौ देस से, परौ धौर्रा आन,*
हमनै आदर दै करौ, तनक खबइया जान।
तनक खबइया जान, रोटिन पै घी धरकें,
छै छिटिया भर, दार, तक दो बेला भरकें।

बाल मुकुन्दे ईसुरी लिखा पठाये उरानैं,
तीन सेर पै दओ ठहाकौ भेजो मनका दानैं।

दानौ = दानव के अर्थ में, धौर्रा = वह ग्राम जहाँ रजउ रहती थी, खबइया = खाई है, छै छिटिया = छः कटोरी, बेला = बड़ा कटोरा, उरानैं = उलहना।

जिन दिनों ईसुरी ग्राम धौर्रा में रहते थे तब कोई मनका नाम का भोजन भट्ट वहाँ आया होगा। उसी सन्दर्भ में कहा है – देश से कोई दानव धौरा में आ गया, मैंने उसका आदर सत्कार किया, सोचा थोड़ा ही खाएगा। रोटियों पर घी रखा छह कटोरी भर दाल पीने के बाद एक दो बड़े कटोरे भरकर घी खा गया। बाल मुकुन्द को ईसुरी ने इसका उलहना लिख भेजा कि तीन सेर (आज तीन किलो) पर ठहाका दिया है। तुमने ऐसा दानव अर्थात् भोजन करने वाला भेजा है।

जब हम तासीली से छूटे।
परे मुकदमा झूँटै।
लै लये है ऐझार एक से,
एक न हाकिम जूटे।
उनखों बढ़ती देय विधाता,
बड़े बखेड़ा टूटे।
श्री माधोप्रसाद से हाकिम,
जियत जगत जस लूटे।
'ईसुर' नीत निभाई पूरी,
नबत पेट खों घूँटे।

तासीली = तहसील, बढ़ती = पदोन्नति, बखेड़ा = परेशानी।

तहसील से कोई मुकदमा जीतकर लौटने पर ईसुरी ने अपने लोगों को सुनाया होगा कि – जब मैं तहसील से छूटा तो मुकदमा झूठा पड़ गया। सभी आरोप वापस ले लिए गए। एक भी अधिकारी उसके पीछे नहीं जुटा। भगवान् उन्हें पदोन्नति दे, बड़ी परेशानी टूट गई। श्री माधवप्रसाद जैसे अधिकारी जीवन पर्यन्तयश कमायेंगे। ऐसी नीति उन्होंने निभाई है। क्यों नहीं आखिर घुटने पेट की ओर ही तो मुड़ते हैं।

जब हम तासीली से छूटे,
अपने अनुआँ बीते।
मुद्दई खों दऔ बना बुकरिया,
मुद्दाले खों चीते।
श्री माधो प्रसाद उनई दिन,
हाकिम बड़े जसीते।
अरजी देत उबेरौ हमखाँ,
नइ तर होत फजीते।
हर इच्छा से हते 'ईसुरी',
हात मुठी से रीते।

अनुआँ = कलंक के अर्थ में, बुकरिया = बकरी का बच्चा, चीते = चीता, जसीते = यशवान, उबेरौ = उबार दिया, नइतर = अन्यथा, फजीते = छीछालेदार, रीते = खाली।

उसी मुकदमे को जीतकर आने पर कहा कि – जब हम तहसील से छूटे अपने कलंक से बच गए। एक पक्ष को बकरी का बच्चा बना दिया तो दूसरे पक्ष को चीता। श्री माधवप्रसाद जी उस दिन थे जो बड़े ही यश कीर्ति वाले अधिकारी हैं। निवेदन पत्र देते ही उन्होंने मुझे उबार लिया, अन्यथा बड़ी छीछालेदार हो जाती। प्रभु की इच्छा से हम तो खाली हाथ ही थे मेरे पास कुछ भी तो न था।

विशेष :- फजीते होना, हाथ मुट्ठी से खाली होना जैसे मुहावरे उल्लेखनीय हैं।

जिदना हमखों आप बुलाबैं,
हुकुम के सुनतन आबैं।
गाँव घिसल्ली घोड़ा भेजो,
बिधगत कौन बताबैं।
पड़ुआ से धीरे पन्डा इक,
रंगरेजन खों ल्याबैं।
ऊ दिन की लाचारी हमखाँ,
रात तिजारी दाबैं।
दरबाजे पै बना 'ईसुरी'
नइ – नइ फागैं गाबैं।

जिदना = जिस दिन, घिसल्ली = ऐसा ही मरियल सा, धीरे पण्डा = तत्कालीन प्रख्यात गायक, रंगरेजन = एक राई नर्तकी, लाचारी = बेबसी, तिजारी = एक ज्वर विशेष।

किसी आत्मीय स्वजन श्रीमान् को कहा गया है कि – जिस दिन भी आप मुझे बुलायेंगे मैं आदेश को सुनते ही आ जाऊँगा। मुझे गाँव से एक मरियल सा घोड़ा भेजा है इस विधिगत को क्या बताऊँ? पड़वा नामक ग्राम से श्री धीरे पण्डा रंगरेजिन को लेकर आ जायेंगे। हाँ, उस दिन की अवश्य विवशता होगी, जिस रात मुझे ज्वर हो जायेगा। वैसे मैं आपके द्वार पर बना बनाकर नई–नई फागें गाऊँगा।

मेरौ कैबो लाख छिमों कौ।
जो कसूर उदनाँ कौ।
बन्दे बिनती करत बनी ना,
बिगरी खों ना ताकौ।
सब कोउ कात अपुन खौ ऐसौ,
बड़ौ मिजाज मजा कौ।
'ईसुर' की गम्भीर सिंह जू,
कलसा चन्दपुरा कौ।

छिमों कौ = क्षमा याचना हेतु, कसूर = अपराध, उदनाँ कौ = उस दिन का, बिगरी = बिगड़ी हुई बात, ताकौ = देखो, कात = कहता है, बड़ौ मिजाज = बड़ा अहंभाव होने के अर्थ में।

उस दिन के अपराध के सन्दर्भ में मेरा क्षमा याचना का ही निवेदन है। सेवक से विनती करते नहीं बनता, अतः बात बिगड़ गई लेकिन आप इस बिगड़ी बात को ही न देखें। सब कोई आपको बड़ा अहंभाव वाला कहकर मजा लेता है। जबकि मैं जानता हूँ कि श्रीमान् गम्भीर सिंह जी तो चन्द्रपुरा के कलश हैं।

हम खों दै राखौ दो कण्डा,
माँगै धीरे पण्डा।
देय असीस सदा एकई सी,
भरैं तुम्हारे बण्डा,
हाकम हूँ है तुमाए घरके,

फिरै उनइ कौ डण्डा।
'ईसुर' मिहल बनै रैबै खों,
और बनै सतखण्डा।

दै राखौ = दे ही दो, कण्डा = उपले, बण्डा = अनाज भरने का स्थान, हाकम = अधिकारी, सतखण्डा = सात मंजिला।

धीरे पण्डा माँगते हैं कि मुझे दो कण्डे दे दीजिए। आशीष देते हैं तुम सदा एक से रहो तुम्हारे भण्डार भरे रहें। तुम्हारे घर के लोग बड़े अधिकारी बनें, उन्हीं की तूती बोला करे। कहने को सात मंजिला महल बने आदि और भी ठाट-बाट हो।

विशेष :- यह रचना धीरे पण्डा को विनोद कहने के भाव में ही लिखी जान पड़ती है।

दोहा- *द्विज धीरे खों ईसुरी, पौंचाई परनाम।*
दिल जाने दिल सौंपदओ, दिल की जानैं राम।
दिल की राम हमारी जानैं,
मिन्त झूट ना मानैं।
हम तुम हाल बतात जातते,
आज रात बर्राने।
सापरतीत आज भई बातें,
सपनन काय दिखाने।
नाँ हो माँ हो देख लियतते,
फूले नईं समाने।
माँस दिवस में मोरौ 'ईसुर'
तुमे लगौ दिल चानै।

पौंचाई = भेजी, परनाम = प्रणाम, मिन्त = मित्र, बर्राने = स्वप्न में देखा, सापरतीत = प्रत्यक्ष में, काय = क्यों, नाँ हो माँ हो = यहाँ से वहाँ से, लियतते = लेते थे।

ईसुरी के अभिन्न मित्र तत्कालीन प्रख्यात गायक श्री धीरे पण्डा की दिन में प्रत्यक्ष चर्चा हुई फिर उसी रात्रि में स्वप्न में पुन: उनसे भेंट हो गई होगी तो जागकर ईसुरी ने लिखा होगा कि पंडित धीरे पंडा के लिए ईसुरी का प्रणाम सादर है। यह तो दिल ही जाने जो दिल तुम्हें सौंप दिया गया है और उस दिल की अब मैं क्या कहूँ राम ही जाने। मित्र झूठ न मानना, हम तुम्हें हाल चाल

बताते थे, ऐसा स्वप्न में देखा। आश्चर्य इस बात का था कि जब आज हमारी प्रत्यक्ष चर्चा हो चुकी थी तब श्रीमान् जी स्वप्न में क्यों पधारे? यहाँ–वहाँ से देख लिया करते थे, तो फूले नहीं समाते थे। माह – दिनों में मेरा दिल बस तुम्हें ही चाहने लगा है, अत: स्वप्न में भी मिलन होने लगा है।